जनपदीय
संस्कार गीत

मध्यप्रदेश के लोकांचलों में
प्रचलित संस्कार गीत

जनपदीय
संस्कार गीत

मध्यप्रदेश के लोकांचलों में
प्रचलित संस्कार गीत

सम्पादक
डॉ. कपिल तिवारी

सहायक सम्पादक
अशोक मिश्र

आदिवासी लोक कला अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
भोपाल का प्रकाशन

प्रकाशक - आदिवासी लोक कला अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
मुल्ला रमूजी संस्कृति भवन, आधार तल, बाण गंगा, भोपाल-462003
मध्यप्रदेश, भारत
फोन - 0755-2551878, 2760668

प्रकाशन वर्ष - वर्ष 2006 प्रथम संस्करण

स्वत्वाधिकार - आदिवासी लोक कला अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

शब्दांकन - आदिवासी लोक कला अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

आवरण -

मुद्रण - आफसेट, भोपाल

मूल्य - 500/- रुपये पाँच सौ केवल

- पुस्तक से सम्बन्धित समस्त विवादों का न्यायालयीन कार्य क्षेत्र भोपाल होगा।
- पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री लेखक की है, आवश्यक नहीं कि प्रकाशक इससे सहमत हो।

Janpadiya Sanskar Geet

EDITOR : DR. KAPIL TIWARI

अनुक्रम

बघेली संस्कार गीत

गोमती प्रसाद विकल

डॉ. सत्यनारायण पाण्डेय

बाबूलाल दाहिया

बुन्देली संस्कार गीत

माधव शुक्ल 'मनोज'

डॉ. ओमप्रकाश चौबे

अनिल श्रीवास्तव/डॉ. सुरेश मालवीय

लोक वाचिक परम्परा में लोकगीत 'शब्द रचना' और 'संगीत रचना' एक साथ हैं। लोकगीत पढ़ने की नहीं सुनने की चीज है। हमारी वाचिक परम्परा का मौखिक काव्य और लोक का संगीत, लोकगीतों में बसता है, इनमें भी संस्कार गीतों की परम्परा, लोकगीत परम्परा का आधार है। सोलह संस्कारों के गीत विभिन्न अवसर और अनुष्ठानों तथा लोकाचारों से जुड़े हुए हैं अर्थात् वे साहित्य और संगीत की लोक परम्परा से आगे हमारी सांस्कृतिक चेतना और स्वरूप का दर्शन हैं। जन्म से लेकर विवाह तक लोकगीत और संगीत की एक परम्परा हमारे साथ यात्रा करती है। संस्कारों के गीत भारतीय लोक परम्परा में मूलत: स्त्रियों द्वारा गाये जाते हैं और संभवत: उन्हीं के द्वारा रचित भी हैं, इसलिए इन गीतों में भाव और संवेदना की अभिव्यक्ति का तल तथा संगीत संयोजन असाधारण रूप से समान है। यह भारतीय सांस्कृतिक परम्परा की भावात्मक बुनियादी एकता का विलक्षण उदाहरण हैं।

भारतीय पौराणिक परम्परा के नायकों, घटनाओं, स्थितियों के रूपक अपने में समेटे ये संस्कार गीत विशिष्ट जनपदीय स्थानिकता की अभिव्यक्ति के साथ एक भारतीय सांस्कृतिक परम्परा के अविछिन्न बोध को प्रकट करते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में अकादमी ने वाचिक साहित्य के कुछ रूपों के संकलन चौमासा पत्रिका के परिशिष्ट के रूप में प्रकाशित किये हैं। लगभग छ:-सात हजार पृष्ठों की यह वाचिक साहित्य सम्पदा, मौखिक परम्परा के अभिलेखीकरण की देश की सबसे बड़ी योजना का कार्य रूप था। अब वर्गीकृत रूप में मध्यप्रदेश के चारों जनपदों के संस्कार गीतों का दो खण्डों में प्रकाशन किया जा रहा है। बुन्देलखण्ड, बघेलखण्ड, मालवा और निमाड़ अंचल के लगभग डेढ़-दो हजार गीत इनमें शामिल हैं। मूल बोलियों के गीतों के साथ हिन्दी अनुवाद भी दिये गये हैं।

यह इस उपक्रम का पहला चरण है। इसके बाद बारहमासा ऋतु और पर्व-गीतों का दूसरा विशाल संग्रह अकादमी तैयार कर रही है जो अगले वर्षों में प्रकाशित होगा।

गीत संकलन और प्रकाशन के बाद इन गीतों के संगीत के प्रामाणिक दस्तावेजीकरण पर अकादमी कार्य करेगी। हम सभी इस तथ्य से भलीभाँति परिचित हैं कि लोकगीत मूलतः सुनने की चीज है, उसकी सुन्दरता और अर्थ अपने को लोक परम्परा के संगीत में व्यक्त करते हैं।

इस समय देश में बड़े पैमाने पर लोक परम्परा के संगीत को व्यावसायिकता के चलते विकृत किया जा रहा है, यहाँ तक कि संगीत के माध्यम से अपसंस्कृति का विस्तार किया जा रहा है- द्विअर्थी, फूहड़ और अश्लील गीत अनेक लोग लोकगीत के नाम से लिख रहे हैं और उसके पारम्परिक संगीत में मनमाने और अराजक प्रयोग कर लोकसंगीत का बाजार निर्मित कर रहे हैं। देश की आधारभूत सांस्कृतिक विरासत के सबसे मूल्यवान और कर्णप्रिय संगीत को व्यावसायिक हिन्दी सिनेमा और चलताऊ कैसेट कंपनियों ने भारी क्षति पहुँचायी है। यह चमत्कारी सामुदायिक सृजन हमारे पारिवारिक और सामाजिक जीवन की मांगलिकता को शब्द और संगीत में समारोहित करता है- इसमें हमारा मूल्यबोध, स्मृति, सांस्कृतिक दृष्टिकोण, संस्कार, शिक्षा और समवेत सर्जना सुरक्षित है। प्रामाणिकता के आग्रह के साथ उसकी सुरक्षा आवश्यक है।

इस संग्रह में बघेली, बुन्देली, निमाड़ी और मालवी के पारम्परिक संस्कार गीत संकलित है, जिन्हें श्री गोमती प्रसाद विकल, डॉ. सत्यनारायण पाण्डेय, श्री बाबूलाल दाहिया, श्री माधव शुक्ल मनोज, डॉ. ओम प्रकाश चौबे, श्री अनिल श्रीवास्तव, डॉ. सुरेश कुमार मालवीय, श्री रमेश चंद्र तोमर 'निमाड़ी', श्री वसंत निरगुणे, डॉ. संतोष कुमार गुर्जर, श्रीमती कृष्णा वर्मा तथा डॉ. शशिकला निगम ने अकादमी के आग्रह पर संकलित किया है। इन सभी महानुभावों के प्रति आदिवासी लोक कला अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है।

कपिल तिवारी

बघेली संस्कार गीत

गोमती प्रसाद विकल
सम्पर्क – 16/726 उर्रहट, रीवा

संस्कार: गुणाधानं - संस्कार का अर्थ है- गुणों का आधान और दोषों का परिहार। संस्कार पवित्रता है, परिष्कार है। संस्कार का आशय पुनर्नवता है। संस्कार सांस्कृतिक कातभाव हैं। संस्कार से प्राणी और पदार्थ कार्य-कुशलता तथा गुणवत्ता अर्जित करते हैं। आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में संस्कार का प्रतिफल देखने को मिलता है। जिस तरह औषधीय रसों को उच्च तापक्रम पर आँच में तपाया जाता है, खरल में बार-बार घोंटा जाता है, इस उपक्रम से रसायन की गुणवत्ता में अभिवृद्धि होती है। उसी तरह मनुष्य में उदात्त गुणों की स्थापना के लिए संस्कारों का महत्त्व प्रतिपादित किया गया है। मनीषियों ने तरह-तरह के संस्कारों के द्वारा प्राणियों को सुसंस्कृत करने की प्रथा प्रचलित की है। मनुष्य की आध्यात्मिक चेतना विकसित करने के लिए अनेक प्रकार के अभिचारों और उपचारों की व्यवस्था है। अभिचारों और उपचारों के अनुप्रयोग से मनुष्य की बाह्य और अन्त: दोनों शक्तियों के विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। मनुष्य के कर्म और स्वभाव समुन्नत होते हैं। समाज का चरित्र बल विकसित होता है।

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्त मध्यानि भारत।
अव्यक्त निधनान्येव तत्र का परिवेदना॥

- गीता 2/28

संस्कारों की भी यही स्थिति है। संस्कार अतीत में उपजते हैं, वर्तमान में छिछड़ते (फैलते) हैं और भविष्य का संस्पर्श करते हैं। जीवन में संस्कारों की इतनी आत्यन्तिक निकटता संस्कार के मूल्य और महत्त्व को रेखांकित करती है।

संस्कारों के आधान से जीवन पवित्र और सुसंस्कृत होता है। संस्कार से ही मनुष्य में मनुष्यता का उत्कर्ष होता है। संस्कार, संस्कृति के संवाहक हैं। समूची सृष्टि संरचना में संस्कारों की व्याप्ति है। भारतीय चिन्तन में जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त संस्कारों की क्रमबद्ध शृँखला है।

वैदिक: कर्मभि: पुण्येर्निषेकादि दिजात्मानाम्।
कार्य शरीर संस्कार: पावन: प्रेत्यचेह च॥

– मनुस्मृति, अध्याय-2, श्लोक-27.

प्राणी को पावन करने वाला गर्भाधान इत्यादि सोलह शरीर संस्कार वेदानुसार पवित्र कर्मों के द्वारा करने के योग्य हैं।

संस्कार समावेशी और सहयात्री होते हैं। लोकास्था और परम्पराओं के माध्यम से संस्कारों की सहयात्रा मानव जीवन के साथ आज भी गतिशील है। संस्कारों के सबसे जागरूक और अदम्य पहरुअे लोकगीत, प्रथाएँ और परम्पराएँ हैं। लोकगीत अपनी आदिम ताकत से संस्कारों को ग्रहणीय और अर्थवान बनाते हैं। जीवन में संस्कारों का बहुआयामी महत्त्व है। संस्कारों के द्वारा व्यक्ति, परिवार और समाज का आदर्श रूपायित है।

संस्कारों की संख्या के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद हैं– गौतम स्मृति में 48 संस्कारों का उल्लेख है। महर्षि अंगिरा ने पच्चीस संस्कारों को मान्यता दी है। महर्षि व्यास के मतानुसार षोडस संस्कार इस प्रकार हैं–

गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातिकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्रासन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, संन्यास और अन्त्येष्टि।

वर्तमान परिवेश में दो संस्कार और जुड़ गये हैं :-

जन्म दिवस और विवाह दिवस।

बदलती दुनिया और बदलते इन्सान की पृष्ठभूमि में ये दोनों संस्कार खूब रेखांकित हो रहे हैं। शास्त्रीय दृष्टि से संस्कारों के दो प्रकार माने गये हैं–

मलापनयन और अतिशयाधान।

मन के मल को हटाना अथवा स्वच्छ करना 'मलापनयन' कहा जाता है। मन या चित्त को अधिक तेजोमय करना 'अतिशयाधान' संस्कार के अन्तर्गत आता है।

व्यवहारिक दृष्टि से संस्कारों के दो रूप इस प्रकार हैं :-

मंत्राधीन, और गीत आश्रित।

मंत्रोच्चार द्वारा संपादित संस्कार मंत्राधीन संस्कार कहे जाते हैं। लोकगीतों द्वारा संपादित संस्कारों को गीत आश्रित संस्कार कहा जाता है।

सामाजिक सोच और सरोकारों में परिवर्तन के साथ संस्कारों के संपादन में शिथिलता आ

गई है। वर्तमान समय में बघेली लोकमानस में अग्रलिखित संस्कारों की मान्यता है :-

1. जन्मोत्सव, 2. अन्नप्रासन, 3. कर्ण वेध, 4. मुण्डन, 5. यज्ञोपवीत, 6. विवाह, 7. मृत्यु।

जन्म संस्कार

'क्षेत्रसंस्कार सिद्धिश्च गर्भाधान फलं स्मृतम्'

– स्मृत संग्रह

इस संस्कार में दोष का मार्जन तथा क्षेत्र का संस्कार होता है। पति-पत्नी जिस भाव से भावित होते हैं, उसका प्रभाव उनकी सन्तान पर पड़ता है। अत: शुभ मुहूर्त्त और मंत्र के साथ गर्भाधान का विधान है। गर्भाधान के पूर्व मंत्र का मनन और वाचन करना चाहिए।

'गर्भ ते आश्वनौ देवावाधत्तां पुस्कस्रजौ'

– वृहदारण्यक 6/4/21

पुंसवन संस्कार

पुत्र प्राप्ति के लिए पुंसवन संस्कार किया जाता है। शास्त्रों का मत है कि- पुत्र – 'घुम' नरक से त्राण दिलाता है, इसीलिए 'पुत्र' कहलाता है।

'पुत्राम्नो नरकात् त्रायते इति पुत्र:' गर्भिणी में गर्भ के लक्षण स्पष्ट होने पर पुंसवन संस्कार का विधान है। महर्षि कश्यप के कहने पर दिति ने इन्द्र का वध करने की शक्ति रखने वाले सन्तान उत्पन्न होने की कामना से पुंसवन संस्कार किया था।

सीमन्तोन्नयन संस्कार

गर्भ स्थिर होने के सात-आठ माह उपरान्त इस संस्कार का पालन करने का चलन है। जीवविज्ञान के अनुसार चार माह के बाद गर्भस्थ के अंग-प्रत्यंग विकसित होने लगते हैं। गर्भ में चेतना आ जाती है, इच्छाएँ जागृत हो जाती हैं। इन दिनों जो संस्कार डाले जाते हैं, जातक के जीवन में उसका बहुत महत्त्व होता है। भक्त प्रह्लाद ने देवर्षि नारद और अभिमन्यु ने अपने पिता अर्जुन से गर्भ में शिक्षा ग्रहण कर ली थी। यह संस्कार निम्नलिखित मंत्र के साथ संपादित होता है-

येनादिते: सीमान: नयति प्रजापर्तिमहंते सौभाग्य।
तेनाहमस्यै सीमान: नयामि प्रजामस्यै जरदष्टि कृणोमि॥

जिस प्रकार देवमाता अदिति का सीमन्तोन्नयन प्रजापति ने किया, उसी प्रकार इस गर्भिणी का सीमन्तोन्नयन करके इसके गर्भ को जरावस्था पर्यन्त दीर्घजीवी करता हूँ।

उपरिलिखित तीनों संस्कारों की प्रतिष्ठा शास्त्रों में अवश्य की जाती है, किन्तु लोक व्यवहार में इनका परिपालन कम ही होता है। इसके प्रमुख कारण हैं–लोक लाज और जागरूकता का अभाव।

ग्रामीण जीवन में लोक लाज की बहुत प्रतिष्ठा है। पति–पत्नी अपने परिवार में बड़े–बूढ़ों के सामने बहुत संकुचित और मर्यादित जीवन जीते हैं। वे आपस में सयानों की उपस्थिति में वार्तालाप तक नहीं करते। पति–पत्नी का समागम गोपनीय तरीके से होता है। गर्भ स्थिर हो जाने पर तो गर्भिणी संकोच की अर्गला में जकड़ जाती है। वह अपनी गर्भिणी स्थिति को दूसरों से छिपाने का प्रयत्न करती है। ऐसी स्थिति में पुंसवन संस्कार, सीमन्तोन्नयन संस्कार और गर्भाधान संस्कार का परिपालन करना सम्भव नहीं हो पाता। गर्भ धारण की सारी प्रक्रिया न मालूम तरीके से पूरी हो जाती है। जागरूकता के अभाव में महत्त्वपूर्ण संस्कारों से गर्भ वंचित रह जाता है। कोई स्त्री जब अधिक दिनों तक गर्भिणी नहीं होती तब परिवार के लोगों में कुछ चिन्ताएँ और हलचल अवश्य दिखाई पड़ती हैं। मान–मनौती और पूजन अनुष्ठान के उपाय किये जाते हैं। बघेली परिवेश में सन्तान प्राप्ति हेतु सूर्य का आराधन किया जाता है। सूर्योपासना से सन्तान प्राप्ति की कामना के पौराणिक सन्दर्भ मौजूद हैं। महाभारत की कुन्ती ने सूर्योपासना से ही 'कर्ण' को जन्म दिया था। सूर्य मंत्राधीन देवता हैं। बघेली में मनौती का सोहर है–

नहाइ–धोइ ठाढ़ि ननदिया
त सुरुज मनाबइ हो
सुरुज भउजी का दैहु नंदलाल
उठाइ लइ जाबइ हो

भावज बहुत दिनों तक गर्भिणी नहीं हुई – परिवार के सब लोग चिन्तित हैं। ननद सबसे अधिक चिन्तित है। भावज के सन्तान होने पर ननद को बहुत सा नेग (धन) मिलता है। इसलिए वह चाहती है कि भावज पुत्रवती हो। ननद स्नान करके पवित्र मन से सूर्यदेव से प्रार्थना करती है– 'सूर्यदेव मेरी भावज को नंदलाल (पुत्र) दीजिए' मैं उस पुत्र को बड़े जतन से पालूँगी।

सूर्योपासना द्वारा सन्तान प्राप्ति करने की परम्परा लोक जीवन में बद्धमूल है। शास्त्रीय विधि–विधान के साथ–साथ लोकाचार का विशेष अनुपालन होता है। लोकाचार के अन्तर्गत कुल–गोत्र और जातीय परम्पराएँ विशेष महत्त्वपूर्ण मानी जाती हैं। आदिम समाज प्रकृति के बहुत सन्निकट रहा है। इसलिए लोक अभिचारों में नदी, पीपल, बरगद आदि वृक्षों की पूजा–अर्चना की जाती है। सन्तानाकांक्षी दम्पत्ति तरह–तरह के टोटके और कर्मकाण्डों का पालन करते हैं। व्रत, उपवास, कथा–पूजन की विधिवत् प्रथाओं का पालन किया जाता है।

भौतिकी के बढ़ते चरण से पारम्परिक अनुष्ठानों और अभिचारों में कुछ गिरावट के लक्षण उजागर हुए हैं। संस्कृति परिवर्तन का यह संधिकाल है। ऐसा घटित होना स्वाभाविक है।

परिवर्तन, विकास की नियति है, फिर भी परम्परा से चले आ रहे लोक विश्वास और प्रथाएँ निर्मूल नहीं हुईं।

जातकर्म

जातकर्म जन्मोत्सव संस्कार है। जीवन के प्रात:काल का यह संस्कार आनन्दप्रद और उत्साहवर्द्धक होता है। शिशु जन्म से घर-परिवार खुशी से झूम उठता है। उमंग की तरंगें हिलोरें लेने लगती हैं। नृत्य-गायन और वादन से वातावरण आपूरित हो जाता है।

परम्परा

पुत्र जन्मोत्सव पर सोहर गाने की प्रथा है। आँचलिक बोलियों में 'सोहर' शब्द की व्युत्पत्ति में मतभेद है। तुलसीदासजी ने 'सहेली सुनु सोहिलो रे' प्रयोग किया है। इसी प्रकार सूरदास ने 'गाऊँ हरि जी के सोहिलो' कहा है। वस्तुत: सोहर शब्द 'शोभन' के निकट बैठता है। बघेली में 'सोकहर' से 'सोहर' का सम्बन्ध माना जाता है। गर्भिणी या प्रसविनी की पीड़ा चिन्ता अथवा 'शोक' दूर के लिए गाये जाने वाले गीत 'सोकहरा' हैं, जो कालान्तर में 'सोहर' हो गया है।

सोहर संस्कार गीत की अनेक छवियाँ, ध्वनियाँ, गतियाँ और गीतियाँ लोक साहित्य में मौजूद हैं। जन्मोत्सव से प्रारम्भ होकर अन्नप्रासन संस्कार तक 'सोहर' गाये जाते हैं। सोहर के बोल, ताल और लय बहुत ही कारुणिक और मांगलिक होते हैं।

प्रसूति गृह

प्रसविनी स्त्री के कक्ष को 'प्रसूति गृह' कहा जाता है। यह घर का सबसे सुरक्षित कमरा होता है। प्रसविनी के कक्ष में घर-परिवार की अनुभवी महिलाएँ ही स्वच्छ होकर प्रवेश करती हैं। घर की सयानी-अनुभवी महिला तो निरन्तर प्रसविनी के साथ मौजूद रहती है। ग्रामीण परिवेश जहाँ वैज्ञानिक जागरूकता नहीं है, वहाँ प्रसव घर में ही कराया जाता है। गर्भिणी की 'प्रसव पीड़ा' सहनीय बनाने के लिए अनुभवी महिलाएँ तेल के साथ पेट की मिजाईं करती हैं। यह कार्य प्राय: अनुभवी नाइन किया करती है। साथ में स्त्रियाँ सोहर गीत भी गाती हैं। शिशु के जन्म होने पर बाजा बजाया जाता है। पुत्र जन्म होने पर थाली बजाई जाती है और पुत्री के जन्म पर सूपा बजाने की प्रथा है। जन्म के उपरान्त और नाल काटने के पूर्व शिशु को स्वर्ण शलाका से घृत और मधु चटाया जाता है। यह रसायन त्रिदोष नाशक है। घृत वात-पित्त नाशक होता है और मधु कफनाशक है।

नारा-खेढ़ी

जन्म के तत्काल बाद दाई बुलाई जाती है। दाई बुलाने के लिए देवर को चलनी लेकर जाना पड़ता है। दाई का मुख्य कर्म शिशु की नाल (नारा) खेढ़ी काटना होता है। यह कार्य दाई

तेज उस्तरे या हसिया से करती है। किसी प्रकार का इन्फेकशन न हो, इसलिए नाल काटने वाले उस्तरे को आग में गर्म कर लिया जाता है। कटे हुए नाल को प्रसूति गृह में ही गाड़ दिया जाता है। इससे प्राणी और जन्मभूमि का रागात्मक सम्बन्ध प्रगाढ़ होता है। मुहावरा है- क्या आपका यहाँ पर नारा-खेढ़ी गड़ा है ? अर्थात् क्या आपका यहाँ पर जन्म हुआ है, जिससे इस धरती से इतना मोह-प्रेम कर रहे हो ? यह भावना और संवेदना से जुड़ी बात है।

जिस स्थान पर नाल गड़ी होती है उसके ऊपर आग जलाकर रखी जाती है। जिसका आशय है कि सब प्रकार के हानिकारक विषाणु नष्ट हो जायें। कतिपय अंचलों में नाल के साथ बिच्छू का ऊरा (डंक) भी गाड़कर जलाया जाता है, यह मानकर कि बच्चे के शरीर में बिच्छू का जहर कभी-भी न चढ़े।

सोबर निकालना

प्रसवकाल में प्रसवा जो वस्त्र धारण किये रहती है या उपयोग करती है अथवा प्रसूति गृह के छोटे-मोटे कपड़े-लत्तों का समूह 'सोबर' कहा जाता है। धोबिन इन कपड़ों को बाहर निकालकर साफ-सफाई करती है। इसी दिन जच्चा-बच्चा को नहलाने की क्रिया होती है। यह क्रिया शुभ मुहूर्त्त में करने का विधान है। कुल पुरोहित शिशु के राशि-लग्न और मुहूर्त्त का विचार करते हैं। जच्चा के स्नान, भोजन, छठी, बरहौ आदि संस्कारों का सुदिन (मुहूर्त्त) बताते हैं। कभी-कभार शिशु 'सत्तइसा' में पड़ जाता है। तब जच्चा को सत्ताइस दिनों तक प्रसुति गृह में रहना पड़ता है। सत्ताइस दिनों तक पिता को शिशु का मुँह देखना वर्जित है। 'सत्तइसा' पूजन की शास्त्रीय विधि है जिसके उपरान्त ही शिशु के माता-पिता पवित्र माने जाते हैं।

सोबर निकलने के बाद जच्चा-बच्चा के स्नान की विशेष विधि होती है।

चरबा

चरबा मिट्टी का पका हुआ पात्र है जिसमें जच्चा-बच्चा को स्नान के लिए पानी पकाया जाता है। पानी में कई प्रकार की स्वास्थ्यवर्द्धक जड़ी-बूटियाँ डाली जाती हैं। परसुतिहा (एक प्रकार की जड़ी-बूटी), सुपाड़ी, कत्था, तांबे के सिक्कों को पानी में डालकर पकाया जाता है। कहीं-कहीं नीम की पत्तियाँ पानी में डालकर पकाई जाती हैं। फिर इसी औषधीय पानी से जच्चा-बच्चा को नहलाया जाता है। नहलाने के बाद बच्चे को सूप पर लिटाने की परम्परा है। सूप में कुछ अन्न डालकर उसके ऊपर सुकोमल बिछोने पर जच्चा को लिटाया जाता है। इस पड़ाव पर और कई क्रियाएँ होती हैं।

नेग-चार

जच्चा की ननद प्रसूति गृह की पुताई-सफाई करती है। इसके लिए उसे नेग-चार (दक्षिणा) मिलता है। सास पीपर पीसती है। कहीं-कहीं पर जेठानी स्नान कराती है। बुआ शिशु

की आँखों में काजल आँजती है। इन सभी पारिवारिक जनों को नेग दिया जाता है। बड़ा सुखद लोकाचार है।

जन्मोत्सव पर्व के लोकाचारों का बड़ा ही व्यापक प्रभाव लोक जीवन में देखने को मिलता है। लोककाव्य के साथ-साथ नागर काव्य में भी इसके साक्ष्य मौजूद हैं।

नैना जोगिन

नवजात शिशु की सलोनी छवि को किसी की कुदृष्टि न लग जाये इसलिए 'नैना जोगिन' का अभिचार किया जाता है। जोगिन एक पवित्र और चमत्कारी आत्मा है, जो शिशु पर पड़ने वाले नयन (नैना) के कुप्रभाव से रक्षा करती है। प्रसूति गृह में काजल या कोयला से जोगिन का प्रतीक चिह्न बना दिया जाता है, जिसे नैना जोगिन बैठाना कहा जाता है। कतिपय अंचलों में नवजात के ललाट पर काजल का डिठौना (टीका) लगाने को भी नैना जोगिन बैठाना माना जाता है। लोक जीवन की यही तो विशेषता है कि सबके अपने-अपने राग-अनुराग, आस्थाएँ-प्रथाएँ, अभिचार और विश्वास होते हैं। इन्हीं आस्थाओं और लोक विश्वासों से सतरंगी लोक-संस्कृति जन्म लेती है।

रोचना

रोचना मांगलिक सूचना है। पुत्र जन्म के अवसर पर जच्चा के मायके (पितृगृह) में 'रोचना' भेजने की परम्परा है। यह कार्य नाऊ जाति द्वारा किया जाता है। नाऊ अपने साथ हल्दी-सना चावल लेकर जाता है और जच्चा के माता-पिता और भाइयों के ललाट पर टीका लगाता है। इसके लिए उसे वस्त्राभूषण दक्षिणा (नेग) में प्राप्त होता है। रोचना भेजना पारम्परिक अनुष्ठान है। रामायणकाल में इसके साक्ष्य मौजूद हैं। वाल्मीकि आश्रम में लव-कुश के जन्म पर सीता ने रोचना भिजवाया था। यहाँ कुछ अलग घटित हुआ है। सीता ने अपने मायके जनकपुर के लिए रोचना न भिजवाकर अयोध्या भिजवाया था। रोचना भिजवाते हुए सीता ने नाऊ को सावधान किया था-

नाऊ! तुम यह रोचना सास रानी कौशल्या, श्वसुर राजा दशरथ और देवर लक्ष्मण के माथे पर लगा देना। किन्तु पापी पति के ललाट को भूलकर भी मत छूना।

पहिला रोचन रानी कौसल्या
दूसर राजा दशरथ हो
(अब) तीसरा रोचन लछिमन देबरा
पपिअबा न जानइ हो।

- लोक कंठ से.

सीता ने राम के ललाट पर रोचन लगाने से नाऊ को रोक दिया था। यह राम के प्रति सीता का आक्रोश था। सीता ने अपने जीवन में पहली बार जीवनधन राम के लिए पापी (पपिअबा)

संबोधन का प्रयोग किया है। प्रतिम काव्य में ऐसी उद्भावना मौजूद नहीं है। यह लोक कवि और लोक काव्य की ताकत है जो इतना कड़वा सच कह सकता है।

बधावा

रोचना भेजने की ही तर्ज पर 'बधावा' भेजा जाता है। जच्चा के ससुराल का 'परजा' नगड़िया लेकर मायके जाता है। जच्चा के माता-पिता के घर और सगेर (निकट) परिवारों के दरवाजे पर विशेष लय-ताल की नगड़िया बजाता है। घर की स्त्रियाँ अपना पुलक प्रकट करने के लिए नृत्य-गान भी करती हैं। नृत्य, गान और वाद्य से यह सन्देश प्रसारित होता है कि इस घर की कन्या से ससुराल में पुत्र पैदा हुआ है। साथ ही साथ इसका आशय यह भी है कि मायके के लोग पुत्र-जन्म से सूचित हों और जच्चा-बच्चा के लिए वस्त्राभूषण, मिष्ठान्न आदि लेकर वहाँ पहुँचें। यह उत्सव मायके के लोग अपनी स्थिति के अनुसार बड़ी उदारता से करते हैं। पुरानी प्रथा के अनुसार नये घड़े को विभिन्न रंगों से सजाया जाता है और उसमें हल्दी, गुड़, सोंठ, तिल, करायल, छोहारा, बादाम आदि पौष्टिक पदार्थों का घी मिश्रित लड्डू लेकर जच्चा के घर जाया जाता है। बधावा बजाने वाले परजा को नेग देकर सन्तुष्ट किया जाता है। 'रोचना' और 'बधावा' दोनों मांगलिक सूचनाओं का लोक जीवन में गहरा प्रभाव दिखाई पड़ता है।

पछीत बोलना

घर का पिछवाड़ा पछीत कहा जाता है। पुत्र जन्मोत्सव पर बघेलखण्ड में पछीत बोलाई (बोलने) की प्रथा है। पछीत बोलाई का संवाद अर्थगर्भित और विनोदप्रिय होता है। जच्चा का देवर घर के पिछवाड़े जाकर कुछ हलचल करता है। घर के भीतर से बच्चे का पिता पूछता है-

मोरी पछितिया को?
(मेरे घर के पीछे कौन है?)
देवर (पति का छोटा भाई) का उत्तर - 'चोर'
तोंही का चाही?'
(तुम्हें क्या चाहिए ?)
भइया? भउजी तोर।
लरिका मोर॥
(बड़े भइया! भावज आपकी और बेटा हमारा है।)

बड़ा भाई धर्म संकट में पड़ जाता है। पुत्र के प्रति उसे बहुत स्नेह है। अपने आत्म को वह कैसे छोटे भाई को दे दे? इसके अलावा माता के बिना नवजात शिशु कैसे रह सकता है ? माता का वात्सल्य कभी ऐसी छूट नहीं देगा। बच्चे का पिता अपने छोटे भाई को भी बहुत प्यार करता है। उसकी माँग को ठुकराते भी नहीं बनता है। बहुत गहन सोच-विचार के बाद रास्ता निकाला जाता है। छोटे भाई को कुछ उपहार देकर सन्तुष्ट किया जाता है। इसे पछीत बोलाई का नेग कहा

जाता है। बुन्देलखण्ड में भी इस प्रथा का चलन पाया जाता है।

पछीत बोलाई प्रथा में लोक संस्कृति का सशक्त पाठ दर्ज है। देवर पुत्र पर अपना अधिकार जताता है। भावज को बड़े भाई के हवाले करता है। यह भारतीय संस्कृति का मूल्य है। 'भावज' माता के समान मानी गयी है। देवर को वह पुत्रवत् मानती है। भावज-देवर के बीच स्नेह-आदर का रिश्ता होता है। सीता-लक्ष्मण का प्रसंग इसका साक्ष्य है। सीता के कर्णाभूषण पहचानने के लिए राम ने लक्ष्मण को बुलाया। लक्ष्मण का स्पष्ट उत्तर था- (सीताजी मेरी माता है। मैंने सिर्फ उनके चरणों को निहारा है। कर्णाभूषण मैं कैसे पहचान सकता हूँ ?)

मांगा राम तुरत सोई दीन्हा,
पट उर लाइ सोच पड़ कीन्हा।

- रामचरित मानस.

दूसरे 'पुत्र' पिता का आत्म-रूप होता है। पुत्र का वियोग पिता कैसे सहन कर सकता है। इसका भी प्रमाण रामायण में है। महाराज दशरथ ने राम के वियोग में अपना प्राण त्याग दिया। इन्हीं महत् मूल्यों की रक्षा के लिए जच्चा का पति छोटे भाई को नेग (दक्षिणा) देकर अपना पुत्र अधिकार प्राप्त करता है।

छठी संस्कार

जन्म के छठवें दिन होने वाले विधि-विधान को छठी-संस्कार कहा जाता है। इस संस्कार में प्रसूति गृह की लिपाई-पुताई होती है। अँगेठ बाहर निकाला जाता है। अँगेठ कच्ची मिट्टी का बना होता है जिसमें आग जलाकर प्रसवा तापती है। इसी दिन नहा-महाउर की प्रथा का पालन होता है। ओरगइत (अनुबंधित) नाइन प्रसवा के पाँव का नाखून काटती है और उसके पाँव में रंग-महावर लगाती है। घर-परिवार की सभी स्त्रियाँ और बालिकाएँ नहा-महावर करती हैं। गाँव-पड़ोस की स्त्रियों को भी नाइन नहा कटाने के लिए बुलाती है। नहा काटने वाली स्त्रियाँ अपने साथ कटोरे में कुछ अन्न अथवा पैसे लेकर आती हैं। नहा काटने के उपरान्त यह अन्न और पैसा नाइन को मिलता है। इस परम्परा का सामाजिक और आर्थिक महत्त्व उल्लेखनीय है। उत्पादन के उचित वितरण से सच्चे समाजवाद का दर्शन इस लोक परम्परा से उद्घाटित होता है। नाइन श्रम करती है, उसके श्रम का मूल्य उपलब्ध उत्पादन द्वारा चुकाया जाता है। श्रम और उत्पादन के सहज निस्वादन से समाज में सहयोग और सद्भाव का वातावरण बना रहता है।

डहठान (बरेही)

डहठान संस्कार जन्म के बारहवें दिन शुभ मुहूर्त्त में पवित्रता और प्रसन्नता के साथ संपादित किया जाता है।

1. नामकरण, 2. जन्म कुण्डली, 3. व्रत-कथा।

डहठान संस्कार में प्रसवा पहली बार नवजात शिशु के साथ प्रसूति गृह से बाहर निकलती है। जच्चा-बच्चा नये वस्त्राभूषण से सुसज्जित होते हैं। डहठान संस्कार कुल पुरोहित के द्वारा शास्त्रोक्त विधि से सम्पन्न कराया जाता है। इस अवसर पर कुल पुरोहित द्वारा नवजात शिशु का नामकरण राशि, लग्न, नक्षत्रादि की गणना के आधार पर किया जाता है। कहीं-कहीं पर यह संस्कार जन्म के तीसवें दिन अथवा सौवें दिन में सम्पन्न होता है। ऐसा कुछ कुल परम्परा के अनुसार किया जाता है।

कुल पुरोहित नवजात शिशु की जन्मकुण्डली ज्योतिष गणना के आधार पर बनाते हैं और शिशु के माता-पिता तथा परिवार जनों को पढ़कर सुनाते हैं। जन्मकुण्डली में जातक के जीवन की सफलता-असफलता, लाभ-हानि, गुण-दोष आदि का उल्लेख होता है। इस कार्य के लिए पुरोहित को दक्षिणा दी जाती है।

डहठान संस्कार पर 'सत्यनारायण' व्रत कथा के अनुष्ठान की परम्परा है। घर के आँगन को गोबर से लीपकर उसमें चौक पूरे जाते हैं। पूजन वेदी पर गौरी, गणेश और कलश स्थापित किया जाता है। जच्चा अपने बच्चा को गोद में लेकर पति के साथ गाँठ जोड़कर पूजन वेदी पर बैठती है। आचार्य द्वारा मंत्रोच्चार किया जाता है। देवताओं का पूजन और सत्यनारायण व्रत कथा का वाचन होता है। घर-परिवार और पास-पड़ोस के स्त्री-पुरुष श्रोता के रूप में उपस्थित रहते हैं। पिता पहली बार अपनी सन्तान का दर्शन करता है। डहठान संस्कार उल्लास का संस्कार है। स्त्रियाँ सोहर गीत गाती हैं। नृत्य-गान की भी परम्परा पाई जाती है। उत्सव में और अधिक चारूता और भव्यता लाने के लिए रामायण गायन होता है। बाजे भी बजवाये जाते हैं। आमतौर पर नगड़िया या डफला बजाया जाता है। खान-पान का उत्सव भी होता है, दान-दक्षिणा की क्रियाएँ सम्पन्न होती हैं। घर-परिवार और पुरजनों के बीच आपसी रिश्ते विकसित होते हैं। हर्ष का वातावरण हिलोरें लेता है। हर्षोल्लास का एक गीत दृष्टव्य है-

सोहर (ढोलक न्यौता)

ढोलक रानी मोरे नेउते म अउतिउ।
भये म अउतिउ, छठी म अउतिउ।
ढोलक रानी मोरे बरहौ म अउतिउ।
मुड़ने म अउतिउ, छेदने म अउतिउ।
ढोलक रानी तू पसनी म अउतिउ।
बरूआ म अउतिउ, बियाहे म अउतिउ।
ढोलक रानी तू गमने म अउतिउ।

ढोलक निमंत्रण का यह सोहर गीत अत्यन्त सारगर्भित है। इससे लोकमन का पुलक

और वाद्य प्रेम प्रकट होता है। वस्तुत: लोकजीवन राग और अनुराग में जीता है। ढोलक की थाप, गीत के तान और नृत्य की थिरकन से लोकजीवन तुष्ट और पुष्ट होता है। इसीलिए संस्कारों के साथ नृत्य-गायन और वादन की अक्षुण्ण परम्परा प्रवाहित हो रही है। गान-तान के विधान से जीवन-वितान पुष्पित है।

लोकाचार

बरहौं संस्कार पर नेगचार और लोकाचार की नाटकीयता देखते बनती है। जच्चा से ननद अपना नेग माँगती है। वह विशेष तरह के आभूषण के लिए हठ करती है-

ऐसी हठीली ननदिया हो,
ककना का मचलि गइ॥

जच्चा की तुनक मिजाजी सर्वाधिक नाटकीय होती है। वह अपनी सास से शिकायत करती है कि बरहौं निमंत्रण पर सभी रिश्तेदारों को बुलाया गया है। किन्तु मेरा भाई अब तक निमंत्रण पर नहीं आ पाया। मेरा मन उदास है। बरहौं संस्कार के लिए न तो आँगन लिपाया जाय और न ही 'चौक' पूरे जायें। मेरा मन बरहौं पूजने के लिए तैयार नहीं हो पा रहा है। संयोग से इसी समय जच्चा का भाई आ जाता है। जच्चा का हृदय प्रसन्नता से भर जाता है। वह खिल उठती है। अपनी सास से अनुरोध करती है कि अब बरहौं संस्कार की सभी तैयारियाँ शीघ्र की जायें। मेरा भाई आ गया है। अब मैं प्रसन्नतापूर्वक बरहौं पूजूँगी-

(अब) सासु अंगना लिपाबा
त चौक पुराबा हो
(अब) हम पुजबै वरहिया
वीरन भइया आये हो।

लोकाचार लोकमन की सहज क्रिया है। सामाजिक जीवन में सहयोग और समरसता स्थापित करने के लिए लोकाचार का परिपालन आवश्यक है। लोक-समाज इस विषय में पूर्णरूपेण जागरूक है। जीवन-संस्कारों के अवसर पर लोकमन पूरी निष्ठा और तत्परता के साथ लोकाचार के निर्वहन में निमग्न हो जाता है। यही कारण है कि लोक संस्कृति अनवरत प्रवहमान है। लोक समाज जीवन्त है।

घाट पूजा (कुआँ पूजन)

अभिप्राय - 1. दूध धार की मनौती, 2. प्रकृति और मनुष्य का सम्बन्ध, 3. सामाजिकता का विकास।

बरहौं संस्कार के उपरान्त घाट पूजन की प्रथा है। कहीं-कहीं पर यह प्रचलन एक माह

बाद सम्पन्न होता है। नदी अथवा तालाब के घाट पूजे जाते हैं। जहाँ नदी–तालाब नहीं होते वहाँ पर कुआँ पूजन होता है। घर–परिवार की स्त्रियाँ प्रसूता के साथ घाट पूजन के लिए पारम्परिक विधि–विधान के अनुसार जाती हैं। इस अवसर पर प्रसूता पहली बार घर से बाहर निकलती हैं।

अनुष्ठान

थाली में पूजन सामग्री सजाकर मंगल कलश सहित स्त्रियाँ सोहर गीत गाती हुई घाट तक जाती हैं। घाट पर या कुएँ पर गोबर से लीपकर चौक पूरे जाते हैं। कुल परम्परा के अनुसार विघ्न विनाशक देवी–देवताओं का पूजन किया जाता है। प्रसूता कुएँ से पानी निकालती है। फिर उसी पानी को कुएँ में डाल देती है। इसके उपरान्त प्रसूता अपने स्तन से दूध की धार कुएँ में डालती है। जल देवता से प्रार्थना करती है कि–

'जिस प्रकार यह कुआँ जल से भरा है उसी प्रकार मेरा स्तन भी दूध से भरा रहे।'

लोक विश्वास है कि कुआँ पूजन न करने पर प्रसूता के स्तन का दूध सूख जाता है। कुआँ पूजन अभिचार मनुष्य और प्रकृति के निकट सम्बन्ध को उजागर करता है। घर–परिवार की स्त्रियों की उपस्थिति में प्रसूता कुएँ से पानी निकालती है। अपने भीतर साहस पैदा करती है कि अब मैं पानी खींचने और गृहस्थी के हर काम करने योग्य हो गई हूँ। इस उपक्रम से प्रसूता की शारीरिक क्षमता प्रमाणित की जाती है।

इस अवसर पर महिलाएँ प्रसूता को आशीर्वाद देती हैं और कुआँ पूजन का गीत गाती हैं।

जल भरौं हिलोर–हिलोर रेसम कै डोरिया।
रेसम डोरी तब नीक लागै, जब सोने घइलना होय॥
सोने घइलना तब नीक लागै, जब रूपे गोड़रिया होय।
रूपे गोड़रिया तब नीक लागै, जब पातरि धनिया होय॥
पातरि धनिया तब नीक लागै, जब कोरा बालक होय।

प्रस्तुत सोहर गीत में लोक वैभव और लोकाचार का बड़ा सुन्दर चित्रण है। सामूहिकता और सद्भावना का मोहक विकास है।

निष्क्रमण संस्कार

निष्क्रमण संस्कार में शास्त्रीयता अधिक है। बालक के जन्म के चौथे महीने में इस संस्कार का विधान है। शरीर पंचतत्त्व– क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर से बना होता है। निष्क्रमण संस्कार में इन्हीं तत्त्वों के पूजन–आराधन का विधि–विधान है। बालक के लिए कामना की जाती है कि पृथ्वी लोक सुखद हो। सूर्य प्रकाश प्रदान करे। हृदय में शुद्ध वायु का संचार हो। गंगा पवित्र जल से अभिसिंचित करें।

अन्नप्रासन (पसनी)

जन्म के छः माह पश्चात् अन्नप्रासन संस्कार होता है।

अभिप्राय- 1. नवजात की पाचन शक्ति का विकास होना, 2. गर्भकाल में ग्रहण किये गये खाद्य का परिष्कार।

प्रायः जन्म के छः माह पश्चात् बच्चे की पाचन शक्ति उद्दीप्त हो जाती है तथा दाँत निकलने लगते हैं। गर्भकाल में शिशु अपनी माँ के रक्त से नाल द्वारा भोजन ग्रहण करता है। इस मलिन खाद्य का निवारण करने के लिए अन्नप्रासन संस्कार किया जाता है।

अनुष्ठान

घर का आँगन लीपकर चौक पूरे जाते हैं। शुभ मुहूर्त्त में देव-पूजन होता है। शिशु को नहला-धुलाकर नये वस्त्राभूषण पहनाये जाते हैं। माता वस्त्रालंकार धारण कर बच्चे को गोद में लेकर चौक पर रखे गये पीढ़े पर बैठती है। कुल परम्परा के अनुसार घर का ज्येष्ठ अथवा मामा-मामी स्वर्ण या रजत शलाका से बच्चे के मुँह में खीर चटाते (खिलाते) हैं। निम्नलिखित मंत्र पाठ का विधान है-

शिवौ त्रे स्तां ब्रीहि यवावबलासाव दो मधौ।
एवास्यक्ष्मं विवाधेते एवो मुंचते अंहसः॥

- अथर्ववेद- 8/21/8.

(हे बालक! जौ और चावल तुम्हारे लिए पुष्टिकारक हों, क्योंकि ये दोनों वस्तुएँ यक्ष्मा-नाशक हैं तथा देवान्न होने से पापनाशक हैं।)

अन्नप्रासन संस्कार में उल्लास और उमंग का वातावरण अवतरित होकर नृत्य-गान होता है। स्त्रियाँ अन्नप्रासन का सोहर गीत गाती हैं। बघेलखण्ड में प्रचलित अन्नप्रासन का सोहर गीत-

छापक पेड़ छिउलिया त पतबन छापक हो
(अब)ओठी तर ठाढ़ि हरिनिया हरिन का बिसूरइ हो
चरि-चोथि आबा हरिनमा त हरिनी से पूछइ हो
हरिनी की तोर चरहा झुरान की पानी बिन मुरझिउ हो ?
ना मोर चरहा झुरान ना पानी बिन मुरझेउ हो
हरिना आजु रमाइया कै पसनी तोहइ मरबइहीं हो

मचियइ बइठी कौसल्या रानी त हरिनी अरज करइ हो
रानी मसुआ त चुरिही रोसइया खलरिया हमैं देतिउ हो।

जब-जब बाजै खोझड़िया सबद सुनि अन कइ हो
हरिनी ठाढ़ि छिउविया के नीचे हरिन का बिसूरइ हो

उपरिलिखित 'सोहर' पीड़ा का लोक महाकाव्य है।

मुण्डन / कनछेदन

अभिप्राय- 1. बल एवं आयु वृद्धि, 2. पुंसत्व की प्राप्ति।

मुण्डन एवं कर्णछेदन संस्कार का सम्बन्ध शरीर विज्ञान से है। आरोग्य शास्त्र की सूचना के अनुसार मस्तक पर जहाँ बालों का भँवर होता है। वहाँ शरीर की नाड़ियों का मेल होता है। इसी स्थान पर शिखा रखने का विधान है। जन्म के एक, तीन, पाँच या सात वर्ष में मुण्डन संस्कार की मान्यता है। लोक विश्वास है कि झलरिहा (जिसके जन्म के बाल हों) बच्चे के लिए भूत-प्रेत, टोना-टोटका का अधिक भय रहता है।

अनुष्ठान

शुभ मुहूर्त्त में कुल-परम्परा के अनुसार किसी देवस्थान में यह संस्कार सम्पन्न होता है। जन्म नक्षत्र, राशि और दक्षिणायन सूर्य का समय निषिद्ध माना गया है। लोकोक्ति है-

'मूड़न, गमन, अजोरी पाख'

(मुण्डन और द्विरागमन शुक्ल पक्ष में होने चाहिए।)

मुण्डन के बाल धरती पर नहीं गिरने दिये जाते। बच्चे की बुआ अथवा नाई बालों को आटे की लोई में समेट लेते हैं। बाद में इसे किसी जलधारा में प्रवाहित कर दिया जाता है। मुण्डन संस्कार के लिए बुआ और नाई को नेग दिया जाता है। स्त्रियाँ सोहर और दादरे गीत गाती हैं। सिर में दही और मक्खन लगाकर बालक को स्नान कराया जाता है तथा नवीन वस्त्र पहनाये जाते हैं। खील-बताशे भी बाँटे जाते हैं।

कनछेदन (कर्णभेदन)

पुरुषत्व एवं स्त्रीत्व की पूर्णता के लिए यह संस्कार आवश्यक माना जाता है। सूर्य की किरणें कर्ण-छेद से शरीर में प्रविष्ट होकर बालक-बालिका को तेज और बल सम्पन्न बनाती हैं। तीन, पाँच या सात वर्ष में कुल रीति के अनुसार कर्णभेदन संस्कार करना चाहिए। घर या देवस्थान में लीप-पोतकर चौक पूरे जाते हैं। पवित्र चौक में बालक या बालिका को नवीन वस्त्र पहनाकर बैठाया जाता है। कोई कुशल स्वर्णकार स्वर्ण या रजत शलाका (सुई) से कर्णछेदन करता है। सुई बच्चे या बच्ची की बुआ अथवा किसी मान्य द्वारा तैयार कराई जाती है। इसके लिए उन्हें नेग दिया जाता है।

मंत्र पाठ

भद्र कर्णभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षमिर्य जन्नाः।
स्थिरैङ्गतुष्टवाः सस्तनू भिर्व्यशेभहि देवहितं यदायिः॥

– यजु. 25/2.

बालक के प्रथम दाहिने कान तथा बालिका के बायें कान में छेदन करके बालियाँ पहनाई जाती हैं। बालिका की बायीं नाक में छेदन की प्रथा है। यह आभूषण प्रियता का संकेत है। उल्लासमय वातावरण में संस्कार सम्पन्न होता है। नृत्य-गान की प्रथा है। औरतें सोहर, दादरे गीत गाती हैं। लोक मान्यता है कि छोटे-छोटे बच्चों की प्रायः मृत्यु हो जाती है जिसे कर्णछेदन संस्कार द्वारा रोका जाता है। यह अवधारणा कमोबेश आज भी लोकजीवन में मौजूद है।

बरुआ संस्कार (व्रतबंध)

व्रतबंध संस्कार वर्णाश्रम व्यवस्था का प्रदाय है। इस संस्कार से बालक ब्राह्मणत्व प्राप्त करता है। ब्राह्मण को द्विज कहा गया है। द्विज यानी दो बार जन्म। एक जन्म माँ के गर्भ से और दूसरा जन्म व्रतबंध संस्कार से। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों में भी इस संस्कार की परम्परा पाई जाती है।

जनेऊ (यज्ञोपवीत)

व्रतबंध संस्कार में जनेऊ धारण की अनिवार्यता है। चौरान्नवे अंगुल के सूत से जनेऊ के निर्माण की मान्यता है। पूरे सूत को खर (पक्का) करके तीन तागा (धागे) बनाया जाता है। तीन धागों का वृत्त बनाकर उसमें तीन गाँठें बनाई जाती हैं। इस प्रकार नौ ताग और तीन गाँठें तैयार होते हैं।

चौरान्नवे अंगुल का अर्थ–	चौरान्नवे अभिप्राय
नौ ताग का अर्थ–	नौ गुण
तीन गाँठ का अर्थ–	ब्रह्मा, विष्णु, महेश

जनेऊ को दायें कंधे में धारण कर द्विज संकल्प लेता है कि मैं– चौरान्नवे अभिप्रायों, नौ गुणों का पालन मन-वचन-कर्म से करूँगा। रामचरित मानस में जनेऊ के नौ गुणों का संघात होने का प्रमाण मौजूद है। श्रीराम, परशुराम से कहते हैं–

देव एक गुन धनुष हमारे।
नौ गुन परम पुनीत तुम्हारे॥

– रामचरित मानस.

व्रतबंध संस्कार विवाह के पूर्व का महत्त्वपूर्ण संस्कार है। यह कई चरणों में सम्पन्न होता है–

1. मटि मगरा (माटी मांगल्य), 2. मड़बा (मण्डप), 3. रिसाई (विद्याध्ययन के लिए प्रस्थान), 4. ब्राह्मण भोजन (प्रीतिभोज), 5. चौथी (समापन)।

अनुष्ठान-

माटी मांगल्य के उपरान्त मण्डप के नीचे मंत्री पूजन (देव पूजन) किया जाता है। आँगन में मण्डप के नीचे गोबर से लीपकर चौक पूरे जाते हैं। मध्य आँगन में मगरोहन गाड़ा जाता है तथा नया पीढ़ा और पाटी रखे जाते हैं। पीढ़े पर बैठाकर बालक का व्रतबंध संस्कार सम्पन्न किया जाता है। बालक के सिर के बाल उतारे जाते हैं तथा उसे हल्दी-रंगा वस्त्र पहनाया जाता है। कुलाचार्य शास्त्रोक्त विधि से व्रतबंध का विधि-विधान पूरा करते हैं। बालक जनेऊ धारण करता है और आचार्य उसे कान में सटकर गायत्री मंत्र सुनाते हैं। तत्पश्चात् द्विज से भिक्षाटन की परम्परा का पालन कराया जाता है। द्विज पहली भिक्षा अपनी माता से, फिर अन्न सगे सम्बन्धियों से ग्रहण करता है। बघेली में इस प्रथा को (भीख माँगना) कहा जाता है। खड़ाऊँ और पीला वस्त्र धारण किए हुए द्विज दण्ड लेकर विद्या अध्ययन के लिए बनारस की यात्रा पर निकलता है। यह क्रिया प्रतीक रूप में होती है। घर से बाहर थोड़ी ही दूर द्विज जा पाता है कि उसके मामा कुछ नेग देकर वापस बुला लेते हैं। बघेलखण्ड में इस रीति को रिसाई कहा जाता है। इस अवसर पर स्त्रियों द्वारा बरुआ के गीत गाये जाते हैं।

कोहवर

बरुआ संस्कार पर घर के भीतर कोहवर बैठाने की परम्परा बघेली अंचल में प्रचलित है। कोहवर कुल देवता का प्रतीक है, जो कल्याण प्रदाता माना गया है। बरुआ के कोहवर में ऊपर एक सिर बनाया जाता है जबकि विवाह के कोहवर में दो सिर बनाये जाते हैं, जो वर-वधू के प्रतीक होते हैं।

व्रतबंध संस्कार के अवसर पर ब्राह्मण भोजन (प्रीतिभोज) का उत्सव होता है। द्विज के घर पर सगे-सम्बन्धियों और हितैषियों को यथास्थिति कच्चा-पक्का भोजन कराया जाता है। दान-पुण्य करने का भी प्रचलन है। नृत्य-गीत आदि के द्वारा व्रतबंध संस्कार को सुखद तथा उल्लासपूर्ण बनाया जाता है। व्रतबंध संस्कार का अन्तिम पाठ चौथी छुड़ाना है। घर-परिवार की स्त्रियाँ मांगलिक गीत गाती हुई द्विज को उसके परिधान में किसी जलाशय तक ले जाती हैं। कुल परम्परा के अनुसार चौथी छुड़ाने की रीति निभायी जाती है। इस प्रथा में लोकाचार का अधिक बल पाया जाता है।

चौथी छुड़ाने के अभिप्राय में द्विज द्वारा भीख माँगने की प्रथा भी शामिल है। चौथी छुड़ाने वाले दल के साथ द्विज अपने गाँव या पड़ौस में किसी पाँच घर में भिक्षा माँगता है। लोग हँसी-

खुशी से द्विज की झोली में भीख डालते हैं। यह परम्परा शुभ मानी जाती है। प्राचीन काल में ऐसा माना जाता था कि– 'भिक्षा माँगना' ब्राह्मण का धर्म है। भिक्षाटन ही ब्राह्मण की वृत्ति और जीविका का साधन है। इसलिए व्रतबंध संस्कार के अवसर पर द्विज द्वारा पाँच घरों में भिक्षा मँगवाई जाती थी। उसे नसीहत दी जाती थी कि– द्विज तुम भीख माँगकर जीवन–यापन कर लेना, किन्तु कुमार्ग पर मत चलना। गलत तरीके से धन न कमाना। पाप कर्म न करना। पापान्न खाने से बुद्धि–चित्त दूषित होते हैं। प्रतीक रूप में आजकल भी यह प्रथा प्रचलित है।

विवाह

विवाह संस्कार की लोक व्याप्ति का आधार वेदों में विवाह बंधन का अंगीकार है। ऋग्वेद के एक तथा अथर्ववेद के दो सूक्तों में सोम और सूर्या के विवाह का वर्णन मिलता है। सोम और सूर्या प्रतीकात्मक रूपाकार हैं। इनके विवाह से ब्रह्माण्ड की एकसूत्रता लक्षित की गई है। लोक में नर और नारी का विवाह बंधन व्यक्तिगत हित नहीं, अपितु समाज की एकबद्धता के लिए स्वीकार किया गया है। पति–पत्नी परिवार को उसी तरह साध लेते हैं जिस तरह दोनों ध्रुव धरती को साधते हैं।

सोम और सूर्या के दाम्पत्य का वर्णन वेद में उपलब्ध है– सोम वधू की कामना करने वाला है। दोनों अश्विन वर के साक्षी हैं। सूर्या जो अपने पति के मन पर शासन करने में समर्थ है उसे सविता ने दिया है–

सोमो वधूयुर भवदश्विना स्तमुभा वरा।
सूर्या यत् पत्ये शसन्ती मनसा सविता ददात्॥

– ऋग्वेद. 10, 85, 9.

वर की खोज

विवाह संस्कार का आरम्भ वर की खोज से होता है तथा वर–वधू की वर के घर में परछन (आरती) के उपरान्त पूर्ण माना जाता है। वर की खोज विवाह का प्रथम चरण है। कन्या का पिता वर की तलाश करता है। कुल पुरोहित और नाई के माध्यम से भी वर की खोज की जाती है। वर की खोज बहुत महत्त्वपूर्ण और संवेदनशील संकल्प है। इसमें वर–कन्या के कुल–गोत्र, जन्मपत्री, उम्र और शिक्षा–दीक्षा पर विचार होता है। वर की खोज बड़ा कठिन कार्य होता है। लड़की की कद–काठी, योग्यता, वर्ण और स्वभाव के अनुकूल वर दुर्लभ होते हैं। कई–कई वर्षों तक वर की तलाश चलती रहती है। वर की खोज में आड़े आने वाली सबसे बड़ी समस्या 'दहेज' है। लड़की के पिता द्वारा वर और वर के माता–पिता को सन्तुष्ट करने के लिए विवाह हेतु दिया गया 'धन' दहेज कहा जाता है। 'दहेज' प्रथा के चिह्न वैदिककाल में भी मौजूद हैं।

सूर्या के आगे–आगे पिता सविता द्वारा दिया गया दहेज चलता है।

– चौमासा, अंक–52, पृ.–17.

रामायण काल में 'दहेज' का नया और अनूठा रूप मिलता है। जनक नंदिनी का विवाह चक्रवर्ती राजकुमार राम से होना था। राजा जनक चिंतित थे कि वर के पिता चक्रवर्ती दशरथ को दहेज देने के लिए उनके पास पर्याप्त निधि नहीं थी। राजा दशरथ को कैसे सन्तुष्ट किया जाय? मिथिलापुर की नारियों ने जनक को आश्वस्त किया कि वे मीठी-मीठी गारियाँ (लोकगीत का एक प्रकार) गाकर राजा दशरथ और बारातियों को प्रसन्न कर देंगी। ऐसा ही हुआ। एक पाठ प्रस्तुत है- मिथिला की नारियाँ राम को सम्बोधित करती हैं-

अति उदार करतूति दार, सब अबधपुरी की वामा।
खीर खाय सुत पैदा करती, पति केर कुछ नहीं कामा।

(अवध की नारियाँ बहुत उदार और निपुण हैं। खीर खाकर बेटा पैदा कर लेती हैं। उन्हें पति की जरूरत नहीं पड़ती।)

चतुर राम भला कब चूकने वाले हैं। वे जवाब देते हैं-

मात-पिता बिन कोउ न जन्मै, बंधी वेद कै बीती
तुम्हरे तो महि ते उपजत हैं, अस हमरे नहीं रीती॥

(माता-पिता के बिना किसी का जन्म नहीं होता। यह प्रकृति का नियम है। तुम्हारे (मिथिला) यहाँ तो धरती से सन्तानें पैदा होती हैं। ऐसी रीति हमारे अवध में नहीं है।)

कन्या के पिता के लिए वर की खोज की चिन्ता 'स्थायी भाव' बन गया है। लोक हृदय इस संकट को गहरे स्तर पर महसूसता है। विवाह संस्कार से जुड़े लोकगीत में पिता की पीड़ा उजागर है-

चिरई रे सोइगे
चुनूगुन सोइगे
सोइगे सहरबा के लोग
एक नही सोइन बपबा ओनहि राम
जेनकरि ढेरिया कुमारि .... ।

रात का सन्नाटा चारों ओर पसरा है। छोटे-बड़े सभी पक्षी (चिरई-चुनूगुन) सो गये हैं। शहर के स्त्री-पुरुष भी सो गये हैं। किन्तु लड़की (ढेरिया) का पिता जाग रहा है। पिता को नींद नहीं आ रही है, क्योंकि उसकी कुमारी लड़की घर में बैठी है। लड़की के ब्याह की चिन्ता पिता की नींद हराम किये हुए है। बड़ी ही मार्मिक वेदना है।

वरेच्छा

वर + इच्छा = वरेच्छा। बघेली में 'वरीक्षा' शब्द का चलन है। वरेच्छा का आशय है वर की इच्छा का सम्मान। लड़की का पिता वर के घर पहुँचकर अथवा किसी देवस्थान में शुभ

मुहूर्त्त में कुछ द्रव्य, वस्त्र, फलादि वर को देता है। वरेच्छा के उपरान्त लड़के-लड़की का विवाह निश्चित माना जाता है।

तिलक (फलदान)

तिलक संस्कार वरेच्छा का बड़ा संस्करण है। वर के घर में उत्सव होता है। सम-सामयिक लोकगीत गाये जाते हैं। इसी अवसर पर लड़की पक्ष वाले 'दहेज' का संकल्प वर पक्ष को सौंपते हैं। आचार्य द्वारा फलदान संस्कार सम्पन्न कराया जाता है। बघेलखण्ड में इस संस्कार को 'तिलक चढ़ाना' कहा जाता है। तिलक चढ़ जाने के उपरान्त वर-कन्या दोनों पक्ष विवाह की तैयारी में सन्नद्ध हो जाते हैं। बारात की तैयारी विवाह संस्कार की भूमिका है।

विवाह संस्कार कई चरणों में सम्पन्न होता है-

1. द्वारचार, 2. चढ़ाव, 3. पाणिग्रहण, 4. अंजुरी, 5. बारात विदाई।

द्वारचार कन्या के घर का उत्सव है। वर पक्ष के लोग अपने सगे-सम्बन्धियों और कुल-परिवार के लोगों के साथ कन्या के घर पहुँचते हैं। बारात की तैयारी सामाजिक प्रतिष्ठा का सवाल है। बड़ी लम्बी और खर्चीली तैयारी की जाती है। पिछले दिनों तक हाथी-घोड़ा, नाच-गाने वाले और बाजे-गाजे के साथ बारात सजाई जाती थी। वर्तमान परिवेश में बहुत कुछ बदल गया है। बारात के पहुँचने पर सबसे पहले कन्या पक्ष द्वारा बारात की अगवानी की जाती है। सजी-धजी बारात कन्या के दरवाजे पर पहुँचती है, जहाँ 'द्वार पूजा' होती है। स्त्रियाँ मंगल कलश लेकर निकलती हैं। आचार्य मंत्रोच्चार कराता है। स्त्रियों द्वारा द्वार पूजा के गीत गाये जाते हैं। वर पक्ष के लोग अपनी प्रसन्नता और सम्पन्नता उजागर करने के लिए सिक्के और बताशे फेंकते हैं। प्रत्युत्तर में कन्या पक्ष की स्त्रियाँ चावल छींटती हैं।

चढ़ाव

चढ़ाव का आचार मण्डप के नीचे सम्पन्न होता है। बारातियों को सम्मान के साथ मण्डप के नीचे आँगन में आसन दिया जाता है। सुष्ठु परिधान में कन्या मण्डप के नीचे आकर वेदी पर बैठती है। इस कार्य में नाइन कन्या की सहायिका होती है। वेदी के निकट आचार्य का यथोचित स्थान होता है। इस अवसर पर कन्या के साथ वर की उपस्थिति नहीं रहती। कन्या का सिर खुला रहता है तथा वह अपने हाथ में सेघौरी-सेघौरा लिए रहती है। कन्या का सिर खुला रखने की प्रथा का सामाजिक महत्त्व है।

पाणिग्रहण के उपरान्त कन्या के लिए ससुराल में घूँघट डालने की अनिवार्यता होती है। ससुराल में वधू का मुँह खुला देख पाना सहज नहीं रहता। इसलिए चढ़ाव के अवसर पर वधू का चेहरा देखने का विधान है। इससे वर पक्ष के लोग अपने लिए वधू से पहचान कायम करते हैं।

चढ़ाव के लिए जब कन्या घर के भीतर से निकलती है तो उसके पाँव के नीचे वेदी की दूरी तक 'पौद' बिछाई जाती है। पौद यानी आकर्षक साड़ी जो ससुराल से आती है। मांगलिक लोकगीत के साथ कन्या 'पौद' पर यात्रा करती हुई मण्डप के नीचे पहुँचती है। गीत दृष्टव्य है-

जइसै सेघौरा से सेन्दुर झलकइ
जइसै गंगा जुड़ पानी
वइसै झलक दइके निकरी ओनहि देई
बइठी चउकवा मां जाइ।

आचार्य मंत्रोच्चार करते हैं। पूजन का विधि-विधान होता है। स्त्रियाँ चढ़ाव के गीत गाती हैं। चढ़ाव के गीत अत्यन्त कारुणिक और हृदयग्राही होते हैं। मण्डप के नीचे का वातावरण भीग जाता है।

पाणिग्रहण

पाणिग्रहण विवाह का केन्द्रीय आचार है। दाम्पत्य जीवन का प्रस्थान बिन्दु है। पाणि = हाथ, ग्रहण = थामना यानी हाथ थामना। हाथ थामना मुहावरा है, जिसका आशय है- बोझ उठाना या जिम्मेदारी लेना। वर कन्या का हाथ थामकर उसे अपनी अर्द्धांगिनी के रूप में स्वीकार करता है। कन्या पत्नि हो जाती है और वर पति। कन्या 'पिता' का आश्रय छोड़कर पति के आश्रित हो जाती है। शब्द रचना में कितनी कलात्मकता है। 'पिता' शब्द के 'प' से 'इ' की मात्रा बदलकर 'त' पर चढ़ जाती है और 'पति' शब्द बनता है। भारतीय चिंतन में पत्नि-पति की जीवन संगिनी है। सहधर्मिणी है। पति को पत्नी की रक्षा का दायित्व आजीवन निभाना पड़ता है। श्रुति कथन है- बचपन में पुत्री की रक्षा पिता करता है। यौवन काल में पति करता है तथा वृद्धावस्था में पुत्र रक्षा का भार वहन करता है।

पाणिग्रहण संस्कार में वर-वधू एक साथ मण्डप के नीचे चौक में बैठते हैं। दोनों को एक नये पवित्र कपड़े द्वारा जोड़ दिया जाता है, जिसे गठबंधन कहा जाता है। आचार्य द्वारा विवाह के वैदिक मंत्रों का पाठ होता है। विवाह पद्धति के विधि-विधान, आचार-अभिचारों के परिपालन का विशेष ध्यान दिया जाता है। वर पक्ष और कन्या पक्ष के लोग मण्डप के नीचे उपस्थित रहते हैं। बाजे-गाजे बजते रहते हैं। स्त्रियाँ मधुर कंठी से विवाह गीत गाती हैं।

कन्या का पिता नहा-धोकर नवीन वस्त्र धारणकर चौक पर कन्यादान के लिए बैठता है। कन्यादान बहुत ही पवित्र और फलदायक आचार माना जाता है। इससे पिता का मन पवित्र होता है, साथ ही वह भार मुक्त होने के अतुलनीय सुख का अनुभव करता है। कन्यादान की महिमा का उल्लेख शास्त्रों-पुराणों में पाया जाता है।

भाँवर फिरना

कन्यादान के आचार में भाँवर फिरने का ऐतिहासिक और आध्यात्मिक मूल्य है। वर-

वधू मण्डप के नीचे सात फेरे लगाते हैं, जिसे भाँवर फिरना कहा जाता है। पण्डित के द्वारा सप्तपदी का वाचन किया जाता है। सप्त भाँवर के कई अभिप्राय हैं, यथा–

1. सप्त दीप पृथ्वी और सप्त सिन्धु, 2. सात पद साथ-साथ चलने से सम्बन्ध सुदृढ़ हो जाते हैं, 3. शरीर में सात चक्र स्थित हैं, 4. शरीर के सात रूप होते हैं, 5. वर-वधू सप्त प्रतिज्ञाएँ करते हैं।

उपरिलिखित यथार्थों को ध्यान में रखकर सात भाँवर की प्रतिष्ठा की गई है। भाँवर फिरते समय स्त्रियाँ भाँवर गीत गाती हैं जिसमें कन्या की आत्माभिव्यक्ति मुखर होती है। भाँवर गीत में मंत्रगीत की भाव प्रवणता पाई जाती है–

पहिली भमरि फिरि आयेन अबै आजा तोहरिन हो
दुसरी भमरि फिरि आयेन अबै आजी तोहरिन हो
तिसरी भमरि फिरि आयेन अबै बाबू तोहरिन हो
चौथी भमरि फिरि आयेन अबै माया तोहरिन हो
पंचवी भमरि फिरि आयेन अबै भइया तोहरिन हो
छठमी भमरि फिरि आयेन अबै भउजी तोहरिन हो
सतमी भमरि फिरि आयेन अब हम भयेन पराई हो।

पितृगृह के प्रति पुत्री के अटूट प्रेम का यह भाँवर गीत संवेदना का महाकाव्य है। भाँवर फिरती हुई कन्या बार-बार पितृ कुल से अपने सम्बन्ध को दुहराती है। छः भाँवर फिरने तक कन्या अपने को पितृ कुल से जुड़ी हुई बताती है। सातवीं भाँवर फिरने पर कन्या का सन्दर्भ बदल जाता है। वह 'वधू' हो जाती है। अपने पति की पत्नी हो जाती है। पत्नी की भूमिका से वह सार्वजनिक घोषणा करती है–

सतमी भमरि फिरि आयेन, अब हम भयेन पराई।

सातवीं भामरि फिरने के उपरान्त मैं पितृकुल से टूटकर दूसरे कुल (पतिकुल) की हो गई। सातवीं 'भाँवर' विवाह संस्कार की चरम परिणति है।

अनुष्ठान और अभिचार

विवाह संस्कार में प्रमुख रूप से निम्नलिखित अभिचार और अनुष्ठान सम्पादित होते हैं–

1. शिल पोहनी, 2. सिन्दूर दान, 3. पौ पखन्नी, 4. लावा परसाई, 5. अग्नि-पूजन, 6. वाती मेरवाई, 7. कोहबर, 8. वरायन, 9. मगरोहन।

'शिल पोहनी' शिला पर वर-वधू के खड़े होने का आचार है। शिला कठोर होती है। शिला की उम्र लम्बी होती है और उसमें परिवर्तन देर से तथा धीरे-धीरे होता है। शिल पोहनी का अभिप्राय है–

1. दाम्पत्य जीवन का स्थायित्व, 2. पति द्वारा पत्नी को दृढ़ आधार देना।

प्राचीन काल में पति-पत्नी दृढ़ शिला पर खड़े होकर इस आचार को पूर्ण करते थे, किन्तु अब प्रतीक रूप में मण्डप के नीचे सिलउटी के ऊपर वर-वधू खड़े किये जाते हैं। दृढ़ तथा स्थायी दाम्पत्य जीवन की कामना की जाती है। पति अपनी पत्नी को दृढ़ आधार प्रदान करने का मानसिक संकल्प लेता है।

'**सिन्दूर दान**' पाणिग्रहण का प्रमाण-आचार है। वर द्वारा कन्या की माँग में सिन्दूर भरा जाता है। जब तक कन्या की माँग में सिन्दूर नहीं भरा जाता है वह कुमारी मानी जाती है। सिन्दूर भरी माँग कन्या के विवाहित होने का प्रमाण है। पत्नि के लिए माँग के सिन्दूर का बहुत बड़ा महत्त्व होता है। पति के जीवनकाल तक ही पत्नी माँग में सिन्दूर भरती है। विधवा स्त्रियों के लिए माँग में सिन्दूर भरने का निषेध है। 'माँग का सिन्दूर' मुहावरा बना हुआ है। पति को माँग का सिन्दूर माना जाता है। कोई स्त्री जब कहती है कि- 'वह मेरी माँग का सिन्दूर है' - इसका आशय है 'वह मेरा पति है'। 'सिन्दूर की लाज' पत्नी की चारित्रिक पवित्रता के लिए प्रयुक्त होता है। यही मुहावरा पति के लिए पुरुषार्थ और चुनौती के लिए प्रयुक्त होता है। वीरगाथाकाल में जब पति युद्ध में जाया करते थे तो पत्नियाँ उनके माथे में विजय का टीका लगाती थीं। 'सिन्दूर की लाज' रखने का आश्वासन लेती थीं।

'**पउ पखरनी**' यह पूजन की क्रिया है। सर्वप्रथम कन्या के माता-पिता वर-वधू के पद का पूजन करते हैं। नई थाल में जल में कुछ द्रव्य, रुपये-स्वर्ण आदि सहित यह पूजन किया जाता है। परिवार के सदस्य और सगे-सम्बन्धी भी पद-पूजन करते हैं। पद-पूजन का अभिप्राय है- वर-वधू के पाँव की पवित्रता स्वीकार करना तथा आदर देना। स्त्रियाँ पद-पूजन के गीत गाती हैं-

थारी रे कांपइ, गेडुआ रे कांपइ,
कांपइ कुशा कै डोरि।
मड़ये तर कांपइ बपबा ओनहि राम,
देत कुमारी का दान॥

पद-पूजन का आचार अत्यन्त भावुक होता है। लगता है कि पानी भरा थाल और जग (गेडुआ) कम्पित हो रहे हैं, जिस कुशा से पण्डित जल सींच रहा है, वह भी काँप रहा है। मण्डप के नीचे कन्यादान देते हुए पिता भी हर्ष विकम्पित हो रहे हैं।

मण्डप के नीचे शुभकामना के लिए लावा परसने की प्रथा है। कन्या का भाई धान की खील और बताशे छींटता है। वर पक्ष की ओर से उसे नवीन वस्त्र प्रदान किये जाते हैं।

अग्नि वैदिक देवता है। पाणिग्रहण पर्व पर मण्डप के नीचे अग्नि-पूजन का अभिचार वैवाहिक बन्धन की पवित्रता तथा साक्ष्य के लिए किया जाता है। अग्नि को सर्वाधिक निर्मल

और तेजस्वी साक्ष्य माना गया है। राम और सुग्रीव की मित्रता अग्नि के ही साक्ष्य में हुई थी-

'पावक साखी देइ कइ, जोरी प्रीति बढ़ाइ'

- रामचरित मानस, किष्किंधा काण्ड.

वर-वधू के राई-लोन उतारकर नाइन मण्डप के नीचे जलती हुई आग में डालती है। यह लोकाचार है। वर-वधू को किसी की कुदृष्टि न लगे, दुरात्माएँ कोई अहित न कर पायें, इसलिए राई-लोन उतारने का अभिचार किया जाता है। नाइन को इसके लिए दक्षिणा दी जाती है।

'कोहवर' कोह (कक्ष) वर (श्रेष्ठ)। घर के किसी श्रेष्ठ कमरे में कोहवर का अंकन किया जाता है। कोहवर पारम्परिक लोक भित्ति-चित्र है। कोहवर का आशय कुक्षि भरने से भी लिया जाता है। 'वर-वधू' कोहवर के सम्मुख बैठकर चित्रांकन में तेल की धार डालते हैं और कुक्षि भरने का आकल्पन करते हैं। बघेलखण्ड में यही अभिप्राय ग्रहण किया जाता है। कोहवर का अंकन कुमारी कन्या अथवा कुल-परिवार की निपुण महिला नहा-धोकर बड़ी पवित्रता के साथ करती है। वर पक्ष और कन्या पक्ष दोनों के घरों में कोहवर बनाया जाता है। विवाह के कोहवर में दो मस्तक होते हैं, जो पुरुष-स्त्री के प्रतीक होते हैं। आयताकार आकृति के भीतर प्रत्येक पंक्ति में तेरह कुमकुम की बिंदियाँ बैठायी जाती हैं। इस प्रकार प्रत्येक पंक्ति में तेरह त्रिभुजों की रचना हो जाती है। सफेद और लाल रंग से कोहवर बनाने की परम्परा है। कोहवर कक्ष में प्रवेश करते समय दरवाजे पर वर के सामने मूसल अढ़ाने का लोकाचार प्रचलित है। यह लोकाचार वधू की सहेलियाँ करती हैं। इस प्रथा से वर के पौरुष का परीक्षण किया जाता है। वर अपनी शक्ति से मूसल को धक्का देकर कोहवर कक्ष में प्रवेश कर जाता है। कोहवर कक्ष के भीतर भी वधू की सहेलियाँ वर के साथ खूब छेड़-छाड़ करती हैं। वर से कई प्रकार के चुलबुले प्रश्न पूछे जाते हैं। वर उनका उत्तर देता है। वर की बौद्धिक क्षमता की पड़ताल करने का यह नायाब तरीका है।

कोहवर के सम्मुख वाती मेरवाई का आचार पूरा किया जाता है। इसे जोत मिलाई भी कहा जाता है। दीपक की जलती हुई दो बत्तियाँ अलग-अलग रख दी जाती हैं। वर को इन्हीं बत्तियों को आपस में मिलाना होता है। यदि बत्तियाँ आपस में सुगमता से ठीक ढंग से मिला दी जाती हैं तो दाम्पत्य जीवन सुन्दर और सुखद माना जाता है। वर पक्ष के स्वामी के द्वारा वर को वाती मेरवाई का नेग दिया जाता है।

वर के घर में बने कोहवर का पृथक सन्दर्भ है। ससुराल पहुँचने पर वधू को डोली से उतारकर कोहवर गृह में ले जाया जाता है। वधू आगे-आगे छोटी-छोटी टिकरियों (कच्ची रोटियों) पर पाँव रखती हुई चलती है। वर पीछे से टिकरियों को उठाता चलता है। इस आचार से पति का पत्नी के प्रति समर्पण और निष्ठा उजागर होती है। पति गृह के कोहवर के सम्मुख एक विशेष लोकाचार पूरा किया जाता है। एक वइला (लकड़ी का बना अनाज मापने का पात्र) में धान भरता है। पत्नी लात (पाँव) मारकर उसे अड़ा (छितरा) देती है। पति-पत्नी के बीच पाँच-

सात बार कुल परम्परा अनुसार यह क्रिया दोहराई जाती है। बड़ा ही विनोद भरा आचार होता है।

'मगरोहन' और 'वरायन' स्वस्ति सूचक उपकरण हैं। गाँव या पड़ौस का कुशल लकड़ी का कारीगर लकड़ी का मगरोहन बनाकर मण्डप के नीचे गाड़ता है और अपना नेग लेता है। वरायन नये का होता है जिसमें कलाकृतियाँ अंकित की जाती हैं। मण्डप के नीचे मगरोहन और वरायन के पूजन का विधान है। लोकगाथाओं में इस अभिचार का उल्लेख है। रेवा जादूगरनी के विवाह में अप्रत्याशित घटित हुआ था। रेवा जैसे ही पहली भाँवर फिरी कि मण्डप के नीचे रखा गया 'सिल' फूट गया। दूसरी भाँवर में वरायन फूट गया। तीसरी भाँवर में मगरोहन फट गया। चौथी भाँवर में मण्डप गिर गया। पाँचवी भाँवर में पण्डित मूर्छित हो गया। छठी भाँवर में वर-वधू के बैठने वाला पीढ़ा फट गया। इस अनहोनी को अशुभ माना गया था। फलित भी ऐसा ही हुआ। रेवा का प्रणय बन्धन स्थायी और सुखद नहीं रहा।

पहली भमरी सिला फूटि गा
दूसरी फूट बरैना
तिसरी भमरी फटा मगरोहना
चौथी मड़वा गिरा भहराय
पंचवी भमरी पण्डित मूर्च्छा
छठमी भमरी पीढ़ा फाट
सतमी भमरी फिरी जब रेबा
मचिगा हाहाकार।

- लोक कंठ से

'**विदाई**' विवाह संस्कार का समापन उपक्रम है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित प्रथाएँ पूरी की जाती हैं :-

1. मण्डप हिलाना, 2. परछन।

वर का पिता जिसे बघेलखण्ड की संस्कृति में समधी कहा जाता है, अपने सगे-कुटुम्बियों के साथ मण्डप के नीचे आता है। कन्या पक्ष की समधिन भी परिवार की स्त्रियों के साथ मण्डप के नीचे एकत्र होती हैं। वर पक्ष का समधी मण्डप के कुछ बँधने (बन्धन) खोलता है और मण्डप को हिलाता है। कन्या पक्ष के द्वारा मण्डप में कुछ रुपये पहले से अटका (छिपा) दिये जाते हैं। मण्डप हिलाने पर यही रुपये वर पक्ष के समधी के हाथ लगते हैं। यह मण्डप हिलाने या खोलने का नेग माना जाता है।

समधिनें, समधी का सत्कार करती हैं। काजल टीका लगाती हैं। रंग-अबीर डालती हैं। दोनों पक्षों द्वारा विदा गीत और होली गीत गाये जाते हैं। इसी अवसर पर वर पक्ष के समधी मण्डप के नीचे एकत्र समधिनों को अपने अंगोछे में बाँध लेते हैं। समधिनें बन्धन में आकर परतंत्र हो जाती हैं। एक लोकगीत गाया जाता है-

लत्ता कै बांधी न रहबै हो समधी
लत्ता के बांधी न रहबै
सोन कै सांकरि गढ़ाबा हो समधी
लत्ता कै बांधी न रहबै।

समधिनें चुनौती देती हैं- लत्ता के बन्धन में मैं नहीं बंध पाऊँगी। अगर हमें बाँधना ही है तो सोने की सांकर (चेन) बनवाओ और बाँधो। इस उद्घोषणा से वातावरण प्रफुल्ल हो जाता है।

'**परछन**' लोकाचार वर-वधू की आरती है। यह अभिचार विवाह संस्कार के समापन पर सम्पन्न होता है। वर-वधू दोनों के घर पर परछन की अभिक्रियाएँ एक समान होती हैं। परछन के गीतों में अन्तर देखा जा सकता है। वधू के घर पर गाया जाने वाला गीत इस प्रकार है-

'अबके गये कब अउबे सियावर?'

वर-वधू को राम-सीता के रूप में देखा जाता है। वधू के घर की स्त्रियाँ पूछती हैं कि- 'सियावर' आज आप विदा हो रहे हैं। यह तो बताइये अब आप अपनी ससुराल कब आयेंगे?

परछन का अभिचार थाली में दीप जलाकर किया जाता है। बघेलखण्ड में इसकी अलग पद्धति है। बाँस से बने नये सूप में गीले आटे की कुछ टिकरियाँ रखी जाती हैं। उन टिकरियों को स्त्रियाँ डोली के ऊपर से बारातियों की ओर फेंकती हैं। बाराती बड़ी सावधानीपूर्वक टिकरियों को ऊपर ही लोक (कैच) लेते हैं। इससे रसमय वातावरण की सृष्टि होती है।

वधू के घर पर होने वाली परछन में गाये जाने वाले गीत की अलग पहचान है।

बियाहि लाये रघुवर जानकी का,
अपने का लाये राम हाथी औ घोड़ा
सजाय लाये म्याना जानकी का॥

राम (वर) जानकी (वधू) को ब्याह कर वापस आ गये। दहेज में अपने लिए हाथी-घोड़ा ले आये हैं और वधू को म्याना में बैठाकर ले आये हैं।

'**मृत्यु संस्कार**' में गीतों का चलन बघेलखण्ड में नहीं पाया जाता है। कर्मकाण्ड का विधि-विधान अवश्य सम्पन्न होता है, जो निम्नलिखित चरणों में निभाया जाता है :-

1. दाह संस्कार, 2. फूल उठाना, 3. दस गात्र, 4. एकादशः, 5. तेरहवीं, 6. मासिक श्राद्ध, 7. वार्षिक श्राद्ध।

वार्षिक श्राद्ध के उपरान्त पितरों का पिण्डदान किया जाता है। पिण्डदान गया तीर्थ में करने की शास्त्रीय आज्ञा है। क्वार माह के पितृ पक्ष में गया जाकर पिण्डदान दिया जाता है। यह आचार बेटे के द्वारा होता है। जब तक गया में पिण्डदान नहीं हो जाता तब तक पितर घर में ही वास करते हैं। पितृ पक्ष में उन्हें जल और हवन देना पड़ता है। यह बहुत ही श्रेष्ठ और उदार

धार्मिक चेतना है। लोक श्रुति है कि कोई मुसलमान सम्राट पिता मर रहा था। उसने अपने बेटे से पानी मांगा। बेटे ने पानी देने से इन्कार किया, तब मरते हुए पिता ने टिप्पणी की–

– धन्य है वह हिन्दू दीन जो अपने मरे हुए पिता को भी पानी देता है। और अपना दीन यह कि जीवित पिता को भी बेटा पानी नहीं दे रहा है।

संस्कार, संस्कृति के पहरुये हैं। संस्कारों में लोक जीवन हँसता है। नदियाँ गाती हैं, पहाड़ नाचते हैं। ऋतुएँ आरती उतारती हैं, प्रकृति संस्कृति रचती है।

सोहर (मनाउती)

नहाइ धोई ठाढ़ि ननदिया,
त सुरुज मनावइ हो।
सुरुज भउजी क देहु नंदलाल,
उठाइ लइ जाबइ हो।

भावज अभी पुत्रवती नहीं है। नहा-धोकर ननद सूर्य से प्रार्थना करती है– सूर्यदेव! भावज को पुत्र दीजिए। मैं उस पुत्र को अंक में उठा लूँगी।

सोहर (मनाउती)

खिरकी से बहुआ नहाइनि, सुरुज पइयां लागइ हो।
आवा सुरुजेन अंचरा फहराइनि, त गरभ जनानेउ हो।
पूत मोरा बसइ विदेशवा, बहुआ धमधूसरि हो।
बहुआ कउन छैला चित डारिउ, त गरभ जनाइउ हो।
संझहिन डोरी लगायेउ, आधी रात बांधेन हो।
सासू चीन्हा तूं आपन पुतवा, लांछन न लगावउ हो।

बहुरानी, स्नान कर सूर्यदेव के पाँव पड़ीं। अपना आँचल फैलाकर सूर्य का आवाहन किया। वह गर्भवती हो गई। सास को बहू के चरित्र पर सन्देह होता है कि मेरा पुत्र तो परदेश में है, बहू पूरी जवानी पर है। वह बहू से पूछती है कि– तुमने किस प्रेमी से अनुचित सम्बन्ध स्थापित कर गर्भधारण किया है। बहू पवित्र है। वह अपनी पवित्रता प्रमाणित करने के लिए संध्या से ही अपने परदेशी पति का स्मरण करने लगी। मध्य रात्रि में पति स्मरण करने वाली पत्नी के सम्मुख प्रकट हुआ। बहू अपनी सास को पुकारती है कि– सास जी! अपने पुत्र को पहचान लीजिए। आपके पुत्र मध्य रात्रि में ऐसे ही नित्य प्रकट होते हैं। उन्हीं से मैं गर्भवती हुई हूँ। मुझे कलंकित मत करिये।

सोहर (मनाउती)

पहिल महिनमा जो लाग, माथा मोर टनकइ हो।
अब दूसर महिनमा जउ लागा, बदन मोर सिहरइ हो।
तिसर महिनमा के लागत, गोड़ मोर फाटइ हो।
चउथ महिनमा के लागत, अंबिलिया कइ साधि लागइ हो।
स्वामी पंचमा महीना जब लाग, मछरिया चित लागइ हो।
छठमा महीना जब लागै, नेबुलवा कई साधि लागइ हो।
स्वामी सतमा महीना जब लागे, नइहरवा संदेस भेजा हो।
अठमा महीना जब लागै, भिनसारे जिउ अकुलाने हइ हो।
नउमा महीना जब लागै, त थर-थर परान कांपे हो।

पहले महीने का गर्भ स्थिर होने पर बहू बताती है कि मेरा सिर दुखने लगा है। दूसरे महीने में मेरी देह में फुरहुरी आने लगी है। तीसरे महीने में मेरा पाँव फटने लगा है। चौथे महीने में इमली खाने की इच्छा होती है। पाँचवें महीने में मछली खाने को मन होता है। छठें महीने में नींबू चूसने की ललक उठती है। मेरे प्रियतम! अब सातवाँ महीना लग चुका है, मेरे मायके में इसकी सूचना भिजवा दीजिए। आठ महीने का गर्भ होने पर भिन्सारे पहर मेरा जी व्याकुल होने लगता है। नौवां माह पूरा होने पर प्रसव का समय आ गया है। प्रसव पीड़ा के भय से मैं कँपी जा रही हूँ।

सोहर (मनाउती)

ननदि भउजी मिलि बइठीं, त एकुमति कीन्हिनि हो।
भउजी जउ तोर होइहंइ नंदलाल, चुनरिया लइ लेबई हो।
ननदी तुहइ मोरी ननदी, तुहइ मोरी सब कुछ हो।
ननदी तोहरा बचन फुरि होतें, चुनरिया दइ देबई हो।
आठ महिनमा के बीते नमये लाला जनमें हईं हो।
आवा बाजइ लागीं आनंद बधइया, गांमइ सखी सोहर हो।
धीरेनि बजइ रे बधइया, धीरेनि उठइ सोहरि हो।
आवा सुनइ पइहीं ननदी हमारि, बधइया लइके अइहइं हो।
चुनरिया लइ लेइहइं हो।
सउ रे लगइ मोरे घुंघरे, सबइ सउ छोरेउ हो।
आवा सउ रे लगइ मोर अंचरे, चुनरिया नहिं देवइ हो।

ननद-भावज आपस में वार्तालाप करती हैं। ननद कहती है कि- भावज! यदि तुम्हारे पुत्र होगा तो मैं तुमसे चुनरी लूँगी। भावज दुलार से कहती है कि- ननद! तुम तो मेरी सर्वस्व हो।

तुम्हारा कथन सत्य हो, मैं तुम्हें चुनरी अवश्य दूँगी। आठ माह पूर्ण होने पर पुत्र पैदा हुआ। आनन्द के बाजे बजने लगे। सखियाँ सोहर गाने लगीं। सोहर गीत के साथ बधाई का बाजा बजने लगा। भावज के मन में खोट आ गई। वह सोचने लगी कि ननद को पता चलेगा तो वह बधाई लेकर आएगी और मुझसे चुनरी ले लेगी। सौ रुपया का खर्च मुझे घुँघरू बनवाने में लगेगा और सौ रुपया ही साड़ी के पल्लू में लगेगा। सौ रुपये आँचल की रंगाई में खर्च होगा। इसलिए अब ननद को चुनरी नहीं दूँगी।

सोहर (प्रसव पूर्व)

ननदि भउज मिलि बइठइं त दुनउ होड़ा फांदी करइं हो।
हो ननदी जउ मोरे होइहइं नंदलाल, कंउन घर लिपउबू हो।
एतना जो सुनिनि हइ ननदिया, त धाइ मयरि लागे हो।
माया बड़े हरबहवा कइ बेटी, लीपवा घर बुसउल हो।
एतना जो सुनइ पिया साहेब, माया समझावइं लागे हो।
माया बड़े हो राजन केरी बेटी, लिपावा गज ओवरिउ हो।

ननद-भावज एक साथ बैठकर शर्त लगाती हैं- ननदरानी! यदि मेरे पुत्र होगा तो प्रसव के लिए कौन सा घर लीपोगी? इतनी बात सुनकर ननद दौड़ी-दौड़ी अपनी माँ के पास जाती है। ईर्ष्यालु ननद माँ से कहती है कि- भावज हलवाहे की बेटी है। उसके प्रसव के लिए भूसा रखने वाले निकृष्ट घर की पुताई करो। बहू के पति ने यह बात सुन ली और माता को समझाने लगा- बहू बड़े घर की बेटी है। उसके प्रसव के लिए सुन्दर और समृद्ध घर की पुताई कराओ।

सोहर (प्रसव पूर्व)

एक हाथ लिहे बहु गोबर, दूसर हाथ पानीउ हो।
सासू जउन ओवरिया बतावा, तउन हम लीपी हो।
एतना जो सुनिसि ननदिया, त माया समझावइं हो।
माया भउजी त बिटिया पजइहीं, लीपावा घर बुसउल हो।
बिदेशवा से आये हैं स्वामी, त माया समझावइं हो।
माया तिरिया बहुत सुकुमार, लीपावा गज ओवरिउ हो।

गर्भवती बहू स्वयं एक हाथ में गोबर और दूसरे हाथ में पानी लेकर पूछती है कि- सासजी! प्रसव के लिए मैं किस घर की पुताई करूँ? ननद अपनी माँ से कहती है कि- भावज के पुत्री पैदा होगी। इसलिए भूसा रखने वाले घर की ही पुताई कराई जाय। इसी समय परदेश से बहू के पति आ गये और अपनी माँ को समझाते हैं कि- बहू बहुत सुकुमार है, अत: प्रसव के लिए गजओवरी अर्थात् अच्छा-सा घर लीपा जाय।

सोहर (प्रसव पूर्व)

पहिलइ पेट पहिल उठी बहुआ बड़ी लेल्हरि हो।
आवा रमति-गमति आवइ पीर मैं केहि गोहराइउ हो।
सासु मेरी सोवति ओसरवा, ननदि गजओवरिउ हो।
आवा प्रभु सोमइं रंगी महलिया, मैं केहि गोहराई हो।
सासु कइ दविउं मैं अंगुरिया, ननदि कइ छंगुरियउ हो।
आवा प्रभु जी कइ दावेउ पेंडुलिया, जगाये नहि जागइ बोलाये नहि बोलई हो।
होत बिहान लोही लागत ललना जनम भये हो।
आवा बाजइ लागीं आनंद बधइया, गामइं रे सखी सोहरि हो।
सासु त उठि हमइं गावति ननदि बजावत हो।
आवा प्रभु जी त उठे मुसकात, त पटना लुटउतें हो।

दुलारी बहू पहली बार माँ बनने वाली है। रह-रहकर प्रसव पीड़ा हो रही है। बहू सोचती है कि कष्ट निवारण के लिए वह किसको पुकारे। बहू की सास ओसरी में सो रही है। ननद मुख्य घर में सोयी है। पतिदेव रंगमहल में सोये हैं। बहू जाकर अपने सास की अँगुली दबाती है। ननद की छंगुली और पति की पेडुली दबाती है। फिर भी कोई नहीं जागता। प्रातः मुहूर्त्त में पुत्र पैदा होता है। प्रसन्नता के वातावरण में सखियाँ सोहर गाने लगती हैं, बधाई-वाद्य बजने लगते हैं। बहू की सास सोहर गाती हुई, ननद बाजे बजाती हुई उठती हैं। पुत्र जन्म की खुशी में पति हँसते हुए उठकर दान लुटाने लगते हैं।

सोहर (प्रसव पूर्व)

अमवा लगाये क बड़ा फल जउ अम्वा बउरइं हो।
आवा अमवा मं लगि गई टिकोरिया सुगन फल गदरइं हो।
सगरा खनाये क बड़ा फल, जउ जल ओगरइ हो।
आवा गउवा पियइं जूड़ पानी, त पुरइनि हलकइ हो।
पुतवा पजाने का बड़ा सुख, जउ घर सम्पत्ति हो।
आवा ससुरु बइठे चउपारी, त पटना लुटामैं हो।

आम का वृक्ष लगाने का बहुत पुण्य है। आम में बौर आते हैं और छोटे-छोटे कच्चे आम को सुआ कुतरते हैं। तालाब खोदना बहुत पुण्य का काम है, यदि उसमें पानी आ जाय, जिसमें कमल खिलें और गायें पानी पियें। पुत्र पैदा करना सुखदाई होता है यदि घर में सम्पत्ति हो। बहू के ससुर नाती पैदा होने पर लोगों को पुरस्कृत करने लगे।

सोहर (न्यौता)

ढोलक रानी मोरे नेउते म अउतिउ
भये म अउतिउ, छठी म अउतिउ
ढोलक रानी मोरे बरहौ म अउतिउ
मुड़ने म अउतिउ, छेदने म अउतिउ
ढोलक रानी तू पसनी म अउतिउ
बरुआ म अउतिउ, बियाहे म अउतिउ
ढोलक रानी तू गमने म अउतिउ।

चुलबुली नायिका ढोलक को अनेक संस्कारों में उपस्थित रहने के लिए निमंत्रित करती है। ढोलक रानी जन्मोत्सव में और छठी में आओ। बरहँव, मुण्डन और कनछेदन में आओ। ढोलक रानी! तू अन्नप्रासन, व्रतबंध और विवाह संस्कार में आओ। ढोलक रानी! तू द्विरागमन में आओ।

सोहर (न्यौता)

अंगने म ललनमा केकर खेलैं?
हम तोहसे पूंछी बतावा धना।
तूं त कमाने सामी रुपिया-पइसा।
हमहूं कमानेन ललनमा।
काहे का मोरे सामी बात चोराई।
देवर से लड़िगै नजरिया।

परदेशी पति, पत्नी से पूछता है कि आँगन में किसका लाल खेल रहा है? पत्नी उत्तर देती है- हे प्रियतम! आपने परदेश में रुपया कमाया है और मैंने घर पर लाल की कमाई की है। मेरे स्वामी! आपसे मैं क्या छिपाऊँ? देवर के साथ आँखें चार हो गईं।

सोहर (न्यौता)

गंगा-गंगा गोहराबै गंगा नहि बोलै हो।
गंगा आपनि लहरि एक देतिउ मैं तोहि बीच डुबतेउ हो।
धौं तोर सास-ससुर दुख दीन्हिन, धौं नइहर दूर बसै हो।
तिवई धौ तोर कंत विदेस, कउन दुख डुबतेउ हो।
नही मोरे सास-ससुर दुख, नही मोर नइहर दूरि बसै हो।
अब नही मोर कंत विदेश, कोखिया दुख डुबतेउ हो।
जाहु तिबइया घर अपने, लउटि घर अपनेन हो।

अब आठ महिनमा के बीते, ललन तोहरे होइहीं हो।
होरिल तोहरे होइहीं।

सन्तानहीन नायिका गंगा से निवेदन करती है कि- गंगे! मुझे अपनी लहर दे दो, मैं डूब मरूँगी। दुखी नायिका से गंगा पूछती हैं कि- क्या तुम्हारे सास-ससुर ने कुछ कष्ट दिया या तुम्हारा पितृगृह दूर है या पति परदेश में है, जिससे दुखी होकर तू मेरी लहरों में डूबना चाहती हो? नायिका बताती है कि- न मेरे सास-ससुर ने दुख दिया, न मेरा मायका ही दूर है और न ही मेरे पति परदेश में हैं। मैं सन्तानहीन हूँ। इसी दुख के कारण हे गंगा माँ! मैं तुम्हारी लहरों में डूबना चाहती हूँ। गंगा आशीर्वाद देती हैं- तन्वंगी निराश मत हो, अपने घर जाओ, आठ महीने के पश्चात् तुम्हारी कोख धन्य होगी। दुलारा लाल पैदा होगा।

सोहर (न्यौता)

गंगा के तीरे हर जोतेउ पियरिया भलि माटी हइ हो।
आवा जाइ जगाबा फलाने राम
तोहरे घरे नाती भये हो।

पुत्रवती स्वीकार करती है कि गंगा तट की मिट्टी बहुत प्रिय और वरदायिनी है। मैंने वहीं पर यज्ञ किया, फलस्वरूप पुत्र की प्राप्ति हुई। बड़ी प्रसन्नता है। कोई जाकर फलाने राम (बाबा का नाम) को जगाये और सूचित करे कि आपके नाती हुआ है।

सोहर (रोचना)

हंकरा नगर केर नउआ, हंकरि बेगि आबहु हो।
नउआ सीता के भये नन्दलाल रोचन पहुंचावा हो।
पहिल रोचन राजा दशरथ, दूसर कौशल्या रानी हो।
आवा तिसर रोचन लछिमन देवरा, पपिअबा न बतायेउ हो।
चारि खूंट केर सगरा, त राम दतूनी करैं हो।
लक्षिमन भहर-भहर तोहर माथ रोचन कह पायेंउ हो।

नगर के नाऊ शीघ्रता करो। सीता के पुत्र पैदा हुआ है। इसकी सूचना शीघ्र पहुँचाओ। पहली सूचना ससुर दशरथ को देना और दूसरी सास कौशिल्या को। तीसरी सूचना (रोचन) देवर लक्ष्मण को देना। किन्तु मुझे वनवासिनी बनाने वाले पति राम को पुत्र जन्म की सूचना मत देना। तालाब में राम दातून कर रहे थे। इसी समय ललाट पर हल्दी चावल (रोचन) लगाकर लक्ष्मण आ गये। आश्चर्यचकित राम पूछते हैं- लक्ष्मण! तुम्हारा भाल दमक रहा है। यह रोचना तुम्हारे ललाट पर किसने लगाया है?

सोहर (रोचना)

भमरा त गये हइं विदेश, बहुआ कये नइहर हो।
भमरा सुनिले बहुआ का हंकार, केहिय-केहि नेउतेउ हो।
नेउतेउ सासु केर भाई, ननदि केर सासुर हो।
भमरा एक नहि नेउतेउ बिरन भइया जेनसे मैं रूठेंउ हो।
आयें हइ सासु केर मइका, ननदि केर सासुर हो,
आवा एक नहि आये बीरन भइया, जेनसे मैं रूठेंउ हो।
नही सासु अंगना लिपाबा न चउक पुराबा हो
सासू, नही हम पुजबइ बरहिया बिरन नही आयें हइ हो।
लीलेन घोड़ हिहिनाने पखर फहराने हइ हो।
आवा दुलहिन देई का लट फहराने, बिरन भइया आये हइं हो।
आवा सासू अंगना लिपाबा, त चउक पुरावा हो।
आवा हम पुजबइ बरहिया बिरन आइ गयें हो।

बहू के पुत्र पैदा होने पर सास अपने मायके और बहू की ननद के ससुराल में निमंत्रण भिजवाती है। बहू के भाई को निमंत्रित नहीं करती, क्योंकि सास बहू के भाई से रुष्ट है। निमंत्रण पाकर सास के मायके और ननद के ससुराल के लोग आ गये। निमंत्रण में भाई की अनुपस्थिति से बहू का मन खिन्न हो जाता है। वह सास से कहती है कि- पुत्रोत्सव के लिए आँगन मत लिपवाइए, चौक भी मत पूरिए, मैं बरहौं नहीं पूजूँगी, क्योंकि मेरा भाई नहीं आया है ? इसी क्षण नीले रंग का घोड़ा जिस पर भाई सवार है, द्वार पर हिनहिना उठा। घोड़े का पलीचा फहराने लगा अर्थात् भाई आ गया। भाई के आ जाने पर बहू प्रफुल्लित हो गई। सास से अनुरोध किया कि अब आँगन लीपा जाय, चौक पूरा जाय। मेरा भाई आ गया है। अब मैं बरहौं पूजन करूँगी।

सोहर (छठी लिखाई)

आधे ओसरबा म गोती बइठई, आधे म गोतिन बइठइं हो।
मोरी छठिया रतुल नही होइ त एकु ननद बिन हो।
अरे-अरे लहुरा देवरबा मै तोरी पंइया लागंउ हो देवरा
घोड़े पीठ होउ असवार त ननदी बोलाइ लाबा हो।
आइ हइं ननद गोसाई तू गौरी ठकुराइन हो।
ननदी हाली बेगि बइठा गजओवरी तुम छठी लिखहुं हो।
एक छठी लिखइं अंगनमा त दुसर ओसरबउ हो,
आवा तिसर लिखइं गजओवरी, चउथ बहु अंचरे हो।
अंगनमा कइ देखइं सब गोतिया, ओसरबा कइ गोतिनिउ हो।
आवा गजओवरी क देखैं पिया साहब अंचरबा कइ होरिल हो।

जच्चा कहती है कि– आधे घर की छाया में परिवार के पुरुष बैठे हैं और आधे में परिवार की स्त्रियाँ बैठी हैं, फिर भी ननद के बिना मेरी छठी का चित्र चटक नहीं हो रहा है। सबसे छोटे देवर मैं तुमसे बार–बार विनय करती हूँ कि घोड़े पर सवार होकर जाओ और मेरी ननद को बुला लाओ। ननद के आ जाने पर भावज कहती है कि– ननद! तुम मेरे लिए बहुत श्रेष्ठ हो। शीघ्रता से समृद्ध घर में छठी का चित्र लिख डालो। ननद ने शीघ्रता से छठी का एक चित्र आँगन और दूसरा चित्र ओसारी में बना दिया। तीसरा गजओसरी यानी समृद्ध घर में बनाया। छठी का चौक चित्र भावज के आँचल में बनाया। आँगन में बने छठी चित्र को परिवार के पुरुष और ओसारी में बने चित्र को परिवार की स्त्रियाँ देखती हैं। समृद्ध घर में बने छठी–चित्र को पति देखते हैं, माँ के आँचल में बने छठी–चित्र को नवजात शिशु निहारता है।

सोहर (नेग)

अइसन हठीली ननदिया, कंकना पर मचलि गई,
द्वारे म ठाढ़े ससुर समझामें, दइदे बहुरानी कंकना।
अंगना मं ठाढ़े जेठ समझामे, दइदे बहूरानी कंकना।
कंकना पर मचलि गई।

पुत्रोत्सव पर ननद, भावज से कंगन लेने का हठ करती है। द्वार पर खड़े ससुर कहते हैं कि– बहू! ननद को कंगन दे दो। आँगन में खड़े जेठ भी कहते हैं कि ननद को कंगन दे दिया जाय। इसी प्रकार कुटुम्ब के सब लोग कहते हैं।

सोहर (नेग)

हमरे त भये नंदलाल री, चली आवा ननदिया,
चांदी का चूड़ा न लाये मोरि ननदी
हमरे त सोने का रिवाज, चली आवा ननदिया।
खादी का कपड़ा न लाये मोरि ननदी,
हमरे त रेशम का रिवाज, चली आवा ननदिया।

भावज कहती है कि– मेरी कोख से लाल पैदा हुआ है। इसी खुशी में ननदजी आ जाओ, किन्तु लाल के लिए चाँदी का चूड़ा मत ले आना क्योंकि मेरे यहाँ सोने के चूड़े का चलन है। खद्दर का कपड़ा भी मत लाना, मेरे यहाँ तो रेशमी कपड़े का चलन है।

सोहर (नेग)

केकरि कोखिया लहालद रसगुन आगरि हो,
आवा केकर पूत फौदार फौद लइके उतरइ हो।

बगिया म गड़े हा निशान ससुर देस मरबइ हो।
हिन मरबइ ससुर जी का देस पियरिया नहीं पठइन हो।
हमरे त कछिया निकरि गये हरदी महंगि भइ हो।
साहेब हमरे न पियरी कये चाली पियरिया नहीं पठइन हो।
घरहिन कछिया बसउबै, हरदी लगवउबै हो।
धन घरहिन पियरी रंगउबै पहिरा धन सुन्दर हो।
रउरे पियरिया निसिदिन पहिरब हो।
साहेब दुलरे बरन कै पियरिया अउसर सिर अउबै हो।

किसकी कोख रसवन्ती है और किसके पुत्र भारी समूह वाले हैं, जो अपने साथ समूह लेकर आयेंगे? बगीचे में ससुरजी ने उल्लास की पताका गड़वा रखी है। पुत्रवती बहू कहती है कि- मैं ससुरजी की खुशी में भागीदार न हूँगी, क्योंकि उन्होंने मेरे लिए पीली साड़ी नहीं भेजी है। ससुर अपना पक्ष प्रस्तुत करते हुए कहते हैं- हमारे यहाँ के काछी परदेश निकल गये, जिससे हल्दी बहुत महंगी हो गई है और हमारे यहाँ जच्चा को पीली साड़ी पहनाने का चलन भी नहीं है। इसलिए पियरी (पीली साड़ी) नहीं भेजी गई है। पति, सद्यः प्रसूता को प्रबोध देता है कि मैं घर के पास काछी बसाऊँगा, हल्दी लगवाऊँगा और घर पर ही पीली साड़ी रंगवाऊँगा, जिसे तुम मेरी सुन्दरी प्रिये पहिनना। पत्नी प्रसन्न होकर कहती है कि- पीली साड़ी का रंग मेरे दुलारे लाल के रंग का होगा, उसे मैं दिन-रात पहिने रहूँगी।

कुआँ पूजन

जल भरौ हिलोर-हिलोर रेशम कै डोरिया।
रेशम की डोरी तब निक लागै, जब सोने घइलना होय।
सोने घइलना तब निक लागै, जब रूपे गोड़रिया होय।
रूपे गोड़रिया तब निक लागै, जब कोरा बलकबा होय।
कोरा बलकबा तब निक लागै, जब फुफू कुमारी होय।

प्रसविनी द्वारा कुआँ पूजने की प्रथा है, उस समय यह गीत गाया जाता है। रेशम की डोर से हिलोर-हिलोर कर जल भरा जाय। रेशम की डोर सोने के घड़े के साथ अच्छी लगती है। सोने का घड़ा, चाँदी की गोड़री के साथ अच्छा लगता है। चाँदी की गोड़री गोद में बालक लिए हुए पुत्रवती के साथ शोभा देती है। गोद में बालक तब अच्छा लगता है जब घर में बुआ हो।

नामकरण

धनि रे अजोधिया, धनि राजा दशरथ।
धनि तोरि भागि कोसिल्या, राम जनम भे हइं हो।

भंड़वा त लुटि गये, जब राम जनम भे
भंड़वा के नाते रामइया, दूध पिइहीं हो।

नवजात के नामकरण का संस्कार होता है। राजा दशरथ-कौशिल्या और राम के प्रतीक का गीत गाया जाता है। अयोध्या नगर, राजा दशरथ और कौशिल्या धन्य हैं, जिनकी कोख से राम जैसे लाल ने जन्म लिया है। जन्मोत्सव की खुशी में राजा-रानी घर के सभी बर्तन दान में लुटा दिये। अब तो घर में राम जैसा सुन्दर पात्र (बर्तन) है। राम दूध पियेंगे।

मूड़न

समबै बइठे हइं आजा त नाती अरज करइ हो।
आजा झालरि छेंके लिलार, करहु जग मूड़न हो।
समबै बइठे ओनहिराम, पुतबा अरज करैं हो।
बाबू झालरि छेंके लिलार, करहु जगि मूड़न हो।
समबै बइठे हइं काका त भतिजबा अरज करइ हो।
काका झालरि छेंके लिलार, करहु जगि मूड़न हो।

दरबार में बैठे पितामह से नाती निवेदन करता है कि- बाबा! मेरे बड़े-बड़े बाल समूह ललाट को ढंके हुए हैं। मेरा मुण्डन संस्कार शीघ्र ही करिए। दरबार में बैठे ओनहिराम (नाम) पिता से पुत्र निवेदन करता है कि- पिताजी! मेरी झालर भाल पर लटकी हुई है, मेरा मुण्डन संस्कार शीघ्र करवाइए। इसी प्रकार चाचा से भतीजा अपने मुण्डन संस्कार का निवेदन करता है।

मूड़न (न्यौता)

हंकरहु नगर के नउबा, हेकारि बेगि आबहु हो।
नउबा गढ़ि लाबा सोने के छुरबा करहु जगि मूड़न हो॥
केकरि चुटकी खियानी चन्दनमा के रंगड़त हो।
अब केकरि मोती लर टुटई, झलरिया के परछत हो॥
फूफा कइ चुटकी खियानी चन्दनमा के रगड़त हो।
फूफू कइ मोती लर टूटी, झलरिया के परछत हो॥

नगर के नाऊ शीघ्र आ जाओ। सोने का छुरा बनाकर मेरा मुण्डन संस्कार सम्पन्न कर दो। मुण्डन संस्कार होने वाले बालक के भाल पर चन्दन टीका करने के लिए चन्दन घिसने में किसकी अंगुलियाँ घिस गई हैं ? बालक की झालर (बाल समूह) को समेटते हुए किसके माला के मोती बिखर गये हैं? चन्दन घिसने में फूफा की अंगुलियाँ घिस गई हैं। झालर समेटते हुए फूफू के माला के मोती बिखरे हैं।

मूड़न (दादर)

मचले बलदाऊ नहिं आमइ कनिया
आंगन म ठाढ़े बाबा समझामै
दइ डारा झालर माथे म झुकीहइं
तोरे माथे कइ झालर बुआ जी कै हइ।

मुण्डन संस्कार के क्षण में बालक विचलित हो जाता है। वह गोद में नहीं बैठता। आँगन में खड़े बालक के बाबा समझाते हैं कि- लाल! तुम्हारा झालर (बाल का गुच्छा) भाल पर लटका है। मुण्डन करा लो। तुम्हारी बुआ जी सहेज लेंगी, यह झालर बुआ जी के लिए ही है।

सोहर

छापक पेड़ छिउलिया त पतवन गहवर हो।
अबा ओही तरि ठाढ़ि हरिनिया हरिन का बिसुरइ हो॥
चरि-चोथि अबा हइ हरिनमा, हरिनिया से पूछइं हो।
हरिनी की तोर चरहा झुरान कि पानी बिन मुरझिउ हो॥
नहि मोर चरहा झुरान न पानी बिना मुरझेउ हो।
हरिना आजु रमइया कइ छठिया तोहइ मरबइही हो॥
मचियहि बैठी कौसिला रानी हरिनी अरज करइ हो।
रानी मसबा त सिझइ रसोइया खलरिया हम लेबइ हो॥
जब-जब बजति खझनिया सबद सुनि अनकइ हो॥
हरिनी ठाढ़ि छिउलिया के नीचे हरिन का बिसूरइ हो।

सघन पत्तेदार छिउला के छोटे से पेड़ के नीचे खड़ी एक दुखी हिरणी से पूछता है कि- क्या तुम्हारे चरने की घास सूख गई? या पीने के लिए तुम्हें पानी नहीं मिलता? तुम किसलिए उदास हो? हिरणी जबाव देती है कि- न तो मेरे वन का चारा सूखा है और न ही पीने के पानी की कमी है। मेरे दुख का कारण कुछ और है। आज राजा दशरथ के पुत्र राम की छठी है। इसलिए हम मारे जायेंगे। मचिया बैठी रानी कौशिल्या से हिरनी विनय करती है- रानी मेरे पति हिरण की माँस तो रसोई में पकाई जायेगी, किन्तु इसकी खाल हमें दे दो। रानी हिरण की खाल भी हिरणी को नहीं देती। उस खाल से राम के खेलने के लिए डफली मढ़ाती हैं। जिस समय राम डफली बजाते हैं हिरणी छिउला के पेड़ के नीचे खड़ी होकर अधीरता से सुनती है और अपने पति के वियोग में विह्वल हो जाती है।

बरुआ (तैयारी)

ऊँच ओसरबा नबइ घर जहाँ खम्ब कुंदेरिउ हो।

ओहि ओढ़कि हाँ आजी त नतिया से अरज करइ हो॥
आठ बरिस का ललनमा त बरुआ दइ डारहु हो।
तक्था बइठ हाँ ओनहिराम त धना से अरज करइ हो।
नहि घर गोंहुआ न चाउर बरुआ कइसे होइहइं हो।
मैरे मं गोहुंआ बोवउबइ, कछरबन लहिलउ हो न॥
काशी से कंदुआ बोलउबइ, नान्ही बुंदिया छनउबइ हो न।
काशी से पंडित जो अइहीं, अच्छे-अच्छे वेद सुनइहीं हो न॥

ऊँचे ओसारी वाले नये घर में जिसमें चित्र खुदे लकड़ी के सुन्दर खम्भे लगे हैं, दादी बैठी है। नाती दादी से निवेदन करता है कि- अब मेरी उम्र आठ वर्ष की हो गई है। मेरा व्रतबन्ध संस्कार कर डालो। तखत पर बैठे ओनहिराम (नाम) पिता अपनी पत्नी से मजबूरी प्रकट करते हैं। घर में गेहूँ-चावल नहीं है। पुत्र का जनेऊ कैसे किया जाय ? सुलक्षणी पत्नी पति को प्रबोध देती है। स्वामी चिंता न करें। मैं इस वर्ष उपजाऊ जमीन में गेहूँ और चना की खेती करूँगी। काशी से हलवाई बुलाकर नन्हीं-नन्हीं बूँदी छनवाऊँगी। काशी से ही व्रतबन्ध संस्कार के लिए पण्डित बुलाऊँगी, जो वेद के श्लोकों का शुद्ध वाचन करेगा। पुत्र का व्रतबन्ध संस्कार होना ही चाहिए।

बरुआ

खेतबा बोवामइ ओनहिराम, जहाँ उपजइ गज मोती हो।
मोतिया का अरझे दुलेरुआ, अजा हम लेबई गज मोती हो॥
आजा धइ झकझोरइ आजी हिरदय लगामइ हो।
आवा ललन मोर कनिया, लाला हम देबइ गज मोती हो॥

ओनहिराम (नाम) खेत बोवाया है जिसमें मोती की पैदावार हुई है। दुलारा लाल मोती लेने की जिद कर रहा है। बाबा से कहता है कि- मैं मोती लूँगा। बाबा मोती के पौधे को झकझोरते हैं। झरे हुए मोतियों को दादी कलेजे से लगा लेती है। बड़े प्यार से कहती है कि- ललन! मेरी गोद में आ जाओ, मैं तुम्हें मनचाहा मोती दूँगी।

नेउता

अरे-अरे करन सुगनमा, नेवत पहुंचाबहु हो।
पहिलइ नेवतबा ननदिया, दूसर ननदोइयउ हो॥
तीसरा नेवतबा भैननमा, सबइ मोर आबइ हो।
अस गज गहिनी ननदिया, नेवत नहि आबइ हो॥

प्यारे-प्यारे कर्ण सुगना व्रतबन्ध का निमंत्रण पहुँचा आओ। सबसे पहले मेरी ननद को

न्यौता देना, उसके बाद ननदोई को। तीसरा निमंत्रण भांजे को देना। सब कोई मेरे पुत्र के जनेऊ संस्कार में पहुँचे। गजगामिनी ननद निमंत्रण में नहीं आई, जिससे पुत्र की माँ अप्रसन्न है।

माता पूजन

सातउ बहिनी का लसगर झूलइ लागि न।
झुलत-झुलत मइया लगिगइ भुखिया, पइ हेरइ लागी न॥
हेलबइया दुकनिया हेरइ लागि न।
झुलत-झुलत मइया लगि गइ पियसिया पइ हेरइ लागी न॥
उहइ कहरा दुकनिया हेरइ लागि न।
झुलत-झुलत मइया लगि गइ अमलिया पइ हेरइ लागी न॥
उहइ बरई दुकनिया हेरइ लागि न।
झुलत-झुलत मइया लगि गइ निदिया पइ हेरइ लागी न॥
उहइ मलिया के बगिया हेरइ लागि न।

सातों देवियाँ झूला झूलने लगीं। झूलते-झूलते भूख लग आई, इसलिए हलवाई की दूकान तलाशने लगीं। झूलते हुए उन्हें प्यास लगी, तब कहार की खोज करने लगीं। झूले पर ही पान बीड़ा चबाने की ललक जगी, तब तम्बोली की तलाश करने लगीं। झूलती हुई देवियों को नींद लगने लगी, तब शयन के लिए सुगन्धित वाटिका तलाशने लगीं।

माटी मगरा

शिव पूजन कइ गलिया बताये चला
काहे मं बेल पत्र काहे मं अछत
केकरेन मथबा चढ़उबइ बताये चला॥ शिव पूजन .....
थाली मं बेल पत्र, थाली मं अछत
शिव कये मथवा चढ़उबइ बताये चला॥ शिव पूजन ....

शिव पूजन को जाती हुई गायिकाएँ कहती हैं कि- शिव मंदिर की गली बताते चलिए। पूजन के लिए बेलपत्र और यह सब कुछ किसके मस्तक पर चढ़ेगा? बेल पत्र और अक्षत थाली में रहेगा। यह पूजन सामग्री शिवजी के ललाट पर चढ़ेगी।

माता पूजन

सोबत जानकी का कोरे जगामइं।
गोबरे से सींचइ ओई जगामइं॥ सोबत जानकी ....
जलबा से सींचइ ओई जगामइं।

दूधवा से सींचइ ओई जगामइं॥
सेंदुरे टीकइ ओई जगामइं॥ सोबत जानकी ....

सोती हुई जानकी को कौन जगाये ? देव-मंत्रियों के पूजन के लिए तत्पर गोबर टीकने वाले, जल सींचने वाले और दुग्ध स्नान कराने वाले ही जायेंगे। सबसे अच्छा तो यह होगा कि कुमारी की माँग में सिन्दूर भरने वाले पति ही जगाएँ।

माटी खोदना

माटी दलामल होइ।
हरियरिन दुबियउ हो॥
छुटिहइं ओनहिराम का घोड़ा।
दुबिया चरि लेइही हो॥

जिस भूमि विशेष से मिट्टी खोदना है वह दलदल है और उसमें हरी-हरी दूब छिछड़ी है। इसलिए मिट्टी खोदने में असुविधा है। गायिकाएँ कहती हैं कि- ओनहिराम (नाम) का घोड़ा आकर दूब चर लेगा और यह संकट दूर हो जायेगा।

मड़वा

अनइल बन से कनई मगामै, बन बिन्द्रहि से बांस।
पनमा अरग दइके मड़वा छबाइन, मोतियन चौक पुराइ॥
ऊपर ढुरइं दुनउ लाले परेउना, खाले रानी-रनिमास।
केकर आहीं दुनउ लाले परेउना, केकर रानी-रनिमास॥
ओनहिराम केर आहीं दुनउ लाले परेउना,
दुलहिन देई करे रानी-रनिमास॥

किसी विकट वन से बाँस की सींकें मँगाई गईं और वृन्दावन से बाँस आया है। पान के पत्तों से मण्डप की छाया बनाई गई है, जिसके नीचे मोती के चौक पूरे गये। मण्डप के ऊपर लाल परेवा पक्षी का जोड़ा बैठा है। नीचे लगता है कि रानियों का पड़ाव पड़ा है। ये लाल परेवा के जोड़े किसके हैं ? और रानियों जैसा यह पड़ाव किसका है ? गीत में ही उत्तर है- ओनहिराम (नाम) का यह परेवा का जोड़ा है और उन्हीं की पत्नी का रनिवास जैसा पड़ाव है।

मड़वा

धनि-धनि भागि ओही आंगन कइ।
जहां माड़ौ परत हइ॥

धनि-धनि भागि तोहरी ओनहिराम।
जेकरि आइ इया बखरी हो, जहां माड़ौ परत हइ॥

उस आँगन का भाग्य धन्य है जिसमें उत्सव का मण्डप पड़ा हो। ओनहिराम (नाम) की यह बखरी (घर) भी धन्य है, जिसमें व्रतबन्ध संस्कार हेतु मण्डपाच्छादन हुआ है।

मंत्री पूजा

आजु कइ बिधिया सबइ कोउ पामै हो।
तखत बइठे राजा दशरथ हुलसइ हो,
हुलसि-हुलसि राजा पटना लुटामै हो।
मचियइ बइठी कौसिला रानी हुलसइ हो,
हुलसि-हलसि रानी आरती उतारइ हो।
अवधपुरी कइ सब सखियाँ हुलसइ हो,
हुलसि-हुलसि सखि मंगल गामै हो।
बिन्द्रहिबन के मेघा जो हुलसइ,
हुलसि-हुलसि जल बरसइ हो॥

देव मंत्रियों की पूजा का प्रावधान घर के दरवाजे पर भी है। कामना की गई है कि यह अवसर सबको मिले। तख्त पर बैठे राजा दशरथ दान दे रहे हैं। वे अति प्रसन्न हैं। मचिया में कौशिल्या रानी पुल्कित होकर आरती उतारती हैं। अयोध्या की सभी नारियाँ अह्लादित होकर मांगलिक गीत गाती हैं। वृन्दावन में घिरे बादल जल वर्षा कर अपना पुलक प्रकट करते हैं।

सिल पोहनी

सिल पोहा ओनहिदेई आपन, सिलपोहा ओनहिदेई।
सिल मटकति हइं, सिल चटकति हइं॥
सिल पंडित देखि बिराबति हइं।
सिल पोहा ओनहिदेई आपनि हो॥

ओनहि देवी (नाम) शिल (पत्थर की सिलवटी) पूजन करिये। देखिए, शिल प्रसन्न होकर नखरे कर रही है। हर्षातिरेक में शिल कोमल होकर चटक गई है। पूजन कराने वाले पंडित का शिल उपहास कर रही है। ओनहि देवी (नाम) आप शिल पूजन करिए।

पून पुनउठी

पून पुनउठीं हइ तोहरी ओनहिं देई।
आपन पून परछि लेउ॥

शिल पर पीसी गई भीगी दाल को ओनहि देवी (नाम) आप पुनः उठा लीजिए। आप अपने द्वारा पीसी गई दाल को शिल के ऊपर से पोंछ लीजिए।

मृगछाला

जउने बन सिकियां न डोलइ, बन पंछी न बोलइ हो।
ओही बन हिले हइ आजा, त हेरइ मृग छाला हो॥
ओही बन हिले हइ बाबू, त मृगछाला हो।
हँसि-हँसि पूंछइ मिरिगवा, मृगछाला का तूँ करबे हो॥
हमरे ब्रह्मचारी हां दुलेरुआ, मृगछाला उनका चाही हो।

जिस घने जंगल में हवा से एक पत्ती भी नहीं हिलती, वन पांखी नहीं बोलता, उसी जंगल में नाती के बाबा व्रतबन्ध संस्कार के लिए मृगचर्म ढूँढने के लिए घुसे हैं। उसी वन में पुत्र के पिता भी मृगचर्म तलाशते हैं। वन का मृग हँसकर पूछता है कि- आप लोग मृगचर्म किसलिए चाहते हैं? पिता और बाबा जबाव देते हैं कि- हमारे घर में दुलारे ब्रह्मचारी हैं उनके जनेऊ संस्कार के लिए मृगचर्म की आवश्यकता है।

जनेऊ

गंगा जमुना बीच आतर, बीच पेड़ कदम केर हो।
ओही तर बइठ पंडितवा, उतकातइ जनेइयउ हो ना॥
हँसि-हँसि पूछइ पंडितवा जनेउ का करबेउ हो।
हमरे ब्रह्मचारी हां ओनहिराम, जनेइया ओनका चाही हो।

गंगा, यमुना नदी के बीच फैले मैदान में कदम्ब का एक वृक्ष खड़ा है। उसी वृक्ष के नीचे बैठकर पंडित जनेऊ बना रहा है। जनेऊ माँगने पर पंडित पूछता है कि- आप जनेऊ का क्या करेंगे? पिता उत्तर देते हैं कि- हमारे यहाँ ब्रह्मचारी हैं। उनके लिए जनेऊ चाहिए।

बरुआ

अरे-अरे कुमार, कतिकवा, चइत कब लगिहइ हो।
कब आजा जइही बजरिया, जनेइया कब लइही हो॥
कब आजी रंगिही पियरिया, बरुआ कब होई हो।

बटुक अपने आपसे पूछता है कि- क्वार, कार्तिक और चैत्र मास कब आयेगा ? मेरे बाबा बाजार से कब व्रतबन्ध के लिए जनेऊ लायेंगे ? मेरी दादी व्रतबन्ध संस्कार हेतु पीली धोती कब रंगेंगी।

बरुआ

ऊँच ओसरबा नबइ घर, जहाँ खम्भ कुंदेरिउ हो।
ओही ओढ़कि बइठी आजी, उत भीख संभारइ हो॥
ठुमुकि-ठुमुकि पगु ढारइ, उत मड़ये पहुंचि गई हो।
एक पग ढारइ ओसरबा, त दूसर अंगनबउ हो॥

ऊँची ओसारी वाले नये घर में जिसमें कढ़ाई किये हुए लकड़ी के खम्भे लगे हैं, बटुक की दादी बैठी हुई भिक्षा की सामग्री संभालती है। धीरे-धीरे चलती हुई मण्डप के नीचे पहुँच गई है। दादी नाती के व्रतबन्ध संस्कार से बहुत प्रसन्न है। हर्षातिरेक में एक पाँव ओसार में रखती और दूसरा पाँव आँगन में पहुँच जाता है।

मूड़न

जउन झलरिया आजी सेमइ, ककइया लइ झांरइ हो।
उहइ झलरिया नउआ मूड़इ, ऊपर से नेग मागइ हो॥
जइसइ समनमा का मेघवा उमहि जल बरसइ हो।
ओइसइ मोरी आजी उमहइ, उमहि नेग बरसइ हो॥

बटुक के जिस बाल समूह को दादी ने नित्य तेल देकर बड़ा किया। कंघी से सुलझाती रही, आज उसी को नाऊ मुण्डन कर रहा है। इतना ही नहीं मुण्डन का नेग (पुरस्कार) भी माँगता है। जिस प्रकार से सावन माह का मेघ घुमड़कर वर्षा करता है, वैसे ही उल्लासित होकर दादी नाऊ को नेग देती है।

रिसाई

प्रान पियारे ललनमा हो परदेशइ न जा।
खाइ का मागै लाला पेड़ा मिठइया,
घूंटइ का कंचन गेडुआ हो, परदेशइ न जा।
रचै का मागै खैरा-सुपरिया
मुँह पोछइं का अंगउछिया हो, परदेशइ न जा॥

व्रतबन्ध संस्कार के अवसर पर बटुक अपने कुटुम्ब से अप्रसन्न होकर बनारस विद्याध्ययन के लिए जाने लगता है। माँ कहती है कि- प्राण प्रिय लाल! परदेश मत जाओ। बटुक कहता है कि- मुझे खाने के लिए पेड़ा-मिठाई दो और सोने के पात्र में पानी पिलाओ, तब परदेश नहीं जाऊँगा। मुख शुद्धि और मुख सौन्दर्य के लिए पान-बीड़ा सुपाड़ी माँगता है। मुख पोंछने के लिए तौलिया की माँग करता है।

रिसाई

राम रिसाने मनाये नहिं मानइं
राम के माथे मुकुट भल सोहैं
देखा चन्दन तिलक लिलार, मनाये नहिं मानइं
राम के तन पीतम्बर सोहैं
देखा गले बैजन्ती माल, मनाये नहिं मानइं
राम के पउंआ खड़ाऊँ सोहैं
देखा पग नूपुर झनकार, मनाये नहिं मानइं।

राम (बालक) अप्रसन्न है। किसी की बात नहीं मान रहे हैं। राम के मस्तक पर सुन्दर मुकुट बंधा है और ललाट पर चन्दन लगा है। राम पीताम्बर धारण किये हैं और गले में बैजन्ती की माला पड़ी है। राम के पाँव में खड़ाऊँ हैं और पग में नूपुर बँधा है।

बरिच्छा

पाँच मोहरि कइ सुपरिया मंगायेउ, देउतन नेवति पठायेउं।
पहिल नेवत दीन्हउ गया के गजाधर, दूसर अजोधिया केर राम।
तिसर नेवत दीन्हउ उहइ जगजननी, मोरी जगि पूरन होय।
काहे चढ़ि आमै गया के गजाधर, काहे अजोधिया के राम।
काहे चढ़ि आमइ उहइ जगजननी, मोरी जगि पूरन होइ।

विवाह सम्बन्ध स्थापित होने के पूर्व वरिच्छा संस्कार होता है। कन्या के पिता ने पाँच स्वर्ण-मुद्रा के मूल्य की सुपाड़ियाँ वरिच्छा के लिए मँगायी। देवताओं को निमंत्रित किया। सर्वप्रथम गयाधाम के गजाधर को न्यौता दिया, फिर अयोध्या के राम को निमंत्रित किया। तीसरा निमंत्रण यज्ञ की निर्विघ्न पूर्ति हेतु जगजननी सीता को दिया। किस सवारी (वाहन) में गयाधाम के गजाधर और किसमें अयोध्या के राम तथा किस वाहन से जगजननी सीता आयेंगी? जिससे मेरा यज्ञ सफलतापूर्वक पूर्ण हो।

तिलक

पाँच मोहरि कई सुपरिया मगायेउं, दीन्हेउ बम्हन के हास।
नाऊ अउ पंडित तूं बड़े सोची, जहाँ पठाई तहाँ जाउ॥
बाप कहा बेटी देस बिहायबइ, पितिया कहइं गुजरात।
भइया ओनहिराम असमन बोलइ, तिलक बड़हरेन जाइ।
अतना जो सुनिनहइ अजबा ओनहिराम, मनहि उठे रिसिआय।
बड़हर-बड़हर ना करा नतिया, बड़हर हइ बड़ि दूर॥

ओही बड़हरिया का दइया न पुजिही, बिचि जइही मगज हमार।
का हो देबे पूत नग्र के पठइत, का हो दुआरे के चार।
काहो देबे पूत माझ मड़कना, का हो कोहबरेन जात।
हथिनी त देबइ बाबा नग्र के पठइत, घोड़वा दुआरे के चार।
एक लाख देबइ भाझ मड़उना, मोहरि कोहबरेन जात।

पाँच स्वर्ण मुद्रा देकर सुपाड़ी मँगाई गई। सुपाड़ियों को ब्राह्मण के हाथों में सौंपा गया। पंडित और नाऊ बड़े विचारवान हैं। उन्हें जहाँ भेजा जायेगा वे प्रसन्नता से चले जायेंगे। पिता का कहना है कि- पुत्री का विवाह अपने ही प्रदेश में किया जाय। चाचा चाहते हैं कि विवाह गुजरात प्रदेश में किया जाय। भाई ओनहिराम (नाम) का कहना है कि बहन का फलदान बड़हर यानी दूर देश भेजा जाय। इस प्रकार की चर्चा सुनकर बाबा ओनहिराम (नाम) क्रुद्ध हो जाते हैं। नाती से कहते हैं कि- नातिन का व्याह बड़हर में करने की बात बार-बार मत करो। बड़हर बहुत दूर है। बड़हर वाले दहेज बहुत अधिक लेते हैं। अपना तो घर बिक्री हो जायेगा। निमंत्रण पहुँचाने वालों को कितना दिया जायेगा? द्वारचार का कितना नेग होगा? समधी को मण्डप के नीचे क्या दिया जायेगा? और वर को कोहबर का नेग क्या दिया जायेगा? नाती उदारता से उत्तर देता है कि- निमंत्रण पहुँचाने वाले को हथिनी दी जायेगी, और द्वारचार के लिए घोड़ा देना है। समधी को मण्डप के नीचे एक लाख मुद्रा देना है तथा वर के लिए कोहबर का नेग मोंहरे हैं।

तिलक

कहमइ के तुम बिप्र हो ब्राम्हन, कहमइ ढारेउ पाउ।
कहमा के रजबा चिठिया लिखि भेजइ, केकर तिलक चढ़ाउ।
जनकपुरी के बिप्र अउ ब्राम्हन, ढारेउ अजोधिया म पाउ।
राजा जनक जी चिठिया लिखि भेजइं, राम का तिलक चढ़ाउ।
कइ लाख आये हइ थारी अउ कपड़ा, कइ लाख कपिला कलोरि।
कइ लाख आई हद कांधे कइ जनेइया हो, राम तिलक चढ़ि जाय।

ब्राह्मण देवता आप कहाँ के निवासी हैं, और कहाँ जा रहे हैं? किस देश के राजा का पत्र लिए हैं, और किसका तिलक चढ़ाने जा रहे हैं? मैं तो जनकपुर निवासी ब्राह्मण हूँ, अयोध्या जा रहा हूँ, राजा जनक का पत्र लिए हूँ और राम का तिलक चढ़ाना है। विप्र यह तो बताओ कितने लाख मूल्य का थान-प्यार है? और कितने लाख मूल्य की गायें तिलक में आई हैं। कितने लाख यज्ञोपवीत आये हैं, जिससे राम का फलदान संस्कार सम्पन्न होगा।

तिलक

बोलिया त बोलइं एकु हारिल सुगना हो, बोलि बगइचा मं जाइ।
बोलिया त बोलइं दुलहे ओनहिराम, बोलि चउक बन जाइ।

बोलिया सुनत ओनके आजा खुशी भये, आजी का जियरा जुड़ान।
बोलिया सुनत ओनके आजा खुशी भये, आजी का जियरा जुड़ान।

बगीचे में एक प्यारा सुगना मीठी बोली बोलता है। दूल्हे ओनहिराम (नाम) मीठी वाणी बोलते हुए फलदान संस्कार के लिए चौक में जाते हैं। नाती के बोल सुनकर बाबा प्रसन्न हो जाते हैं, और दादी का हृदय गद्‌गद हो जाता है। दूल्हे के पिता प्रफुल्लित होते हैं। माता का हृदय शीतल हो जाता है।

सोहाग (वर पक्ष)

लीले-लीले घोड़ कुमर असवरबा, लीले-लीले घोड़ कइ लगाम।
राजा के सोहगवा।
एकु बन गये हइं दुसर बन गये हइं, तिसरे मलिन फुलबरिया। राजा के ....
बीच म लिमिगे सखा ओनहिराम, धइ लिहिन घोड़े कइ लगाम। राजा के ....
के तू उतरबे बारी के बगइचा, अरे के हो मलिन फुलवारि। राजा के ....
न हम उतरबइ बारी रे बगइचा, नही हो मलिन फुलवारि। राजा के ....
हम त उतरबइ ओनहिराम के मड़ये, जेनकरि धेरिया कुमारि। राजा के ....

नीले रंग का घोड़ा है, और उसकी लगाम भी नीले ही रंग की है। ऐसे घोड़े पर सवार राजकुमार एक वन, दो वन पार करते हैं। तीसरे वन में उन्हें मालिन की फुलबगिया मिलती है। इस यात्रा के बीच में ओनहिराम (नाम) मिल जाते हैं जो घोड़े की लगाम पकड़कर रोक लेते हैं, और पूछते हैं कि- आप बागवान के बगीचे में ठहरेंगे या मालिन की फुलवारी में ? राजकुमार जबाव देता है- मैं न तो बागवान के बगीचे में पड़ाव डालूँगा और न ही मालिन की फुलवारी में, मैं तो ओनहिराम के मण्डप के नीचे ठहरूँगा, जिनकी कन्या कुमारी है।

सोहाग (कन्या पक्ष)

सांकर खोरिया सेंहुड़बा कइ बारी, बीच-बीच बमुरे कइ डारि।
रानी के सोहगवा।
ओही होइके निकरे हइ दुलहे दुलेरुआ, पइ कलगी अरझि गइ डारि। रानी के ....
तनि एकु कलगी निकारा मोरि धनिया, पइ अब न अउब ससुरारि। रानी के ....
कइसे कइ कलगी निकारी मोरे सामी, पइ देखिहैं नइहरबा के लोग। रानी के ....
माया मोरि देखई बाबू मोरे देखइ, पइ देखइ सहरबा के लोग। रानी के ....

संकरा रास्ता है। सेहुड़ा की बारी लगी है, और बीच-बीच में बबूल की डालें उलझी हैं। इसी रास्ते से होने वाला दूल्हा निकलता है जिसके मोर (मुकुट) की कलंगी डालों में उलझ जाती है। दूल्हा आग्रह करता है कि मेरी होने वाली पत्नी उलझी हुई कलंगी निकाल दो। अब मैं

ससुराल कभी नहीं आऊँगा। कन्या अभी कुँवारी है। वह संकोच करती है, कहती है कि- स्वामी, मैं कैसे पकी कलंगी निकालूँ? मेरे मायके के लोग देख लेंगे, मुझे लाज लगती है। मेरे माता, पिता और गाँव के सब लोग देख लेंगे।

सोहाग

दमना - मरुअरी कइ टटिया बंधाइन, जमरे दिहिन ओढ़काइ।
रानी के सोहगवा।
ओहि चढ़ि बहठी हइ बेटी कइ आजी, देखइ लागी नतिनी सोहाग। रानी के ....
हमरा सोहगवा तूं का देखबू आजी, पइ देखि लेतू भौजी सोहाग। रानी के ....
ओहि चढ़ि बइठी हइ बेटी कइ माया, देखइ लागी धेरिया सोहाग। रानी के ....

दमना और ममरी वन पौधों की टटिया बनवाकर दीवाल के सहारे खड़ी कर दिया। कुँवारी नातिन की दादी उसी पर चढ़कर नातिन का सोहाग देखने लगी। नातिन कहती है कि- दादी, मेरा सोहाग पर्व क्या देखती हो? भावज का सोहाग देखिए। उसी टटिया पर चढ़कर माता अपने बेटी का सोहाग देखने लगती है।

सोहाग

सिकिया कइ डड़िया फंदाबा मोरे भइया, हो चला भइया कमरू के देस। रानी ....
कमरू के देसबा बहुत दूरि बहिनी, मरि जाबै भुभुरू अउ धाम। रानी के ....
गलिअइ- गलिअइ भइया छत्र तउबइ, पइ नहिं लागी भुभुरी अउ धाम। रानी ....
कमरू के देसबा बहुत दूरि बहिनी, मरि जाबै भुखिया पियासि। रानी के ....

कुँवारी बहन भाई से कहती है कि- घास की डोली सजा लीजिए, उसमें हम दोनों बैठकर कमरू देश की यात्रा पर चलें। भाई कहता है कि- बहन! कमरू देश बहुत दूर है, इस लम्बी यात्रा में हम लोग रास्ते की धूल के ताप और ऊपर की धूप में झुलस जायेंगे। बहन कहती है कि- भाई! पूरे रास्ते में छाया का प्रबन्ध करूँगी, जिससे धूप से रक्षा होगी। बहन कमरू देश बहुत दूर है, हम भूख-प्यास से मर जायेंगे।

टीप : कुँवारी कन्या की आँख पर पट्टी बँधी रहती है। अस्त्र-शस्त्र के साथ कन्या का भाई, बहन का हाथ पकड़े हुए घर के बाहर घूरे में घर का पकाया हुआ भात (चावल) गाड़ने जाता है। इसी अवसर पर निगरी गाड़ने का सोहाग लोकगीत गाया जाता है।

कोहबर

कोहबर त बनिगे हइ हो,
बनिगे के बनाई हो कि,

कोहबर के बीच-बीच रमइया उरेहइ हो कि,
कोहबर के बीच-बीच सीतल रानी उरेहइ हो कि।

विवाहिता बहन या बुआ पूछती है कि- कौतुकागार (कोहबर) बन गया कि अभी बनाना है ? कोहबर के चित्र के बीच में राम और सीता का अंकन किया जाता है। यही बनाना है।

नहछू

ओनई आई कारी बदरिया झिमिकि जल बरसइं हो।
तनि एकु बदरी तुं छिमा करा, मोरे राम भीगइं हो।
रामा त भीजइ सा भीजइ पइ मोरी माया भीजइं हो।
तनि एकु बदरी तुं छिमा करा मोरे रामा भीजइं हो।
रामा त भीजइं, त मोरी चाची न भीजइं हो।

काले-काले बादल घिर गये हैं, रिमझिम वर्षा हो रही है। कुँवारी कन्या कहती है कि बादल क्षणभर के लिए क्षमा करो। वर्षा से मेरे होने वाले पति भीग जायेंगे। इतना ही नहीं पति के भीगने से भी अधिक चिन्ता मुझे अपनी माता के भीगने की है। इसलिए बादल क्षणभर के लिए वर्षा बन्द कर दो। मेरे स्वामी चाहे भीग जायें पर मेरी चाची न भीगे।

कंकन भंजाई

जोलहा कातइ सूत जोलहिनी लइ-लइ आबइ हो।
जोलहा के जनमे हइ मति त कंकन भजइउ न जानइ हो।
एकउ ताग न टूटइ जोलहबा के जनमेउ हो।
एकउ ताग न टूटइ जोलहबा कइ मेहरि हो।

जुलाहा सूत कातता है और जुलाहिन बेचने ले आती है। लगता है, कंगन भांजने वाला व्यक्ति जुलाहा की औलाद है। उससे तो कंगन भांजना ही नहीं आता। यदि एक ताग भी सूत टूट गया तो माना जायेगा कि कंगन भाँजने वाले जुलाहे की औलाद हैं, उसकी माँ ने किसी जुलाहे से दैहिक सम्बन्ध किया था।

लाबा भुजाई

एकउ लाबा न फूटइ कोहरबा कइ मेहरि हो।
एकउ लाबा न फूटइ भुंजउना कइ मेहरि हो।
लाबा त फूटइ चटाचट हो पटापट हो।

विवाह-संस्कार में धान का लावा मण्डप के नीचे भूँजने की लोक प्रथा है। लावा भूँजने वाली ननद की भावज हँसी उड़ाती है। एक भी लावा नहीं फूट रहा, ननद तुम तो कुम्हार की पत्नी हो। एक भी लावा नहीं फूट रहा है तो लगता है, भूँजवा की औरत हो। दूसरे ही क्षण चट-चट और पट-पट की आवाज करता हुआ लावा फूटने लगा।

मड़वा

अंगने मोरे नीम लहरिया लेय अंगने मोरे,
हुअइं ओनहिराम गाड़े हिंडोला।
बहिनी छिनरिया ओनकी।
झूलि-झालि जाइ, अंगने मोरे नीम लहरिया लेय।
सेर-सेर लइची ओनहिराम खांय।
छोकलइया बिनइ ओनकरि बहिनी जाय। अंगने मोरे ....

मेरे आँगन में नीम की डाल हिल रही है। उसी नीम की डाल में ओनहिराम (नाम) झूला डाले हैं। ओनहिराम की बदचलन बहन झूला झूलती है। ओनहिराम सेर-सेर भर इलायची चबाते हैं किन्तु उनकी बहन तो इलायची का छिलका बीनने जाती है। मेरे आँगन में नीम लहरा रही है।

माता पूजन

देबिन का चउमहला अच्छा बना,
काहेन केर मइया ईटा पथामइ हो।
काहेन लागि गिलावा। अच्छा बना ....
सोनेन केर मइया ईंटा पथामइ हो,
काचेन लगे हइ गिलाबा। अच्छा बना ....

देवी का महल बहुत अच्छा बना है। देवी का महल बनाने के लिए ईंट किससे बनाई गई है और गारा किसका बना है? सोने की ईंट बनी है और काँच का गारा बना है। देवी का महल बहुत अच्छा बना है।

तेल चढ़ाई

तेलिया का तेल महंग भये, बनिया कइ हरदिउ हो।
के तेलिया घर जाइ त तेल लइ आबइ हो,
के बनिया घर जाइ त हरदी लइ आबइ हो।
दुलहे कइ माया गइली तेलिया घर जाइ जो त तेल चढ़ाई हइ हो।
ओइ बनिया घर जाइ त हरदी लइ आबइ हो।

कन्या का ब्याह होने वाला है। तेली ने तेल का भाव महंगा कर दिया और बनिया ने हल्दी महंगी कर दी। कौन तेली के घर से महंगा तेल ले आयेगा और कौन बनिया के यहाँ से हल्दी लायेगा ? दूल्हे की माता तेली के घर से तेल लायेंगी जिससे कन्या का तेल चढ़ेगा। वही बनिया के यहाँ से हल्दी ले आएँगी।

देवी पूजन

मांगेउ बरदान देबी के मड़िलबा के भीतर।
मइके मं माँगेउ सात बिरनमा,
बहिनी अकेलि, देबी के मड़िलबा के भीतर।
ससुरे मं मागउ सात देवरबा,
ननदी अकेलि, देबी के मड़िलबा के भीतर।
कोरबा मं मांगेउ सात बालकबा,
कन्या अकेलि, देबी के मड़िलबा के भीतर।

देवी के मंदिर में जाकर मैंने अपने मायके में सात भाई और एक बहन का वरदान मांगा है। ससुराल में अपने लिए सात देवर और एक ननद की याचना की है। अपनी कोख के लिए सात बालक और एक कन्या की मनौती की है।

देवी पूजन

मइया मोरि अंगनेनि आई, निहुरि कइ पइयां में लागेउं।
काह देखि मइया अंगनेनि आइं, काह देखि मुसकानी।
दूध देखि मइया अंगनेनि आई, पुत्र देखि मुसकानी।
निहुरि कइ पइयां में लागेउं।

मेरी दयालु देवी माँ! मेरे आँगन में आ गई। मैं झुककर उनके पाँव पड़ी। देवी माँ क्या देखकर मेरे आँगन में आई और क्या देखकर हँस पड़ी ? दूध देखकर देवी माँ मेरे आँगन में आई और पुत्र देखकर हँसी बिखेर दिया। मैंने झुककर उनका चरण स्पर्श किया।

सगरा खोदाई

कोया सगरा खोदाई, को घाट बंधाई है हो।
केकर भरिही कहार, केहिंय नहाई है हो।
राजा दशरथ सगरा खनइहीं, त घाट बधइहीं है हो।
कोसिलिया केरि भरिहीं कहार, रमइया नहइहीं है हो।

सागर (तालाब) कौन खुदायेगा और कौन उसका घाट बँधायेगा? किसके कहार तालाब से पानी भरेंगे और कौन स्नान करेगा? राजा दशरथ तालाब खुदवायेंगे और वही घाट भी बँधायेंगे। रानी कौशिल्या के कहार पानी भरेंगे और राम तालाब में स्नान करेंगे।

सगरा खोदाई

चारि-चारि चूड़ी के बीचइ, कंगन मोर दाबइ कलइया।
जाइ कहे मोरे बारे ससुर जी से, कंगन मोर दाबइ कलइया।
कंगना कइ करइ बदलाइ, कंगन मोर दाबइ कलइया।

मानिनी पुत्र वधू कहती है कि चार-चार चूड़ियों के बीच पहना गया कंगन मेरी कलाई में दबाव डालता है। मेरे ससुर से बता दिया जाय कि कंगन कलाई में दबाव डाल रहा है। इस कंगन को बदलकर दूसरा कंगन ले आयें। यह कंगन मेरी कलाई में दबाव डालता है।

माटी मगरा

लछिमन लिहे बन रामा हरिनिया मारैं।
पहिलिन हरिनिया बागा बिच मारिन।
फुलबन कये ओट रामा हरिनिया मारै।

लक्ष्मण धनुष-बाण लिए हैं और हिरणों का शिकार करते हैं। पहली हिरण राम ने बगीचे में मारा। फूलों की ओट में छिपी हिरणी का शिकार राम ने किया।

वर सजनी

बन्ना के अंगने फूल गुलाब, कुसुम रंग फीका लगइ हो।
बन्ना के आजा गये बजरिया, मउरिया ढूंढ़ि न पामइ हो।
बन्ना कइ आजी बड़ी हुसियार, मउरिया ढूंढ़ि लइ आमइ हो।
बन्ना के अंगने ....

बन्ना (वर) की मुख आभा ऐसी है कि आँगन में फूले गुलाब का सौन्दर्य फीका पड़ गया है। बन्ना के बाबा बाजार गये हैं किन्तु उन्हें बन्ना के अनुरूप मौर नहीं मिल रही है। बन्ना की आजी (दादी) अधिक चतुर है, वे बन्ना के अनुरूप मौर खोज-खरीद रही हैं।

मौर बंधाई

मालिन सोबइ गिरि धउराहरि मलिया सोबइ चउपारि।
सोबति मालिन मलिया जगाबइ, अंगने दुलेरुआ हइ ठाढ़।
अजबा ओनहिराम लगन धराइन, अरगज मउरि बनाइं।

आस-पास गांछे मलिनी बइली का फुलबा बीच लगाये जरपोस।
अरगज-अरगज न करा दुलहे, अरगज मउरि न हो।
अगर-कगर देबइ बइली का फुलबा, बिचवा लगाउब जरपोस।

मालिन भीतर घर में सोयी है। माली बाहर चौपाल में सोया है। मालिन अपने पति माली को जगाती है कि- देखो, आँगन में दुलारे वर आये हैं। ओनहिराम (नाम) बाबा अपने नाती का ब्याह कर रहे हैं, जिनके लिए खूबसूरत मौर बनाना है। मौर के किनारे में वनफूल लगाना है, बीच में जरीपोश गाँछना है। भोली-भाली मालिन कहती है कि- दूल्हे राजा अरगज-अरगज क्या कहते हैं? अरगज कौन सी मौर है? मैं तो मौर किनारे-किनारे वनफूल लगाऊँगी और बीच में जरपोश जड़ूँगी।

मौर बंधाई

बन्ना के लम्बे-लम्बे केस गोलारी अखियां रे।
बन्ना का जामा जिन पहिनइयो, नजरिया लागि जइहइ रे।
बन्ना के आजा हइ हुसियार, झरइया साथ लइहइ हो।
बन्ना का मौर मत पहिनइयो, नजरिया लागि जइही हो।
बन्ना के बाबू हइ हुसियार, झरइया साथइ लइहइ हो।

बन्ना (वर) के बाल लम्बे हैं और आँख गोल-गोल हैं। बन्ने को जामा (ब्याह के अवसर पर पहनाया जाने वाला पीले रंग का विशेष वस्त्र) मत पहनाओ, किसी की कुदृष्टि न पड़ जाय। बन्ना के बाबा परम चतुर हैं। वे कुदृष्टि निवारण करने वाले ओझा को साथ रखेंगे। बन्ना को मौर मत बाँधना, कहीं नजर न लग जाय। बन्ना के पिताजी होशियार हैं, वे झाड़ने वाले को साथ रखेंगे।

मौर बंधाई

अंचरा भितर कइ लेय नजरिया लागि जइही रे।
अरे बनरा बबुल जी का पियार, माया के आखी का तरई।
अरे बनरा काका जी का पियार, काकी के आखी तरई।

बनरा को आँचल की ओट में छिपा लिया जाय। सुन्दर बनरे को किसी की नजर न लग जाय। बनरा अपने पिताजी को बहुत प्यारा और माँ की आँखों का तारा है। बनरा अपने चाचा को प्रिय और चाची की आँखों की पुतली है।

बारात पहथान

मैं तोसे पूछउँ गंगा गोसाइन, कउने गुन ढाबर पानि।
धौं तोरा जलवा मगरा हिलोरइ, धौ तोर ढाबर पानि॥

नहि मोरा जलबा मगरा हिलोरइ, नहि मोर ढाबर पानि।
अजबा ओनहिराम सबुनी करत, एहीं गुन ढाबर पानि॥
ऐहीं होइके उतरे हइ हाथी अउ घोड़ा, हो उतरइ सगली बरात॥

गंगा माँ! बताओ तुम्हारा पानी किस कारण मटमैला हो गया है ? क्या तुम्हारे पानी को मगरमच्छ ने हिलोर दिया है या तुम्हारा पानी ही मटमैला है ? मेरे जल को न तो मगर ने हिलोरा है और न ही मेरा पानी मटमैला है। बाबा ओनहिराम (नाम) अपने नाती के विवाह की तैयारी में कपड़े साफ कर रहे हैं इसलिए मेरा पानी मटमैला हो गया है। बारात के हाथी–घोड़े और आदमी यहीं से उस पार गये हैं, इसलिए पानी मटमैला हो गया है।

बारात पहथान

दुइ पहरवा के भीतर बाबा, दुलहा ठाढ़ अकेल।
हाली बेगि घोड़वा पलाना ओनहिराम, लगन का होइहइं बेर॥
परिखेउ–परिखेउ अजवा ओनहिराम, जो मोरि सजइ बरात।
परिखेउ मैं परिखेउ बपबा ओनहिराम, जो मोरि सजइ बरात॥

बाबा दोपहर का समय बीत गया। दूल्हा अकेले तैयार खड़ा है। ओनहिराम (नाम) शीघ्र ही घोड़ा सजाइये, लगन के लिए देर हो रही है। ओनहिराम (नाम) बाबा मैं (दूल्हा) आपकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। मेरी बारात की तैयारी करिये। ओनहिराम (नाम) पिता मैं आपकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ, बारात की तैयारी करें।

बारात पहथान

जइसइ पहरिया मं सिंह गराजइ, लंका गराजइ हनुमान
ओइसइ गरज दइके निकरे ओनहिराम नतिया बिआहइ जाइं।
ओसइ गरज दइके निकरे ओनहिराम पुतवा बिआहइ जाइं।

जिस प्रकार पहाड़ में सिंह गर्जना करते हैं और लंका में श्री हनुमान जी ने गर्जना की है, वैसे ही प्रसन्नता से गर्जना करते हुए बाबा ओनहिराम (नाम) अपने नाती का ब्याह करने जा रहे हैं। ऐसी ही गर्जना करते हुए पिता ओनहिराम (नाम) बेटा ब्याहने जा रहे हैं।

बारात पहथान

केकरेनि घोड़वा का अनझुन बाजइ, केकर घोड़ हिहिनाइ।
केकरिन हथिया दमकत आबइ, हो नतिया बिआहन जाइ।
ओनहिराम का घोड़वा अनझुन बाजइ, हो ओनही राम का घोड़ा हिहिनाइ।
ओनहिराम कइ हथिनी दमकत आबइ, हो पुतबा बिआइन जाइ॥

बारात में किसके घोड़े का घुँघरू बज रहा है ? और किसका घोड़ा हिनहिनाता हुआ आ रहा है ? किसका हाथी शोभा बढ़ाता हुआ आ रहा है ? और कौन अपने नाती का ब्याह करने जा रहे हैं ? ओनहिराम (नाम) के घोड़े का घुनघुना बज रहा है और उन्हीं का घोड़ा हिनहिना रहा है। ओनहिराम का हाथी सजा हुआ चला आ रहा है। वे तो अपने बेटे का ब्याह करने जा रहे हैं।

बारात पहथान

अरे आजु बाजइ ताल
बाजइ तबला निसान
धनि हो ओनहिराम तोहरी भाग
पुतबा बिआहन जाँइ।

वाह! आज ताल बज रहा है। तबला निशान बज रहा है। ओनहिराम (नाम) का कितना बड़ा सौभाग्य है ? आज अपना बेटा ब्याहने जा रहे हैं।

परछन

परछन करइ चली हइ वर कामिनी, अरे परछन सगुन सुभ होइ हो।
दस सखी आगे चलइ, दस सखी पाछे चलइ, दस सखी गोहनेनि जाइ हो
तु कलसा लेय दुलहे, दुलहे कलसा सगुन सुभ होइ हो।
अइसे दुलेरुआ का रोग लइके मरतेउ
बलाई लइके मरतेउ, छोड़िय मूसर लइके मरतेउ
अछत राई लोन लइके मरतेउ
पइ चूमि लेतुउ तिलक लिलार।

सजी-धजी सुन्दर स्त्रियाँ परछन (वर की आरती) करने जा रही हैं, परछन शुभ का संकेत है। स्त्रियों की संख्या पर्याप्त है। दस सखी वर के आगे चल रही है और दस सखी वर के पीछे चल रही हैं और दस सखियाँ वर के बायें-दायें चल रही हैं। लोक नायिका कहती है- दूल्हे राजा! कलश सँभालिए, कलश शुभ होता है। ऐसे दुलारे दूल्हे का यदि कुछ अशुभ होगा तो अशुभ को झाड़ू, मथानी, मूसल, अक्षत और राई-नमक से मारूँगी और दूल्हे के ललाट का चन्दन चूम लूँगी।

दुआरचार

बाजत आबइ करइली का बाजन, छुभड़त तबला निसान।
नाचत आवइ पतरेगवा समधिया हो, बिहंसत दुलहे दामाद॥
का दइकइ मनाउबइ अजनिहा बजनिहा, का दइ तबला निशान।
का दइके मनावइ पतरेगबा समधिया का दइ दुलहे दमाद॥

भात दइके मनाउबइ अजनिहा-बजनिहा घिउ गुर तबला निसान।
दइजा दइ मनाउबइ पतरेगबा समधिया धिया दइ दुलहे दमाद॥

अति प्रसन्नता का वातावरण है। बाजा बज रहा है। तबला निशान भी बज रहा है। पतले शरीर वाले समधी बारात के साथ नाचते हुए आ रहे हैं। दूल्हा-दामाद हँसता हुआ आ रहा है। बाजा बजाने वालों को कौन सा धन देकर सन्तुष्ट किया जायेगा? तबला निशान वालों को क्या दिया जायेगा? पतले समधी को कितनी सम्मान राशि दी जायेगी? और दूल्हे-दामाद को कितना धन-दान देना पड़ेगा? कन्या पक्ष का पिता कहता है कि- बाजा बजाने वालों को भात (पका चावल) खिलाकर सन्तुष्ट करूँगा। तबला निशान वालों को घी, गुड़ दूँगा। पतले समधी को पर्याप्त दहेज दूँगा और दूल्हे-दामाद को कन्यादान देकर सन्तुष्ट करूँगा।

दुआरचार

कहमइ केर बरातिहा हो, सब करियइ करिया।
कहमा केर देखइया हो, सब गोरियइ गोरिया॥
हुअइन केर बरतिया हो, सब करियइ करिया।
रीमा केर देखइया हो, सब गोरियइ गोरिया॥

बारात के लोग कहाँ से आये हैं ? ये सब तो काले वर्ण के हैं। बारात देखने वाले तो सब गौर वर्ण के हैं। फला (नाम) गाँव के बाराती हैं, जो काले रंग के हैं, और बारात देखने वाले तो रीवा के हैं, जो सुन्दर गौर वर्ण हैं।

दुआरचार

तखते पर नचत आमा रे बन्ना तखते पर
अपने माया का नचाबत लयाबइ रे बन्ना तखते पर
अपनी काकी का नचाबत लइआबइ रे बन्ना तखते पर।

बन्ना (वर) प्रसन्न होकर तख्त पर नाच रहा है। बन्ना अपनी माता और चाची को भी तख्त पर नचा रहा है।

दुआरचार

आबा बन्ना बड़ी दूर से बड़ी धूम से, बड़े धाम से
कोई जादू न डारो रे।
आगे घोड़ा ओनके आजा का
ओनके आजा के पाछे आजी का म्याना

बीच का घोड़ा सहिजादे का
दुल्हे राजा का कोउ नजर न मारे॥

बन्ना (वर) बड़ी दूर से धूम–धाम के साथ ब्याह रचाने आया है। कोई उस पर जादू न चला देना। बारात में जो घोड़ा सबसे आगे है वह बन्ना के बाबा का है। बाबा के घोड़े के पीछे–पीछे बन्ना के आजी (दादी) का म्याना आया है। बीच का घोड़ा दूल्हे राजा का है। कोई दूल्हे राजा पर कुदृष्टि मत डालना।

चढ़ाव

जइसइ सेंधउरा से सेन्दुर झलकइ, बइसइ बेलहरी मं पान।
ओइसइ झलक दइ के निकरी ओनहि देई, बइठी हइ चउके मं जाइ॥
हाथे मं सेंधउरा लीन्हे खाये मुख पान हो कि बिना पउदे मोरी धेरिया चउकेन जाइ हो कि
एतना जो सुनिन ससुरु ओनहिराम, सिरकइ पगड़िया दिहिन पउंद बिछाइ हो कि
एतना जो दिखिन हइ जेठबा ओनहिराम, कंधवा कइ अंगउछी फेकिन पउंद परि जाइ हो कि
एतना जो दिखिन हइ देबरा ओनहिराम, हाथ कइ रुमलिया दिहिन पउंद डारि हो कि।

जिस प्रकार सिन्दूर की पारदर्शी डिबिया से सिन्दूर झलकता है और पान के डिब्बे से पान, उसी प्रकार ओनहि देवी (नाम) सौन्दर्य राशि बिखेरती हुई घर के भीतर से निकलकर आँगन के चौक में बैठने वाली हैं। कन्या हाथ में सेधऊरा लिये है, और पान चबाये है, किन्तु बिना पउंद (पाँव रखने के लिए बिछाया गया वस्त्र) के चौक में बैठने नहीं आ रही, ऐसी सूचना पाकर, होने वाले ससुर ने अपने सिर की पगड़ी पउंद के लिए बिछा दिया, इसी सूचना पर दूल्हे के बड़े भाई ने कन्धे की तौलिया और देवर (छोटे भाई) ने अपनी रुमाल पउंद के लिए डाल दी।

चढ़ाव

कोठवा के तीरे–तीरे बसिगे सोनार हो कि
अजबा ओनहिराम डारले हंकार हो कि
आबा हइ सोनरबा डेउढ़ी धरे ठाढ़े हो कि
काहे बादिर मोरे साहेब परिगे हंकार हो कि
गढ़ सोनरा बाजूबन्द कंकना रबारि हो कि
गढ़ सोनरा मांथ बेदी धिया का सिंगार हो कि
गढ़ सोनरा कड़ा–छड़ा बिछुआ रबारि हो कि
गढ़ सोनरा पायजेहरि धिया का सिंगार हो कि
एतना पहिहि धिया चउके मं आई हो कि
दुलहे निहारइ लगि भरि–भरि डीठी हो कि

एतना जो दिखिन हइ भइया ओनहिराम, उठे रिसिआई हो कि
बड़ी गोरी मोरि बहिनी काहे डारे डीठी हो कि।

घर के चारों ओर सोनारों की बस्ती है। ओनहिराम (नाम) बाबा घोषणा करते हैं कि- निपुण स्वर्णकार आ जाओ। स्वर्णकार दरवाजे पर पहुँचकर पूछता है कि- साहब! आपने किसलिए मुझे बुलाया है? बाबा कहते हैं कि- नातिन का ब्याह होना है। स्वर्णकार तुम उसके श्रृँगार के लिए बाजूबन्द, रबारीदार कंगन और भाल की बिन्दी गढ़ डालो। स्वर्णकार तुम कड़ा-छड़ा और रबारीदार बिछुआ तैयार करो। नातिन के श्रृँगार के लिए पैजेहरि (आभूषण) गढ़ो। इतने आभूषणों को धारण करके कन्या जब मण्डप के नीचे चौक में बैठ गई, तब दूल्हे राजा चकित दृष्टि से उसे देखने लगे। कन्या के भाई ओनहिराम (नाम) दूल्हे की इस हरकत को देखकर अप्रसन्न हो गये। कहने लगे कि- मेरी गौर वर्ण बहन को इस तरह घूर-घूर कर क्यों देखते हो? इससे मेरी बहन को नजर लग जाने का खतरा है।

चढ़ाव

आजु सिरी सियाजी का चढ़त चढ़ाउ
ये ही मण्डप के नीचे
धनि भागि ससुरु जी,
अइसन बहू पाइन यही मण्डप के नीचे
धनि भागि जेठ जी कै जे पाइन
अइसन बहू ये ही मण्डप के नीचे।

आज इस मण्डप की छाया में सीताजी का चढ़ाव संस्कार सम्पन्न हो रहा है। श्वसुर जी का भाग्य धन्य है, जिन्हें इस मण्डप के नीचे ऐसी पुत्र वधू मिल रही है। जेठ जी का सौभाग्य है कि उन्हें इस मण्डप के नीचे ऐसी भयाहू मिल रही है।

बियाह

काहे का सेयेउ मैं हरदी का बिरबा हो काहे का मैन मजीर।
काहे का सेयेउ मैं धेरिया ओनहि देई, कच्चइ दुधबा पियाइ॥
पियरी का सेयेउ मैं हरदी का बिरबा, चुनरी का मेन मंजीर।
धरम का सेयेउ धेरिया ओनहि देई, कच्चइ दुधबा पियाइ॥
हटियन-हटियन सेन्दुरा महंग भये, चुनरी भई अनमोल।
एही सेन्दुरबा के कारन बाबू, छोड़ेउ देसबा तोहार॥

हल्दी के पौधे किसलिए तैयार किये गये हैं? मजीर के रेशेदार पौधे किसलिए तैयार किये गये हैं? और माँ का स्तनपान कराकर कन्या को किस निमित्त पाल-पोसकर बड़ा किया

गया है ? पिता जबाव देता है कि- पीला वस्त्र (पियरी) बनाने के लिए हल्दी का पौधा तैयार किया गया है। चुनरी बनाने के लिए मैन मजीर तैयार किया गया है। और धर्म के लिए ओनहिदेवी (नाम) को कच्चा दूध पिलाकर बड़ा किया गया है। पुत्री फिर कहती है कि- बाजार में सिन्दूर महंगा हो गया है, और चुनरी अनमोल हो गई है। पिताजी माँग भरने के लिए इसी सिन्दूर के कारण मुझे आपका देश छोड़ना पड़ रहा है।

बियाह

ऊँचे चउरबा हइ चउखुट बाबा हो, धनि तुलसिन केरि छांहि।
ओही चढ़ि बइठे हइ बेटी के बाबू, पूजइ सालिगराम॥
बेले कइ पाती चढ़ाइ दिहिन हइ, अछत रहिगा हइ हाथ।
नेम धरम कुछु करइ न पाइन, सिंह गरजइ दुआर॥
घोड़बा त आये हइ इनतिन गिनतिन, हथिनी त पूर पचास।
मारें बरतिया के दुआरे न सूझइ, सुरुज अलोपति जाइ॥

चौकोर आकृति का ऊँचा चबूतरा बना हुआ है। जिसमें घने पत्तों वाली तुलसी का पौधा लगा है। इसी चबूतरे पर बेटी के पिता बैठकर शालिग्राम की पूजा कर रहे हैं। शालिग्राम की बटिया पर बेल पत्र चढ़ चुके हैं। अक्षत अभी हाथ में ही है, पूजा के नियम का परिपालन भी अभी नहीं कर पाये कि सूचना आती है कि, बारात में घोड़ों की संख्या अनगिनत है। हाथियों की संख्या पचास है, बारातियों की संख्या इतनी अधिक है कि, कहीं पाँव रखने की जगह नहीं मिल रही है। सूर्य का प्रकाश भी अधिसंख्य बारातियों के कारण दिखाई नहीं पड़ रहा है।

पउपखन्नी

थारी के कांपइ गेंड़ुआ रे कांपइ, कांपई कुसा केरि डोर।
मड़ये तर कांपइ बपबा ओनहिराम, देत कुमारी का दान॥
अब नहि हंथवा सकेले मोरे बाबू हो होइइ धरम केरि जून।
अच्छी-अच्छी कपिला पखारे मोरे बाबू हो, होइगइ धरम केरि जून॥

विवाह संस्कार में पद प्रक्षालन (पउपखन्नी) का क्षण हृदयस्पर्शी होता है। कन्या के माता-पिता भाव विह्वल हो जाते हैं। पद प्रक्षालन के उपकरण पानी भरा थाल, लोटा और कुशा की सींक काँपने लगते हैं। मण्डप के नीचे कन्यादान करते हुए ओनहिराम (नाम) पिता की देह भी कम्पित होने लगती है। दुलारी बेटी कहती है- पिताजी! धर्म की बेला है, उदारतापूर्वक दान दीजिए। अच्छी-अच्छी कपिला गायें पद प्रक्षालन के अवसर पर दान कीजिए।

भमरी

धिया मोरि भई हइ पराई त जियरा दुखित भये हो।
पहिली भमरि फिरि आयेन, अबइ आजा तोहरिन हो।
दुसरी भमरि फिरि आयेन, अबइ बाबू तोहरिन हो।
तिसरी भमरि फिरि आयेन, अबइ माया तोहरिन हो।
चउथी भमरि फिरि आयेन, अबइ काका तोहरिन हो।
पंचई भमरि फिरि आयेन, अबइ भइया तोहरिन हो।
छठई भमरि फिरि आयेन, अबइ भउजी तोहरिन हो।
संतई भमरि फिरि आयेन, मैं अब भई पराइउ हो।

पद प्रक्षालन के उपरान्त कन्या वर के साथ मण्डप के नीचे सात फेरे लगाती है। इस अवसर पर कन्या का अपने पैतृक परिवार के प्रति जो अनुराग और समर्पण उमड़ता है, वह अत्यन्त हृदयस्पर्शी होता है। माता-पिता कहते हैं कि- अब मेरी पुत्री पराई हो गई है, हमने कन्यादान दे दिया है, इसलिए हृदय ममता से आपूरित होकर विचलित है। वियोग की पीड़ा की तीव्र अनुभूति हो रही है। कन्या पहिला फेरा पूरा करती है और कहती है- बाबाजी! अभी मैं आपकी ही हूँ। दूसरे फेरे में कहती है कि- पिताजी! अभी मैं आपकी ही हूँ। तीसरे फेरे में बेटी कहती है कि- माताजी! अभी मैं आपसे जुड़ी हुई हूँ, चौथे फेरे में चाचा से बताती है कि- अभी मैं आपसे अलग नहीं हुई हूँ। पाँचवें फेरे में बहन भाई से कहती है कि- अभी मैं आपकी हूँ। छठवें फेरे में ननद की हैसियत से भावज से कहती है कि- अभी मैं आपकी ही हूँ। सातवें फेरे में बेटी भाव विह्वल होकर पैतृक कुटुम्बियों से कहती है कि- अब मैं आप लोगों से अलग हो गई। इस क्षण में ममता की पराकाष्ठा घटित होती है।

सेन्दुर दान

पुरुब दिशा से उठी हइ बदरिया, पछिम गराजत जाइ। राजा के सोहगवा।
बिनतिन बंइठी हइ धेरिया ओनहिराम, सुना मेघ विनती हमार। रानी के सोहगवा॥
तनि एक बुंदिया छिमा हो करा बदरी, पइ सेन्दुरा परइ मोरि मांग। रानी के सोहगवा।
अब कइसे परिखेउ ओनहिराम कइ धेरिया,
पइ घुमड़ि कइ लगि गे अषाढ़। रानी के सोहगवा॥

सिन्दूर दान विवाह संस्कार का प्रमाणित साक्ष्य है। मण्डप के नीचे वर कन्या की मांग में सिन्दूर भरता है। पूर्व दिशा में बादल घिरते हैं, पश्चिम दिशा से बादल की गर्जना सुनाई पड़ती है। ओनहिदेवी (नाम) कन्या बादलों से निवेदन करती है कि- बादलों! पानी मत बरसाना, मेरी मांग में सिन्दूर पड़ जाने दो। बादल अपनी लाचारी बताते हैं कि- आषाढ़ का महीना आ गया है। ओनहिराम (नाम) की पत्नी मैं कैसे पानी की बूँद टपकने को रोकूँ? आषाढ़ माह में वर्षा होना स्वाभाविक है।

लाबा परसाई

लाबा परसा भइया लाबा।
तोहारि बहिनी पियारी हइ हो।
एक तउ पियारी तोरी बहिनी
दुसर बहनोइया हो।

मण्डप के नीचे बहन का भाई लोक कल्याण के लिए धान की कीलें छींटता है। भाई धान की कीलें (लाबा) छींटो। तुम्हारी बहन तुम्हें बहुत प्रिय है, साथ ही अब तुम्हारे जीजा भी तुम्हें प्रिय हो गये, इसलिए हम दोनों के सुखमय दाम्पत्य के लिए धान की कीलें छींटो।

बाती मिलाई

देखा दुलहे एक चिरई बनी हइ।
तोहार माया मोर बाबू जोड़ी बने हइ॥
देखा दुलहे एक चिरई बनी हइ।
तोहार काकी मोर काका जोड़ी बने हइ॥
देखा दुलहे एक चिरई बनी है॥

स्त्रियाँ गाती हैं, दूल्हे देखो कोहबर (कुक्षिभर) में एक चिड़िया बनी है। दूल्हे तुम्हारी माता और मेरे पिता एक जोड़ी के रूप में चित्रित हैं। दूल्हे यह भी देखो, तुम्हारी चाची और मेरे चाचा की जोड़ी भी कोहबर लोकचित्र में बनी है।

बाती मिलाई

लाल एही बाती का देते मिलाइ।
जो बाती तोहि ताती लगतु हइ॥
अपने माया का लेते बलाइ।
जो बाती तोहि ताती लगतु हइ॥
अपने फूफू का लेते बलाइ।

दूल्हे इन दोनों रूई की बत्तियों को आपस में मिला दीजिए। यदि ये बत्तियाँ गर्म लगती हैं, तो इन्हें मिलाने के लिए अपनी माता को क्यों नहीं ले आये? इस कार्य के लिए अपनी बुआ को क्यों नहीं अपने साथ ले आये?

बाती मिलाई

लाल बाती तू काहे मेरउते नही।
तोहरि फूफू छिनरिया सिखाइ पठइस॥

अपने माया छिनरिया का लइ अउते नहीं।
लाल बाती मेरउते तू काहे नही॥

दूल्हे! तुम बत्तियों का मेल करते क्यों नहीं हो? तुम्हारी व्यभिचारिणी बुआ ने तुम्हें यही सिखाया है? दूल्हे! अपनी व्यभिचारिणी माता को बुलाते क्यों नहीं हो? दूल्हे तुम बत्तियों का मेल क्यों नहीं कर रहे हो?

कलेवा गारी

सूखा कलेउना काहे खाये ललन मोर।
आपनि माया कंदुआ घर धरतेउ।
पेड़ा मिठाई लइ खाते ललन मोर।
सूख कलेउना काहे खाये ललन मोर।

दूल्हे! तुम सूखी पूड़ियाँ क्यों खा रहे हो ? अपनी माता को हलवाई के यहाँ बेच दो, बदले में मिठाई लेकर पूड़ी के साथ खाओ। दूल्हे सूखा कलेवा मत खाओ।

परछन (बारात की वापसी)

ससुरारिउ से आये मोरे बारे ललना।
ससुर दुअरबा हाथी अउ घोड़ा, हथिनी लइ आये, मोरे बारे ललना।
ससुर दुआरे हांडा-कसहड़ी पचहड़बउ लइ आये, मोरे बारे ललना।
ससुर दुआरे सारी अउ सरहज,
दुलहिनयउ लइ आये मोरे बारे ललना॥

मेरे दुलारे लाल ससुराल से आये हैं। ससुराल से दहेज में हाथी, हथिनी और घोड़ा लेकर आये हैं। दहेज में धातु के बड़े-बड़े बर्तन (हाड़ा-कसहड़ी-पचहड़) ले आए हैं। विनोद में वर की आरती करती हुई स्त्रियाँ गाती हैं कि, मेरे लाल साली, सरहज और दुल्हन भी साथ लाये हैं।

अंजुरी

अत्तिस कोठरिया के बत्तिस दुआर हो कि,
बत्तिसउ आई हइ मरिचिया कइ झारि।
काहे कइ सिलउटी, काहेन केर लोढ़ा हो कि,
कउन धेरिया बांटन बइठी, बहुंका पिराने हो कि,
सोने सिलउटी, रुपेन केर लोढ़ा हो कि,
बांटन बइठी राजा-बेटी बहुका पिराने हो।
एतनी जो रहिउ अपने बाप कइ दुलारी।

अपने माया कइ पियारी हो कि,
एक चेरिया लेति अउतिउ अपनेनि साथ हो।

कन्यादान के उपरान्त अंजुरी (अंजुलि) भरने की प्रथा है। सोलह कमरों में बत्तीस दरवाजे हैं, और बत्तीसों दरवाजे से पिसी हुई काली मिर्च की तिक्त महक आती हैं। काली मिर्च पीसने की सिल और लोढ़ा किसके बने हैं? कौन सी बेटी पीस रही है? किसके बाजुओं में दर्द हो रहा है? सोने का सिल है, और रूप (चाँदी) का लोढ़ा है। सुखभोगी बेटी पीसने के लिए बैठी, जिसकी बाजुओं में दर्द हो रहा है। पति कहता है कि- दुल्हन! यदि तुम अपने माता-पिता की इतनी सुकुमारी रही हो तो अपने साथ एक सेविका क्यों नहीं ले आई?

अंजुरी

आजी कुछु दिन रहउ न पायेन, बिदेसिया गमन मागइ हो।
नातिन बनि जातिउ आंखी कइ पुतरिया, नयन बिच रहतिउ हो।
माया कुछु दिन रहइउ न पायेन, बिदेसिया गमन मागइ हो।
बेटी बनि जातिउं दाते कइ बतिसिया, मुखेन बीच रहतिउ हो।
काकी कुछु दिन रहइउ न पायेन, बिदेसिया गमन मागइ हो॥
बेटी बनि जातिउं कोरा के बलकवा, अगन बिच खेलतिउ हो।
भउजी कुछु दिन रहइउ न पायेन, बिदेसिया गमन मागइ हो।
ननदी बनि जातिउं हाथे कइ करछुलिया, हाथेन बिच रहतिउ हो।

विवाहित बेटी कहती है कि- कुछ दिन भी मायके में नहीं रह पाई। परदेशी पति द्विरागमन का प्रस्ताव करता है, बेटी की दादी कहती है कि- नातिन! तुम मेरी आँख की पुतली बन जाओ और पलकों की ओट में छिपी रहो। माता कहती है कि- बेटी! तुम मेरे दाँतों की बत्तीसी (विशेष रंग) हो जाओ, और होंठों की ओट में छिपी रहो। चाची का कहना है कि- बेटी! तुम गोद में खेलने योग्य बालक बन जाओ और आँगन में खेलते रहो। भावज का सुझाव है कि- ननद! तुम मेरी सबसे प्रिय (हाथ कई करछुलिया) वस्तु बन जाओ और सदा इसी घर में रहो।

अंजुरी

काहे केरि बेनिया काहेन लागी मूठ हो कि,
कउने चरित बेनिया आई हइ हो।
सोने केरि बेनिया रुपेन लागी मूठ हो कि।
रतन चरित बेनिया बेचाइ आई हो कि॥

किस वस्तु से पंखा बना है, उसमें मूठ किसकी लगाई गई है, और उसका मूल्य क्या है? सोने का पंखा बना है, जिसमें चाँदी की मूठ लगी है और रत्न के बदले वह बिकने आई है।

अंजुरी

बइठे ओनहिराम जजिमा बिछाइ हो कि
कोरबा दुलेरुआ कतरइ पान हो।
बइठे ओनहिराम तखत बिछाइ हो कि
कोरबा ओनहिराम देई कतरइ पान हो।
हँसि-हँसि बिरबा जो देइ दुलहे राम
रुठि गइ ओनहि धेरिया बिरबा न लेइ हो।
अइसे बिरउना केरि हम नहि साधी
तोहरी माया सूतै बरइया के साथ हो।

बिछौने में बैठे पिता की गोद में बैठा दुलारा बेटा पान-बीड़ा चबाता है। तख्त पर बैठे पिताजी की गोद में बेटी बैठकर पान-बीड़ा चबाती है। दुल्हा बिहँस कर पान-बीड़ा अपनी दुल्हन को देना चाहता है कि ओनहिदेवी (नाम) रूठ जाती है। मानिनी कहती है कि- ऐसे पान-बीड़ा की लालची मैं नहीं हूँ। पतिदेव आपकी माता तो तम्बोली से सहवास करती है।

अंजुरी

बगिया मं फूली हइ चमेली, त बगिया सुहामन लागइ हो।
चउके मं बइठी धेरिया ओनहि देई, चउक रयामन लागइ हो।
मलिया जउ हाथ पसारइ, इहइ फूल लेबइ हो।
दुलहे जो हाथ पसारइ, इहइ धन लेबइ हो।

बाटिका में चमेली फूली है, जिससे वह रमणीय है। मण्डप के नीचे ओनहिदेवी (नाम) चौक में बैठी है, जिससे चौक सुशोभित है। बागवान वाटिका में पुष्प के लिए हाथ बढ़ाता है और दूल्हा मण्डप के नीचे दुल्हन के लिए हाथ पसारता है।

अंजुरी

अरे-अरे ढोलिया बजनिया, तइं ढोलिया ठमकि देते हो।
मोरे जागइ नइहरवा के लोग, मैं दूरी गमन जाबइ हो।
अरे-अरे आजी बेदनइतिन, आजा का जगाइ देतू हो।
आजा करइ गहनामा का जोर, मैं दूरी गमन जाबै हो।
अरे-अरे माया बेदनइतिन, बाबू का जगाइ देतू हो।
बाबू करइ दइजवा का जोर, मैं दूरी गमन जाबै हो।

ढोल वादक ढोल बजा दो। मेरे मायके के लोग जग रहे हैं। मुझे दूर गौने पर जाना है। वेद जानने वाली दादी तुम बाबा को जगा दो। मेरे लिए आभूषणों की व्यवस्था कर दो। मुझे गौने पर जाना है। वेद की ज्ञाता माता तुम पिताजी को जगा दो वे दहेज की व्यवस्था करें, मुझे दूर गौने पर जाना है।

गारी

खबड़दार हो समधी आवति गोरी।
एक गोरी के पाछे हजार गोरी।
खबड़दार हो समधी आवति गोरी॥

बारात की विदाई के समय मण्डप के नीचे समधी एकत्र होते हैं। समधिनें उन्हें चुनौती देती हैं कि सावधान हो जाओ। गोरियाँ आ रही हैं। एक गोरी के साथ हजारों गोरियाँ। समधी जी सावधान हो जाओ।

गारी

लत्ता कइ बांधी न रहबइ हो समधी।
लत्ता कई बांधी न रहबइ॥
सोने कइ संकरी गढ़ावा हो समधी
लत्ता कइ बांधी न रहबइ॥

मण्डप के नीचे समधी समधिनों को तौलिया से बाँध लेते हैं। समधिनों का स्वाभिमान जाग उठता है, वे व्यंग्य करती हैं कि कपड़े के बन्धन को नहीं मानूँगी। हमें बाँधना ही है, तो सोने की जंजीर बनवाओ। उससे हमें बाँधो। कपड़े के बंधन में हमें नहीं बाँधा जा सकता।

विदाई

अबके गये कब अउबे सियाबर।
अबके गये कब अउबे सियाबर॥

दूल्हे को राम का प्रतिरूप मानकर विदा के अवसर पर स्त्रियाँ गाती हैं- सीता के वर (दूल्हा) आज तो आप जा रहे हैं। यह बताइए कि अब आप ससुराल कब आयेंगे ?

परछन

बियाहि लाये रघुबर जानकी का।
अपने का लाये रामा हाथी अऊ घोड़ा॥
सजाइ लाये म्याना जानकी का।

अपने का लाये राम कंठी अउ कठुला।
गढ़ाइ लाये तिलरी जानकी का।
बियाहि लाये रघुबर जानकी का॥

राम, सीता को ब्याह लाये हैं। दहेज में राम (वर) को हाथी घोड़े मिले हैं। अपने साथ जानकी (दुल्हन) को डोली सजाकर ले आए हैं, और अपने लिए राम कंठहार ले आये हैं, और जानकी के लिए तिलरी (विशेष आभूषण) बनवाया है।

परछन

धीरे किहे परछनिया हो, मोर जूना लरद में।
पहिली परछनिया सासु रानी आई।
सोने कलसा लइ आई हो।
धीरे किहे परछनिया हो मोर जूना लरद में।

डोली में बैठी वधू परछन करने वाली स्त्रियों से अनुरोध करती है कि- परछन आहिस्ते से करो मैं थकी हुई हूँ। पहली परछन (आरती) के लिए सास स्वर्ण कलश सजाकर आई है।

डोला मुंदाई

दइदे फुफुइया का नेग, फुफुइया गइल रोकि दिहिस।
लाला खोलि देते बजुर केमार, मैं देखि लेतेउ तोर धनिया।
धउं सामरि, धो गोरि,
मैं देखि लेतेउं तोरि धनिया।

दूल्हे की बुआ डोली का द्वार बन्द कर देती है। इस लोक रीति के लिए उसे पुरस्कार (नेग) मिलता है। स्त्रियाँ गीत गाती हैं, बुआ का पुरस्कार दे दिया जाय। उसने डोली का द्वार बन्द कर रखा है। लाल (वर) बज्र जैसे सुदृढ़ डोली के किवाड़ को खोल दीजिए, हम लोग तुम्हारी दुल्हन को देख लें। दुल्हन श्याम है या गौरांगी।

चउथी

सिया अइसन सुन्दरि नारि।
रमइया संगे बन का चली॥
पलटि निहारे दीनानाथ,
के माया मोरि रोबत खड़ी
भरत माया का देउ समुझाइ,
के धीरज धइ के रहंइ॥

विवाह का व्रतबन्ध संस्कार पूर्ण होने पर स्त्रियाँ किसी निकट जलाशय में चउथी छुड़ाने जाते समय गीत गाती हैं। सीता जैसे सुकुमारी पत्नी राम के साथ वन यात्रा पर जा रही हैं। राम पीछे मुड़कर देखते हैं कि कौशिल्या माता रोती हुई खड़ी हैं। राम कहते हैं कि– भरत भाई! माता को समझा दो कि माँ धैर्य धारण कर अवध में रहें।

बघेली संस्कार गीत

डॉ. सत्यनारायण पाण्डेय

सम्पर्क - ग्राम-पोस्ट- गिरारी, जिला-शहडोल

मानव जीवन के मानसिक संकल्पों और विचारों को विकासोन्मुख करने की दृष्टि से संस्कारों का विशेष महत्त्व है। जीवन के विकास क्रम के साथ इन संस्कारों के अनेक प्रकार होते हैं। ये संस्कार बालक के गर्भ में आने से लेकर मृत्यु पर्यन्त चलते रहते हैं तथा व्यक्ति की उन्नति, समृद्धि, कल्याण एवं मानसिक शुद्धि की भूमिका प्रस्तुत करते हैं। भारतीय संस्कृति इन संस्कारों के माध्यम से अपने आपको अभिव्यक्त करती है।

भारतीय संस्कृति में निम्नलिखित षोडश संस्कारों का उल्लेख किया गया है-

गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूणकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, संन्यास और अन्त्येष्टि।

यद्यपि षोडश प्रकार के संस्कार बतलाये गये हैं तथापि पुत्र जन्म, मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह, गौना तथा मृत्यु प्रधान संस्कार माने जाते हैं। बघेलखण्ड में प्रायः इन्हीं संस्कारों के अवसर पर लोकगीत गाये जाते हैं।

बघेलखण्ड में बालक के जन्म के समय, छठी एवं बरहों के अवसर पर, मुण्डन एवं कर्णछेदन संस्कारों के समय सोहर गीत गाये जाते हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार को व्रतबन्ध, उपनयन तथा बरूआ के नाम से जाना जाता है। इस अवसर पर बरूआ गीत गाये जाते हैं।

विवाह संस्कार के अवसर पर विभिन्न रस्मों, रीति-रिवाजों पर भिन्न-भिन्न गीत गाये जाते हैं। इन गीतों में तिलक-सगाई गीत, मण्डप गीत, माटी मांगर गीत, तेल चढ़ाने का गीत, सोहाग गीत, बलनहाई गीत (सोहारी बेलने का गीत), द्वारचार गीत, चढ़ाव गीत, नहदू गीत, गारी गीत (भोजन करते समय), बनरा गीत, विवाह गीत, अंजुरी गीत, भाँवर गीत, लावा परोसने का गीत, विदाई गीत एवं परछन गीत प्रमुख हैं।

बघेलखण्ड के पूर्वी एवं दक्षिणी क्षेत्र में जहाँ अधिकांशतः आदिवासी जनजातियाँ निवास करती हैं, उस भूभाग पर मृत्यु के अवसर पर मृत्यु गीत गाने की प्रथा है। अन्य क्षेत्रों में सामान्यतया मृत्यु गीत नहीं गाये जाते हैं।

शादी विवाह जैसे अवसरों पर अपनी खुशी का इजहार करने के लिये कोकिल कण्ठिनी नारियों के प्रस्फुरित स्वरों में कितने गीत प्रवाहित होंगे, यह कहा नहीं जा सकता। यद्यपि इनके गीत असीमित हैं तथापि इनके प्रतिनिधि गीत यहाँ प्रस्तुत हैं।

सोहर

धन्य-धन्य अयोध्या नगरी
ता धन्य हैं राजा दशरथ
ता धन्य हैं राजा दशरथ हो
अब धन्य हैं कौशिल्या तोरी गोद
रमइया जनम लीन्हिन
रमइया जनम लीन्हिन हो
कहवां जन्मे हैं राम
कहन उठि सोहर
कहन उठि सोहर हो
अब केखर घर बजत है बधइया
कउंन गावैं मंगल
कउंन गावैं मंगल हो
रामा के संकरी भंवरिया
बहुत नीक लागै
बहुत नीक लागै हो
अब मुंहिया कमल जैसे सोहै
भँवर जैसे गुंजै
भँवर जैसे गुंजै हो
रामा के बड़ी-बड़ी अंखियाँ
कजल भल सोहै
कजल भल सोहै हो
अब रामा की लूटरी झलरिया
बहुत नीकि लागै

बहुत नीकि लागै हो
धन्य-धन्य अयोध्या नगरी..........

भगवान श्री रामचन्द्र जी का जन्म हुआ तो सर्वत्र खुशहाली छाई हुई है। नारियाँ सोहर गाती हुई कहती हैं कि- यह अयोध्या नगरी आज धन्य हो गई। साथ ही अयोध्या के राजा दशरथ तथा रानी कौशिल्या जी की गोद भी धन्य हो गई, जहाँ श्री रामचन्द्र जी का जन्म हुआ है।

सखियाँ परस्पर चर्चा करती हैं कि रामचन्द्र जी का जन्म कहाँ पर हुआ है ? तथा सोहर कहाँ गायी जा रही है ? पुत्र पाने की खुशी में बाजे-नगाड़े कहाँ बज रहे हैं तथा मंगल गीतों को कौन गा रहा है ?

दूसरी सखी बतलाती है कि अयोध्या राजघराने में रामचन्द्र जी का जन्म हुआ है। महलों में सोहर का गान किया जा रहा है। महाराजा दशरथ जी के घर बाजे, नगाड़े बज रहे हैं तथा कौशिल्या जी मंगल की कामना कर रही हैं।

रामचन्द्र जी की सुन्दर पतली-पतली भौहें हैं जो कि अत्यन्त मनोहारी हैं। जिस प्रकार सुन्दर कमल के पुष्प पर भौंरे गुंजायमान होते हैं, उसी प्रकार कमलवत् रामचन्द्र जी का मुख है। बालक राम के सौन्दर्य को निरूपित करती हुई सखियाँ कहती हैं कि उनकी बड़ी-बड़ी आँखों में लगा हुआ काजल अत्यन्त शोभा को प्राप्त कर रहा है। इसी प्रकार रामचन्द्र जी की उलझी हुई झालरें (केश विन्यास) अत्यन्त शोभायमान हो रही हैं। रामचन्द्र जी जहाँ जन्म लिये हैं वह अयोध्या नगरी धन्य है।

सोहर

भादौं की निशि अंधियरिया
ता जग जोग रोहनी
ता जग जोग रोहनी हो
अब प्रगटे हैं दीनदयाल
मनुष तन धरिके
मनुष तन धरिके हो।
कोठवा मा ठाँढ़े दोनौं
कर जोरे देवकी
ता कर जोरे देवकी हो
अब खुल गये हैं हंथकड़ियाँ
ता बिजुर किवांड़
ता चन्द्र हरि ठाढ़े हो

भादौं की निशि अंधियारी
ता जग जोग रोहनी
ता जग जोग रोहनी हो
अब प्रगटे हैं दीनदयाल।
मनुष तन धरिके
मनुष तन धरिके हो।

भाद्रपद (भादों मास) की अंधियारी रात में रोहणी नक्षत्र लगा हुआ है। उसी समय दीनदयाल अर्थात् श्री कृष्ण जी मनुष्य का रूप धारण करके जन्म लेते हैं। जेल के अन्दर देवकी जी अपने दोनों हाथों को जोड़े हुये खड़ी हैं, उनके हाथों में हथकड़ियाँ लगी हुई हैं। परन्तु भगवान श्री कृष्ण के जन्म लेते ही देवकी जी के हाथों की हथकड़ियाँ अपने आप खुल जाती हैं। इतना ही नहीं प्रभु प्रताप से वज्र सदृश दरवाजे भी अपने आप खुल जाते हैं।

सोहर

कहना से आयी पिअरिया
पिअरिया लगी झालर
पिअरिया लगी झालर हो
अब कहना से आये सेंधौरा
सेंधौरा भरा सेन्दुर
सेंधौरा भरा सेन्दुर हो
मैके से आयी पिअरिया
पिअरिया लगी झालर
पिअरिया लगी झालर हो
अब ससुरे से आये सेंधौरा
सेंधौरा भरा सेन्दुर हो
केखर आंगे पहिरब पिअरिया
पिअरिया लगी झालर
पिअरिया लगी झालर हो
अब केखे आगे पहिरब सेन्दुरवा
सेंधौरा भरा सेन्दुर
सेंधौरा भरा सेन्दुर हो
सासु आगे पहिरब पिअरिया
पिअरिया लगी झालर
पिअरिया लगी झालर हो

अब सैंया आगे पहिरब सेन्दुरवा
सेंधौरा भरा सेन्दुर
सेंधौरा भरा सेन्दुर हो।

पीले रंग की साड़ी कहाँ से आयी है ? इस पीली साड़ी में सुन्दर झालरें लगी हुई हैं। सिन्दूर दानी (सिंदूर रखने का पात्र) कहाँ से आई? सिन्दूर दानी में सिन्दूर भरा हुआ है। मायके से पीली साड़ी आई है। जिसमें झालरें लगी हुई हैं। ससुर जी के यहाँ से सिन्दूर रखने का पात्र (सिन्दूर दानी) आयी है। सिन्दूर दानी में सिन्दूर भरा है। किसके आगे पीली साड़ी पहनूँगी, पीली साड़ी में झालरें लगी हुई हैं तथा किसके आगे सिन्दूर पहनूँगी। सिन्दूर दान सिन्दूर से भरा हुआ है। सासूजी के आगे पीली साड़ी पहनूँगी जिसमें झालरें लगी हुई हैं, अपने पति के आगे सिन्दूर पहनूँगी। सिन्दूर दानी में सिन्दूर भरा हुआ है।

सोहर

ननद काहे पलना लैके आ गई॥
टोपी न लाई झगुंलिया न लाई।
ननद बाई दर्जी लैके आ गई॥
चुरबा न लाई करधनियाँ न लाई।
ननद बाई सोनरा लैके आ गई॥
झूला न लाई खटोला न लाई।
ननद बाई बढ़ई लैके आ गई॥
पेड़ा न लाई बताशा न लाई।
ननद बाई हलवाई लैके आ गई॥
ननद काहे पलना लैके आ गई॥

नवजात शिशु की खबर फैलते ही चारों ओर खुशी छा जाती है। ननद अपने मायके से दूर ससुराल में निवास कर रही है। जैसे ही उसे ज्ञात होता है कि उसके भाभी को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई है, वह हर्षातिरेक में झूमने लगती है। तत्काल चंदन काठ का पालना लेकर अपने मायके के लिये चल देती है।

नवजात शिशु के लिये वह न तो टोपी लेकर गई और न ही झालरदार वस्त्रों को लेकर गई है, बल्कि ननदबाई अपने साथ दर्जी को लेकर गई है, ताकि शिशु के उपयुक्त नाप के पर्याप्त कपड़े सिलवा सके।

ननद अपने साथ नवजात शिशु को पहनने के लिये चाँदी का कड़ा तथा चाँदी की करधनियाँ लेकर भी नहीं गयी है। अपितु वह अपने साथ स्वर्णकार को ले गई है, ताकि शिशु के लिये ढेर से जेवरात, आभूषण बनवाये जा सकें।

ननद अपने साथ बच्चे के लिये झूला एवं खटोला भी लेकर नहीं गई, बल्कि अपने साथ कुशल बढ़ई को लेकर गयी है, ताकि मनपसंद पालना बच्चे के लिये बनवा सके।

अपने भाभी के पुत्र होने की खबर सुनकर, खुशी का इजहार करने के लिये साथ में पेड़ा, बताशा भी नहीं ले गई है, बल्कि अपने साथ हलवाई को लेकर गई है, ताकि इस खुशी के अवसर पर पर्याप्त मिठाइयाँ बनवाकर बाँट सके। तात्पर्य यह कि ननद, अपनी भाभी को पुत्र होने की खुशी में कपड़े, जेवर एवं मिठाइयाँ बाँटने की तैयारियाँ करके अपने मायके पहुँच जाती है।

सोहर

बाजत आवे दस बाजा
ता इन्दर बजावैं
ता इन्दर बजावैं हो
अब नाचै फूफू सुभद्रा
गावैं सखि सोहर
गावैं सखि सोहर हो
काहे छुखना नारद छीनै
ता काहे पहुढ़ामै
ता काहे पहुढ़ामै हो
सोने छुखना नारद छीनै
खपर नहवामै
खपर नहवामै हो
अब रेसम पोंछउना राम पोछैं
सिंहासन पहुढ़ामै
सिंहासन पहुढ़ामै हो
बाजत आवे दस बाजा
ता इन्दर बजावैं
ता इन्दर बजावैं हो

पुत्र जन्म सुनते ही खुशहाली छा गयी। दशों दिशाओं से देवराज इन्द्र बाजे–नगाड़े बजा रहे हैं। बुआ सुभद्रा नृत्य कर रही हैं तथा सखियाँ सोहर गीतों का गान कर रही हैं। किस धातु से बने चाकू से नारद जी नारा काटते हैं, नवजात शिशु को कहाँ पर सुलाते हैं? प्रत्युत्तर है कि स्वर्ण निर्मित चाकू से नारद जी नारा काटते हैं। खपर में स्नान कराते हैं तथा रेशमी वस्त्र से पोंछकर सिंहासन में सुलाते हैं। दशों दिशाओं से बाजे बज रहे हैं। सर्वत्र खुशियाँ मनाई जा रही हैं।

सोहर

कौन बन उपजी है नरियर
कौन बन सुपरिया
कौन बन सुपरिया हो
अब कौन वन उपजी है हल्दी
पियरिया रंगउतेंव
पियरिया रंगउतेंव हो
ससुवा मा उपजी है नरियर
ससुवा मा सुपरिया
ससुवा मा सुपरिया हो
अब ससुवा मा उपजी है हल्दी
पियरिया रंगउबै हो
केखर आगे निकरबै
केखर आगे बइठबै हो
अब केखर आगे ललना खेलउबै
केखर संग बिहँसबै
केखर संग बिहँसबै हो
सासू के आगे निकरबै
सासू के आगे बइठबै
सासू के आगे बइठबै हो
अब सइयां के आगे ललना खिलउबै
देवर संग बिहँसबै
देवर संग बिहँसबै हो।

नारियल किस वन में उत्पन्न हुआ है? सुपाड़ी किस स्थान में पैदा हुई है ? किस स्थान पर हल्दी उपजी हुई है? हल्दी के पीले रंग में अपनी साड़ी को रंगूँगी। ससुराल में नारियल, सुपाड़ी तथा हल्दी उत्पन्न हुये हैं जिसके पीले रंग में अपनी साड़ी को रंग दूँगी। किसके आगे घर से निकलूँगी, किसके आगे बैठूँगी, किसके आगे अपने पुत्र को खेलाऊँगी तथा किसके सामने हँसी-मजाक करूँगी? प्रत्युत्तर है कि सास के आगे निकलूँगी, उन्हीं के सामने बैठूँगी, अपने प्रियतम के आगे पुत्र के साथ क्रीड़ा करूँगी तथा अपने देवर के आगे हँसी-मजाक करूँगी।

सोहर

कहना से आई देवी दाई
कहना शिव शंकर

कहना शिव शंकर हो
अब कहना से आये भगवान
मन्डिल मोरो जगमग
मन्डिल मोरो जगमग हो
उत्तर से आये देवी दाई
पश्चिम शिव शंकर
पश्चिम शिव शंकर हो
अब पूरब से आये भगवान
मन्डिल मोरो जगमग
मन्डिल मोरो जगमग हो
का चढ़ि आयी देवी दाई
कहिन शिव शंकर
कहिन शिव शंकर हो
अब का चढ़ि आये भगवान
मन्डिल मोरो जगमग
मन्डिल मोरो जगमग हो
सिंध चढ़ि आयी देवी दाई
नन्दी शिव शंकर
नन्दी शिव शंकर हो
अब गरूड़ चढ़ि आये भगवान
मन्डिल मोरो जगमग
मन्डिल मोरो जगमग हो
का लैके आयी देवी दाई
कहिन शिवशंकर
कहिन शिवशंकर हो
अब का लैके आये भगवान
मन्डिल मोरो जगमग
मन्डिल मोरो जगमग हो
धन लेके आयी देवी दाई
धरम शिव शंकर
धरम शिव शंकर हो
अब पूत लैके आये भगवान
मन्डिल मोरो जगमग
मन्डिल मोरो जगमग हो।

देवी जी कहाँ से आ गईं ? शिव शंकर जी कहाँ से आ गये तथा भगवान जी कहाँ से आ गये ? इन सबके आने से हमारा मन्दिर जगमगा उठा है। देवी जी उत्तर दिशा से और शिव शंकर जी पश्चिम दिशा से तथा पूर्व दिशा से भगवान जी पधारे हैं। इनके आगमन से मेरा मन्दिर जगमगा रहा है। देवी जी किस सवारी में और शंकर जी किसमें तथा भगवान जी किस सवारी में चढ़ कर आये हैं कि हमारा मन्दिर प्रकाशवान है ? सिंह में चढ़कर देवी जी, नन्दी बैल में चढ़कर शिव शंकर जी तथा गरूड़ पर चढ़कर भगवान जी पधारे हैं। जिनके कारण हमारा मन्दिर शोभायमान हो रहा है। देवी जी क्या लेकर आयी हैं ? शिव जी क्या ले आये हैं तथा भगवान जी क्या लेकर आये हैं ? धन लेकर देवी जी, धर्म लेकर शिव शंकर जी तथा पुत्र लेकर भगवान जी पधारे हैं, इसीलिये मेरा मन्दिर जगमगा रहा है। प्रकाशवान हो रहा है।

सोहर

अंगना मा बोउबै अनार
ता भितरे बदाम
ता भितरे बदाम हो
अब खिड़की मा बोउबै छोहाड़
ता दर बिच नरियर
ता दर बिच नरियर हो
काहे मा सींचो अनार
ता काहे मा बदाम
ता काहे मा बदाम हो
अब काहे मा सींचो छोहाड़
ता काहे मा नरियर
ता काहे मा नरियर हो
तमवा के गगरा मा अनार
ता जलवा बदाम
ता जलवा बदाम हो
अब दुधवा मा सींचों छोहाड़
ता दर बिच नरियर
ता दर बिच नरियर हो
काहे मा तोड़ौं अनार
ता काहे मा बदाम
ता काहे मा बदाम हो
अब काहे मा तोड़ो छोहाड़

ता दर बिच नरियर
ता दर बिच नरियर हो
डलिया मा तोड़ो अनार
ता सुपवा बदाम हो
अब अंचरा मा तोड़ौ छोहाड़
ता दौरी मा नरियर
ता दौरी मा नरियर हो
अंगना मा बोइबै अनार
भितरे बदाम
भितरे बदाम हो
अब खिड़की मा बोउबै छोहाड़
ता दर बिच नरियर
ता दर बिच नरियर हो।

मैं अपने आँगन में अनार तथा घर के अन्दर ही बादाम के पेड़ लगाऊँगी। अपने घर की खिड़की के पास छुहारा तथा एक गड्ढे में नारियल का पेड़ लगाऊँगी।

आगे कल्पना करती है कि अनार तथा बादाम के पेड़ों को किससे सिंचाई करूँगी ? इसी प्रकार छुहारे एवं नारियल के पेड़ों को भी सींचने की सोचती है। अन्ततः स्वमेव निर्णय लेती है कि मैं ताम्रपात्र के कलश से अनार तथा जल से बादाम और दूध से छुहारा एवं जल से नारियल के पेड़ों की सिंचाई करूँगी।

इसी प्रकार आगे सोचती है कि अनार को तोड़कर कहाँ रखूँगी तथा छुहारा और नारियल तोड़कर कहाँ रखूँगी ? फिर निर्णय लेती है कि छोटी-सी टोकनी में अनार तथा सूपा में बादाम तोड़कर रखूँगी। अपने आँचल में छुहारा के फल तथा बाँस की बनी हुई दौरी में नारियल रखूँगी। उल्लेखनीय है कि उपरोक्त सभी फल पुत्रदा योग हेतु शुभ माने गये हैं।

सोहर

रात काहे रोये रे ललनवा
सबेरे घुनघुनवां मंगइहों॥
ससुरा मा होती तो सासू से कहती
अम्मा से कहत लजानी
सबेरे घुनघुनवां मंगइहों॥
ससुरा मा होती तो ननदी से कहती
दीदी से कहत लजानी

सबेरे घुनघुनवां मंगइहों॥
ससुरा मा होती तो देवरा से कहती
भइया से कहत लजानी
सबेरे घुनघुनवां मंगइहों॥

माँ की गोद में नन्हा शिशु रुदन करते हुये मचल रहा है। बड़े प्यार से माँ उसे सांत्वना दे रही है कि क्यों रात में रो रहे हो ? सुबह होने पर मैं तुम्हारे लिये सुन्दर सा घुनघुना मँगा दूँगी। उसकी मीठी आवाज को तुम सुना करना।

मैं भी विवश हूँ। यदि अपने ससुराल में होती तो ये बातें मैं अपनी सास से कहती और वे घुनघुना मँगवा देती। परन्तु मैं मायके में हूँ, यहाँ अपनी माताजी से घुनघुना की बात कहने में शर्म का अनुभव कर रही हूँ।

यदि मैं अपने ससुराल में होती तो घुनघुना मँगवाने की बात अपने जेठानी से कहती। परन्तु अपनी भाभी से घुनघुना मँगाने की बात कहने में मुझे शर्म लग रही है।

यदि मैं अपने ससुराल में होती तो घुनघुना मँगवाने के लिये अपनी ननद से कह देती। परन्तु यही बात अपनी बड़ी बहन से कहने में संकोच का अनुभव कर रही हूँ।

यदि मैं अपने ससुराल में होती तो रोते हुये बालक को शांत करने के लिए घुनघुना की माँग अपने देवर से करती। परन्तु मायके में यह बात अपने भाई से कैसे कहूँ? शर्म के कारण मैं नहीं कह पा रही हूँ। तथापि हे पुत्र! रात्रि में मत रोओ, सुबह तुम्हारे लिये घुनघुना मँगवा दूँगी।

सोहर

लौंग मिरिचि केर बिरवा घिनौची तरी उपजा
घिनौची तरी उपजा है हो
आवा पान फुलन ऐसे ललना आंगन मोरे खेलैं
आंगन मोरे खेलईं हो
ओनईं आई कारी बदरिया ओनईं जल बरसै
ओनईं जल बरसै हो
बदरी जाइ बरसा उहै देश छयल उठि भागईं
छयल उठि भागईं हो
बदरी जाइ बरसा बड़े बूंद छयल उठि भागईं
छयल उठि भागईं हो
की तुम चोर चहरवा किं राजा के पहरूआ
कि राजा के पहरूआ हौं हो

आवा की तुम होरिलवा के बाप पलंग मोरी डोलइ
पलंग मोरी डोलईं हो
ना हम चोर चहरूआ न राजा के पहरूआ हौं हो
न राजा के पहरूआ हौं हो
रानी हम तौ हरिलवा के बाप पलंग तोरी डोलई
पलंग तोरी डोलई हो।

घर के आँगन में एक कोने पर लकड़ी का बना हुआ एक मचान है जिसके ऊपर पीने हेतु पानी का भरा घड़ा रखा हुआ है। पानी उड़ेलते समय घड़े से गिरे हुये जल से मचान के नीचे नम भूमि है। ऐसी गीली भूमि पर लौंग एवं काली मिर्च के पौधे उग आये हैं। पान एवं फूल के सदृश्य सुन्दर तथा सुकुमार मेरा प्यारा पुत्र आँगन में खेल रहा है। उसी क्षण आसमान में बादलों की काली घटाएँ उमड़ने लगीं तथा पानी की बूँदें धरती पर गिरने लगीं।

बच्चे को खेलता हुआ देखकर पत्नी को उसके पति की याद आती है। वह बादलों को सम्बोधित करके कहती है कि- काले-काले बादलों! उस देश में जाकर बरसो, जहाँ पर मेरे पति सो रहे हैं। यदि वे गहरी नींद में सो रहे होंगे तो बड़ी-बड़ी बूँदें बरसना।

ऐसा होने पर पति भागता हुआ घर आता है तथा पत्नी की चारपाई पर पैर रखता है। चारपाई के हिलने से पत्नी की नींद खुलती है। पत्नी पूछती है कि- तुम चोर हो या पहरा देने वाले राजा के सिपाही हो ? पति कहता है कि- न तो मैं चोर हूँ और न ही पहरा देने वाला सिपाही हूँ। मैं तुम्हारे बालक का पिता हूँ।

सोहर

धन्य धरती धन्य भाग
बिहारीलाल भुइयां डरे हैं
जा कहि दइयो मोरे बारे ससुर से
द्वारे पे बसनी कटावैं
बिहारीलाल भुइयां डरे हैं
जा कहि दइयो मोरे बारे जेठ से
द्वारे पे हाथी नचावैं
बिहारीलाल भुइयां डरे हैं
जा कहि दइयो मोरे बारे सासू से
द्वारे पे घोड़ नचावैं
बिहारीलाल भुइयां डरे हैं
जा कहि दइयो मोरे बारे देवरा से

द्वारे पे ढोल बजावैं
बिहारीलाल भुइयां डरे हैं।

वह धरती धन्य है, वह भूभाग धन्य है जहाँ पर श्री कृष्ण जी का जन्म हुआ है। श्री कृष्ण तुल्य पुत्र का जन्म जिस स्थान पर हुआ है, निश्चित ही वह स्थान भाग्यशाली है।

जा करके हमारे ससुर जी को बता दो ताकि वे खुश होकर रूपये-पैसे बाँटना शुरू कर दें। पुत्र प्राप्ति की सूचना मेरे जेठ को दे दो ताकि वे दरवाजे पर हाथी का नृत्य करवाने लगें।

जाकर हमारी सास जी को खबर दे दो ताकि वे खुश होकर के सुन्दर सजे-संवरे घोड़ों का नृत्य दरवाजे पर करवाने लगें। इसी प्रकार इस खुशी की सूचना हमारे देवर जी को दे दो ताकि वे दरवाजे पर ढोल-नगाड़े बजाकर अपने खुशी का इजहार करने लगें। वह धरती निश्चित ही भाग्यवान है जहाँ पर श्री कृष्ण सदृश्य पुत्र का जन्म हुआ है।

सोहर

मोरे अंगना मा चन्दा की पहली किरन
अपने दादी की गोदी में खेले ललन
उनके आजा के अरमान पूरे हुये
मोरे अंगना मा चन्दा की पहली किरन
अपने बड़ी मां की गोदी में खेले ललन
उनके दाऊ के अरमान पूरे हुये
मोरे अंगना मा चन्दा की पहली किरन
अपने चाची की गोदी में खेले ललन
उनके चाचा के अरमान पूरे हुये
मोरे अंगना मा चन्दा की पहली किरन
अपने फूफू की गोदी में खेले ललन
उनके फूफा के अरमान पूरे हुये
मोरे अंगना मा चन्दा की पहली किरन।

यह हमारा अहोभाग्य है कि हमारे आँगन में चन्द्रमा की प्रथम किरणें फैल रही हैं। अर्थात् प्रथम पुत्र की प्राप्ति हुई है।

प्यारा नवजात शिशु अपनी आजी (दादी) की गोद में खेल रहा है। फलस्वरूप उसके आजा (बाबा) के अरमान पूरे हो गये। अर्थात् उनके नाती प्राप्त करने की लालसा पूर्ण हो गई।

प्यारे बच्चे के बड़ी माँ की गोद में खेलने से ताऊ को तथा चाची की गोद में खेलने से चाचा के अरमान पूरे हो गये। अर्थात् इन सबकी लालसा पूर्ण हो गई। बच्चे को अपनी बुआ के

गोद में खेलता हुआ देखकर बच्चे के फूफा की भी इच्छा पूर्ण हो गई। ये सब नवजात शिशु के आगमन से सन्तुष्ट एवं प्रसन्न हैं।

सोहर

पांच पेड़ आमा लगाए केर बड़ा फल
जो आमा कहराय
जो आमा कहराय हो
अब सागर खनाये केर बड़ा फल
जो जल ओगरै
जो जल ओगरै हो
आमा लगी है टिकोरिया
सुआ गल गोदरैं
सुआ गल गोदरैं हो
अब गउआ जुरैं पनिया पीवैं
ता पुरइन हालैं
ता पुरइन हालैं हो
पांच पेड़ आमा लगाए केर बड़ा फल
जो आमा कहराय
जो आमा कहराय हो
अब सागर खनाये केर बड़ा फल
जो जल ओगरै
जो जल ओगरै हो
पुतवा पूजन केर बड़ा फल
जो घर जनमै
जो घर जनमै हो
अब पुतवा तो घर के सम्पतियाँ
ता घर के सम्पतियाँ
ता घर के सम्पतियाँ हो

आम फल के पेड़ लगाने से धर्म की प्राप्ति होती है। यदि आम के पाँच पेड़ कोई लगाता है और वे पेड़ फूलने-फलने लगते हैं तो लगाने वाले को बहुत पुण्य की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार तालाब, झील, कुआँ आदि खुदवाने पर भी पुण्य की प्राप्ति होती है।

आम के वृक्षों में जब छोटी-छोटी टिकोरी (छोटे फल) लग जाती है तभी से तोते आदि पक्षी उसे खाने लगते हैं। खुदाये गये जलाशय में जब जल ओगरने (रिसने) लगता है तो गायें

इकट्ठा होकर पानी पीने जाती हैं। उनके पानी पीने से तालाब में लगे हुये कमल के पत्ते हिलने लगते हैं।

इसी प्रकार घर में जन्म लिये हुये पुत्र का पूजन (बारहों संस्कार) करने से भी बहुत पुण्य की प्राप्ति होती है। वह घर की संपत्ति तो है ही अपितु पुत्र जन्म से माँ की कोख पवित्र हो जाती है। आशय यह कि- परोपकार करने से पुण्य एवं फल (अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष) की प्राप्ति होती है।

सोहर

बधावा हमरे आज छम छम बाजै
हमरे ससुर जी ढोलक लै आये
सासूरानी आज छम छम नाचै
बधावा हमरे ....
हमरे जेठा जी सारंगी लै आये
जेठानी रानी आज हिस्सा मांगैं
बधावा हमरे ....
हमरे देवरा जी नगरिया लै आये
देवरानी मोरी आज चौका बर्तन मांगैं
बधावा हमरे ....
हमरे ननदोई आज अपने से नाचैं
ननद रानी आज सोबर पोतैं
बधावा हमरे ....

जन्मोत्सव की खुशियाँ पूरे परिवार में छाई हुई हैं। आज हमारे घर में बधाव (पुत्र जन्म के समय बजाया जाने वाला विशेष नगाड़ा) बज रहा है। हमारे ससुर जी ढोलक लेकर आये हैं तथा सासू जी प्रसन्नता से नाच रही हैं। हमारे जेठ जी सारंगी लेकर आये हैं तो जेठानी जी हिस्सा बाँट की बात करने लगती हैं। हमारे देवर जी नगरिया (छोटा नगाड़ा) लाकर बजवा रहे हैं, परन्तु देवरानी चौका बर्तन की माँग कर रही हैं। हमारी ननद जी सोबर पोत रही हैं तथा ननदोई जी प्रसन्न होकर अपने आप नाच रहे हैं।

सोहर

एक फूल फूलई अजुधिया
दुसर फूल मथुरा
दुसर फूल मथुरा हो।

अब तीसर फूल फूलई बनारस
चउथ मोरे अंचरा हो
अंचरा बिछाय पइंया परितेंउ
अरज कछु करतेंउ
अरज कछु करतेंउ हो।
अब कोहू का दिहे दुइचार
कोहू का दस पांच
कोहू का दस पांच हो।
त कोहू का राखे ललचाइ
त एक ललन बिनु
एक ललन बिनु हो।
अमवा त फरा हइ घउदबन
अमिली झपकबन
अमिली झपकबन हो।
रामा तिरिया का राखेउ ललचाई
त एक ललन बिनु
एक ललन बिनु हो।

पुत्र कामना का सोहर गीत है। नारी कहती है– एक फूल (राम) तो अयोध्या में खिला हुआ है। दूसरा पुष्प (कृष्ण) मथुरा में खिला हुआ है। तीसरा (शिव) वाराणसी में खिला हुआ है, किन्तु चौथा मेरे आँचल में नहीं है। क्या करूँ ? मैं आँचल बिछाकर (पसारकर) तुम्हारे पैर पड़ती हूँ। किसी को दो–चार पुत्र दिये, किसी को दस–पाँच और मुझे कुछ नहीं। मैं लालसा भरी दृष्टि से देख रही हूँ एक ललन के लिये, घर–आँगन में खेलने वाले एक पुत्र के लिये। आम को देखती हूँ तो गुच्छे के गुच्छे फले हैं। इमली में बड़े–बड़े गुच्छे हैं, पर मैं नारी (तिरिया) तरस रही हूँ एक लाल (पुत्र) के लिये, एक खेलने वाले पुत्र के लिये।

सोहर

जन्मे हैं रामा अवध चलो सजनी
ढेकरिन तो नेग मांगै नारा की छिनौहीं।
कौशिल्या की चीर मांगै लाल की नहौहीं॥
सासु तो नेग मांगै चेरूआ की चढ़ौंहीं।
कौशिल्या की बेसर मांगै चेरूआ की चढ़ौंहीं॥
जन्मे हैं रामा अवध चलो सजनी॥
जेठानी तो नेग मांगै लड्डू की बधौंहीं।

कौशिल्या की तिलरी मांगै लाल की खेलौंहीं॥
जन्मे हैं रामा अवध चलो सजनी॥
लहुरी तो नेग मांगै बिलुई की रंधौंहीं।
कौशिल्या केर कंगन मांगै पलंगा की बिछौंहीं॥
जन्मे हैं रामा अवध चलो सजनी॥
ननदी तो नेग मांगै सतिया की पोतौंहीं॥
कौशिल्या की पायल मांगै काजल की अंजौंहीं॥
जन्मे हैं रामा अवध चलो सजनी॥
देवर तो नेग मांगै बंशी की बजौंहीं।
हांथवा की कंगना मांगै कलशा की उतरौंहीं॥
जन्मे हैं रामा अवध चलो सजनी॥

अयोध्या में राम का जन्म हुआ है, चलो हम सब अयोध्या को चलें। नारा काटने वाली अपना नेग मांगती है। राम को स्नान कराने के नेग में कौशिल्या की साड़ी मांगती है। सासू बाँह पकड़ने के नेग में जेवर माँग रही है। जेठानी लड्डू बाँधने के नेग में कौशिल्या के गले का हार माँगती हैं। छोटी वाली तो छठी में दिये जाने वाले भोजन का नेग तथा पलंग बिछाने के नेग में कंगन माँग रही है।

हे सजनी! अवध को चलो, वहाँ राम का जन्म हुआ है। ननद तो सोबर पोतने तथा काजल आंजने के नेग में कौशिल्या की पायल माँग रही है। देवर बंशी बजाने एवं कलश उतारने के नेग में हाथ का कंगन माँग रहे हैं। राम का जन्म हुआ है, सखी चलो अयोध्या चलें।

कुआँ पूजन

ऊपर बदरा घहरांय रे तरी गोरी पानी का निकरी
जाइ कहो मोरे राजा ससुर से
दुआरे मां कुंअना खोदावैं
तौ गोरी धना पानी का निकरी
ऊपर बदरा घहरांय ....
जाइ कहो मोरे राजा जेठ से
कुंअना मां जगत बंधावै
तौ गोरी धना पानी का निकरी
ऊपर बदरा घहरांय ....
जाइ कहो मोरे बारे देवरे से
रेशम रसरी मंगावैं
तौ गोरी धना पानी का निकरी

ऊपर बदरा घहरांय ....
जाइ कहो मोरे राजा बलम से
सोने के घइला मंगावैं
तौ गोरी धना पानी का निकरी
ऊपर बदरा घहरांय ....

आसमान में काले-काले बादल उमड़ रहे हैं तथा उसके नीचे प्रसूता (गोरी) पानी भरने के लिये निकलती है। वह कहती है कि- जाकर मेरे राजा ससुर से कहो कि वे दरवाजे के पास कुआँ खुदवायें। इसके बाद जाकर मेरे राजा जेठजी से कहो कि वे कुएँ में जगत बंधवायें, तभी गोरी पानी भरने के लिये निकलेगी। आगे कहती है कि- मेरे प्यारे देवर से कहो कि वे पानी भरने के लिये रेशम की रस्सी मंगवायें। तत्पश्चात् मेरे राजा पतिदेव जी से कहो कि वे सोने का घड़ा मंगवायें। आसमान पर बादल उमड़-घुमड़ रहे हैं और नीचे गोरी (प्रसूता) पानी भरने निकली है।

कुआँ पूजन

खेलत राम मैं छोड़ आयों हो
तुलसा के दुआरे
तामे के गगरा गरम घरौं पानी
सफरत राम मैं छोड़ आयों हो
तुलसा के दुआरे
खेलत राम मैं छोड़ आयों हो
तुलसा के दुआरे
पीली अंगौछी पितम रंग धोती
खैंचत राम मैं छोड़ आयों हो
तुलसा के दुआरे
खेलत राम मैं छोड़ आयों हो
तुलसा के दुआरे
पेड़ा, जलेबी मगज के लड्डू
जेवत राम मैं छोड़ आयों हो
तुलसा के दुआरे
खेलत राम मैं छोड़ आयों हो
तुलसा के दुआरे
फूलन झेल-झेल सेजा लगायों
पौढ़त राम मैं छोंड़ आयों हो

तुलसा के दुआरे
खेलत राम मैं छोड़ आयों हो
तुलसा के दुआरे।

मैं अपने प्यारे ललन रामचन्द्र को तुलसीजी के सामने खेलते हुये छोड़कर आयी हूँ। ताम्र पात्र के घड़े में गरम पानी रखा हुआ है। मैं अपने रामचन्द्र को स्नान करते हुये तुलसी के द्वार पर खेलते हुये छोड़ आयी हूँ।

रामचन्द्रजी पीले रंग की अंगोछी (गमछा) कंधे पर रखे हुये हैं तथा पीले रंग की परदनी (धोती) पहने हुये हैं। पीले वस्त्रों को खींचते हुये मैं रामजी को तुलसी के चबूतरे के समीप छोड़ आयी हूँ। पेड़ा, जलेबी तथा मगज के लड्डू खाते हुये रामचन्द्र को मैं तुलसी के दरवाजे पर छोड़कर आयी हूँ। मैंने अपने रामजी के लिये फूलों को चुन-चुन कर सेज लगाया है, उस शय्या पर सोते हुये राम को तुलसी के समीप छोड़कर आयी हूँ।

कुआँ पूजन

घूमत मथुरै जाऊँ हो
काशी मा बोरौं घइलना
जाइ कहियों मोरे राजा ससुर से
द्वारे मा कुंइयाँ खनामैं हो
काशी मा बोरौं घइलना
जाइ कहियों मोरे राजा जेठ से
द्वारे मा कुंइयाँ खनामैं हो
काशी मा बोरौं घइलना
जाइ कहियो मोरे राजा देवर से
द्वारे मा कुंइयाँ खनामैं हो
काशी मा बोरौं घइलना

मैं मथुरा-वृन्दावन घूमने जाती हूँ तथा जल लेने के लिये काशीजी जाती हूँ, जो कि काफी दूर पड़ता है। जाकर के मेरे ससुरजी से कहो कि वे घर के समीप कुआँ खुदवायें। मेरे जेठजी से भी जाकर कह दो कि वे दरवाजे पर ही कुआँ खुदवा देवें। मुझे जल लेने के लिये काशी जाना पड़ता है। इसी तरह हमारे देवरजी से जाकर के कह दो कि मुझे जल भरने के लिये काशी अर्थात् काफी दूर जाना पड़ता है, अत: घर के समीप कुआँ खोदायें।

कुआँ पूजन

जल कैसे भरौं जमुना गहरी।
जल कैसे भरौं जमुना गहरी॥

ठाढ़े भरौं राजा राम देखत हैं
बैठे भरौं भीगै चुनरी
जल कैसे भरौं जमुना गहरी
धीरे चलौं घर बालक रोवैं
चांडे चलौं छलकै गगरी
जल कैसे भरौं जमुना गहरी॥

जमुना नदी में जल भरने के लिये गई हुई पनिहारिन कहती है कि– मैं पानी कैसे भरूँ? जमुना नदी अत्यन्त गहरी हैं। यदि खड़े होकर पानी भरती हूँ तो राजा राम देखते हैं तथा बैठकर भरती हूँ तो साड़ी भींग जाती है। जल से भरा हुआ घड़ा लेकर यदि धीरे–धीरे चलती हूँ तो घर में बालक रोता है और यदि तेजी से चलती हूँ तो घड़े से पानी छलकता है।

मुण्डन

झलरिया मोरी उलरू झलरिया मोरी झुलरू
झलरिया सिर झुकइं लिलार
अंगन मोरे झाल बिरबा
संभवा मा बैइठे हैं बाबा बसी राम
गोदी बइठे नतिया अरज करै लाग
हो बब्बा झलरिया मोरी उलरू झलरिया मोरी झुलरू
झलरिया सिर झुकइं लिलार
सुना दादू आवै देउ बसंत बहार
झलरिया हम देबइ मुड़ाय
फुफुया जो अइहैं मोहर पांच देवई
झलरिया सिर देबई मुड़ाय
संभवा मा बैइठे हैं बाप लाला राम
गोदी बैठे बेटा अरज करैं लाग
झलरिया मोरी उलरू ....
दादा मोरी झलरी देउ मुड़ाय
बेटवा से दादा अरज करै लाग
आवइं देऊ बेटा बसंत बहार
फुफुआ जो अइहै करनफूल देबइ
झलरिया सिर देबइ मुड़ाय।

शिशु के बाल अत्यधिक बढ़े हुये हैं। अभी उसका मुण्डन संस्कार नहीं हुआ है। अत: उसके बालों को काटा नहीं जा सकता। शिशु जब चलता है, खेलता है तो बाल सिर के चारों ओर

लटकते हैं तब वह परेशानी का अनुभव करता है। अपने बाबा बसीराम जी की गोद में बैठकर कहता है कि– बाल अत्यधिक बढ़ गये हैं और वे चारों ओर झूलते रहते हैं। मेरा मुण्डन करवा दीजिये। बाबा बसीराम बड़े प्यार भरे स्नेहिल स्वर में कहते हैं कि– बसन्त आ रहा है। तुम्हारी फुआ को बुलवायेंगे, वह जब आयेंगी, तब तुम्हें गोद में बैठाकर मुण्डन करायेंगी। उन्हें हम नेग में पाँच सोने की मोहरें देंगे।

इसी प्रकार शिशु अपने पिता लालराम जी की गोद में बैठ जाता है और कहता है कि– पिताजी मेरी झालरें बहुत बड़ी हो गई हैं। सिर के चारों तरफ झूलती हैं, इसलिए मेरा मुण्डन करवाइये। पिताजी प्यार भरे शब्दों में सांत्वना देते हुये कहते हैं कि– बसन्त को आ जाने दो। तुम्हारी फुआ को बुलायेंगे। वह आकर के तुम्हें गोद में बैठाकर मुण्डन करवायेंगी। मैं उन्हें नेग में कर्णफूल दूँगा।

मुण्डन

कहंवा उपजी है बेलियां
ता कहंवा चमेलिअऊ
ता कहंवा उपजी है झलरिया
झलरिया बड़ी सुन्दर
झलरिया बड़ी सुन्दर हो
खोरी मा उपजी है बेलिया
ता अंगना मा चमेलिअऊ
ता अंगना मा चमेलिअऊ हो
अब माया के उपजी झलरिया
झलरिया बड़ी सुन्दर
झलरिया बड़ी सुन्दर हो
काहेन मा टोरेऊं बेलिया
ता काहेन मा चमेलिअऊ
ता काहेन चमेलिअऊ हो
अब काहेन मा टोरेऊं झलरिया
झलरिया बड़ी सुन्दर
झलरिया बड़ी सुन्दर हो
डलिया मा टोरेऊं बेलिया
सुपवा मा चमेलिअऊ
सुपवा मा चमेलिअऊ हो
अब अंचला मा टोरेऊं झलरिया

झलरिया बड़ी सुन्दर
झलरिया बड़ी सुन्दर हो

बेला, चमेली एवं झालर (शिशु के केश) कहाँ उपजे हुये हैं? ये झालर बहुत सुन्दर लग रहे हैं। संकरे रास्ते के कोने पर बेला तथा आँगन में चमेली तथा माता के कोख में उत्पन्न संतान के सिर पर सुन्दर झालर लगे हुये हैं। किस पात्र में बेला, चमेली तथा झालर को तोड़कर रखा जाय? छोटी टोकनी में बेला, सूप में चमेली तथा आँचल में झालर (शिशु के केश) उतारकर रखेंगे, यह झालर बड़ी सुन्दर लग रही है।

मुण्डन

गंगा तीरे मड़ैया रमैया यज्ञ रोपैं
रमइया यज्ञ रोपैं हो
बिन सीता यज्ञ न होय सितल बन सेवे
सितल बन सेवे हो
बहिरे से उचि गें हैं रामा भीतर उचि बोलैं
भीतर उचि बोलैं हो
लक्षिमन एक बेर जावा वृन्दावन एक बेर जावा
भौजी लेबाय लावा
भौजी लेबाय लावा हो
आंगे के घोड़िला गुरूजी ता पीछे के लक्षिमन
पीछे के लक्षिमन हो
अब हेरय लागे रुख के मड़इया जहां सीता तप करैं
जहां सीता तप करैं हो
अंगना बहोरत चेरिया झरोखवन चितबय
झरोखवन चितबय हो
सीता आवत हवंय गुरूजी तुम्हारे ता पीछे लछिमन देवरा
ता पीछे लक्षिमन देवरा हो
नहाय खोर के सीता रानी ओरी घरे ठाँढ़े हैं
ओरी घरे ठाँढ़े हैं हो
सखियां आवत हैं गुरू जी हमारे ता पीछे लछिमन देवरा
ता पीछे लछिमन देवरा हो
सोनेन आरति साजिन त साज संवारिन
ता साज संवारिन हो
पूजै लागीं गुरूजी के पांव चरन गहि लागैं

चरन गहि लागैं हो
इतनी सुन्दर सीतल रानी गुनन के आगर
गुनन के आगर हो
कौने गुन त्यागे अवध का अवध नहिं आये
अवध नहिं आये हो
बोले ता बोले गुरूजी अब मति बोले
अब पति बोले हो
गुरुजी अस के रूढ़ि भगवान सपनेउ नहिं देखें
सपनेउ नहीं देखेउं हो
अग्नि कुण्ड मा बोरिन फेरि निकारिन
फेरि निकारिन हो
मोरे नमयै गरभ भगवान ता वन का निकारिन
वन का निकारिन हो।

गंगाजी के किनारे एक घास-फूस की मड़ैया बनी हुई है। यह मड़ैया एक यज्ञशाला है जहाँ रामचन्द्रजी यज्ञ कर रहे हैं। वे विचार करते हैं कि यज्ञ में पति-पत्नी अर्थात् दोनों का रहना जरूरी है। अत: अन्दर जाकर लक्ष्मण जी को आदेश देते हैं कि जाकर अपनी भाभीजी को बुला लाओ। जबकि सीताजी का त्याग करने के कारण वे वन में निवास कर रही हैं। आगे के घोड़े में गुरूजी तथा पीछे के घोड़े में लक्ष्मणजी बैठकर वहाँ जाते हैं जहाँ पर सीताजी वन में तपस्या कर रही थीं।

सीता की दासी आँगन साफ करते हुये दोनों का आना देखती है, तथा उन्हें बताती है कि आपके गुरूजी एवं देवरजी आये हुये हैं। सीताजी स्वर्ण की थाली में आरती तैयार करके अपने गुरूजी के चरणों को धोने लगती हैं। गुरूजी ने कहा- हे गुणवान सीता! तुमने अवध को क्यों त्याग दिया? सीताजी ने कहा- हे गुरूजी! अब आगे कुछ मत बोलिये। हमारे भगवान (रामचन्द्रजी) ने हमें त्याग दिया। स्वप्न में भी कभी याद नहीं किया। अग्निकुण्ड में डाल करके निकाला। मुझे नौ मास का गर्भ था उस समय मुझे वन के लिये निकाल दिया है।

मुण्डन

केकर चुटकी खियानी
चंदनमा के रगड़त
झलरिया के परछत हो।
कउने सोमइया के होरिलवा
त झलरी मंडरामय हो।
कउने फुफुउना झलरी उठामय

चउना लगामइ हो।
झलरिया मंडरामई हो
झलरिया सुरझामय हो।
का पायेन झलरिया के पछोरत
झलरिया के मंडरावत हो।
सोने के पाइन माला और अंगुठिया
रूपेन केर पाइन चुरबउ हो।
फूफा के चुटकी खियानी
चंदनमा के रगड़त
चंदनमा के रगड़त हो
झलरिया के परछत हो।

चंदन रगड़ते-रगड़ते किसके हाथ की अंगुली घिस गई, कौन झालर को उठा रहा है, कौन झालर को एकत्र कर रहा है, किस मालिक के पुत्र की झालर मंडरा रहे हैं, कौन से फूफा हैं जो झालर उठा रहे हैं, झालर सुलझा रहे हैं, पछोरने का नेग फूफा को क्या मिला ? झालर सुलझाने का नेग क्या मिला ? फूफा को सोने का हार और सोने की अंगूठी मिली। उन्हें नेग में चाँदी का चूड़ा मिला।

मुण्डन

हँसि बोलि पूछई बसीराम
फूफू कउने गहनमा कै साध
त झलरिया नेउछावरि हो।
रांग पितर पहिरंई बानिन अउ कलवारिन
बेटा पिअर मोहरबा कइ साध
त झलरिया नेउछावरि हो।
हँसि बोलि पूछई रोहणी राम
फूफू कउने कपड़वा कइ साध
त झलरिया नेउछावरि हो।
लाल पिअर पहिरई बानिन कलवारिन
श्वेत कपड़वा कइ साध
त झलरिया नेउछावरि हो।
हँसि बोलि कहइं गोलू राम
फूफू या सब हम देब
त झलरिया नेउछावरि हो।

बसीराम हँसकर लड़के की बुआ को बुलाते हैं। मुण्डन संस्कार में झालर के नेग में किस आभूषण की तुम्हें इच्छा है ? बुआ कहती है– रांगा और पीतल के गहने मुझे नहीं चाहिए। हमें तो स्वर्ण की मोहर पहनने की साध है। झालर के नेग में हमें वही चाहिये।

हँसकर रोहणी लड़के की बुआ से पूछते हैं– आपको झालर के नेग में कौन सा कपड़ा लेना है ? बुआ कहती है– लाल, पीले वस्त्र मुझे नहीं चाहिए, हमें तो श्वेत वस्त्र पहनने की इच्छा है। झालर के नेग में वही चाहिये। हँस–बोलकर गोलूराम कहते हैं कि– बुआ हम वह सब देंगे जो आपकी इच्छा है। झालर के नेग में वही देंगे।

मुण्डन

मोर झालरि उरझइ
मोर झालरि सुरझइ
मोर मुँह झांपइ झलरिया
दुअरे मा बइठे हयं बाबा मोतीलाल राम
बतिया अरज करंइ।
मोर झालर माथे मा आमइ
अंखियां छपामइ
त झलरिया जग्ग करा हो।
घरे मा न चाउर
घरे मा न दार
कइसे के झलरिया जग्ग करामंइ
आमय दे बसंत बहार
त अनाज घर आई
तब झलरिया जग्ग कराउब हो।
नतिया खांडिन गोंहुआ पिसाउब
मइदा झोलबाउब हो
नाती नेउतब सब परिवार
झलरिया जग्ग रोपब हो।

मेरी झालर उलझती है, सुलझती है। कहीं उलझकर मुँह झांप लेती है। द्वार पर बाबा मोतीलाल राम बैठे हैं। नाती उनसे निवेदन करता है– मेरी झालर माथे पर आती है इसलिये बाबा अब झलरिया यज्ञ (मुंडन) करो।

बाबा कहते हैं– बेटा! हमारे घर में इस समय चावल नहीं हैं, घर में दाल नहीं हैं। कैसे मुण्डन संस्कार करूँ ? बसंत के दिन आने दो। घर में अनाज आ जायेगा, फिर यज्ञ करेंगे। नाती

हम खांडी भर गेहूँ पिसवायेंगे, सारे परिवार को निमंत्रित करेंगे। फिर झालर यज्ञ अर्थात् मुण्डन संस्कार करेंगे।

मण्डप

कोदव केर कोदइया लहिला कइ दुइदार
हमरे बृजभूषण कइ दुइ रे बहिनिया
दूनउं जबर छिनार।
जब जब लहुरी चली रे गमनमां
रोमय सब लगबार
ना रोबा रसिया न रोबा बिरसिया
ना पत खेबा हमार
तीजि कजरिया हम फिरि अउबै
रखबै मान तोहार।
कोदव केर कोदइया लहिला कइ दुइ दार
हमरे बुद्धसेन राम कइं दुइ रे बहिनियां
दुनउं जबर छिनार
जब-जब जेठरी चलै गमन मां
रोमय सब लगबार
ना रोबा रसिया ना रोबा बिरसिया
ना पत खोबा हमार
देबारी, दसहरा हम फिरि अउबै
रखबै मान तोहार।

कोदों की कोदई बनी, चना की दो फांक दालें बनीं। हमारे बृजभूषण राम की दो बहनें हैं, दोनों चंचला हैं। प्रेमिकाएँ हैं। जब-जब छोटी बहन द्विरागमन की विदा में जाने लगती है, तब-तब उसके प्रेमी रोने लगते हैं। वह कहती है- मेरे प्रेमी, मेरे रसिक! रो-रोकर मेरी इज्जत न खोओ। मुझे लज्जित न करो। तीजा और कजली के अवसर पर हम आयेंगे और तुम्हारा मान रखेंगे।

कोदों की कोदई बनी, चान की दाल बनी। हमारे बुद्धसेन राम की दो बहनें हैं। दोनों रसिक एवं प्रेयसी स्वभाव की हैं। दोनों के प्रेमी हैं। जब बड़ी बहन की विदाई होती है तो उसके रसिक रोने लगते हैं। वह कहती है कि- मेरे प्रेमी! मत रोओ। रो-रोकर मेरी इज्जत नष्ट न करो। हम दीपावली, दशहरा में आते रहेंगे और तुम्हारा मान रखेंगे। मत रोओ।

मण्डप

मड़वा छामइ बाबा, छामइ दुलेरूआ के बाप
मड़वा परे हंय अरइन बरइन
खम्मन के लागी पांत
भतवा रंधाइ बाबा पगरा उठवाइन
बरबा कइ ओसरी पराय
घिउ करे मिढ़लिया मड़वे तरि धराइन
दिहिन ओहिन तरि सब का बोरी
गोंहूँ पिसमइ रोटी बनबामय
लगिगा कहुंजुआ केर ढूह
को को खाइस, को को पाइस
मड़वा के खाले बाम्हन खाइन
पउनी परजा खाइन
खाइन सलगे नात
भइया के होईं बियाह।

मण्डप छाने के लिये बाबा ने सबको निमंत्रण दिया है। पिता ने जल्दी-जल्दी वन के पत्ते, खम्भे बाँस मँगा लिया। मण्डप तैयार हो गया। चावल बनवाकर दीवाल ही उठवा दी। बरा की ओसारी उठा दी, घी के मटके मड़वा के नीचे रखवा दिये। उसके नीचे सबको बोर दिया। खाओ, खूब भात खाओ, बरा खाओ। गेहूँ को पिसाकर रोटी बनवायी, ढेर लगा दिया, जैसे कहुँजुआ का पहाड़ हो। कौन-कौन खाने आया, कुछ पता नहीं। मण्डप के नीचे दूध की धारा बह चली। ब्राह्मणों ने खाया, काम करने वाली प्रजा ने खाया, सभी नाते-रिश्तेदारों ने खाया।

मण्डप

अनइन बन केर कनइन मंगाइन
ब्रिन्दावन केर बांस
ओहि के मोरे बाबा मड़वा छबाइन
धरम का राखिन दुआर
बेदी जे पारिन अउ परतोरिन
छाइन हरियर बांस
ओहि चढ़ि बइठे हंय बेटी केर बाबा
पूजहिं सालिग राम
ओहि चढ़ बइठे हंय बेटी केर चाचा
पूजहिं सीता राम

बेंदी जे पारिन अउ परतोरिन
छाइन हरियर बांस
ओहि चढ़ि बइठे हंय बेटी केर आजा
पूजहिं गोपीनाथ
ओंहि चढ़ि बइठे हंय बेटी केर फूफा
पूजई देवता गांव।

सघन वन से बाँस की कनखियों को मँगाया। वृन्दावन से बाँस मंगाया। उसी का मण्डप छा दिया। धर्म के नाम का मण्डप बना। उसी के नीचे वेदी बनी। उसी के पास चौरा बना। मण्डप के ऊपर हरे बाँस आच्छादित हो गये। उनके ऊपर कन्या के बाबा बैठे हैं। वे शालिग्राम भगवान की पूजा कर रहे हैं। चाचा बैठे तो सीताराम की पूजा अर्चना की। वेदी के पास बने चबूतरे में बेटी के बाबा बैठे, उन्होंने गोपीनाथ की पूजा की। उस पर बैठकर फूफा ने ग्राम देवता की पूजा की।

मण्डप

चला सखी देखय चली
कहाँ मण्डप पड़त है
काहेन केर तौ थूनी रे
काहेन केर कमटी
सरई पेड़ की थूनी रे
बाँसन की कमटी
चला सखी देखय चली
कहाँ मण्डप पड़त है
कउन गाँव की थूनी रे
कहना के कमटी
गिरारी के थूनी रे
बसन्तपुर की कमटी
चला सखी देखय चली
कहाँ मण्डप पड़त है।

चलो सखियाँ चल कर देखें कि मण्डप कहाँ गाड़ा जा रहा है? मण्डप में लगने वाली थूनी (आधार खम्ब) तथा कमटी किस लकड़ी के बने हुये हैं? सरई पेड़ की तो थूनी तथा बाँस की कमटी बनी हुई है। मण्डप गाड़ने के लिये थूनी (खम्भे) कहाँ से आये हैं? उसमें लगने वाली कमटी कहाँ से आयी है? मण्डप की थूनी गिरारी ग्राम से तथा कमटी बसन्तपुर से मँगा कर मण्डपाच्छान किया गया है। चलो सखियाँ चलकर मण्डपाच्छादन को देखें।

मण्डप

चित्र विचित्र को मड़वा
पान फूल छाओ हैं
आजा ओखे ढेरिया संकल्पैं
जइसे जल माछल
आजी ओखी ढेरिया लुकावैं
जैसे घी का गागर
दद्दा ओखे ढेरिया संकल्पैं
जइसे जल माछल
माता ओखी ढेरिया लुकावैं
जइसे घी का गागर
मामा ओखे ढेरिया संकल्पै
जइसे जल माछल
मामी ओखी ढेरिया लुकावैं
जइसे घी का गागर

अनेकों प्रकार से विचित्र मण्डप बना हुआ है, जिसमें पान, फूलों को छाया गया है। उसी मण्डप के नीचे लड़की के आजा (बाबा) कन्यादान का संकल्प करते हैं। उनका मन अत्यंत दुखी है। जल के मध्य से निकाली गई मछली की तरह तड़प रहे हैं। लड़की की आजी (दादी) उसे छिपाने का प्रयास करती हैं। जिस प्रकार से घी से भरे हुए घड़े को सुरक्षित रखा जाता है, उसी प्रकार उन्होंने लड़की को पाला-पोसा है।

इसी तरह पिता भी पुत्री का संकल्प करते हैं। जल के मध्य से मछली को निकालकर अलग करना चाहते हैं, जबकि माता ने अपनी पुत्री को घी से भरे हुये घड़े की तरह व्यवस्थित रखा है। इसी भाँति लड़की के चाचा एवं मामा भी कन्यादान का संकल्प करते हैं, जबकि उसकी चाची तथा मामी ने बड़े यत्नपूर्वक उसे पाला-पोसा है। कन्यादान करने से लड़की की वही स्थिति होती है, जैसे जल के मध्य से मछली को निकाल देने पर होती है।

मण्डप

कहना के थूनी रे कहना के कमटी
कौन छैल डरवइया हो जहाँ माड़ा पड़त है।
मथुरा के थूनी रे गोकुल के कमटी
कृष्ण छैल डरबइया हो जहाँ माड़ा पड़त है।
गाड़ा मड़ौहा माड़ा हो जहाँ माड़ा पड़त है।

शुभ प्रदान करने वाला मण्डप आच्छादित किया जा रहा है। इस मण्डप पर लगने वाले खम्भे कहाँ से मंगाये गये हैं ? तथा वह कौन सा छैला है, जो कि मण्डप तैयार कर रहा है ? उत्तर है कि- मथुरा से मण्डप के खम्भे तथा गोकुल से कमटी मंगाई गई है। इस मण्डप को तैयार करने वाले छैल-छबीले श्री कृष्णजी हैं। मण्डप गाड़ने वाले लोग मण्डप गाड़ रहे हैं। मण्डप तैयार कर रहे हैं।

मण्डप

बीछी मारि आयी
बीछी मारि आयी
आर रजन बंगले चोरी होइगय
केखर हेरानी थैली सरोता
केखर हेरानी छिनार बहिनी
चोरी हाइगय आर
रजन बंगले चोरी होइगय
शुकुल के हेरानी थैली सरौता
बसीराम के हेरानी छिनार बहिनी
चोरी होइगय
बीछी मारि आयी
बीछी मारि आयी
आर रजन बंगले चोरी होइगय।

मण्डप तैयार करने वालों पर महिलाएँ हास्य व्यंग्य के द्वारा प्रहार करती हैं। राजा के बंगले में चोरी हो गयी है। ऐसा प्रतीत होता है कि बिच्छू ने डंक मार दिया है। इस चोरी में किसकी थैली एवं सरोता की चोरी हुई ? तथा किसकी बदचलन बहन गुम गई है ?

राजा के बंगले में चोरी हो गई है। शुक्ला की थैली तथा सरोता एवं बसीराम के बहिन की चोरी हो गई है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस हादसे से बसीराम को बिच्छू दंश के समान पीड़ा हो रही है।

मण्डप

मोटी-मोटी बमुरिया की हेट
सो फूटैं लागी गोफरिया
मांगै-मांगै फलाने राम उधार
सो आजौ केर रातुलिया
साहेब कैसे के देवै उधार

हमारी धना पातरिया
साहेब टूट जैंहे कमर के हाड़
पंजरे की पांसुलिया
साहेब लै देबै मन भर सोंठ
अढ़ैया भर पीपरिया
साहेब जुरि जैहैं कमर के हाड़
पंजरे की पांसुलिया
छोटी मोटी बमुरिया की हेट
सो फूटैं लागी गोफरिया।

छोटी–मोटी बबूल की शाखाओं में नई–नई कोपलें फूट रही हैं। अर्थात् युवावस्था का आरम्भ हो गया है। फलाने राम–रात भर के लिये उधार मांगते हैं। उत्तर मिलता है कि– साहब हम कैसे उधार दे सकते हैं? क्योंकि हमारी लाड़ली दुबले–पतले शरीर वाली है। उसके कमर की हड्डियाँ एवं बगल की पसुलियाँ टूट जायेंगी। कहते हैं कि– हम आवश्यकता के मुताबिक सोंठ एवं पीपर देंगे जिसकी चिकित्सा से हड्डी पसुलियाँ जुड़ जायेंगी। इस प्रकार यह हास्य गीत चलता रहता है।

मण्डप

धन्य भाग इहिं अंगना हो, जहाँ मण्डप पड़त है।
काँहिन के चारिउ खम्भा हो, जहाँ मण्डप पड़त है।
काँहिन के चारिउ कमटी हो, जहाँ मण्डप पड़त है।
धन्य भाग इहिं अंगना हो, जहाँ मण्डप पड़त है।
सोनेन के चारिउ खम्भा हो, जहाँ मण्डप पड़त है।
रूपेन के चारिउ कमटी हो, जहाँ मण्डप पड़त है।
धन्य भाग इहिं अंगना हो, जहाँ मण्डप पड़त है।
कौन छेल गड़बइया हो, जहाँ मण्डप पड़त है।
राजा दशरथ छैल गड़बइया हो, जहाँ मण्डप पड़त है।
धन्य भाग इहिं अंगना हो, जहाँ मण्डप पड़त है।

यह आँगन बड़ा भाग्यशाली है, जहाँ पर आज मण्डप डाला जा रहा है। इस मण्डप को गाड़ने के लिये इसके चारों खम्भे तथा खम्भों पर रखी जाने वाली कमटी किस वस्तु के बने हुये हैं? यह आँगन धन्य है, जहाँ पर मण्डप तैयार किया जा रहा है। मण्डप के खम्भे स्वर्ण तथा कमटी रजत (चाँदी) से बनी हुई है। इस मण्डप को बनवाने वाले छैल–छबीले कौन हैं? प्रत्युत्तर है कि– इस मण्डप को बनवाने वाले राजा दशरथ हैं। यह आँगन धन्य है, जहाँ पर इतना सुन्दर मण्डप बनाया जा रहा है।

गैलहाई

रामै संग बन जाबय।
अब ना अवध मा रहबय॥
जब मोरे रामा रथय पर चलिहंय।
पयदल चली जाबय।
अब ना अवध मा रहबय॥
जब मोरे रामा कंदमूल फल खइहंय।
भूखेन रहि जाबय।
अब न अवध मा रहबय॥
जब मोरे रामा ठंड जल घोरिहंय।
पियासी रहि जाबय।
अब न अवध मा रहबय॥
जब मोरे रामा पान सुपारी खइहंय।
अमलन रहि जाबय।
अब न अवध मा रहबय॥
रामै संग बन जाबय।
अब न अवध मा रहबय॥

श्री रामचन्द्रजी चौदह वर्षों के लिये वनवास जा रहे हैं। सीताजी कहती हैं कि– मैं रामचन्द्रजी के साथ वन को जाऊँगी। मैं उनके बिना अवधपुरी में नहीं रहूँगी। यदि श्री रामचन्द्रजी रथ पर सवार होकर चलेंगे तो मैं पैदल ही चली जाऊँगी, परन्तु अवधपुरी में नहीं रहूँगी।

जब रामचन्द्रजी वन में कंदमूल फल खायेंगे तो मैं भले ही भूखी रह जाऊँ, परन्तु मैं उनके बिना अवध में नहीं रहूँगी। जब रामचन्द्रजी पीने के लिये ठंडे जल का घोल तैयार करेंगे तो मैं भले ही प्यासी रह जाऊँ, परन्तु अवधपुरी में नहीं रहूँगी। जब रामचन्द्रजी पान–सुपाड़ी का सेवन करेंगे, तब मैं अपने अमल पर काबू पा लूँगी अर्थात् मुझे अपने लिये कुछ नहीं चाहिये। मैं उनके साथ वन को जाऊँगी। श्री रामचन्द्रजी के बिना मैं अवधपुरी में नहीं रहूँगी।

यज्ञोपवीत

जइहा बेटा काशी बनारस
वेद पढ़ि अइहा हो
काहे का जैहा बेटा काशी बनारस
तुम्हरे आजा हैं पंडित हो
आपन दाम खरचि हैं

तुमहीं पण्डित बनइंहैं हो
जावै माता काशी बनारस
वेद पढ़ि अउबैं हो
काहे का जइहा बेटा काशी बनारस
तुम्हरे दादा पंडित हो
आपन दाम खरचि हैं
तुमही पंडित बनइंहैं हो
जाबै चाची काशी बनारस
वेद पढ़ि अउबैं हो
काहे का जाबे बेटा काशी बनारस
तुम्हरे चाचा पंडित हो
आपन दाम खरचि हैं
तुमही पंडित बनइंहैं हो।

कहते हैं कि बेटा काशी बनारस में जाकर वेद पढ़ आओ। अन्य लोग समझाते हैं कि तुम क्यों काशी बनारस जा रहे हो? तुम्हारे आजा (बाबा) तो स्वयं पण्डित है। वे अपना पैसा खर्च करके तुम्हें पंडित बना देंगे। बालक कहता है कि– हे माताजी! मैं वेदशास्त्र पढ़ने के लिये काशी बनारस जाऊँगा। माता पुत्र को समझाते हुये कहती हैं कि– बेटा! तुम्हें काशी बनारस जाकर वेदशास्त्र पढ़ने की क्या जरूरत है? तुम्हारे पिताजी तो स्वयं पण्डित हैं। वे तुम्हें अपना पैसा खर्च करके पण्डित बना देंगे। बालक कहता है कि हे चाची! मैं वेदशास्त्र पढ़ने के लिये काशी बनारस जाऊँगा। चाची कहती है कि– बेटा! तुम्हारे चाचा तो स्वयं पण्डित हैं। वे तुम्हें अपना पैसा खर्च करके पढ़ा लेंगे तथा तुम्हें अच्छा विद्वान पंडित बनायेंगे।

बरूआ

ऊंच ओरसवा नवा घर
जहा खम्भा कुंदेर के भाये हैं हो
ओही ओढ़कैली उनकी माया
सुना पिया विनती हमार हो
पांच बरिस केर दुलेरूआ
बरूआ के डारित हो
लागी तो घिउ गुर गोंहुआ
लख बम्हना केर भोजन हो
बरूआ मा कुछू लागी हो
मेरे मा गोहुंआ बोवउबै

कछरवा मा रहिला हो
पांच बरिस के दुलेरूआ
बरूआ के डारिय हो
काशी केर पंडित बोलउबै
सुदिन बनबउबै हो
काशी का सोनरा बोलउबै
पंच रत्नी बनबउबै हो
काशी का मलिया बोल उबै
तो मोरी बनबउबै हो
काशी का दरजी बोल उबै
तो जामा सिअउबै हो
काशी का बढई बोलबउबै
तो खड़ाऊँ बनबउबै हो
काशी का लोहरा बोलबउबै
तो कंगन बनबउबै हो
पांच बरिस के दुलेरूआ
बरूआ के लेवय हो
पांच बरिस के रमइया
बरूआ भल सोहै हो

नये घर के ऊँचे बरामदे में सुन्दर नक्काशीदार खम्भे लगे हुये हैं। उसी खम्भे के सहारे बालक की माता टिकी हुई बैठी है। वह अपने पति से कहती है कि हमारे अनुरोध को सुनिये। हमारा दुलारा पुत्र अब पाँच वर्ष का हो चुका है, उसका यज्ञोपवीत संस्कार (बरूआ) कर डालिये। पति कहता है कि– इस कार्य में गेहूँ लगेगा, घी लगेगा, गुड़ लगेगा, एक लाख ब्राह्मणों को भोजन कराना होगा। इस प्रकार यह कार्य आसान नहीं है।

तब पत्नी कहती है कि– मेरे के खेत (काली मिट्टी वाला खेत) में गेहूँ बुवाऊँगी तथा नदी के किनारे वाले खेत में चना बुवाऊँगी। काशी से पंडित बुलवाऊँगी तथा अच्छा सुदिन (मुहूर्त्त) बनवाऊँगी। काशी से सोनार बुलवाकर पंचरत्नी अँगूठी बनवाऊँगी। काशी का माली बुलवाकर सुन्दर मौर बनवाऊँगी।

काशी से दरजी बुलवाकर बढ़िया जामा जोड़ा बनवाऊँगी। काशी से बढ़ई बुलवाकर अच्छी खड़ाऊँ बनवाऊँगी। काशी से ही लोहार बुलवाकर सुन्दर कंगन बनवाऊँगी। हमारा दुलारा बालक पाँच वर्ष का हो गया है उसका यज्ञोपवीत संस्कार (बरूआ) कर डालिये। रामचन्द्रजी पाँच वर्ष के थे तभी उनका व्रतबन्ध हुआ था जो कि बहुत शोभायमान लग रहा था।

बरूआ

हरे-हरे पर्वत सुअना नेउत दय आव हो
पहिले तो नेउते राजा दशरथ
दूसरे कौशिल्या रानी
उन्हीं के गोदिया रमइया जू हैं
उईं तो तीनो दल आवइं हो
हरे-हरे पर्वत सुअना नेउत दय आव हो
दूसरे तो नेउते शिव शंकर
दुसरे गौरा रानी
उन्हीं के गोदिया गणेश जू हैं
उई तो तीनो दल आवइं हो
हरे-हरे पर्वत सुअना नेउत दय आव हो
तिसरे तो नेउते वासुदेव
तिसरे देवकी
उन्हीं के गोदिया कन्हैया जू हैं
उईं तो तीनों दल आवइं हो
हरे-हरे पर्वत सुअना नेउत दय आव हो।

पर्वत पर रहने वाले हरे रंग के तोते, जाकर निमंत्रण दे आओ। सबसे पहले राजा दशरथ को, फिर रानी कौशिल्या को तत्पश्चात् उन्हीं की गोद को सुशोभित करने वाले रामचन्द्रजी को निमंत्रण दे देना। वे तीनों अपने-अपने दल-बल के साथ निमंत्रण में आयें। हे हरे रंग वाले तोते! जाकर निमंत्रण दे आओ। दूसरे स्थान पर शिवशंकरजी, उसके बाद रानी गौराजी तत्पश्चात् गौराजी की गोद में बैठे हुये गणेशजी को निमंत्रण दे आओ। वे तीनों दल-बल के साथ निमंत्रण में आयें। हे पर्वत वासी सुआ! जाकर के निमंत्रण दे आओ। तीसरे स्थान पर वसुदेवजी को, इसके बाद देवकीजी को तत्पश्चात् देवकीजी के पुत्र श्री कृष्णजी को निमंत्रण दे आओ। वे तीनों अपने दल-बल के साथ निमंत्रण में पधारें।

बरूआ

मोतिया का बिरझै दुलेरूआ
आजी हीरा मोती लेबइ हो
आजा उनके धइ झिकझोरइं
आजी हिरदय लगावई हो
आवा ललन हमरे कनियां

मैं हीरा मोती देइहौं हो
मोतियां का बिरझै दुलेरूआ
माया हीरा मोती लेबइ हो
बाबू उनके धइ झिकझोर दूं
माया हिरदय लगावईं हो
आवा ललन हमरे कनियां
मैं हीरा मोती देइहौं हो
मोतिया का बिरझे दुलेरूआ
आजी हीरा मोती लेबइं हो
चाचा उनके धइ झिकझोरइं
चाची हिरदय लगावईं हो
आवा ललन हमरे कनियां
मैं हीरा मोती देइहौं हो
मोतिया का बिरझे दुलेरूआ
आजी हीरा मोती लेबइं हो

यज्ञोपवीत संस्कार (बरूआ) के समय बालक द्वारा वांछित वस्तु की माँग करने की लोक रीति है। सगे-सम्बन्धी मामा आदि बालक को मनाते हैं तथा वांछित वस्तु प्रदान करते हैं। प्यार दुलार में पला हुआ बालक बरूआ के समय माँग करता है कि माताजी हम हीरे मोती लेंगे। यह सुनकर बाबा उसे झकझोर देता है, परन्तु उसकी आजी (दादी) बालक को अपने हृदय से लगा लेती हैं तथा आश्वासन देते हुये कहती है- आओ बेटा! गोद में बैठो, मैं तुम्हें हीरा-मोती दूँगी।

बालक पुन: हीरा-मोती की माँग करता है, तब पिता हाथ पकड़कर झकझोर देता है, तब माता उसे गोद में बैठाकर सांत्वना देते हुये हीरा-मोती देने की बात कहती है। हीरा-मोती ना पाकर के वह पुन: माँ से उलझ जाता है। इस बार उसका चाचा हाथ पकड़कर झकझोर देता है। बालक की चाची उसे अपने सीने से लगा लेती है और कहती है- कि प्यारे बेटा आओ, हमारी गोद में बैठो, हम तुम्हें हीरा-मोती देंगे। गीत में माता की उदारता एवं सहनशीलता परिलक्षित होती है।

बरूआ

हरे-हरे पर्वत सुअना
नेउत दइ आबउ हो
गाँव का नाव न जानौं

ठकुर नहिं - चीह्नव हो
गाँव का नाव अजोध्या
ठकुर राजा दशरथ हो
हरे-हरे पर्वत सुअना
नेउत दइ आवउ हो
पहिला नेउत राजा दशरथ
दुसर कौशिल्या रानी
तिसरा नेउत रामचन्द्र
तो तीनों दल आवइं हो
हरे-हरे पर्वत सुअना
नेउत दइ आबऊ हो।

हे पर्वत पर रहने वाले हरे रंग वाले तोते! तुम जाकर निमंत्रण दे आओ। तोता पूछता है कि- मैं गाँव का नाम नहीं जानता तथा जिन्हें निमंत्रण देना है उन ठाकुर को भी नहीं जानता। तब उसे बताया जाता है कि गाँव का नाम अयोध्या तथा ठाकुर का नाम राजा दशरथ है। हे हरे रंग वाले तोते! जाकर निमंत्रण दे आओ। पहला निमंत्रण राजा दशरथ को, दूसरा महारानी कौशिल्या तथा तीसरा निमंत्रण राजा रामचन्द्रजी को देना। तीनों को दल-बल के साथ आना चाहिये।

बरूआ

अरे-अरे दादी के गंअरबा
चइत कबइ लगिहंइ हो
कबइ आजा जइहीं बजरिया
कपड़ा लइ अइहंइ हो।
अरे-अरे माया के दुलेरूआ
चइत कबइ लगिहंइ हो।
कबइ बापू जइहीं बजरिया
कपड़ा लय अइहंइ हो।
कबइ आजी रंगिहंइ पियरिया
बरत कबइ होई हो।
कबइ माया रंगिहीं पियरिया
बरत कबइ होई हो।

अरे दादी के कुँवर! बताओ तो चैत का महीना कब लगेगा? कब बाबा बाजार जायेंगे और कपड़ा ले आयेंगे? अरे चाची के कुँवर! चैत कब लगेगा? कब चाचा बाजार जायेंगे और

कपड़ा ले आयेंगे? अरे माता के दुलारे! चैत महीना कब लगेगा? कब तुम्हारे पिताजी बाजार जायेंगे, कब कपड़ा ले आयेंगे? कब दादी उस कपड़े की पियरी रंगेंगी? कब व्रतबन्ध होगा? कब चाची कपड़े को रंगेंगी? कब व्रतबन्ध होगा? कब माता कपड़े को रंगेंगी? कब व्रतबन्ध (यज्ञोपवीत संस्कार) होगा।

बरूआ

भीख द्‌या हो माता असीस
हौं तो जग भिखियारिन हौं हो।
कासी हम जाबइ
बनारस हम जाबइ
पोथी पढ़ि-पढ़ि के अउबइ हो
भीख द्‌या हो माता असीस
हौं तो जग भिखियारिन हौं हो।
इया भिखियारिन के कारण
इया भिखियारिन के माथे
हौं तो फिरब बनारस हो
भीख द्‌या हो माता असीस
हौं तो जग भिखियारिन हौं हो।

हे माँ! मुझे भिक्षा दें। भिक्षा में आशीर्वाद दें। आशीर्वाद दें कि मैं संसार भर की भिखिया (आशीर्वाद) प्राप्त करूँ। हम काशी जायेंगे। आशीष लेकर बनारस जायेंगे। पुस्तकें पढ़ेंगे, पुस्तक पढ़कर ही लौटेंगे। इसलिये माता हमें भिक्षा दें, आशीर्वाद दें।

बरूआ

बहुरिन आवा ललनमा
पार देसइ न जाउ।
बिनती करंइ उनखर दादी अउ चाची
पार देसइ न जाउ।
बहुरि के आवा हो ललनमा
बिनती करंइ उनखर माया अउ बहिनी
पार देसइ न जाउ।
बहुरि के आवा हो ललनमा
खाय का मांगइं पेड़ा अउ मिठइया
मुँह पोंछई का मांगइ अंगुछिया

घूंटइ का मांगइ सोने केर गेडुआ
चढ़इ का नीला बछेडुआ हो।
पार देसइ न जाउ।
बहुरि के आवा ललनमा पार देसई न जाउ।
खांय का देबहु पेड़ा अउ मिठइया
मुंह पोंछइ का अंगुछिया
चंढ़इ का देबइ नीला बछेडुआ
घूंटइ का देबइ तामे केर गेडुआ
पार देसइ न जाउ
बहुरि के आवा ललनमा।

मेरे लाल रूठ कर न जाओ। लौट आओ। तुम्हारी दादी और चाची विनय करती हैं। लाल परदेश न जाओ। माँ और बहन विनय करती हैं। लौट आओ। बटुक खाने के लिये पेड़ा और मिठाई की माँग करते हैं। मुँह पोंछने के लिये अंगोछी की माँग करते हैं। पानी पीने के लिये सोने के लोटे की माँग करते हैं। चढ़ने के लिये नीले रंग के बछेड़े की बात करते हैं। परदेश न जाओ। प्रिय पुत्र लौट आओ। खाने के लिये पेड़ा, मिठाई, मुँह पोंछने के लिये अंगोछी, चढ़ने के लिये नीले रंग का बछेड़ा देंगे परन्तु पानी पीने के लिये सोने का नहीं बल्कि तांबे का लोटा देंगे। परदेश न जाओ। मेरे लाल लौट आओ।

बरूआ

कइसे मनाऊं मोर लाला निकरि परें,
दूधा मैं देहौं, खीरा मैं देहौं,
देहौं मिठाइन के ढेर,
मोर लाला निकरि परें।
आजा बिसूरइं आजी बिसूरइं,
लउटा ललनमा कनियां मोरी बइठा,
हम मानव तोहर बात,
महुआ मंगाउब आमा मंगाउब,
खबाउब जामुन केर गूंछ,
मोर लाला निकरि परें।
कैइसे मनाऊं मोर लालन निकरि परें।
खांडिन गोंहुआ पिसउबय,
रंधबउबय पूरी के ढेर,
लउटा ललनमा माया मनामय

माया मनामई आजी मनामइ
काकी खबामइ छप्पन भोग
मोर लाला निकरि परें।

कैसे प्रसन्न करूँ? मेरे दुलारे रूठकर निकल गये। मैं उन्हें दूध, खीर तथा मिठाई का ढेर दूँगी। मेरे लाला निकल गये हैं, उन्हें कैसे प्रसन्न करूँ? बाबा उन्हें याद कर रहे हैं। कह रहे हैं कि मेरे लाल मेरी गोद में बैठो। हम तुम्हारी सभी बातों को मानेंगे। हम महुआ ले आयेंगे, आम और जामुन के गुच्छे खिलायेंगे। कैसे मनायें मेरे दुलारे निकल गये हैं। हम उनके लिये गेहूँ पिसायेंगे। ढेर सारा भोजन बनवायेंगे। पूड़ी बनवायेंगे। तुम्हारी माता, दादी एवं चाची मना रही हैं। छप्पन भोग बनाकर कह रही हैं। मेरे लाल मत रूठो, लौट आओ।

बरूआ

जौने बन सिकिया न डोलय
सुआ पंछी न बोलय
उहै बन हिलय दुलेरूआ
उता हेरयं मृगछाला
ढूँढ़े न पावै मृगछाला
लउट घर आवैं
घाम लागै सिर घाम लागै
पायें भुंभुरी लागै
सुना हो अजवा जगदीश राम
ऊंचे छत्र तनाबा हो
सुना हो बपवा बालाराम
ऊंचे छत्र तनाबा हो
सुना हो चाचा कौशलराम
ऊंचे छत्र तनाबा हो
सुना हो दद्दा रामायण
ऊंचे छत्र तनाबा हो।

वन में हवा तक नहीं चल रही है, निर्जन वन में तोते तथा अन्य पंछियों की आवाज सुनाई नहीं दे रही। उसी वन में दुलारा पुत्र मृगछाला ढूँढ़ रहा है। परन्तु मृगछाला प्राप्त नहीं होता और वह वापस घर आ जाता है। मार्ग में काफी तेज धूप है। सिर पर धूप पड़ रही है तथा पाँव गरम धूल से झुलस रहे हैं। उसके आजा जगदीशराम, पिता बालाराम, चाचा कौशलराम, बड़े पिता रामायणराम आप लोग सुनिये। बालक के सिर के ऊपर छत्र लगवा दीजिये, क्योंकि बालक का यज्ञोपवीत संस्कार हो रहा है।

बरूआ

कजली के वन एक नरियर
नरियर कौने गुन हरियर
घौं मेघ बरसि गें
नहिं मोही सींचै रे मलिनियां
नहिं मेघ बरसि गें
आज सचिन राम के बरूआ
ऊ ता दुधवा सिंचावै।

कजली वन में एक नारियल का पेड़ है। पता नहीं किस गुण के कारण वह नारियल का पेड़ हरा–भरा है। या तो उसे मालिन ने सींच–सींच कर तैयार किया है अथवा बादल वर्षा के द्वारा उसे सींचते हैं।

नारियल जवाब देता है कि न मुझे मालिन ने सींचा है और न ही मेघ अपनी वर्षा द्वारा मुझे सींचते हैं। आज सचिन राम का यज्ञोपवीत संस्कार हो रहा है। इस कारण दूध सींचा जा रहा है।

बरूआ (बन्ना)

बासुदेव के कुँवर यशोदा के लाल कहावँय हो
किरीट मकुट मकराकिट कुण्डल
गले बजयन्ती का माला
मुरलिया मुख में सोहंय रे
पायन उनके सोने के खड़ाऊँ
चलत मधुरियन चाल
राधिका मन मुसुकानी रे
बासुदेव के कुँवर यशोदा के लाल कहावँय हो।

वासुदेव के कुँवर यशोदा के प्यारे पुत्र कृष्ण कहलाते हैं। सिर में मुकुट तथा कानों में कुण्डल शोभायमान है। उनके ओठों पर मुरली शोभा प्रदान करती है। उनके पैरों में सोने की खड़ाऊँ है जिसे पहनकर मधुर चाल चलते हैं। कृष्ण की सजधज को देखकर राधिका विहँसने लगती हैं।

बरूआ

माघै बरूआ रे संहिचल
बैसखवा मा पहुँचे

बीचै मा परी रे महानदी
ठाढ़े बरूआ पुकारै
सुना हो अजवा राजा दशरथ
नैया लइके आवा
ना मोरे नाव नेवरिया
ना मोरे नइया के खेवइया
तोंहरे बरूआ के साध
पइर दह आवा
घाम लगय शिर घाम
पांयें भुंभुरी लगत है
सुना हो अजवा रामटहल राम
ऊँचे छत्र तनावा हो।

माघ महीने से आरम्भ होकर वैसाख माह तक बरूआ के दिन रहे। बरूआ करने का समय रहा। बीच में महानदी पड़ी, किनारे खड़े होकर बरूआ पुकार रहा है। राजा दशरथ सुनो – नाव लेकर आओ। कहते हैं – मेरे पास नाव नहीं है और न ही नाव चलाने वाला कोई है। यदि तुम्हें बरूआ की आकांक्षा है तो नदी तैर कर आओ। शिर में धूप लगती है तथा पाँव गरम रेत में जल रहे हैं। इसलिये दादा रामटहल राम सुनो, शिर के ऊपर छत्र तनवा दो।

तिलक

का देखि मछरी करइ लुरखुरिया
का देखि भमरा लुभाइ
का देखि पुतवा चले ससुररिया
का देखि रहे लुभाई
जल देखि मछरी करइ लुरखुरिया
फूल देखि भमरा लुभाइ
धन देखि पुतवा चले ससुररिया
सरहज देखि लुभाइ
सारी देखि पुतवा चले ससुररिया
धनिया देखि लुभाइ
का मांगै सारी रे का मांगै सरहज
का मांगई धनिया तोहार
सारी त मांगै अनधन सोनवां
सरहज लहर पटोर

धनिया जो मांगई कंचन चुरिया
सगली अजुधिया के राज
कहां पइहा मोरे पूता अनधन सोनमां
कहां पइहा लहर पटोर
कहां पइहा कंचन चुरिया
कइसे देहा सगली अजुधिया के राज
सोनरा घर पउबई अनधन सोनमा
पटवा के घर लहर पटोर
लखेरे के घर पउबई कंचन चुरिया
अपुने घर अजुधिया के राज।

क्या देखकर मछली लहरों के साथ अठखेलियाँ करने लगती है? क्या देखकर भ्रमर मुग्ध हो जाता है? क्या देखकर पुत्र ससुराल के लिये चल देता है? क्या देखकर वह मुग्ध हो जाता है?

जल देखकर मछली अठखेलियाँ करती हैं। कली देखकर भ्रमर मुग्ध हो जाता है। पुत्र धन को प्राप्त करने ससुराल जाता है। सरहज (साले की पत्नी) को देखकर मुग्ध हो जाता है। साली को देखकर ससुराल जाता है। अपनी धनिया (पत्नी) को देखकर मुग्ध होता है। साली क्या माँगती है? सरहज एवं स्त्री क्या माँगती है?

साली तो अनगिनत सोने के आभूषण माँगती है। सरहज लहर पटोर (लहराती हुई माला) और घाघरा तथा पत्नी सोने की चूड़ियाँ और अयोध्या का राज्य माँगती है।

(माँ प्रश्न करती है) मेरे पुत्र इतने आभूषण कहाँ पाओगे? कहाँ लहर पटोर पाओगे? कहाँ कंचन की चूड़ी पाओगे? कहाँ अयोध्या का राज्य पाओगे?

पुत्र कहता है कि- स्वर्णकार के यहाँ आभूषण पायेंगे। पटवा तथा वस्त्र विक्रेता के घर लहर-पटोर (माला एवं लहँगा) पायेंगे, लखेर के घर सोने की चूड़ियाँ मिल जायेंगी और अपना अयोध्या का राज्य (अपना घर) दे देंगे।

तिलक

गंगा-जमुना के तीरे खड़ा हय एक बिरबा
त तेहि तर ठाढ़े सुजन त हरख गुन करइं
सीता केर विआह रचाबा, बिटिया सयानी भई
तिलक चढ़ामई हरख गुन गामई हो
कहंबई तिलक चढ़ाया मोरे बाबू
बेरिया बिलय नहिं लागे

पाँच परग जिमिया नगर अजुधिया
दुइबर राजकुमार
उँहबइ तिलक चढ़ायउँ मोरि बेटी
बेरिया विल्लय नहिं लाग
का देखि मोर बाबा आसन मारेन
का देखि रहें लुभाइ
का देखि बाबू हमहीं बिआहे
भलि मति मरी तोहार
घर देखि मोरी बेटी आसन मारेन
धन देखि रहेउँ लुभाई
बर देखि बेटी तोहइ बिआहेन
काहे मति मरी हमार
मचिया बइठ माया ककरी बेसाहँइ
ना जानै तीत अउ मीठ
नगर बइठ बेटी हम बर ढूँढेन
नहि जानी करम तोहार।

गंगा-यमुना के किनारे एक वृक्ष खड़ा है, उसके नीचे कन्या के स्वजन बैठे हुये विचार कर रहे हैं। अब तो सीता बड़ी हो गई। उसका विवाह करना आवश्यक है। तिलक चढ़ाकर स्वजन घर में सोच-विचार कर रहे हैं। इतने में कन्या (सीता) को जानकारी हुई तो उसने पूछा- बाबू मेरा तिलक कहाँ चढ़ा आये? अभी-अभी गये और अभी आ गये। विलम्ब नहीं लगा। पिता ने उत्तर दिया- पाँच कोस तो अयोध्या की धरती है। वहाँ दो राजकुमार हैं। उनमें से एक राजकुमार के लिये तुम्हारा तिलक चढ़ा दिया है। इसीलिये विलम्ब नहीं लगा।

कन्या ने फिर प्रश्न किया- क्या देखकर बाबाजी आपने वहाँ आसन जमा लिया? क्या देखकर मुग्ध हो गये ? क्या देखकर बाबू ने हमारा ब्याह कर दिया? क्या तुम्हारी बुद्धि नष्ट हो गयी है? बेटी! हमने घर देखकर आसन जमा लिया। धन देखकर हम मुग्ध हो गये। वर देखकर तुम्हारा ब्याह रचा रहे हैं। हमारी बुद्धि कैसे भ्रष्ट हुई ? हम तो अच्छा काम कर रहे हैं। जैसे माँ आसन में बैठकर ककड़ी खरीदती है, उसे यह पता नहीं होता कि अंदर से ककड़ी कड़ुवी है या मीठी है। हम तो नगर गये, तुम्हारे लिये वर खोजा। अब तुम्हारे भाग्य में क्या है? हम नहीं जानते।

तिलक

मोर दुलरा मांगई सगरा तिलक माहीं
बाबा कहँइ सुन मोरे भइया

दादी कहइँ सुन बेटा मोरी बिनती
अनमोल बिटिया तोंहई समरपब
तू सागर कउन बिसात
सोना देबइ रूपा देबइ मोहर देबइ हजार रे
काहे रिसाने मोर दुलरा मोती देबहु हजार रे
एक न देबइ सगरा हो दुलेरूआँ
पनथी आमई हाँथ पाँव धोबइ
गउआ पिअइं जल नीर मइया
इया सगरा हमरे गाँव के नाक रे
मोरे दुलरा मांगइ सगरा तिलक माहीं।

मेरे दुलारे पुत्र तिलक में 'तालाब' माँग रहे हैं। बाबा कहते हैं कि भइया सुनो। दादी कहती है कि हमारी विनय सुनो, हम तो तुम्हें अनमोल बेटी समर्पित कर रहे हैं। इसलिये सागर (तालाब) का क्या मूल्य है ? हम तुम्हें सोना, चाँदी तथा हजार मोहरें देंगे। हम यह सब देंगे। सागर (तालाब) न देंगे। राहगीर आते हैं, तालाब में हाथ-पैर धोते हैं। गायें पानी पीती हैं। यह तालाब हमारे गाँव का गौरव है। मेरे दुलारे हम तिलक में सागर नहीं दे सकते।

तिलक

मोरे लाला सोनमा के नाई निकहा
रूपबा के नाई चमकंय
कमल अइसन कोमर
दिया के अंजोर कस दमकंइ
सुपरिया अइसे ढुरहइ आंय
एतना तिलक हय कांकर पाथर
अउ पहिरइयाँ का गोज
इतना तिलक मोरे मनहिं न भावइ
बस रामा रहिहंय कुमार
इतना बतियाँ सुनिन रनिया के भइया
त दइदिहिन तिलक पटोर
असिया मने केर राजा थरिया मगाइन
नौ हो मने के सिंगार
लाख रूपइया राजा रोंक लइ आये
रामा के तिलक चढ़ाइ
हलि बेगि अंगना लिपाबा कोसिला रानी

गज मोती चउक पुराय
सोने के कलशा अंगनवा धराबा
रामा केरि तिलक चढ़ाइ।

मेरा लाल सोने की तरह सुन्दर है, चाँदी की तरह चमकदार है। कमल के समान कोमल तथा दीपक के प्रकाश की तरह प्रकाशमान है। सुपारी की तरह पुष्ट है, फिर इसके विवाह में तिलक कितना कम है।

हमारे पुत्र के लिये इतना कम तिलक कंकड़-पत्थर की तरह है। पहनने का वस्त्र भी ठीक नहीं है। हमें यह तिलक ठीक नहीं लगता। हमारे मन को नहीं भाता। हम ऐसी शादी नहीं करेंगे। चाहे हमारे राम (पुत्र) कुँआरे ही रहें। इतनी बातों को कन्या के भाई ने सुना तो दहेज का ढेर लगा दिया। तिलक में अस्सी मन का थाल मँगवाया, नौ मन का सोने का शृँगार बनवाया। एक लाख रुपया नगद भेज कर कहा कि- अब राम (पुत्र) का तिलक चढ़वाइये। दशरथ (पुत्र के पिता) ने कहा कि- रानी कौशिल्या (पुत्र की माता) हीरा-मोती से चौक पूरिये, सोने का कलश आँगन में रखिये। राम (पुत्र) का तिलक चढ़े।

माटीमागर

केखर मटिया डलावन
कि फटै हरियर दूबल हो
अजवा रामटहल राम के मटिया डलावन
फूटै हरियर दूबल हो
केखर छूटे हैं घोड़िला
चरंय हरियर दूबल हो
छूटे हैं रामजी के घोड़िला
चरंय हरियर दूबल हो।

किसके यहाँ शुभ कार्यों के लिये मिट्टी खोदी जा रही है? जिसके कारण हरी-हरी दूब घास फुटक रही है। आजा (बाबा) रामटहल राम के यहाँ मिट्टी डाली जा रही है जिसके कारण हरी-हरी दूब उग रही है। किसका घोड़ा छूटा हुआ है जो कि हरी-हरी दूब को चर रहा है ? भगवान रामजी का घोड़ा छूटा हुआ है जो कि हरी-हरी दूब को चरता है।

तेल चढ़ाना

दुबिया चुनि चुनि फूफू दिहिन असीस रे।
बाढ़इं गुलशन राम लाख बरीस रे।
अस रे बाढ़इं जस धरती केर धान रे।

ओइसइ उअइं जस सुरिज अऊ चांद रे।
दुबिया चुनि-चुनि बहिनी दिहिन असीस रे।
बाढ़इं दुलरिया लाख बरीस रे।
अस रे बाढ़इं जस धरती केर धान रे।
ओइसइ उअइं जस सुरिज अउ चांद रे।

फूफू दूब चुनती जाती हैं, तेल चढ़ाती हैं और आशीर्वाद देती जाती हैं। मेरे गुलशन राम लाख बरस तक जीवित रहें। ऐसे ही बढ़ें, बढ़ते रहें जैसे धरती का धान बढ़ता है। ऐसे उदित होकर चमके जैसे सूर्य और चाँद उगते हैं, चमकते हैं तथा आगे बढ़ते हैं।

तेल चढ़ाना

नाउन रानी तुमहीं मोर नाउन
तिलिया के तेल ले आवा मोरी नाउन
हमरे फलाने देइया अति सुकुमारी
तिलिया के झार सहन नहिं जाई
नाउन रानी तुमहीं मोरी नाउन
तिलिया के तेल ले आवा मोरी नाउन
हल्दी के गाँठ ले आवा मोरी नाउन
हमने फलाने देइया अति सुकुमारी
हल्दी के झार सहो नहिं जाई
नाउन रानी तुमहीं मोर नाउन
तिलिया के तेल ले आवा मोरी नाउन
दुबिया के पेड़ ले आवा मोरी नाउन
हमने फलाने देइया अति सुकुमारी
दुबिया के झार सहो नहिं जाई
नाउन रानी तुमहीं मोर नाउन
तिलिया के तेल ले आवा मोरी नाउन।

लड़की को तेल चढ़ाते समय नाउन को सम्बोधित करते हुये कहा गया है कि- हे नाउन रानी! तुम्हीं मेरी प्यारी नाउन हो। तिल का तेल ले आओ। हमारी अमुक नाम (कोई भी नाम)की पुत्री अत्यंत सुकोमल है, उससे तिल के तेल की झार सहन नहीं हो रही है। हे नाउन! हल्दी की गाँठ ले आओ। हमारी सुकुमार पुत्री हल्दी के झार को सहन नहीं कर पा रही है। आगे कहते हैं कि- हे नाउन! दूबी ले आओ। हमारी सुकुमार लाड़ली दूबी के झार (तीखेपन) को सहन नहीं कर पा रही है।

तेल चढ़ाना

तेलिया केर महंग भये बाबा
को तेलिया घर जाइ।
फूफू पिआरी दुरगा देई।
ओई तेलिया घर जाइ।
तेलिया बेटउना हय आडिल
लिहिस फुफुइया चढ़ाइ।
बनिया केर हलदी महंग भये बाबा
को बनिया घर जाइ।
काकी पियारी कान्ती देई
ओही बनिया घर जाइ।
बनिया बेटउना हइ आडिल
लिहिस तेरजुआ चढ़ाइ।
कुँअना के दूँब महंग भये बाबा
को रे लइ आबइ हो।
दूलहे केर बहिनी सोहागिन
वहै दूब लइ आबइ हो।
को रे कंवारी बलाबइ
त तेल चढ़वाबइ हो।
बिटिया केर भउजी सोहागिन
कुंआरी घरे जाइ हो।
सलगी कुमारी बलामइ
त तेल चढ़ामइ हो
तेल चढ़ामइ दुबिया चुनि चुनि
देय असीस हो।

कौन तेली के घर जाए? तेल तो बहुत महंगा हो गया। फूफू दुर्गा देवी सोहागिन हैं, वही तेली के घर जायेंगी। तेल ले आयेंगी। फूफू गईं पर तेली का लड़का बड़ा अड़ियल है, उसने फूफू को अटका लिया।

कुएँ की दूब भी महँगी हो गई। कौन लेने जाय। वर की बहन सौभाग्यवती है, वही दूब लेने जाएगी। कौन कुँआरियों को बुलाने जाए? वही तो तेल चढ़ायेंगी। बेटा या बेटी (जिस पक्ष का गीत हो) की भाभी सोहागिन हैं, वही कुँआरियों के घर जायेंगी। सभी कुँआरियों को बुलायेंगी, वे तेल चढ़ायेंगी। तेल चढ़ाते समय दूब चुनती जाती हैं – आशीष देती जाती हैं।

सोहाग

अरे घोड़वा कुदावैं दुलहे दुलेरूआ
दुलहे दुलेरूआ
पूछैं लागी ससुरारी खोर
राजा के सोहगवा
अरे जाइ जो पहुँचे हैं ससुरारी के खोरिया
ससुरारी के खोरिया
अरे घन हैं सेंहुड़रिया कलगी अरझी है ओकी डार
राजा के सोहगवा
अरे मोरी धनिया निरूअरतिव मोर कलगी
निरूअरतिव मोर कलगी
अरे अरझी है सेंहुड़ा के डार
राजा के सोहगवा
अरे हम कैसे कलगी निरूआरी मोरे स्वामी
निरूआरी मोरे स्वामी
अरे देखत हैं नगरवा के लोग
राजा के सोहगवा।

दूल्हा शान से घोड़े में बैठकर उछलता-कूदता अपने ससुराल की राह पूछता हुआ चला जा रहा है। ससुराल की तंग गली में पहुँचता है जहाँ पर सेंहुड़ (थूहर) की कंटीली घनी झाड़ियाँ लगी हुई हैं। दूल्हे के पगड़ी में लगी हुई कलगी सेंहुड़ के काँटों में उलझ जाती है। एक परदेशी को मुसीबत में देखकर उसकी पत्नी वहाँ पहुँचती है। उसे देखकर दूल्हा काँटों में उलझी हुई कलगी को सुलझाने की याचना करता है। परन्तु वह ऐसा नहीं करती। प्रत्युत्तर में वह बोलती है कि- पूरे नगर के लोग हम लोगों को देख रहे हैं, ऐसी स्थिति में मैं किस प्रकार कलगी सुलझा सकती हूँ। अर्थात् मैं लोक-लज्जा के कारण सहयोग करने में असमर्थ हूँ।

सोहाग

अरे देहु न मोरी माया सोने के घइलबा
सोने के घइलबा
अरे शिव का हम लेबै नहवाय
रानी के सोहगवा
अरे देहु न मोरी माया सोने के गुलुइया
सोने के गुलुइया

अरे फुलवा तोड़न हम जाब
रानी के सोहगवा
अरे फुलवा बिन चुन शिव का चढ़उबै
शिव का चढ़उबै
अरे शिव जी का लेबै मनाय
रानी के सोहगवा
अरे देहु न मोरी माया भांग धतुरवा
भांग धतुरवा
अरे शिव का हम देई चढ़ाय
रानी के सोहगवा
अरे देहु न मोरी माया चूरी चुनरिया
चूरी-चुनरिया
अरे गोरा माई से मगबै सोहाग
रानी के सोहगवा।

पुत्री अपनी माँ से कहती है कि- हे माँ! मुझे स्वर्ण निर्मित एक कलश (घड़ा) दो। मैं उसमें जल भरकर शिवजी को स्नान कराऊँगी। इसके पश्चात् मुझे सोने की बनी हुई एक छोटी टोकनी दो जिसमें मैं फूलों को तोड़-तोड़कर रखूँगी। मैं फूलों को शिव जी को चढ़ाकर उन्हें प्रसन्न कर लूँगी। इसके बाद शिवजी को भांग एवं धतूर चढ़ाकर पूजा अर्चना करूँगी। तत्पश्चात् हे माँ! मुझे चूड़ियाँ एवं चुनरी भी दो ताकि मैं उन्हें पार्वती जी को चढ़ाकर अमर सुहाग का वरदान प्राप्त कर लूँ। निश्चित ही शिव एवं पार्वती जी के पूजन से मेरा सुहाग अमर हो जायेगा।

सोहाग

सो ऐसी री सोहाग
मैने घोर-घोर पाई
सुहगवा की क्यारी
उनके आजा ने लगाई
सींचे उनकी आजी
सिंचावै बेटी लाड़िल
सो ऐसी री सोहाग
मैं घोर-घोर पाई
सुहगवा की क्यारी
उनके दद्दा ने लगाई
सींचे उनकी माता

सिंचावै बेटी लाड़िल
सो ऐसी री सोहाग
मैने घोर-घोर पाई
सोहगवा की क्यारी
उनके चाचा ने लगाई
सींचै उनकी चाची
सिंचावैं बेटी लाड़िल
सो ऐसी री सोहाग
मैने घोर-घोर पाई।

मैंने इस प्रकार का सोहाग बड़े भाग्य से प्राप्त किया है। सोहाग की क्यारियों को उनके आजा (बाबा) ने लगाया है। उनकी आजी (दादी) उन क्यारियों को सींचती है तथा उनकी लाड़ली बेटी सींचने में मदद करती है। इसी प्रकार उसके पिता द्वारा लगाई गई सोहाग रूपी क्यारी को उसकी माता सींचती है। चाचा द्वारा लगाई गई सोहाग की क्यारी को चाची बड़े यत्न से सींचती हैं। पालती-पोसती हैं तथा उनकी लाड़ली बेटी सींचने में सहयोग प्रदान करती है।

सोहाग

गिनतिन बइठिन है ढेरिया चन्दा देई
सुन मेघो बिनती हमार
रानी के सोहगवा
एक घरी बदरी क्षमा करा मेघो
सो आजी मोरी देती हैं सोहाग
रानी के सोहगवा
एक घरी बदरी क्षमा करा मेघो
सो माता मोरी देती हैं सोहाग
रानी के सोहगवा
अरे गिनतिन बइठिन है ढेरिया चन्दा देई
सुन मेघो बिनती हमार
रानी के सोहगवा
एक घरी बदरी क्षमा करा मेघो
सो चाची मोरी देती हैं सोहाग
रानी के सोहगवा
एक घरी बदरी क्षमा करा मेघो
सो फूफू मोरी देती हैं सोहाग

रानी के सोहगवा
अरे गिनतिन बइठिन है ढेरिया चन्दा देई
सुन मेघो बिनती हमार
रानी के सोहगवा।

दिन गिनते हुये दुलारी चन्दा देवी बैठी हुई मेघों से अनुरोध कर रही हैं कि- रानी का सोहाग होने जा रहा है। अत: हे मेघराज! थोड़ी देर के लिये क्षमा कर दो, क्योंकि मेरी आजी (दाई) सोहाग प्रदान कर रही हैं। इसी प्रकार वह मेघों से प्रार्थना करती हुई कहती है कि- आप लोग एक घड़ी के लिये क्षमा करें, अर्थात् छोटी-छोटी बदरी द्वारा ओट कर लें ताकि क्रमशः मेरी माता, चाची एवं बुआजी सोहाग प्रदान कर सकें। सोहाग देते समय ऊपर से कपड़े का ओट करने की प्रथा है।

सोहाग

कँहमय उपजी लहालह दुबिया,
कँहमय उपजे है पान।
रानी के सोहगवा॥
कँहमय उपजे हैं दुलरे दुलेरूआ,
मुखवन चुअय ओगार।
रानी के सोहगवा॥
कोलिया मा उपजी लहालह दुबिया
बरई बरेजे मा पान
रानी के सोहगवा॥
कोखवा मा उपजे है दुलरे दुलेरूआ,
मुखवन चुअय ओगार।
रानी के सोहगवा॥

हे सखी! रानी के विवाह पर मंगलमय सोहाग गीत गाये जा रहे हैं। लहलहाने वाली हरी दूब कहाँ पर उगी हुई है? पान की उपज कहाँ पर होती है? रानी का सोहाग होने जा रहा है। दुलारे दूल्हे कहाँ से उत्पन्न हुये हैं? जिनके सुन्दर मुख मण्डल से लावण्यता चू रही है। रानी का सोहाग होने जा रहा है। घर के पास बारी में लहलहाने वाली दूब घास उत्पन्न हुई है तथा बरई (पान की खेती करने वाले) के बरेज में पान उत्पन्न होता है। इसी प्रकार अपनी माता के कोख से दुलारे दूल्हे पैदा हुये हैं, जिनके मुख मण्डल से लावण्यता झलक रही है। रानी का सोहाग होने जा रहा है।

सोहाग

बरसइ लागी सोहाग बदरी हो
सोहाग बदरी
अंगने बरसै सुहाग बदरी
बहिरे बरसै सुहाग बदरी हो
रानी के सोहगवा
दादी देंय सोहाग भरि मांग
बरसै सोहाग बदरी
चाची देंय सोहाग भरि मांग
बरसै सोहाग बदरी हो
रानी के सोहगवा
अम्मा देय सोहाग भरि मांग
बरसै सोहाग बदरी
भउजी देय सोहाग भरि मांग
बरसै सोहाग बदरी
रानी के सोहगवा।

विवाह के समय सौभाग्य की बदली बरसने लगी, सोहाग बदरी आँगन में बरस रही है। अन्दर बरस रही है, बाहर बरस रही है। रानी का सोहाग चढ़ रहा है। दादी सोहाग दे रही हैं। माँग में सिन्दूर भर रही है। रानी को सोहाग चढ़ रहा है। चाची सोहाग दे रही है, सोहाग की बदली बरस रही है। अम्मा सोहाग दे रही हैं, सोहाग की बदली बरस रही है। भाभी सोहाग दे रही हैं। सोहाग की बदली बरस रही है। रानी का सोहाग चढ़ रहा है।

सोहाग

ऊंच टिकुरिया सोहगिया केर बिरबा
सोहगिया के लम्बे-लम्बे पात
राजा के सोहगवा
ओही होइ के निकरे हंइ दुलहे रामदरश राम
बांधे केसरिया कय पाग
भितरे से निकरी हंइ ढेरिया सुधा देइ
पूंछे दुलेरूवा के बात
राजा के सोहगवा
कउने रंग साहेब तोहार पगड़िया
कउने रंग दांत तोहार

राजा के सोहगवा
केसर रंग रंगी धना हमरी पगड़िया
पनवा रंग रचे मोर दांत
राजा के सोहगवा
कउने रंग रंगी धना तुम्हरी चुनरिया
कउने रंग भरौ तुम्हरी मांग
राजा के सोहगवा
पिअर रंग रंगी साहेब हमरी चुनरिया
सेंदुर भरौ मोरी मांग
राजा के सोहगवा।

ऊँचे टीले पर सोहाग का पेड़ है, उसके लम्बे-लम्बे पत्ते हैं। उसी ओर से दूल्हा रामदरश राम निकले। वे केसरिया रंग की पगड़ी बाँधे हैं। उसी समय भीतर से सुधा देवी निकलीं। वर से पूछती हैं- प्रिय! तुम्हारी पगड़ी किस रंग की है? तुम्हारे दाँत किस रंग के हैं? धना हमारी पगड़िया केसर रंग से रंगी है और पान के रंग से हमारे दाँत रंगे हैं। तुम बताओ तुम्हारी चुनरी किस रंग की है और तुम्हारी माँग किस रंग से रंगे? कन्या ने कहा- हमारी चुनरी पीले रंग से रंगी है, मेरी माँग सिन्दूर से भरो। आज राजा का सोहाग दिन है।

सोहाग

चिरई रे सोयगें चुनूगुर सोयगें
सोयगें नगरवा के लोग
राजा के सोहगवा
एक नहीं सोये अजवा बृजभूषणराम
जेखे घरे नतिनी कुंवारि
राजा के सोहगवा
चिरई रे सोयगें चुनूगुर सोयगें
सोयगें नगरवा के लोग
राजा के सोहगवा
एक नहीं सोये है बपवा रामायन
जेखे घरे बिटिया कुंवारि
राजा के सोहगवा
चिरई रे सोयगें चुनूगुर सोयगें
सोयगें नगरवा के लोग
राजा के सोहगवा

एक नहि सोये हैं भइया सुरसरी
जेखे घरे बहिनी कुंवारि
राजा के सोहगवा।

चिड़िया-पक्षी सो गई है। समस्त जीव-जगत सो रहा है। शहर के समस्त लोग निद्रा ले रहे हैं। केवल एक बृजभूषण राम नहीं सो रहे है, क्योंकि उनके घर नातिन कुँवारी है। चिड़िया सो गई। समस्त जीव-जगत सो गया है। शहर के समस्त लोग निद्रा ले रहे हैं, केवल एक रामायण राम नहीं सो रहे हैं जिसके घर में बेटी कुँवारी बैठी है। चिड़िया सो गई है। सम्पूर्ण जीव-जगत सो रहा है। नगर के लोग निद्रा सुख में लीन हैं। अकेला एक भाई सुरसरी राम जाग रहा हैं, जिसके घर उसकी बहिन कुँवारी बैठी है।

सोहाग

पांच बधनवा कै टटिया बंधावा हो
मड़ये मा दिहा ओढ़काय
राजा के सोहगवा
टटिया ओलटि कै आई अजिया केलेसुआ
देखि लेंउ नतिनी सोहाग
राजा के सोहगवा
नतिनी सोहाग बहुत निक लागई
जुग-जुग बढइ सोहाग
राजा के सोहगवा
टटिया ओलट होइके देखे माया गौरा देई
देखि लेंउ बिटिया सोहाग
राजा के सोहगवा
बेटियाँ सोहगवा बहुत नीक लागइ
जुग-जुग बाढ़ैं अहिबात
राजा के सोहगवा
टटिया ओलटि होइके देखै आई काकी कुमरिया देई
देखि लेंउ बेटी के सोहाग
राजा के सोहगवा
बेटी के सोहगवा बहुत निक लागइ
जुग-जुग बाढ़इ अहिबात
राजा के सोहगवा।

सुन्दर मण्डप के नीचे विवाह का कार्यक्रम चल रहा है। कहते हैं कि पाँच बंधनों से बंधी

हुई एक टटिया तैयार करो, जिसमें पीछे खड़ा होने वाला व्यक्ति दिखाई न पड़े। टटिया को मण्डप में एक ओर लगा दो। टटिया की आड़ में आजी कैलसुआ आकर खड़ी होती हैं और इच्छा व्यक्त करती हैं कि नातिन का सोहाग देख लूँ। साथ ही आशीर्वाद देती हैं कि युग-युग तक नातिन सौभाग्यवती हो। टटिया की आड़ में आकर माता गौरा देवी खड़ी होती हैं, कहती हैं कि- बेटी का सोहाग देख लूँ। वह आशीर्वाद देती हैं कि बेटी का सोहाग युग-युग तक अमर रहे। टटिया की आड़ में खड़ी होकर काकी कुमरिया देवी कहती हैं कि- सोहाग बहुत अच्छा लग रहा है। वह आशीर्वाद देती हैं कि बेटी का सोहाग युग-युगान्तर तक अमर रहे।

सोहाग

चन्दन के बिरवा रे बाबा
हीरा जड़ी है किवाड़
रानी के सोहगवा
सोउते हा कि जगते है दद्दा
द्वारे पे अड़ी है बरात
रानी के सोहगवा
ना सोउत हन न जागत हन हम बेटी
लागी है चिन्ता तुम्हार
रानी के सोहगवा
सोउते हा कि जगते है चाचा
द्वारे पे अड़ी है बरात
रानी के सोहगवा
न सोउत हन न जागत हन हम बेटी
लागी है चिन्ता तुम्हार
रानी के सोहगवा
सोउते हा कि जगत है भैया
द्वारे पे अड़ी है बरात
रानी के सोहगवा
न सोउत हन न जागत हन हम बहिनी
लागी है चिन्ता तुम्हार
रानी के सोहगवा।

चन्दन की लकड़ी का किवाड़ बना हुआ है जिसमें हीरे जड़े हुये हैं। लड़की का विवाह हो रहा है। वह अपने पिता से पूछती है कि आप सो रहे हैं ? अथवा जाग रहे हैं ? पिता जवाब देता है कि मैं न तो सो रहा हूँ और न ही जाग रहा हूँ। मुझे तुम्हारी चिन्ता बनी हुई है। क्योंकि दरवाजे

पर बारात आकर रुकी हुई है। लड़की इसी प्रकार के प्रश्न अपने चाचा तथा बड़े भाई से करती है। सभी लोग यही उत्तर देते हैं कि हमें तुम्हारी चिन्ता बनी है।

सोहाग

अरे सोन के पिंजरवा से
उड़े रे सुअनवा
अरे कजली बन डाले हैं बसेर
रानी के सोहगवा
अरे पिता उनके पोथिया बांचत हैं
पोथिया बांचत है
अरे अम्मा उनकी अरथ लगांय
रानी के सोहगवा
अरे चाचा उनके पोथिया बांचत हैं
पोथिया बांचत हैं
अरे चाची उनकी अरथ लगांय
रानी के सोहगवा
अरे मामा उनके पोथिया बांचत हैं
पोथिया बांचत हैं
अरे मामी उनकी अरथ लगांय
रानी के सोहगवा
अरे भइया उनके पोथिया बांचत हैं
पोथिया बांचत हैं
अरे भौजी उनकी अरथ लगांय
रानी के सोहगवा।

सोने के पिंजड़े से तोता उड़ चला और वह जाकर कजली वन में अपना बसेरा डाल देता है। रानी तुल्य बेटी का सुहाग होने जा रहा है। पिता पोथी का वाचन करते हैं तथा माता उसका अर्थ बताती हैं। इसी प्रकार चाचा पोथी का वाचन करते हैं तो चाची अर्थ निकालती हैं। मामा पोथी का वाचन करते हैं तो मामी अर्थ निकालती हैं। जब भाई पोथी का वाचन करते हैं तो भाभी उसका अर्थ निकालती है। रानी का सोहाग गीत गाया जा रहा है।

सोहाग

अरे लाली-लाली डोलिया
जड़े रे हीरा मोतिया

अरे लपकत आवैं रे कहार
रानी के सोहगवा
अरे बाप उनके रोवैं उरमाल मुख पोंछैं
उरमाल मुख पोंछैं, अरे माता उनकी रोबैं निराधार,
रानी के सोहगवा
अरे चाचा उनके रोबैं उरमाल मुख पोंछैं
उरमाल मुख पोंछैं
अरे चाची उनकी रोबैं निराधार
रानी के सोहगवा
अरे भइया उनके रोबैं
उरमाल मुख पोंछैं
उरमाल मुख पोछैं
अरे भाभी उनकी रोबैं निराधार
रानी के सोहगवा
अरे मामा उनके रोबैं
उरमाल मुख पोंछैं
अरे मामी उनकी रोबैं निराधार
रानी के सोहगवा
अरे संगी उनके रोबैं
उरमाल मुख पोंछैं
अरे गुइयां उनकी रोबैं निराधार
रानी के सोहगवा।

नई नवेली दुल्हन के विदाई का समय आ गया है। लाल रंग से सजी हुई डोली पर हीरे मोती जड़े हुये हैं। उस डोली पर बैठकर दुल्हन अपने ससुराल जा रही है। डोली को अपने कंधे पर रखे हुये कहार लोग (भारवाहक) तेजी से बढ़ते जा रहे हैं। जुदाई की बेला पर दुल्हन के पिताजी भाव विह्वल होकर रो पड़ते हैं। रूमाल से नेत्रों में छलके हुये आँसुओं को पोंछ रहे हैं। दुल्हन की माता पुत्री के विछोह में जोर-जोर से रोने लगती है। ऐसा प्रतीत होता है कि पुत्री के विदा हो जाने पर अब घर परिवार में माता के लिये कोई आधार ही नहीं बचा है, अर्थात् माता निराधार होकर रो रही है।

इसी प्रकार दुल्हन के चाचा भी रो रहे हैं तथा रूमाल से अपने मुँह को पोंछ रहे हैं। दुल्हन की चाची निराधार होकर रो रही हैं। दुल्हन के भइया भी बहन के विछोह में रो पड़ते हैं। चेहरे पर आये हुये अश्रु बिन्दुओं को रूमाल से पोंछते हैं। उनकी पत्नी अर्थात् भाभी निराधार होकर रो रही हैं। दुल्हन के मामा भी रो रहे हैं, तथा रूमाल से मुँह को पोंछ रहे हैं। उनकी मामी भी

निराधार होकर रो रही हैं। दुल्हन के संगी-साथी भी विदाई के अवसर पर अत्यंत दुखी हैं। रुदन करते हुये मुख को रूमाल से पोंछते हैं तथा दुल्हन की सखियाँ निराधार होकर जोर-जोर से रो रही हैं। अर्थात् विदाई की बेला पर बड़ा मार्मिक वातावरण बना हुआ है।

बेलनहाई

मथुरा मा लागी एक बजरिया
कि मेहंदी आई बिकाय
जइहा देवरवा मेहंदी लै अइहा
रूपियन सेर बिकाय
मेहंदी रचि गय कोइली परिगय
देखन वाले विदेश
काह कारि मैं कागद बनाऊं
काहिन कै मसि लेउं
ए जी काही बनाऊं मैं असल कथवा
हरि जू का पाती लै के जाय
ए जी आंचर फारि मैं कागद बनाऊं
नैनन से मसि लेउंजी
ए जी देवरा बनाऊं असल कइथवा
कि हरि जू का पाती लै के जाय।

प्रियतम के विरह-वियोग में डूबी नायिका अपने देवर से कहती है कि- मथुरा के बाजार में मेहंदी बिकने के लिये आयी है। हे देवर जी! जाकर एक रुपये सेर बिकने वाली मेहंदी ले आओ। मेहंदी लगाने से उसके हाथ लाल पड़ गये। वह सोचती है कि इन सुन्दर हाथों को देखने वाले प्रियतम तो सुदूर परदेश में पड़े हैं। वह सन्देश भेजना चाहती है। वह सोचती है कि मैं कागज किस प्रकार बनाऊँ तथा स्याही कहाँ से लाऊँ? पत्र लिखने वाला कायस्थ किसे बनाऊँ, जो कि पत्र को लेकर मेरे स्वामी तक जाय।

अन्ततः वह अपना आँचल फाड़कर कागज बनाती है तथा अपने आँखों के आँसुओं की स्याही बनाकर पत्र लिखकर अपने देवर को प्रियतम के पास तक पत्र लेकर भेजने की बात निश्चित करती है।

बेलनहाई

राधा ता गई जमुना दह पानी
पहिने कुसुम रंग सारी जी
सरमन मुख भरि मारै पिचकारी

भींजि गई तन सारी जी
हमसे ससुर जी जो जानय पैंहैं
का गति करिहीं हमारी जी
राधा ता गई जमुना दह पानी
पहिने कुसुम रंग सारी जी
हमरे जो जेठ जी जानय पैंहैं
का गति करिहीं हमारी जी
राधा ता गई जमुना दह पानी
पहिने कुसुम रंग सारी जी
इतना वचन कहे बोले मोरी राधा
अंग का धूमिल होइं जाई जी
राधा ता गई जमुना दह पानी
पहिने कुसुम रंग सारी जी।

राधाजी कुसुम रंग की साड़ी पहनकर यमुना नदी में पानी भरने गयी हैं। श्री कृष्णजी पिचकारी मारते हैं, जिसके कारण राधाजी का शरीर एवं वस्त्र गीले हो जाते हैं। राधाजी उलाहना देती है कि– यदि हमारे जेठजी इस प्रसंग को जान जायेंगे तो हमें क्या कहेंगे ? प्रत्युत्तर है कि– हे राधाजी! ऐसा क्यों बोल रही हो, क्या तुम्हारा शरीर पिचकारी की मार से धूमिल हो जायेगा ? राधाजी कुसुम रंग की साड़ी पहनकर यमुना नदी में पानी भरने गयी हुई हैं।

बेलनहाई

करैं बोकइयां बोकइयां ललन तोरी
कबहूँ न गय लरकइयां
सफरैं बोकइयां बोकइयां
मोहन तोरी कबहूँ न गय लरकइयां
सोने के थारी मां जेमना बनायों
जीभै बोकइयां बोकइयां ललन तोरी
कबहूँ न गय लरकइयां
लौंगन खील खील बीरा लगायों
कतरैं बोकइयां बोकइयां ललन तोरी
कबहूँ न गय लरकइयां
फूलन बिन बिन सेजिया लगायो
सूतै बोकइयां बोकइयां ललन तोरी
कबहूँ न गय लरकइयां

करैं बोकइयां बोकइयां ललन तोरी
कबहूँ न गय लरकइयां।

हे मोहन प्यारे! तुम्हारा बचपना अभी नहीं गया। तुम अभी-भी बोकइयां (घुटने के बल चलना) चल रहे हो। तुम स्नान करते समय भी बोकइयां करते हो। मैंने तुम्हारे लिये सोने की थाली में भोजन लगाया, सोने के लोटे में पानी भर लायी, परन्तु तुम्हारा बचपना नहीं गया। तुम खाना-पीना बोकइयां करते हुये ही पा रहे हो। मैंने तुम्हारे लिये लौंग लगे हुआ पान तैयार किया, तुम उसे भी बोकइयां करते हुये खा रहे हो। मैंने एक-एक फूल चुनकर सेज तैयार किया है, परन्तु तुम बोकइयां करते हुये ही सो रहे हो। हे प्यारे मोहन! तुम्हारा बचपना अभी तक नहीं गया।

बेलनहाई

खोरियन खोरियन फिरै महादेव
गलिन गलिन भगवान
वहै जग करता के बखरी बतावा
हमू जग देखन जाब
ऊंची अटरिया है चन्दन केवड़ियां
सुरजन साँहूं दुआर
उन्हीं के दुआरे में हाथी लोटत है
पूजत है सालिगराम
उन्हीं के दुआरे में तुलसी लगी है
उन्हीं घर सीता कुमार।

नगर में अभूतपूर्व उत्सव की तैयारी देखकर भगवान विष्णु एवं महादेवजी वहाँ पहुँचते हैं। नगर की गलियों में घूमते हुये पूछते हैं कि उस यज्ञकर्त्ता का महल कहाँ पर है? हमें भी यज्ञ देखने जाना है। तब उन्हें बताया जाता है कि ऊँची अटारियों वाला महल जहाँ कि चन्दन काठ के किवाड़ लगे हुये हैं, उस महल का दरवाजा पूर्व दिशा की ओर है। उनके दरवाजे पर हाथियों के झुंड क्रीड़ा कर रहे हैं। उस घर में भगवान सालिगराम की पूजा होती है। जिस महल के दरवाजे पर तुलसीजी का पेड़ लगा हुआ है, उसी महल में सीताजी कुँवारी बैठी हुई है। उसी महल में अर्थात् राजा जनक जी के घर रामजी एवं सीताजी का विवाह रूपी यज्ञ हो रहा है।

बेलनहाई

ए जी सिया ऐसी सुन्दर नारि
रमइया संग बन का गई
ए जी उलटि निहारें दीनानाथ

सो माया मोरी रोवत खड़ी
ए जी दादा से कहेव परनाम
दीदी मोरी धीरज धरी
ए जी भइया से कहेव परनाम
भौजी मोरी धीरज धरी
ए जी चाचा से कहेव परनाम
चाची मोरी धीरज धरी
ए जी सिया ऐसी सुन्दर नारि
रमइया संग बन का गई।

समय बड़ा बलवान होता है। सीता जैसी सुन्दर, सुकोमल नारी को भी भगवान रामजी के साथ वन को जाना पड़ा। अर्थात् समय का कालचक्र छोटे-बड़े, अमीर-गरीब तथा नर-नारायण सभी पर पड़ता है। वन गमन करते समय रामजी पलट कर देखते हैं कि उनकी माताजी रोते हुये खड़ी हैं। वे सन्देशवाहक से कहते हैं कि- जाकर हमारे पिताजी से मेरा प्रणाम कहना तथा माताजी से कहना कि- वे धैर्य धारण करेंगी। इसी प्रकार वे अपने चाचा, बन्धु-भाई आदि परिजनों को प्रणाम भेजकर चाची, भाभी आदि सम्बन्धियों को धैर्य धारण करने हेतु सन्देश भेजते हैं।

बेलनहाई

ए जी हमरे बाबुल जी के नीचे रे घिनौची
फूल रहे फुलवार।
ए जी कहना लगाऊं बेला रे चमेली
कहना लगाऊं अनार।
ए जी कहना लगाऊं अंतर के बिरबा
महक रहे संसार
ए जी अंगना लगाऊं बेला रे चमेली
फरिका लगाऊं अनार
ए जी दुअरा लगाऊं अंतर के बिरवा
महक रहे संसार।

ऐ जी! हमारे बाबुल जी के आँगन में घिनौची (जल से भरे हुये घड़े रखने का लकड़ी का बना हुआ छोटा सा मचान) बनी हुई है। उसके नीचे हमेशा नमी बनी रहती है, जिसमें विभिन्न प्रकार के फूल खिले हुये हैं।

ऐ जी! मैं बेला और चमेली के पौधों को कहाँ पर लगाऊँ ? तथा किस स्थान पर अनार का पेड़ लगाऊँ? इसी प्रकार इत्र का पेड़ कहाँ पर लगाऊँ, जिसकी सुगंध से संसार महकने

लगे ? ऐ जी ! मैं अपने घर के आँगन में बेला और चमेली के तथा घर के बाहर सामने की ओर अनार का पेड़ लगाऊँगी। इसी प्रकार घर के दरवाजे पर इत्र का पेड़ लगाऊँगी, जिसकी सुगंध से सम्पूर्ण संसार महक उठेगा।

बेलनहाई

ए जी कहना से आईं दुर्गा मइया
कहना डेरा डाल दिहिन
ए जी का चढ़ि आईं दुर्गा मइया
कहना डेस डाल दिहिन
ए जी रथ चढ़ि आईं दुर्गा मइया
मंदिर डेरा डाल दिहिन
ए जी का लैके आईं दुर्गा मइया
कहना डेरा डाल दिहिन
ए जी फूल लैके आईं दुर्गा मइया
मंदिर डेरा डाल दिहिन
ए जी कहना से आईं दुर्गा मइया
कहना डेरा डाल दिहिन
ए जी सरग से आवैं दुर्गा मइया
मंदिर मा डेरा डाल दिहिन।

ऐ जी ! दुर्गा माता कहाँ से आयी है तथा कहाँ पर अपना डेरा डाले हुये हैं ? दुर्गा मइया क्या चढ़कर आई हैं ? अपना डेरा कहाँ पर डाली हैं ? दुर्गा मइया रथ पर सवार होकर आयी हैं तथा मंदिर में अपना डेरा (पड़ाव) डाली हैं। दुर्गा माता क्या लेकर आयी हुई हैं तथा कहाँ पर पड़ाव डाली हैं ?

ऐ जी ! दुर्गा माता अपने हाथों में फूल लेकर आयी है तथा मंदिर में अपना पड़ाव डाली हैं। दुर्गा मइया कहाँ से आयी हैं ? कहाँ पड़ाव डाली हैं ? ए जी ! माता दुर्गा स्वर्ग लोक से आकर मंदिर में डेरा (पड़ाव) डाले हुये हैं।

बेलनहाई

जमुना जी जल भरन गई रहेंव
पहिन कुसुम रंग साड़ी जी
गलियों में मिलिगे हैं कृष्ण कन्हाई
हाथ लिये पिचकारी जी
पहिली पिचकारी मोरे माथे बिच मारे

बेंदी की झरी है खारी जी
एतना सुनिन जो सासू हमारी
देंय लागीं बड़ी-बड़ी गारी जी
जमुना जी जल भरन गई रहेंव
पहिन कुसुम रंग साड़ी जी।

मैं कुसुम रंग की साड़ी पहनकर जल भरने के लिये यमुना नदी जा रही थी। उसी समय रास्ते में श्री कृष्णजी से भेंट हो गई, जो कि अपने हाथों में पिचकारी लिये हुये थे। उन्होंने पहिली पिचकारी मेरे माथे पर छोड़ दिया, फलस्वरूप मेरे बिन्दी की चमक चली गयी। जब इन बातों को हमारी सासूजी ने सुना तो वे नाराज होकर मुझे बड़ी-बड़ी गालियाँ देने लगीं। मैं कुसुम रंग की साड़ी पहनकर यमुनाजी जल भरने के लिये जा रही थी।

बेलनहाई

करम गति कोई नहिं बांच सुनाबयं
करम गति कोई नहिं बांच सुनाबयं
तैं रे गंगा काहे धीमे बहत हैं
जमुना काहे गहराई
करम गति कोई नहिं बांच सुनाबयं
पोथिया हो तो सब बांच सुनाबयं
करम के लेख न सुनाबयं
करम गति कोई नहिं बांच सुनाबयं।

कर्म की गति कोई नहीं जानता। उसे कोई पढ़कर नहीं सुना सकता। हे गंगाजी! तुम क्यों धीमी गति से बह रही हो, इसी प्रकार जमुनाजी क्यों गहराती हुई बह रही हैं? यह तो अपने-अपने कर्मों का फल है। पुस्तक हो तो सभी लोग पढ़कर सुना सकते हैं, परन्तु कर्म की गति को कोई पढ़कर नहीं सुना सकता। अर्थात् कर्म की गति कोई नहीं जानता।

बेलनहाई

आंगन सून चौक चंदन बिन
कोयल बिन अमराई जी
रामा बिना मोरी सूनी अयोध्या
लक्षिमन बिन चौपाई जी
सीता बिना मोरी सूनी रसोइयां
ललन बिना अंगनाई जी

आंगन भरि गा चौंक के आये
कोयल मा अमराई जी
रामा के आये मोरी भरिगय अयोध्या
लक्षिमन से चौपाई जी
सीताजी के आये मोरी भरिगय रसोइयां
ललन खेलयं अंगनाई जी।

मेरा आँगन चन्दन के चौक (वेदी) बिना सूना लग रहा है। कोयल के बिना अमराई (आम का बगीचा) सूनी लग रही है। रामचन्द्रजी के बिना अयोध्या सूनी लग रही है। लक्ष्मणजी के बिना चौपाल सूनी लग रही है तथा सीताजी के बिना मेरी रसोइयां (रसोई गृह) सूनी लग रही है। पुत्र के बिना मेरा आँगन सूना लग रहा है।

चौक (रंगोली) बन जाने से आँगन भर गया। कोयल की कूक से अमराई भर गयी। रामचन्द्रजी के आने से अयोध्या नगरी भरी हुई सी लगने लगी। लक्ष्मणजी के आगमन से चौपाल भर गयी। सीताजी के आने से रसोई गृह भरा-भरा सा दिखलाई पड़ने लगा तथा बाल क्रीड़ा से आँगन शोभायमान हो गया।

बेलनहाई

ए जी खेलत रहेंव बालू रेत
मुन्दरिया मोरी वोंही गिरी
ए जी ससुरा जगायों आधी रात
ससुइया गारी देत उठी
ए जी खेलत रहेंव बालू रेत
मुन्दरिया मोरी वोंही गिरी
ए जी जेठा जगायों आधी रात
जेठनिया गारी देत उठी
ए जी खेलत रहेंव बालू रेत
मुन्दरिया मोरी वोंही गिरी
ए जी देवरा जगायों आधी रात
देवरनिया गारी देत उठी
ए जी खेलत रहेंव बाजू रेत
मुन्दरिया मोरी वोंही गिरी।

बहू कहती है कि- ऐ जी! मैं बालू रेत के साथ खेल रही थी, उसी बीच मेरी अँगूठी वहीं कहीं गिर गई। मैं यह बताने के लिये अपने ससुर जी को आधी रात (देर रात) में उठाने लगी,

तो मेरी सास गाली देते हुए उठीं। मैं यही बात बतलाने के लिये अपने जेठ जी को जगाने लगी तो मेरी जिठानी गाली देते हुए उठीं। मैं बालू रेत में खेल रही थी, उसी समय मेरी अँगूठी गिर गई। मैं यह बतलाने के लिये अपने देवर को जगाने लगी तो मेरी देवरानी भी गाली देते हुये उठी। मैं बालू रेत में खेल रही थी, उसी समय मेरी अँगूठी गिर गई।

बेलनहाई

ए जी संकरी जलहली है तोरी महादेव
गौरा का सांकर जाय
ए जी सांकर सांकर ना करा मोरी गौरा
जाना है नैहर तुम्हार
ए जी बाबू तुम्हारे पोथिया बांचत हैं
माया अरथ लगांय
ए जी भइया तुम्हारे गोरुवा चरामै
भौजी कलेउना लय जांय
ए जी बाबू हमारे बेद पढ़त हैं
माया अरथ लगायं
ए जी भैया हमारे राज करत हैं
भौजी रचैं जेउनार।

गौरा (पार्वती जी) कहती हैं कि– हे महादेव जी! आपकी जलहरी सँकरी है, इस कारण मुझे कठिनाई जाती है। तब महादेव जी (शंकर जी) कहते हैं कि– हे गौरा (पार्वती) जी! सांकर-सांकर मत कहो, मैं तुम्हारे मायके में जाकर तुम्हारे पितृ गृह को जानता हूँ। वे कहते हैं कि– तुम्हारे पिताजी पोथियाँ पढ़ते रहते हैं तथा तुम्हारी माता उनका अर्थ लगाती हैं। तुम्हारे भाई मवेशियों को चराते हैं तथा तुम्हारी भाभी उनके लिये बासा भोजन लेकर जाती हैं।

गौरा (पार्वती) जी कहती हैं कि– हमारे पिताजी वेदों को पढ़ते हैं तथा हमारी माताजी उनकी व्याख्या करती हैं। हमारे भाई राज्य करते हैं (अर्थात् सुखों का उपभोग करते हैं) तथा हमारी भाभी सुन्दर, स्वादिष्ट भोजन पकाती हैं।

द्वारचार

अंगने मोरे नीम लहरिया लेय
अंगने मोरे हो
जहना बसीराम गाड़े हिंडोलना
गाड़े हिंडोलना

अरे उन कर दिद्दा हरसिया झूलि झूलि जाय
अंगने मोरे नीम लहरिया लेय
अंगने मोरे हो
जहना सोमेश्वर राम गाड़े हिंडोलना
गाड़े हिंडोलना
उन कर फूफू हरसिया झूलि झूलि जाय
अंगने मोरे नीम लहरिया लेय
अंगने मोरे हो।

मेरे आँगन में नीम का पेड़ लहलहा रहा है। नीम के पेड़ पर झूला पड़ा है। जिस पर बसीराम की आवारा बहिन झूला झूल रही है। मेरे आँगन में लहराते हुये नीम के पेड़ पर सोमेश्वर राम की फूफू (बुआ) झूला झूल रही है। मेरे आँगन में नीम का पेड़ लहरा रहा है।

द्वारचार

राम रमापति राम रघुराई कि बोल मोरे भाई
बैठे थे संकर करत लड़ाई कि बोल मोरे भाई
जटों से गंगा हमने बहाई कि बोल मोरे भाई
बैठे थे हनुमान करत बड़ाई कि बोल मोरे भाई
सोने की लंका है हमने जलाई कि बोल मोरे भाई
बैठे थे नारद जी करत बड़ाई कि बोल मोरे भाई
घर-घर में झगड़ा हमने कराई कि बोल मोरे भाई
बैठे थे रामचन्द्र करत बड़ाई कि बोल मोरे भाई
धनुष तोड़ सीता को हमने है लाई कि बोल मोरे भाई
राम रमापति राम रघुराई कि बोल मोरे भाई।

द्वारचार के अवसर पर सभी बराती अपनी-अपनी डींग मारते हैं। शंकरजी कह रहे हैं कि हमने अपनी जटाओं से गंगा नदी बहा दिया है। हनुमानजी कहते हैं कि हमने सोने की लंका को जला दिया है। नारदजी अपनी बहादुरी बतलाते हैं कि घर-घर में आपसी झगड़ा हमने कराया है। रामचन्द्रजी अपनी बड़ाई को कहते हुये बोलते हैं कि हमने धनुष तोड़कर सीता का ब्याह किया है। इस प्रकार सभी बाराती अपनी-अपनी बड़ाई का बखान कर रहे हैं।

द्वारचार

आजु को दिन अच्छे रे भाई राम रघुवर आये
जब मोरे रघुवर खेरकन लौ आये
गउअन दान देवाये रे भाई राम रघुवर आये

आजु को दिन अच्छे रे भाई राम रघुवर आये
जब मोरे रघुवर गोइड़ो लौ आये
सूखी दूब हरिआये रे भाई राम रघुवर आये
जब मोरे रघुवर दुअरा लौ आये
मोतियन चौक पुराये रे भाई राम रघुवर आये
जब मोरे रघुवर अंगना लौ आये
कंचन कलश जलाये रे भाई राम रघुवर आये
आजु को दिन अच्छो रे भाई राम रघुवर आये।

आज का दिन बहुत अच्छा एवं शुभदायक है, क्योंकि रामचन्द्रजी पधारे हुये हैं। जब हमारे रामजी खेरकन (गऊओं के बैठने के स्थान) के पास पहुँचे तो गौयें दान में दी जाने लगीं। जब वे आगे बढ़ते हैं तो सूखी दूब (घास) भी हरी हो जाती है। जब रामचन्द्रजी द्वार पर आ जाते हैं तब मोतियों की चौक पूरने लगती है। जब हमारे रामजी आँगन तक पहुँच जाते हैं तब सोने का कलश उनके स्वागत में जलाया जाता है। आज का दिन बहुत अच्छा है, जो रामचन्द्रजी वर के रूप में पधारे हैं।

द्वारचार

कहना के रे लीली घोड़ी
कहना के बछेड़ा रे
पड़रा गांव की लीली घोड़ी
सुमेदा गांव के बछेड़ा रे
भाग चली लीली घोड़ी
रगड़ चलो बछेड़ा रे
का चरै बछेड़ा रे
दूब चरै लीली घोड़ी
दार चरै बछेड़ा रे
कहना के रे लीली घोड़ी
कहना के बछेड़ा रे।

महिलाएँ बारातियों से मजाक करती हुई कहती हैं कि– यह लिल्ली घोड़ी कहाँ की है? उस घोड़ी का पीछा करता हुआ यह नौजवान घोड़ा कहाँ का है ? आगे कहती हैं कि– यह लिल्ली घोड़ी पड़रा गाँव की है तथा बछेड़ा सुमेदा का है। लिल्ली घोड़ी भागती जा रही है तथा नौजवान घोड़ा उसका पीछा कर रहा है। लिल्ली घोड़ी क्या चरती है ? घोड़ा क्या चरता है? आगे कहती हैं कि– लिल्ली घोड़ी दूब (घास) चरती है तथा घोड़ा चने की दाल चबाता है। यह लिल्ली घोड़ी कहाँ की है? यह बछेड़ा (घोड़ा) कहाँ का है?

द्वारचार

बाजत आवे करेली के बाजा
घुमड़त तबल निशान
नाचत आवै पतले समधिया
विहंसत दुलहे दमाद
का दई उतारौं करेली के बाजा
का दई तबल निशान
का दई उतारौं पतले समधिया
का दई दुलहे दमाद
भात दई उतारौ करेली के बाजा
बरा दई तबल निशान
दइजा दई उतारौ पतले समधिया
धिया दई के दुलहे दमाद।

बारात के साथ करेली का बाजा बजते हुये आ रहा है। साथ में तबला, नगाड़े भी बज रहे हैं। पतले शरीर वाले समधी नाचते हुये तथा मुस्कुराते हुये दामाद आ रहे हैं। करेली, तबले एवं नगाड़े इन बाजाओं को क्या देकर द्वार पर उतारूँ ? इसी प्रकार पतले समधी तथा दुलारे दामाद को क्या देकर के उतारूँ?

भात देकर करेली के बाजा को, बरा देकर तबल-नगाड़े को तथा दहेज देकर पतले समधी को एवं कन्या देकर दुलारे दूल्हे को सन्तुष्ट करेंगे।

चढ़ाव

सिरी सीताजी का चढ़त चढ़ाव
सिरी मण्डप के नीचे
सिरी सीताजी का होत है विवाह
सिरी मण्डप के नीचे
सिरी सीताजी का झूमक बेंदी पहिनाव
सिरी मण्डप के नीचे
हांथे मा कंगन, अंगूठी पहिनाव
सिरी मण्डप के नीचे
सिरी सीताजी का छागल बिछुआ पहिनाव
सिरी मण्डप के नीचे
सिरी सीताजी का चढ़त चढ़ाव
सिरी मण्डप के नीचे।

आज श्रीयुत सीताजी का चढ़ाव चढ़ रहा है। यह रस्म शुभ प्रदान करने वाले मण्डप के नीचे सम्पन्न हो रहा है। श्रीयुत सीताजी का विवाह मंगलमयी मण्डप के नीचे हो रहा है। सीताजी के कानों में झूमर तथा मस्तक पर बेंदी मंगल प्रदान करने वाले मण्डप के नीचे पहिनाया जा रहा है। सीताजी के हाथों में कंगन तथा अँगुलियों में अँगूठी धारण कराया जा रहा है। श्रीसम्पन्न मण्डप के नीचे सीताजी के पैरों में पायल तथा बिछुआ पहनाया जा रहा है। आज मंगलमयी मण्डप के नीचे श्री से युक्त सीताजी का चढ़ाव चढ़ रहा है।

चढ़ाव

जैसे सेंधौरी मा सेन्दुर झलके
जैसे गंगा जल पानि
वैसे झलक दै के निकरी चन्दा देई
चौके मा बैठी आप
काहे बेटी अनमन कहे बेटी उनमन
काहे बेटी बदन मलीन
मैं तोसे पूछौं बेटी
तोर सोनवा मलीन धौं रूपवा है खोट
ना माया मोर सोनवा धूमिल
ना रूपवा है खोट
हम धन गोर पिया मोर सांवर
ये गुन बदन मलीन
सांवर सांवर न करा बेटी
सांवर हैं भगवान
संवरे कन्हैया मुख मुरली बजावै
मोहि रहे संसार
माया के कोखि कुम्हार के आवां
कोऊ करिया कोऊ गोर।

जिस प्रकार सिन्दूर की डिब्बी के भीतर सिन्दूर चमकता है। जैसे गंगाजल उज्ज्वल होता है, ठीक उसी प्रकार सजधज कर बेटी चन्दा देवी विवाह मण्डप के आसन पर आकर बैठ जाती हैं। बैठते ही उसका चेहरा उदास देखकर माँ पूछती है कि– बेटी तुम अनमनी क्यों हो गई हो? तुम्हारा शरीर मलीन क्यों हो गया? जो सोने के आभूषण पहन रखी हो, क्या उसमें कोई खामी है? क्या चाँदी के जेवरों की धातु खोटी है? बेटी चन्दा कहती है कि– ऐसी कुछ बात नहीं है। इसका केवल एक ही कारण है, मैं गोरे रंग की हूँ और मेरे पति साँवले रंग के हैं।

जोड़े में यही अन्तर है, जो हमारे मन मलीन होने का कारण है। माँ समझाती है कि बेटी साँवले की बात ही मत करो। भगवान का तो साँवला रंग ही है। देखो! कृष्ण भगवान साँवले रंग के थे, किन्तु जब मुरली बजाते थे तो सारा संसार मुग्ध हो जाता था। माता की कोख कुम्हार के आंवा के समान होती है, जिसमें कोई बर्तन लाल रंग का पक कर निकलता है और कोई काले रंग का। माँ इस प्रकार चन्दा बेटी को समझाकर उसका मन शांत करती हुई कहती है कि- मनुष्य की कीमत उसके गुणों और कर्मों पर आधारित होती है।

चढ़ाव

जे नयना लोभिआय लये री जे नयना
जब सीता को चढ़ो चढ़ौना
सीता चरकी हो गई री जे नयना
जे नयना लोभिआय लये री जे नयना
जब सीता को मण्डप मायनो
सीता हरिअर हो गई री जे नयना
जे नयना लोभिआय लये री जे नयना
जब सीता को परी भांवरें
सीता बिरानी हो गई री जे नयना
जे नयना लोभिआय लये री जे नयना।

सीताजी के सौन्दर्य को देखकर ये नेत्र अत्यंत हर्षित हैं। बार-बार उन्हें एकटक देखना चाहते हैं। जब सीताजी का चढ़ाव चढ़ने लगा, उस समय नाना प्रकार के आभूषणों से उनका शरीर लद गया। जब सीताजी के विवाह के लिये मण्डप डाला गया उस समय सीताजी का शरीर हरीतिमायुक्त हो गया। इसी प्रकार जब सीताजी की भाँवरें पड़ने लगीं तो सीताजी विरानी (परायी) हो गईं। सीताजी का सौन्दर्य मेरे नेत्रों को लुभा रहा है।

चढ़ाव

दुलहे के बाप कांहीं एको न दिखाय रे
हमरे लढ़िलिया का बार-बार झांकैं रे
सादन मा बांध देहूं
बधना मा बांध देहूं
मड़ये झुलाय देहूं
दुलहे के बाप कांहीं
एको न दिखाय रे

हमरे लढ़िलिया का
बार-बार झांकैं रे
दुलहे के चाचा कांहीं
एको न दिखाय रे
हमरे लढ़िलिया का
बार-बार झांकैं रे
सादन मा बांध देहूं
बधना मा बांध देहूं
मड़ये झुलाय देहूं
दुलहे के मामा कांहीं
एको न दिखाय रे
हमरे लढ़िलिया का
बार-बार झांकैं रे
सादन मा बांध देहूं
बधना मा बांध देहूं
मड़ये झुलाय देहूं।

दूल्हे के पिता को बिल्कुल दिखलाई नहीं पड़ता है, क्योंकि चढ़ाव के समय पर वह बार-बार हमारी प्यारी लाड़ली (दुल्हन) की ओर झांक (देख) रहा है। इसी प्रकार दूल्हे के चाचा एवं मामा को भी बिल्कुल नहीं दिखलाई पड़ता, क्योंकि वे लोग बार-बार दुल्हन की ओर ही देख रहे हैं। इसलिये दूल्हे के पिता, चाचा एवं मामा के पैरों में रस्सी लगाकर बांध देंगे। तथा इनके हाथ-पैर बांधकर मण्डप में झुला देंगे।

चढ़ाव

बड़ी बनरी है वर नादान
दद्दा जी से अरज करें
दद्दा ऐसे घर रचियों बिआह
जहां बेटी राज करै
बेटी कतरौ महोबे के पान
दुलैंचन पांव धरो
जहां ब्रह्मन रचत रसोई
कहरवन पानी भरें
चाचा ऐसे घर रचियो बिआह
जहां बेटी राज करै

बड़ी बनरी है वर नादान
भइया से अरज करैं
भइया ऐसे घर रचियो बिआह
जहां बेटी राज करै
बहिनी कतरौ महोबे के पान
दुलैंचन पांव धरो
जहां ब्रह्मन रचत रसोई
कहरवन पानी भरैं।

बन्नी बहुत नादान है, वह अपने पिता से अनुरोध करती है कि- हे पिताजी! मेरा विवाह ऐसे घर में करना, जहाँ जाकर मैं राज्य तुल्य सुखों का उपभोग करूँ। ऐसा ही अनुरोध वह अपने चाचा एवं बड़े भाई से भी करती है। उन लोगों ने उसे सांत्वना देते हुए कहा कि- तुम्हारा विवाह सुख-सुविधाओं वाले घर में करेंगे। जहाँ तुम बैठे-बैठे महोबे का पान चबाती रहोगी। तुम्हारे पैर गलैंचा में ही पड़ेगा। जिस घर का भोजन ब्राह्मण लोग बनाते हैं तथा कहार-वारी लोग पानी भरते हैं, ऐसे सुख-सुविधापूर्ण घर में तुम्हारा विवाह करेंगे।

नहछू

नाउन नगर संकोचिन
मोतियन मांग भरे
मोरे रमइया जी के नहछू
सो देखि के मोह रहे
बढ़इन नगर संकोचिन
मोतियन मांग भरे
मोरे रमइया जी के खम्भ
सो देखि के मोह रहे
तेलिन नगर संकोचिन
मोतियन मांग भरे
मोरे रमइया जी के तेल
सो देखि के मोह रहे।

नगर की नाउन बहुत संकोचशील है। माँग में मोतियों की लड़ी सजा रही है। हमारे रामजी का नहछू देखकर मोहित हो गई है। नगर बढ़इन संकोची स्वभाव की है। माँग में मोतियों को भर रही है। हमारे रामचन्द्रजी के खम्भे को देखकर मोहित हो रही है। नगर की तेलिन बड़ी संकोची है। मोतियों से माँग भरती है। हमारे रामचन्द्रजी के तेल को देख मोहित हो रही है।

नहछू

जुलहिन कातै सूत
जुलहा लइ-लइ आवै रे
डोमरा के जनमे हैं चिन्तामणि राम
ता कंकन भजइव न जानै रे
ककरा के जनमे हैं इन्द्रमणि राम
ता कंकन भजइव न जानैं रे
पठान के जनमे हैं विनोद राम
ता कंकन भजइव न जानैं रे
बनियां के जनमें हैं रोहणी राम
ता कंकन भजइव न जानैं रे।

जुलाहा की पत्नी सूत कात रही है तथा जुलाहा उसे लेकर कंकन भाँजने के लिये लेकर आता है। चिन्तामणि राम डोमार के यहाँ जन्म लिये हैं, इसीलिये कंकन भाँजना इन्हें नहीं आता है। इसी प्रकार इन्द्रमणि राम चर्मकार के यहाँ तथा विनोद राम पठान के यहाँ एवं रोहणी राम वणिक के यहाँ जन्म लिये हैं। इसलिये इन लोगों को कंकन भाजना नहीं आता। अर्थात् बार-बार सूत टूट जाता है।

नहछू

को या सगरा खन्हाये हैं
केखरे भरथं हो कहार
केहिय नहबइहय हो
रामदरश राम सगरा खनाइन
भीट बंधवाइन हैं हो
उनहीं के भरथं कहार
रमइया नहवाइन है हो।

यह सागर (तालाब) किसने खुदाया है? किसके यहाँ कहार लगे हुये हैं, जो कि पानी भर रहे हैं? रामदरश राम ने तालाब खुदाया है, तालाब की मेड़ को बँधवाया है। उन्हीं के यहाँ कहार पानी भर-भर कर श्री रामचन्द्रजी को स्नान करवा रहे हैं।

गारी

जै बोलो सीताराम जनक मंदिर मा
जै बोलो सीताराम जनक मंदिर मा

सोने की थाली मा जेमना परोसेंउ
जेमय भगवान जनक मंदिर मा
जै बोलो सीताराम जनक मंदिर मा
तामे के लोटा मा गंगाजल पानी
घूंटयें भगवान जनक मंदिर मा
जै बोलो सीताराम जनक मंदिर मा
लौंगन खिल-खिल बीरा लगायों
रचमय भगवान जनक मंदिर मा
जै बोलो सीताराम जनक मंदिर मा।

जनकजी के महल में सीता रामजी भोजन कर रहे हैं। उन्हें सोने के थाली में भोजन परोसा गया। जनकजी के महल में रामजी भोजन कर रहे हैं। ताम्र पात्र (ताँबे का लोटा) में गंगाजल दिया गया, जिसे वे घूँट-घूँट पी रहे हैं। लौंग लगाकर पान का बीड़ा उन्हें दिया गया, जिसे खाकर वे अपने दाँतों को रच रहे हैं। जनकजी के महल में रामजी भोजन कर रहे हैं।

गारी

निकही हथिनियां मां हउदा कसा हय
चढ़ि के चले चारिउ भाई
कि हां जिउ चढ़ि के चले चारिउ भाई।
जाइ के पहुँचे जमुना के तीरे
कि मुंज कुंज करत मुखारी
कि हां जिउ मुंज कुंज करत मुखारी।
कहरा के लरिका धोतिया लइ आमय
कि धोबिया के लरिका धोती परवारंय
कि हां जिउ धोबिया के धोती परवारंय।
बम्हना के लरिका चंदन गारइं
कि दुआदसी तिलक चढ़ामंइ
कि हां जिउ दुआदसी तिलक चढ़ामंइ।
जाइ के पहुंचे जनक जी के दुआरे
कि जेजम फरद बिछाई
कि हां जिउ जेजम फरद बिछाई।
गोड़ धोमन का हीं कोपरी मंगाई
कि सहि जमुना ढरि आईं
कि हां जिउ सहि जमुना ढरि आईं।

बसे नहिं आंय कोऊ जेउनहरी
कि राम जी केर रचइं जेउनार
कि हां जिउ राम जी केर रचइं जेउनार
सुधर भईं हयं राधा अउ रूकमिनि
कि राम जी के रचइं जेउनार
बादल फूल के भात उइं रुचि रुचि रांधिन
कि मुंगिया के दार बघारिन
कि हां जिउ मुंगिया के दार बघारिन।
बरा अउर मुंगउरा दधिया मथि बोरिन
रिकबंझि लौंग बघारिन
कि हां जिव रिक्रंझि लौंग बघारिन।
मइदा के रोटी रुचि रुचि बेलिन
कि घिउ सुरही का सोहाई
कि हां जिउ घिउ सुरही का सोहाई।
कुंदरू, करैला, आलू औ भांटा
परवर कई तरकारी
कि हां जिउ परवर कई तरकारी।
चारिउ भाई जेमन बइठें
सब सखियां गामय गारी
कि हां जिउ सब सखियां गामय गारी
हम तो आहेन तीनो लोक के ठाकुर
हमही न चाही अइसन गारी
कि हां जिउ हमही न चाही अइसन गारी।
जो तु आहा तीनउ लोक के ठाकुर
काहे आया ससुरारी
कि हां जिउ काहे आया ससुरारी।

अच्छी हथिनी पर हौदा कसा गया, उसमें (राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न) चारों भाई चढ़कर चल पड़े। यमुना के किनारे पहुँचकर धीरे-धीरे दातून कर रहे हैं। कहार का लड़का धोती लाता है, धोबी का लड़का धोती का प्रक्षालन करता है। ब्राह्मण का लड़का चंदन घिसता है। द्वादसी चंदन लगाता है। बारात जनकजी के द्वार पर पहुँच गई। द्वार पर दरी बिछ गई, पाँव धोये गये। जमुना खुद जल ले आयीं।

सब आ गये, बस खाना बनाने वाले रसोइया नहीं आये। कौन ज्योनार बनाये ? राधा और रुक्मिणी तैयार हो गईं। उन्होंने रसोई बनाई। बादल को फूल का चावल तथा मूंग की दाल, छौंकी

हुई बन गई। बरा, मुगौड़ा बना, जिन्हें दही में डुबोया गया। लौंग की छौंक देकर रिकवंझि (व्यंजन) बन गई। मैंदा की रोटी कपिला गाय के घी में डुबोई गई। कुंदरू, करैला, आलू, भांटा और परवल की तरकारी बनी। इस प्रकार ज्योनार बन गई।

सखियाँ ज्योनार के गारी गीत गाने लगीं। राम ने कहा– हम तो तीनों लोक के ठाकुर (स्वामी) हैं, हमें कैसे गाली दे रही हैं? सखियों ने कहा– यदि तुम तीनों लोक के स्वामी हो तो ससुराल कैसे आये? ससुराल में तो गाली मिलेगी।

गारी

कइसे के रामा भये सांवर लक्षिमन गोर
कि हां जिव लक्षिमन गोर।
कउने करना से परिगा कउसिल्या का भोर
कि हां जिव परिगा कउसिल्या का भोर।
रामा उठे रिसिआय लक्षिमन भरि आये रोस
कि हां जिउ लक्षिमन भरि आये रोस।
देवहु गारी सखियां नउनिया काहे नहिं होस
कि हां जिउ नउनिया काहे नहिं होस।
मंई तोंहइ पूछौं सखिया नउनिया दूनव हंथ जोर
कि हां जिउ नउनिया दूनउ हंथ जोर।
तोहार भतार काहे सांवर तुम काहे को गोर
कि हां जिउ तुम काहे को गोर।
मचियन बैठी हंइ कोसिल्या रानी त उठयं लाग गीत
कि हां जिउ उठयं लाग गीत।
हांथेन सोने की नहन्नी नउनियां हय अति गोर
कि हां जिउ नउनियां हय अति गोर।
मड़ये तरि झगड़इ नउनियां काहे दिहा निछावर थोर
कि हां जिउ काहे दिहा निछावर थोर।

ससुराल में भोजन करते समय सखियाँ गारी गाती हुई कहती हैं– राम कैसे साँवले हो गये? लक्ष्मण कैसे गोरे हुये? क्या कौशिल्या से कोई चूक हो गई? राम ने सुना तो रूठ गये, लक्ष्मण क्रोध से भर गये। बोले– सखियों गाली देते समय होश में रहो, अपने को भी देखो, तुम्हारा पति सांवला है, तुम गोरी हो। कौशिल्या मचिया में बैठी हैं, मुस्कुरा के बोलीं– गीत उठाओ। सोने की नहन्नी ले लो। तभी नाउन मण्डप में गाली के नेग के लिये झगड़ने लगीं।

गारी

जेमन बइठे किसन कन्हैया
देंय सखी सब गारी
कि हां जिउ देंय सखी सब गारी।
माथे मुकुट पीताम्बर सोहइ
गरें बयजन्ती कै माला
कि हां जिउ गरे बयजन्ती कै माला।
ओरियन-ओरियन पत्तल परसि गये
भात परोसयं सारी
कि हां जिउ भात परोसयं सारी।
दाल भात अउ गेहूं के रोटी
तोहि घिउ मा बोरी
कि हां जिउ तोहि घिउ मा बोरी।
भांत-भांत कई बनी तरकारी
किसन भयेन रस भोगी
कि हां जिउ किसन भयेन रस भोगी।
जेमन बइठे किसन कन्हइया
देंय सखी सब गारी
कि हां जिव देंय सखी सब गारी।
माया तोहारी कहंय जसोदा
मथुरा मां आई उधारी
कि हां जिउ मथुरा मां आई उधारी।
बाप तोहार कहंय नन्द जी
घर-घर मांगय देहारी
कि हां जिउ घर-घर मांगय देहारी।
बहिन तोहारी कहिये सुभदरा
अरजुन संग सिधारी
कि हां जिउ अरजुन संग सिधारी।
बुआ तोहारी कहिये जो कुन्ती
सोमैं पंच भतारी
कि हां जिउ सोमै पंच भतारी।
महुआ कै डारी भंवरा गूंजय
बिछियन कै झंकारी

कि हां जिउ बिछियन कै झंकारी।
बाजूबन्द कंगन सब सोहइ
मोतियन मांग सँवारी
कि हां जिउ मोतियन मांग सँवारी।
जेमन बइठे हंय किसन कन्हइया
देंय सखी सब गारी
कि हां जिउ देय सखी सब गारी।
हँसि-हँसि पूंछइ माता जसोदा
कइसी ललन ससुरारी
कि हां जिउ कैसी ललन ससुरारी
बोलन लागे किसन कन्हैया
सुन माता बचन हमारी
कि हां जिउ सुन माता बचन हमारी।
सारी सरहज बहुत पियारी
सासु गंगा जल पानी
कि हां जिउ सासु गंगा जल पानी।
नौ महिना पूरा कोख मां राखेंऊ
कबहूं न कीन्ह बड़ाई
कि हां जिउ सासु की करै बड़ाई।
एक महीना पूता गये हैं ससुररिया
सासु की करै बड़ाई
कि हां जिउ सासू की करै बड़ाई।
तोहरी दुहाई नन्द बाबा हैं
अब न जाब ससुरारी
कि हां जिउ अब न जाब ससुरारी।
हमहीं तुमहीं नन्द बाबा का
देंय सखी सब गारी
कि हां जिउ देंय सखी सब गारी।
जेमन बइठे हंय किसन कन्हइया
देंय सखी सब गारी
कि हां जिउ देंय सखी सब गारी।

कृष्णजी भोजन करने बैठे तो सभी सखियाँ ज्योनार के गारी गीत गाने लगीं। कृष्ण के माथे में मुकुट, गले में बैजन्ती की माला शोभा दे रही है। जगह-जगह पत्तलें बिछ गई हैं, उनमें

दाल–भात और घी में डुबोई गई रोटियाँ परोस दी गई हैं। अनेकों प्रकार की तरकारी बनी है। कृष्ण रस भोगी हैं। खाना खा रहे हैं। सखियाँ गाली दे रही हैं। तुम्हारी माँ यशोदा, मथुरा से उधार आयी हैं। तुम्हारे पिता नंदजी घर पर चन्दा मांगते हैं। तुम्हारी बहन सुभद्रा अर्जुन के साथ भाग गई हैं। तुम्हारी बुआ कुंती के पाँच–पाँच पति रहे हैं। तुम्हारे यहाँ महुआ की डाल पर भ्रमर गूँजते हैं। यहाँ राजा की बिछिया में झंकार उठती है। बाजूबंद, कंगन, मोतियों से संभली माँग सब राधा के अंग में शोभा दे रहे हैं। दोनों की क्या तुलना ? कृष्ण खाना खाने बैठे हैं। सखियाँ गाली दे रही हैं।

कृष्ण विवाह करके लौटे तो यशोदा ने हँसकर पूछा– बेटा! ससुराल कैसी लगी? वे बोले– साली, सरहज बहुत प्रिय लगीं। सास गंगा जल की तरह पवित्र लगीं। माता ने कहा– अरे! नौ महीने हमने कोख में रखा, तुमने प्रशंसा नहीं की। एक महीने ससुराल में रह लिये तो इतनी प्रशंसा कर रहे हो।

कृष्ण झेंप गये। बोले– माँ! तुम्हारी दुहाई, नन्द बाबा की दुहाई। मैं अब ससुराल नहीं जाऊँगा। वहाँ हमको, तुमको और नन्द बाबा को सखियाँ गाली देती हैं। कृष्ण ज्योंनार में बैठे हैं, सखियाँ गाली दे रही हैं।

गारी

जमुना के तीरे–तीरे वंशी बजी रे बजी
दधि बेचन गोलिन निकरी नार नई रे नई
बंसी बजामय गोलिन रिझामई गलिन रे गली
गोलिन दहिया तोंहरा हइ मीठ देया दही रे दही
कान्हा तोरहु पान कदम के खाउ दही रे दही
कदम के पाता लगे हइं झांझा
अंचरा मा खबाबहु दही रे दही
कान्हा आंचर हय मोर जूंठा
लरिकन लार बही रे बही
गोलिन लरिका कहां ते पाइउ
तुम तौ नारि नई हो नई।

यमुना के किनारे बंशी बज रही है। धुन सुनकर गोपिकाएँ दधि बेचने के लिए निकल पड़ीं। कान्हा बंशी बजाते हैं, ग्वालिन रिझाते हैं। यमुना के किनारे–किनारे घूमते हैं। ग्वालिनों को देखकर कहा– ग्वालिन! तुम्हारा दही बहुत मीठा है, हमें खिलाओ।

गोपिकाएँ अवसर पाकर भागने का उपाय सोचते हुये कहती हैं– जाओ! कदम्ब के पत्ते तोड़कर लाओ, उसी में दही लो और खाओ। गोपिकाओं की चतुराई को कृष्ण ने समझ लिया और कहा– कदम्ब के पत्तों में तो छिद्र हो गये हैं, हम तुम्हारे आँचल में ही दही खा लेंगे।

गोपिकाओं ने पुनः चतुराई की और कहा– कान्हा! हमारा आँचल जूठा है, उसमें बच्चों की लार, थूक लगा है। कृष्ण ने कहा– गोपिकाओं! तुम सब तो नई नवेली हो, लड़का कहाँ से पा गईं, कब हो गये लड़के?

गारी

भाई रे खा सोहारी करा तयारी
राम के जने।
ओरिया–ओरिया पत्ता परिसि गे
भात परसि गे सुज सारी
राम के जने।
दार भात अउर मइदा केर रोटी
तेहिया घिउ करे घोरी
जेमन बइठे हंई किसन कन्हइया
कइसे बन तरकारी।
भई रे खा सोहारी करा तयारी
राम के जने।
आप खांइ मुख ननद खवामई
कइसी बनी तरकारी।
आप खांइ मुंह बहिन खवामई
कई सी बनी तरकारी।
भई रे खा सोहारी करा तयारी
राम के जने।
आप खांइ मुंह फूफू खवामई
कईसे बनी तरकारी।
भाई रे खा सोहारी करा तयारी
राम के जने।

बाराती भाईयों! पूड़ी खाओ। खाकर जाने की तैयारी करो। जगह–जगह पत्तलें परोसी गई हैं, भात परोसा गया। उसके साथ सारे व्यंजन परोसे गये। दाल, भात मैदा की रोटी परोसी गई, जो घी में डुबोई गयी है।

खाने के लिये बारात के साथ कृष्ण कन्हाई (दामाद) भी बैठे हैं। पूछते हैं– तरकारी कैसी बनी है? भाईयों! पूड़ी खा लो और लौटने की तैयारी करो। कृष्ण कन्हाई ने स्वयं खाना खाया, बहन एवं फूफू को खिलाया और पूछा– तरकारी कैसी बनी है? भाईयों! पूड़ी खाओ और जाने की तैयारी करो।

गारी

रउरे तो पातर, रउरे केर जोरू मोटी
उंय खायें न घी चूरमा
तू कोजौ की रोटी
अपना तो सोमै सुख सेज पै
तुमही टूटी खटोली रे
रउरे तो पातर, रउरे केर जोरू मोटी
अइसा काला हंय बन्ना रे
जइसे उरदा के दार
दार होत तो धोय लेतिंउ
तोरा रंग न धोबा जाय।

आप तो दूल्हे राजा पतले हैं, आपकी पत्नी मोटी हैं। लगता है कि वह घी–चूड़ा खाती है और आपको जौ की रोटी देती है। वह तो स्वयं सुख शैय्या पर सोती है और आपके लिये टूटी खटोली दे रखी है। आप तो पतले हैं और आपकी पत्नी मोटी है। बनरा तो ऐसा काला है जैसे उड़द की दाल। दाल भी होती तो उसे धोकर गोरा कर लेते, किन्तु आपका रंग तो धोया भी नहीं जा सकता।

गारी

ऊंच नीच सेंदुर, उधार लाये सेंदुर
उधार लाये डंडिया, उधार लाये गहना
अइसे सेंदुर कई हमहीं नही साध हो
अइसे गहना कई हमहीं नही साध हो
उधार लाये सेंदुर उधार लाये गहना
राउर माया सूतै बनिया के साथ हो
उधार लाये डंडिया उधार लाये गहना
राउर फूफू सूतइ सोनरा के साथ हो।

कैसा सिन्दूर लाये हैं बाराती। मिला–जुला, ऊँच–नीच है। उधार साड़ी ले आये हैं। उधार आभूषण ले आये हैं। ऐसे सिन्दूर की हमें आकांक्षा नहीं है। ऐसे आभूषण की हमें चाह नहीं है। उधार का सिन्दूर और उधार के गहने का हम क्या करेंगे ? आपकी माता तो बनिया के साथ सोई है, तभी तो उधार के कपड़े मिले हैं। आपकी बुआ स्वर्णकार के साथ सोई होगी, तभी तो उधार गहने मिल गये हैं।

गारी

बापौ पूत बिआहंय आयें
उढ़री महतारी रे।
काटे–कूटे पान लइ आये
खोखली सुपारी रे।
बापौ पूत बिआहंय आयें
लंगरी फूफू लायें रे।
काटे कूटे पान लइ आयें
खोखली सुपारी रे।
बापौ पूत बिआइन आये।
अंधरी महतारी रे।
काटे कूटे पान लइ आयें
खोखली सुपारी रे।

पिता–पुत्र ब्याहने आये हैं। पुत्र की माँ तो भाग गई है। बाराती कटे–फटे पान ले आये हैं। सड़ी खोखली सुपाड़ी लाये हैं। पिता–पुत्र ब्याहने आये हैं। पुत्र की फूफू लंगड़ी है। बाराती कटे–फटे पान ले आये हैं। सड़ी खोखली सुपाड़ी ले आये हैं। पुत्र की माँ अंधी है, पान ये काट–कूट ले आये हैं। सुपाड़ी खोखली तथा सड़ी ले आये हैं, कैसे हैं ये लोग।

गारी

अड़ि रहे पमन कुमार
सुघर बर अड़ि रहे
हेरंइ अपने फूफू के भतार
सुधर बर अड़ि रहे
हेरंइ अपनी बहिनी के भतार
सुधर वर अड़ि रहे
खोजा–खोजा हो बाबा फलाने राम
सुधर बर अड़ि रहे
खोजा–खोजा हो काका फलाने राम
सुघर घर अड़ि रहे
हेरंइ अपनी मामी के भतार
सुघर बर अड़ि रहे
खोजंइ अपनी मौसी के भतार
सुघर बर अड़ि रहे

अड़ि रहे पमन कुमार
सुघर बर अड़ि रहे।

घर के द्वारा पर सुघड़ वर अड़े हुये हैं, अन्दर क्यों नहीं आ रहे हैं ? ये तो अपनी बुआ के पति खोज रहे हैं, इसीलिये अड़े हुये हैं। अपनी बहन के लिये पति खोज रहे हैं। इसके लिये द्वार पर अड़े हुये हैं। लड़की के बाबा उनके लिये वर खोज दो। ये तो अड़ गये हैं। चाचाजी सुघड़ वर की मामी, मौसी के लिये वर ढूँढ़ दो। शीघ्र जाओ और उनके लिये भतार (पति) की खोज करो, क्योंकि सुघड़ वर द्वार पर अड़े हैं।

गारी

जबहिं गोपाल चले मधुबन का
घर अंगना ना सोहाई जी
जाइ के पहुँचे हैं जमुना जी के तीरे
जमुना भरीं दोनों पार जी
काठे नइया ले आवा मोरे केवट
जमुना देहो मोंही उतारी जी
चरन छुअत जमुना भइ नीचे
उतरि गये कृष्ण मुरारी जी
जाइ के पहुंचे जनक जी के द्वारे
भीड़ जहां थी भारी जी
चरन धोवत का कोपरी मगाइन
सह जमुना चली आई जी
चरन धोइ के चरनामित लीन्हिन
अति बड़ि भाग हमारी जी
जेवन बैठे हैं चारों भइया
देती सखी सब गारी जी
को आंही लाला तुम्हरे बाप महतारी
को आंही लाला तुम्हरे बहिनी जी
राजा दशरथ हैं बाप हमारे
रानी कौशिल्या महतारी जी
बहनी हमारी है रानी सुभद्रा
सीता लगे भौजाई जी
जबहिं गोपाल चले मधुबन का
घर अंगना ना सुहाई जी।

जब श्री कृष्णजी मधुबन को प्रस्थान कर देते हैं उस समय गोपियों को घर आँगन अच्छा नहीं लगता। कृष्णजी यमुना जी के किनारे पहुँचते हैं। यमुना जी दोनों पाट में भरी हुई हैं। वे केवट से कहते हैं कि- लकड़ी की नाव ले आओ तथा मुझे यमुना नदी के उस पार पहुँचा दो। श्री कृष्णजी के चरणों का स्पर्श होते ही यमुना नदी का जल कम हो जाता है। श्री कृष्णजी यमुना के उस पार पहुँच जाते हैं। वे जाकर के राजा जनक के दरवाजे पहुँचते हैं, जहाँ पर भारी भीड़ दिख रही थी। उनके स्वागत के लिये पैर धोने का पात्र मंगाया गया तो यमुनाजी स्वत: चरण धोने के लिये जल के रूप में प्रस्तुत हो गईं। राजा जनकजी पैर धोकर चरणामृत पान करते हैं तथा अपने को बहुत भाग्यशाली समझते हैं।

राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न (चारों भाइयों) सहित भोजन करने बैठते हैं। जनकपुर की सखियाँ इन्हें गाली देती हैं। उल्लेखनीय है कि श्री कृष्ण एवं भगवान राम को विष्णुजी का अवतार मानते हैं। सखियाँ गाली देती हुई पूछती हैं कि- हे लालाजी! तुम्हारे माता-पिता तथा बहन कौन हैं? उत्तर मिलता है कि- हमारे पिता राजा दशरथ तथा माता कौशिल्या जी हैं और हमारी बहन का नाम सुभद्रा है।

गारी

पातन-पातन पड़ि गय पतरिया
जेवन बैठे चारिउ भाई
कि हां जी जेवन बैठे चारिउ भाई
विष्णु भोग का चावल बना है
दाल दिये हैं बघारी
कि हां जी दाल दिये हैं बघारी
मैंदा केरी रोटी बनी हैं
घी सुरहिन की सोंधाई
कि हां जी घी सुरहिन की सोंधाई
पुरहन पत्र के पत्तल बने है
लौंगन खीला लगाई
कि हां जी लौंगन खीला लगाई
जेवन बैठे हैं चारों भइया
देती सखी सब गारी
कि हां जी देती सखी सब गारी।

सुन्दर पंक्तिबद्ध तरीके से पत्तलें सजी हुई हैं। भोजन करने के लिये चारों भाई (राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न) बैठ गये हैं। भोजन में विष्णु भोग का उत्तम चावल बना हुआ है। स्वादिष्ट मसालों को डालकर दाल को बघारा (छौंका) गया है। मैदा की रोटियाँ बनी हुई हैं, जिसमें

सुरहिन गाय का घी लगा हुआ है। गो घृत की सुगंध महक रही है। कमल के पत्तों से पत्तलें बनाई गयी हैं। पत्तलों को जोड़ने के लिये लौंग के खीले लगे हुये हैं। चारों भाई भोजन ग्रहण करने के लिये बैठे हुये हैं तथा सखियाँ अपनी सुरीली आवाजों से गारी गा रही हैं।

गारी

भाई रे राजा जनक जी रचे स्वयंबर राम के जना
भाई रे देश-देश के राजा आयें राम के जना
भाई रे धनुष कोई तिल भर न उठायें राम के जना
भाई रे राजा जनक जी भये उदास राम के जना
भाई रे वीरों से अब पृथ्वी है खाली राम के जना
भाई रे धनुष तोड़ दिये रघुराई राम के जना
भाई रे लेकर माला सीता ठाढ़ी राम के जना
भाई रे सीता जय माला राम डाली राम के जना
भाई रे राजा जनक जी रचे स्वयंबर राम के जना।

राजा जनकजी स्वयंवर रचे हुये हैं, जिसमें देश-देश के राजा आये हुये हैं। धनुष को तिल मात्र भी नहीं हिला सके। ऐसा देखकर राजा जनकजी अत्यंत उदास हुये।

उन्होंने कहा कि- यह पृथ्वी वीरों से खाली है। रामचन्द्रजी ने धनुष को तोड़ दिया। सीताजी ने रामचन्द्रजी के गले में जयमाला डाल दिया।

बनरा

बन्ना धीरे-धीरे जाना ससुराल गलियाँ
माथे बन्ना जी के मौरे सोहै
तेरी मौर सम्हाले हजार सखियाँ
जिनके लम्बे लम्बे केश
गुलाबी अंखियाँ
बन्ना धीरे-धीरे जाना ससुराल गलियाँ
काने बन्ना जी के कुण्डल सोहै
जिनके गोरे-गोरे हाथ
हरी चुड़ियां
बन्ना धीरे-धीरे जाना ससुराल गलियाँ
आँखें बन्ना जी के काजल सोहै
तेरी काजल सम्हाले हजार सखियाँ

जिनके गोरे-गोरे गाल
कजरारी अंखियाँ
बन्ना धीरे-धीरे जाना ससुराल गलियाँ।

बन्ना (दूल्हे) अपने ससुराल की गलियों को धीमी गति से तय करना, अर्थात् ससुराल की गलियों में धीरे-धीरे चलना। बन्नाजी (दूल्हेजी) के मस्तक पर मौर शोभायमान है। तुम्हारी मौर को सम्हालने के लिये हजारों सखियाँ हैं। उन सखियों के लम्बे-लम्बे केश तथा गुलाबी आँखें हैं। बन्ना ससुराल की गलियों पर धीरे-धीरे जाना। बन्नाजी के कानों में कुण्डल शोभित हो रहे हैं। उन कुण्डलों को सजाने-सँवारने के लिये गोरे-गोरे हाथों वाली तथा हरे रंग की चूड़ी धारण करने वाली हजारों सखियाँ हैं। बन्नाजी के आँखों में काजल सुशोभित हो रहा है। बन्ना के काजल को सँवारने के लिये हजारों सखियाँ लगी हुई हैं। उन सखियों के गाल सुन्दर गोरे रंग के तथा आँखें कजरारी एवं मदमाती हैं। बन्नाजी (दूल्हाजी) ससुराल की गलियों में धीरे-धीरे जाना।

बनरा

मोरो छोटा सा नादान
सो बनरा ब्याहन जइंहैं रे
आजी चलो हमारे साथ
अकेले हम ना जाबय रे
बेटा आजा को ले लो साथ
बराती ओई कहामय रे
मोरो छोटा सा नादान
सो बनरा ब्याहन जइंहैं
माया चलो हमारे साथ
अकेले हम ना जाबय रे
बेटा बाबू को ले लो साथ
बराती ओई कहामय रे
मोरो छोटा सा नादान
सो बनरा ब्याहन जइंहैं रे
चाची चलो हमारे साथ
अकेले हम ना जाबय रे
बेटा चाचा को ले लो साथ
बराती ओई कहामय रे
मोरो छोटा सा नादान
सो बनरा ब्याहन जइंहैं रे।

मेरा बनरा (दूल्हा) अभी छोटा एवं नादान है, वह विवाह करने के लिये जायेगा। अज्ञानतावश वह अपनी आजी (दादी) से कहता है कि- दादी हमारे साथ चलो, मैं अकेला नहीं जाऊँगा। आजी उसे समझाती हुई कहती हैं कि- बेटा अपने आजा (बाबा) को साथ में लेकर चले जाओ। तुम्हारे बाबा ही बराती कहलायेंगे, मैं वहाँ नहीं जा सकती। तब बनरा अपनी माता से कहता है कि- तुम मेरे साथ चलो, मैं अकेले नहीं जा सकता। माता समझाती हुई कहती हैं कि- अपने पिताजी के साथ जाओ। वे ही बाराती बन सकते हैं। अत्यंत छोटा एवं नादान बनरा विवाह करने के लिये जा रहा है। वह अपनी चाची को साथ में चलने के लिये कहता है। उसकी चाची कहती हैं कि- अपने चाचा को साथ में लेकर जाओ। वे ही बाराती बन सकते हैं। उल्लेखनीय है कि बघेलखण्ड में महिलाएँ बारात नहीं जाती हैं।

बनरा

बनरा है अति सुकुमार
बैठ कलस के आंगे रे
आजा उनके छत्र तनामय
सो आजी अंचरा ओढ़ामय रे
बनरा है अति सुकुमार
बैठ कलस के आंगे रे
दद्दा उनके छत्र तनामय
सो माया अंचरा ओढ़ामय रे
बनरा है अति सुकुमार
बैठ कलस के आंगे रे
चाचा उनके छत्र तनामय
सो चाची अंचरा ओढ़ामय रे
बनरा है अति सुकुमार
बैठ कलस के आंगे रे
भइया उनके छत्र तनामय
सो भौजी अंचरा ओढ़ामय रे
बनरा है अति सुकुमार
बैठ कलस के आंगे रे।

वैवाहिक क्रियाओं को सम्पन्न करने के लिये अत्यंत सुकोमल दूल्हा कलश के आगे बैठा हुआ है। दूल्हे के सिर के ऊपर उनके आजा (बाबा) छतरी लगवाते हैं तथा उनकी आजी (दादी) अपने आँचल को ओढ़ाती हैं। अत्यंत सुकुमार दूल्हा कलश के आगे बैठा हुआ है। दूल्हे के पिता छत्र तनवा रहे हैं तथा उनकी माता अपने आँचल को ओढ़ाती हैं।

दूल्हा अत्यंत सुकोमल शरीर वाला है। तेज धूप सहन नहीं कर पायेगा, इसलिये उसके चाचा छतरी तनवाते हैं तथा उसकी चाची अपने आँचल की ओट करती है, ताकि दूल्हे को गरमी न लगे। अत्यंत सुकुमार दूल्हे को, जो कि कलश के सामने बैठा है, उसको धूप से बचाव के लिये दूल्हे के भाई छत्र तनवाते हैं तथा भाभी आँचल ओढ़ा रही हैं। दूल्हा बहुत सुकुमार है जो कि कलश के सामने बैठा हुआ है।

बनरा

उचियो ना राजा महराजा
सो बेटा ब्याह ले आयो रे
उनके आजा सोमय ऊँची अटारी
सो आजी जांय जगामय रे
उचियो ना राजा महराजा
सो नाती ब्याह ले आयो रे
उचियो ना राजा महराजा
सो बेटा ब्याह ले आयो रे
ऊँची अटारी उनके बाबू सोमय
सो माया जाय जगामय रे
उचिया ना राजा महराजा
सो बेटा ब्याह ले आयो रे
ऊँची अटारी उनके चाचा सोमय
सो चाची जाय जगामय रे
उचियो ना राजा महराजा
सो बेटा ब्याह ले आयो रे
ऊँची अटारी उनके भइया सोमय
सो भाभी जाय जगामय रे
उचियो ना राजा महराजा
सो बेटा ब्याह ले आयो रे।

हे राजा, महाराजा जी! सोकर उठो क्योंकि बेटा विवाह करके बहू ले आया है। बेटा के आजा (बाबा) ऊँची अटारी पर सो रहे हैं। इसलिये उनकी आजी (दादी) जाकर जगाती हुई कहती हैं कि– राजा–महाराजा की तरह सो रहे हो, उठो ना, क्योंकि नाती विवाह करके बहू ले आया है।

ऊँची अटारी पर सोते हुये पिता से माता जाकर कहती हैं कि– उठो और देखो कि बेटा

विवाह करके बहू ले आया है। ऊँची अटारी पर उनके चाचा सो रहे हैं, इसलिये चाची जाकर जगाती हैं और कहती हैं कि– बेटा विवाह करके आ गया है। इसी प्रकार ऊँची अटारी पर उनके बड़े भाई सो रहे हैं। उनकी भाभी जाकर जगाती हुई कहती हैं कि– उठो ना, देखो बेटा तुल्य देवर विवाह करके बहू ले आया है।

बनरा

फूलों की क्यारी लगामय
राजा बन्ना फूलों को बिरझे
जाय कहो उनके बारे आजा से
फूलों की क्यारी लगामय
राजा बन्ना फूलों को बिरझे
जाय कहो उनके बारे दद्दा से
फूलों की क्यारी लगामय
राजा बन्ना फूलों को बिरझे
जाय कहो उनके बारे मामा से
फूलों की क्यारी लगामय
राजा बन्ना फूलों को बिरझे
जाय कहो उनके बारे भइया से
फूलों की क्यारी लगामय
राजा बन्ना फूलों को बिरझे।

फूलों की क्यारियाँ लगाओ, क्योंकि राजा बन्ना (दूल्हा राजा) फूलों के लिये अड़े हुये हैं। जाकर उनके आजा (बाबा) से कहो कि वे फूलों की क्यारियाँ लगायें, क्योंकि बन्ना फूलों की माँग कर रहे हैं। जाकर के उनके पिताजी से कहो कि वे फूलों की क्यारियाँ लगायें, क्योंकि दूल्हा राजा फूलों के लिये हठ कर रहे हैं। जाकर के दूल्हे के बड़े भाई से कहो कि दूल्हे राजा फूलों के लिये जिद कर रहे हैं, अत: वे फूलों की क्यारियाँ लगायें।

बनरा

मोरे दशरथ राज दुलार
राम बनरा बनि आयो रे
माथे उनके तिलक भल सोहे
चन्दन लगा है लिलार
राम दुलहा बनि आयो रे
काने उनके कुण्डल भल सोहे

गले बैजन्ती माल
राम दुलहा बनि आयो रे
कांधे उनके धनुष भल सोहे
बगल में तीर कमान
राम दुलहा बनि आयो रे

मेरे दशरथ के राज दुलारे रामचन्द्रजी दूल्हा बन के आये हुये हैं। उनके मस्तक पर चन्दन का तिलक शोभायमान हो रहा है। उनके कानों में कुण्डल तथा गले में बैजन्ती की माला सुशोभित है। रामचन्द्रजी दूल्हा बन के आये हुये हैं। उनके कंधे पर धनुष तथा बगल में तीर शोभा प्रदान कर रहे हैं। राजा दशरथ के दुलारे रामचन्द्रजी दूल्हा बन कर आये हुये हैं।

बनरा

ऐसे नवाब बनरे
सड़कों पे गेंद खेलयं
आजा के प्यारे बनरे
आजी की गोद खेलयं
ऐसे नवाब बनरे
सड़कों पे गेंद खेलयं
बाबू के प्यारे बनरे
माया के गोद खेलयं
ऐसे नवाब बनरे
सड़कों पे गेंद खेलयं
चाचा के प्यारे बनरे
चाची की गोद खेलयं
ऐसे नवाब बनरे
सड़कों पे गेंद खेलयं
भैया के प्यारे बनरे
भाभी के गोद खेलयं
ऐसे नवाब बनरे
सड़कों पे गेंद खेलयं।

बनरे (दूल्हे) राजा बड़े नवाब हैं, वे सड़कों पर गेंद खेल रहे हैं। दूल्हेजी अपने आजा (बाबा) को बहुत प्यारे हैं, वे अपनी आजी (दादी) की गोद में खेलते हैं।

दूल्हेजी अपने पिताजी को बहुत प्यारे हैं, वे अपनी माता की गोद में खेलते हैं। दूल्हे राजा

पूरे नवाब हैं, वे सड़कों पर गेंद खेलते हैं। दूल्हेजी अपने चाचा को बहुत प्यारे लगते हैं, वे अपनी चाची की गोद में खेलते हैं। दूल्हे राजा अपने बड़े भाई के प्यारे हैं, वे अपनी भाभी की गोद में खेलते हैं। दूल्हे राजा बड़े नवाब बने हुये हैं, वे सड़कों पर गेंद खेलते हैं।

विवाह

पान का पठयों दुलहे दुलेरूआ
कहना रहेंव बेलमाय
की बेलम्या तुम राजा दरबरिया
की बेलम्या ससुरार
ना हम बेलमेन राजा दरबरिया
ना बेलमेन ससुरार
हम तो बेलमेन आजा बगैचा
कोइली गहागह लेय
हम तो बेलमेन पिता के बगैचा
जहां कोइली गहागह लेय
हम तो बेलमेन काका के बगैचा
जहां कोइली गहागह लेय
हाथ के हिरौंधी में तोही देहों पसिया
कोइली पकरि लै आव
डर-डर बउंड़े पसिया बेटउना
पत पत कोइली लुकाय
कोइली पकरि के जंघ बैठाइन
पूंछे कोइलिया से बात
काहे मढ़ाऊँ तोर अंखना रे पखना
काहे मढ़ाऊँ तोर चोंच
रूपवा मढ़ावा मोरे अखना रे पखना
सोनवा मढ़ावा मोरी चोंच।

दुलारे दूल्हे को पान लाने के लिये भेजा गया है, परन्तु वह उधर जाकर कोयल की सुरीली आवाज पर रीझ जाता है। जब दूल्हे से पूछा जाता है कि- तुम क्या राजा के दरबार में जाकर भूल गये थे ? अथवा ससुराल जाकर मोहित हो गये थे ? दूल्हा जवाब देता है कि न तो मैं राजा के दरबार में और न ही ससुराल में मोहित हुआ हूँ। मैं अपने आजा (बाबा) के बगीचे में कोयल की मीठी बोली सुनकर मुग्ध हो गया था।

आगे वह कहता है कि- मैं आज पिताजी एवं चाचाजी के बगीचे में कोयल की बोली

सुनकर रीझ गया था। वह कोयल को पकड़ने के लिये एक लड़के से कहता है कि– कोयल पकड़कर लाओ, मैं तुम्हें हीरे से जड़ी हुई अंगूठी पुरस्कार में दूँगा। लड़का कोयल को पकड़ने का प्रयास करता है। वह प्रत्येक डाल पर चढ़ता है, परन्तु कोयल पत्तों के बीच छिप जाती है। अन्ततः कोयल पकड़कर लायी जाती है। दूल्हा कोयल को अपने जंघे पर बैठाकर पूछता है कि तुम्हारे पंख एवं चोंच किसमें मढ़वा दूँ? कोयल प्रत्युत्तर देती है कि– चाँदी में मेरे पंखों को तथा सोने में मेरी चोंच को मढ़वा दो।

विवाह

बखरी तो भल बनवाये हो ओंकार राम
सुरजन मुँहे का दुआर
ओंहीं होइ के निकरी हैं बेटी मधुलिका
गोरे बदन कुम्हलाय
कहां तो मोरी बेटी छत्र तनाई
कहां तो सुरिज अलोप
काहे का मोरे बपऊ छत्र तनइहा
काहे का सुरिज अलोप
आज राति बपऊ तुम्हरे मड़ये तरी
काल्हि विदेसिया के हाथ

पिता ओंकार राम ने बड़ा भव्य मकान बनवाया जो कि सभी प्रकार की सुविधाओं से युक्त है। उस मकान का दरवाजा (सूर्य) पूर्व की ओर है। उसी दरवाजे से उनकी बेटी मधूलिका मकान के बाहर निकलती है। पूर्वाभिमुख सूर्य की तेज किरणों से बेटी का गौर एवं सुकुमार शरीर कुम्हला जाता है। इस प्रकार का दृश्य देखकर द्रवित पिता बड़े स्नेहिल स्वर में अपनी पुत्री से कहते हैं कि– बेटी, कहो तो दरवाजे पर छत्र तनवा दूँ अथवा ऐसी व्यवस्था करूँ कि सूर्य देवता लुप्त हो जाएँ। पुत्री मधूलिका कहती है कि– पिताजी आप ऐसा कुछ मत करिये, आज तो मैं आपके मण्डप के नीचे हूँ तथा आने वाले कल के दिन तो दूसरे (पराये) के हाथ रहूँगी।

विवाह

संकरी तलइया की घन अमरइयां
पुरहन लहरैं लेय
जहना दुल्हेरूआ धोती परवारें
डारे पिछौंरा के फेंट
अंखियां बनी जैसे आमा की कलियाँ

नाक सुआ कस चोंच
जिभिया बनी जैसे कमल की पंखुरी
ओठवन चुहै ओगार
इतने बरन के बने हैं दुलेरूआ
इतने बड़े कस कुमार
आजा उनके गये हैं राजा दरबजवा
भैया उनके गये ससुरार
चाचा उनके गये हैं लौंग बनिजिया
को उनको रचै बिआह।

एक छोटा सा तालाब है, जिसके मेड़ में चारों ओर घने आम के वृक्ष लगे हुये हैं। तालाब में कमल के पुष्प शोभायमान हो रहे हैं। ऐसे सुन्दर तालाब पर दूल्हे राजा अपना वस्त्र धो रहे हैं। वे कंधे पर सुन्दर पिछौरा का फेटा लगाये हुये हैं। दूल्हे राजा के नेत्र ऐसे सुन्दर दिखाई पड़ रहे हैं कि मानो आम को बीच से काटने पर सुन्दर कलियाँ दिखलाई पड़ रही हों। उनकी नुकीली नाक तोते के समान दिखाई पड़ रही है। उनकी जिह्वा कमल की पंखुड़ियों के समान है तथा ऐसा प्रतीत हो रहा है कि मानो होंठो से मधुर रस चूना चाहता है। जब दूल्हे राजा इतने सुन्दर हैं तो इतने बड़े होते हुये भी अभी तक कुँवारे क्यों हैं? उत्तर मिलता है कि- उनके आजा (बाबा) राजा के दरबार तथा बड़े भाई अपनी ससुराल गये हुये हैं। दूल्हे के चाचा लौंग का व्यापार करने के लिये गये हैं, अर्थात् घर में कोई सयाना नहीं है तो कौन उनका विवाह करेगा ?

विवाह

घोड़िला कुदावत निकरे दुल्हेरूआ
कतरैं सुपड़िया की डार
अथइन बैठे हैं दूल्हे के आजा
मालिन ओरहन देय
बरजहूं मालिक अपने दुल्हेरूआ
कतरैं सुपड़िया की डार
बारे हों तो बरजौं री मालिन
छैल बरज नहीं जाय
कुंअना हो तो भटाओ मोरी मालिन
सगरा भटाओ नहीं जाय
चिठिया हो तो बांचो मोरी मालिन
करम बांचो नहीं जाय।

दूल्हे राजा घोड़े को कुदाते हुये निकलते हैं। वे सुपाड़ी कतर रहे हैं। दरबार में बैठे हुये

उनके आजा (बाबा) से मालिन शिकायत करती हुई कहती है कि– आप मना कर दीजिये, वे सुपाड़ी की डाल काट रहे हैं। वे उत्तर देते हैं कि– अरी मालिन! छोटे बच्चों को मना किया जा सकता है, परन्तु छैला (जवान एवं बड़ों) को नहीं मना किया जा सकता। सुन री मालिन! यदि कुआँ हो तो उसे भटाया (पाटा) जा सकता है, परन्तु सागर को पाट पाना संभव नहीं है। यदि चिट्ठी (पत्र) हो तो उसे पढ़ा जा सकता है, परन्तु करम (कर्म की गति) नहीं बाँची जा सकती है।

विवाह

की मैं नेउतेंव गया के गजाधर
की रे अयोध्या के राम
की मैं नेउतेंव यहै जग जननी
मोरी जग पूरन होय
कहना उतारूं गया के गजाधर
कहना अयोध्या के राम
कहना उतारौं मैं जग जननी
मोरी जग पूरन होय
फरका उतारौं गया के गजाधर
अंगना अयोध्या के राम
रसोइयां उतारौं मोरी जग जननी
मोरी जग पूरन होय
का चढ़ि आवें गया के गजाधर
का चढ़ि आवें अयोध्या के राम
का चढ़ि आवें मोरी जग जननी
मोरी जग पूरन होय
घोड़ा चढ़ि आवैं गया के गजाधर
रथ चढ़ि आवैं अयोध्या के राम
मैना चढ़ि आवैं मोरी जग जननी
मोरी जग पूरन होय।

यह विवाह रूपी यज्ञ सफल हो, इसके लिये हम गया के गजाधर, अयोध्या के राम तथा जगत जननी आदि शक्ति को आमंत्रित करते हैं। इन सबके पधार जाने पर मैं इन्हें किस ठौर पर स्थान दूँगी? ताकि हमारा यज्ञ पूर्ण हो सके। यह निश्चित होता है कि घर के बाहरी भाग में गया के गजाधर और आँगन में अयोध्या के रामजी तथा रसोई में जग जननी को उतारेंगे, अर्थात् स्थान देंगे। ये सभी देवी–देवता कौन से वाहन में चढ़कर आयेंगे ? उत्तर है– घोड़े में चढ़कर गया के

गजाधर और रथ में चढ़कर अयोध्या के रामचन्द्रजी तथा पालकी (मिआना) में चढ़कर जगत जननी आयेंगे। आप सबके आगमन से हमारा विवाह रूपी यज्ञ निर्विघ्न सम्पन्न होगा।

विवाह

बखरी तो भल बनवाये मुनि महेशराम
बखरी का निबल दुआर
ओही होइके निकरे हैं दुलहे दुलेरूआ
मौरी अरझ गई डार
किरिया करत नन्द बाबा के
कबहूं न अइहों ससुरार
एक छिन मौरी निरूवारा मोरी धनिया
मौरी का फूल झरा जाय
कैसे के मौरी निरूआरौं मोरे स्वामी
बाबुल दुआरे में ठाढ़
बखरी तो भल बनवाये मुनि कौशल राम
बखरी का निबल दुआर
ओही होइके निकरे हैं दुलहे दुलेरूआ
मौरी अरझ गई डार
किरिया करत हौं राजा दशरथ के
कबहूं न अइहों ससुरार
एक छिन मौरी निरूआरा मोरी धनिया
मौरी का फूल झरा जाय
कैसे के मौरी निरूआरौं मोरे स्वामी
चाचा दुआरे में ठाढ़
बखरी तो भल बनवाये मुनि फलाने राम
बखरी का निबल दुआर।

महेश राम ने अच्छा भवन बनवाया है, परन्तु भवन का द्वार नीचे हो गया है। द्वार से दूल्हे राजा निकलते हैं तो उनके सिर में बंधी हुई मौर दरवाजे की ऊँचाई कम होने के कारण अटक गयी। दूल्हे राजा अपने पिताजी की कसम खाकर कहते हैं कि- अब हम कभी ससुराल नहीं आयेंगे। वे अपनी पत्नी से कहते हैं कि- एक क्षण के लिये हमारी उलझी हुई मौर को सुलझा दो, क्योंकि मौर में लगे हुये नक्काशीदार फूल झरे जा रहे हैं। दुल्हन कहती है कि- सामने हमारे पिताजी एवं चाचाजी खड़े हुये हैं? मैं कैसे यह कार्य कर सकती हूँ? लोक लज्जा के भय से वह मौर को सुलझाने का कार्य करने में असमर्थता व्यक्त करती है।

विवाह

डोलिया के पीछे-पीछे फिरत विदेशिया
काहे धना रोवत जात
की तुमही सुधि आवै सखिया सहेलनी
की रे कलेउना की जून
की तुमही सुधि आवै माता के कोरा
अंचला मा दूध पिआय
डोलिया के पीछे-पीछे फिरत विदेशिया
काहे धना रोवत जात
ना मोही सुधि आवै सखिया सहेलनी
ना रे कलेउना की जून
मोही तो सुधि आवै माता के कोरवा
आंचलन दूध पिआय
डोलिया के पीछे-पीछे फिरत विदेशिया
काहे धना रोवत जात।

वैवाहिक रस्मों के उपरान्त लड़की की विदाई होती है। डोली में बैठी वह रोती चली जा रही है। उससे पूछा जाता है कि – तुम क्यों रो रही हो ? क्या तुम्हें सखी-सहेलियों की याद आ रही है ? क्या तुम्हें कलेवा (नाश्ता) के समय की याद आ रही है ? क्या तुम्हें अपनी माता की याद आ रही है ? आखिर तुम रो क्यों रही हो ? लड़की बतलाती है कि- न तो मुझे सखी-सहेली की याद आ रही है और न ही कलेवा की याद आ रही है। मुझे तो अपनी माता की गोद याद आ रही है, जहाँ बैठकर मैंने माँ का दूध पिया है।

विवाह

गंगा के ओरे जमुना जी के छोरे एक आम
ओंही तरी सीता खेलयं झाग झूमर
रामा खेलयं पिचकार।
खेलिन कूदिन घर का सिधारिन
माया उठीं खिरझाय।
कहवां बिताइव बेटी दिन दुपहरिया
कहवां बिताइव आधी रात।
फुलवा बिनत माया दिन दुपहरिया
गजड़ा गांछत आधी रात।
गंगा के ओरे जमुना जी के छोरे एक आम।

ओंही तरी सीता खेलयं झाग-झूमर
रामा खेलयं पिचकार।
खेलिन कूदिन घर का सिधारिन
भाभी उठीं खिरझाय।
कहवां बिताइव नन्दी दिन दुपहरिया
कहवां बिताइव आधी रात।
मेहंदी तोड़त भउजी दिन दुपहरिया
हांथवा रचत आधी रात।

गंगाजी एवं यमुनाजी के किनारे पर एक आम का पेड़ है। उसी पेड़ के नीचे सीताजी उछल-कूद करती हुई खेल रही हैं। रामचन्द्रजी पिचकारी लेकर खेल रहे हैं। खेल-कूद समाप्त होने पर जब सीताजी अपने घर को जाती हैं, तब उनकी माता नाराज होकर पूछती हैं कि- हे बेटी! तुम पूरे दिन दोपहर कहाँ रही ? रात हो चली है अभी तक तुम कहाँ थी? सीताजी सफाई देती हुई कहती हैं कि- हे माताजी! मैं फूलों को बिन-बिनकर गजरा गूँथ रही थी इसीलिये इतना समय लग गया। इसी प्रकार दिन भर सीताजी के घर में न दिखलाई पड़ने से उनकी भाभी भी नाराज हैं। सीताजी ने उन्हें बतलाया कि मेहंदी तोड़ने तथा उसे पीसकर हाथों को रचने के कारण इतना अधिक समय लग गया।

अंजुरी

जनक जी की बेटी आहीं
गिरजा पूजन जांय हो
की सांमले हैं रामचन्द्र
हृदय लगाय हो
आजा उनके बैंठे हैं
आजी कर जोड़ हो
की सामले हैं रामचन्द्र
हृदय लगाये हो
बाबू उनके बैठे हैं
माया कर जोड़ हो
की सामले हैं रामचन्द्र
हृदय लगाये हो।

सीताजी राजा जनक की बेटी हैं, वे गिरिजा (पार्वतीजी) के पूजन के लिये जा रही हैं। सांवले रंग वाले रामचन्द्रजी को हृदय से लगाकर वे गिरिजा पूजन को जा रही हैं। उनके आजा (बाबा) बैठे हुये हैं तथा आजी (दादी) विनयपूर्वक बतलाती हैं। इसी प्रकार उनके पिताजी बैठे

हुये हैं तथा उनकी माताजी विनती करती हुई बतलाती हैं कि सांवले रंग वाले रामचन्द्रजी से सीताजी का हृदय लगा हुआ है तथा वे गिरिजा पूजन के लिये जा रही हैं।

अंजुरी

लगत बैसाख मोरो जिअर दुखित हो
कि छूटत है माई बाबू नैहर के लोग हो
आने दिना मोर बाबू बंगला छबामय हो
कि आज मोरे बाबू का बदन मलीन हो
आने दिना मोरी माया उठतै उठामय हो
कि आज मोरी माया केर अंसुवन की धार हो
आने दिना मोरे चाचा पहिले गोहराबैं हो
कि आज मोरी चाची केर अंसुवन की धार हो
आने दिना मोरे भैया बंगला छबामय हो
कि आज मोरे भइया केर बदन मलीन हो
आने दिना मोरी भाभी हँसि-हँसि बोलयं हो
कि आज मोरे भाभी के अंसुवन की धार हो
लगत बैसाख मोरो जिअरा दुखित हो
कि छूटत है भाई बाबू नैहर के लोग हो।

बैसाख का महीना आ गया। लड़की का गौना होने वाला है। वह कहती है कि- बैसाख मास लगने से मेरे हृदय में दुख हो रहा है, क्योंकि अब मेरी माँ, पिता तथा नैहर (मायके) के लोग मुझसे छूट जायेंगे। अन्य दिनों में मेरे पिता बंगला (घर) बनवाते थे, परन्तु बैसाख लगने के कारण उनका मन मलीन दिख रहा है। अन्य दिनों में मेरी माता सोकर उठते ही मुझे जगाया करती थीं, परन्तु आज मेरी माता के आँखों से आँसुओं की धारा बह रही है। मेरे चाचा सुबह उठकर मुझे पुकारा करते थे, परन्तु वे आज दुखी दिखाई पड़ रहे हैं तथा चाची के आँखों में आँसुओं की धार दिखाई पड़ रही है। अन्य दिनों में मेरे भाई मकान बनवाते थे, परन्तु आज उनका शरीर धूमिल (मलीन) दिख रहा है। अन्य दिनों में मेरी भाभी हँस-हँसकर बोलती थी, परन्तु आज उसके आँखों से आँसुओं की धारा बह रही है। बैसाख मास के लगते ही मेरा हृदय दुखी हो रहा है। क्योंकि मेरा गौना होगा और मेरे माता-पिता तथा मायके के लोग मुझसे बिछुड़ जायेंगे।

अंजुरी

झिलमिल दिया जलै
जलै सगरी रात हो

कि माया उनकी झांपी साजै
साजै सगली रात हो
झिलमिल दिया जलै
जलै सगरी रात हो
कि चाची उनकी झांपी साजै
साजैं सगली रात हो
झिलमिल दिया जलै
जलै सगरी रात हो
कि भाभी उनकी झांपी साजै
साजैं सगली रात हो
झिलमिल दिया जलै
जलै सगरी रात हो।

झिलमिलाता हुआ दीपक पूरी रात जलता रहता है। लड़की की माँ अपनी पुत्री को देने के लिये मिठाई आदि सामग्री झाँपी (एक पात्र)में भर रही है। इसी प्रकार पूरी रात दीपक जलता रहा और कन्या की चाची एवं भाभी रात्रि पर्यन्त झाँपी तैयार करती रहीं।

अंजुरी

कहना रे रूप उपजै
कहना रे सोन उपजै
कहाँ उपजै लाला पालकी
छेंके हय दुआर हो
सतना रे रूप उपजै
शहडोल रे सोन उपजे
रीवा उपजै लाल पालकी
छेंके हय दुआर हो॥

चाँदी कहाँ उत्पन्न होती है, सोना की उपज कहाँ है ? इसी प्रकार लाल पालकी की उपज कहाँ है ? जो कि द्वार को रोके हुये हैं। प्रत्युत्तर है– सतना में चाँदी तथा शहडोल में सोने की उपज होती है। रीवा में लाल पालकी की उपज होती है, जो कि द्वार को छेंकती है।

अंजुरी

काहे के री बेनिया
काहेन मुट्ठी लागी हो
ये कौने चरित्र बेनिया

आई है बिकाय हो
सोने केर बेनिया
रूपेन लागी मूठ हो
कि रातुली चरित्र बेनिया
आयी है बिकाय हो
बेनिया के मोल करै
दूलहे दुलेरूआ
अपने दुलहिन देइ के
हांकत बयार हो
हांकत बयार रौरे
पूंछय लागी बात हो
हमरे सेजरिया धना
काहे नहीं आइव हो
तोहरे सेजरिया स्वामी
कइसे के आऊँ हो
माया अउ बहिनी तोहार
जागैं सगली रात हो
होय दे बिहान धना
लागय दे बाजार हो
कि माया और बहिनियां का
बेंचबै बाजार हो।

हवा करने के लिये बाँस निर्मित पंखा (बेनवा) के लिये कहा गया है कि वह किस वस्तु का बना हुआ है? उसमें मूठ किस वस्तु की लगी हुई है? यह पंखा किस प्रकार का है, जो बिकने के लिये आया है। यह पंखा स्वर्ण निर्मित है जिसमें चाँदी की मूठ लगी हुई है। रात में हवा झलने वाला यह पंखा बिकने के लिये आया है। पंखे की कीमत दूल्हे राजा चुकाते है तथा अपनी दुलहन को हवा हाँकते हैं। हवा हाँकते हुये पूछते है कि– रात में तुम हमारी सेज पर क्यों नहीं आयीं? पत्नी ने जवाब दिया कि मैं आपकी सेज में कैसे आ सकती थी ? आपकी माता एवं बहन पूरी रात जागती रहीं। दूल्हे ने कहा कि– हे प्यारी! सुबह होने दो, बाजार लग जाय तब माता तथा बहिन को बाजार में बेच दूँगा। यह गीत हास–परिहास पर आधारित है।

भाँवर

पहिली भंवरि फिरि आयउं बाबा
अबहूं तुम्हारी हौं हो

दूसरी भंवरि फिर आयऊं आजी
अबहूं तुम्हारी हौं हो
चौथी भंवरि फिरि आयउं भइया
अबहूं तुम्हारी हौं हो
पंचई भंवरि फिरि आयऊं बाबू
अबहूं तुम्हारी हौं हो
छठई भंवरि फिरि आयऊं नाना
अबहूं तुम्हारी हौं हो
सतई भंवरि फिरि आयऊं माया
अब मैं भयउं पराई हौं हो।

कहते हैं कि सात भाँवरे फिरने के बाद लड़की परायी हो जाती है। लड़की कहती है कि मैं पहिली भाँवर घूम चुकी हूँ, परन्तु बाबाजी अब भी मैं तुम्हारी हूँ। दूसरी भाँवर फिर चुकने के बाद भी आजीजी तुम्हारी हूँ।

पिताजी मैं तीसरी भाँवर घूम चुकी तथापि मैं तुम्हारी ही हूँ। भाई साहेब चौथी भांवर घूम आने के बाद भी मैं तुम्हारी हूँ। काकाजी पाँचवी भाँवर घूम चुकी अब भी तुम्हारी हूँ। नानाजी मैं छठवीं भाँवर घूम आयी, अब भी मैं आपकी हूँ। अन्त में सातवीं भाँवर घूम आने के बाद कन्या अपनी माताजी से कहती है कि– अब मैं दूसरे की हो चुकी हूँ।

लावा परोसना

लाबा परोसि भाई लाबा
तोहरी बहिन पिआरी हइ हो
लाबा परोसि भाई लाबा
तोहार बहनोई पिआरा हइ हो।
पहिले पिआरि संग महतरिया
दूसरे पिआरि तोहार बापू हो।
अउ तिसरे पिआरि संग बहनोइया
तोहरी बहिनी पिआरी हइ हो।
लाबा परोसि भाई लाबा
तोहार फूफू पिआरी हइ हो।
लाबा परोसि भाई लाबा
तोहार बहिनी पिआरी हइ हो।

भाई मण्डप के नीचे लावा परोसो, तुम्हारी बहन तुम्हारे लिये प्रिय है। अपने बहनोई के

लिये भी लावा परोसो, वह भी तुम्हें प्रिय हैं। अपनी माता और पिता के लिये भी परोसो, माता एवं पिता तुम्हारे लिये प्रिय हैं। तुम्हारे सगे बहनोई भी तुम्हारे लिये प्रिय हैं। भाई लावा परोसो। तुम्हारी बुआ तुम्हारे लिये अत्यधिक प्रिय हैं, लावा परोसो। तुम्हारी बहन प्रिय हैं, उसके लिये लावा परोसो।

अंजुरी

लावा परस भैया लावा
आज से बहिनी बिरानी भई
लावा परस भैया लावा
आज से बहिनी बिरानी भई
लावा परस भैया लावा
आज से बहिनी बिरानी भई।

जब भाई अपने बहिन को लावा परोसता है, उस समय इस गीत को महिलाएँ दुहराती रहती हैं। भाई को सम्बोधित करते हुये कहा गया है कि– लावा परसो। आज से तुम्हारी यह बहन परायी हो गई।

विदाई

माया चली परछन का
बेटी को बिदा करैय
माया पहिरिन तन मां पिअरिया
बेटी का बिदा करैय
तोहरे ऊपर हो सुख केर बरखा
सदा सुहागिन रहहु
दुलेठना चला धीरे
बापू आये मिलन का
चाचा आये, बहिना आई
भाभी आई मिलन को
माया चली परछन का
बेटी का बिदा करैय
आरती उतारिन पालकी बइठाइन
अंसुवन घिर आई है
माया गई कुम्हिलाय
कि धरती पसरि परि हय।

माता, बेटी और दामाद के परछन के लिये चलीं। उन्हें विदा करने के लिये माँ ने पीली साड़ी पहन रखी है। माँ कहती है– बेटी! तुम्हारे ऊपर सुख की बरसात हो, तुम सदा सौभाग्यवती रहो। दुलारी बेटी! धीरे चलो। तुम्हारे बापू, चाचा, बहिन, भाई तुमसे मिलने आये हैं, परछन करने आये हैं। माँ ने विदा के लिये दामाद–बेटी की आरती उतारी। उन्हें पालकी में बैठाया, फिर आँसुओं में डूब गई, उदास हो गई। मूर्छित होकर धरती माता की गोद पर गिर पड़ी।

विदाई

माया देहि असीस कि मंगल गामंई
जहं जहं जाइ बिटिया मोरी राज करंइ
दूध कटोरन पूता ते राज भरंइ
सब सखियाँ देय असीस कि मंगल गामंई
सदा सुहागिन रहहुं कि मोती सखि री
पिया के मन माँ बरस करईं
सब दिन करउ पिउ पूजा री
फूफू देइ असीस कि मंगल गामंई
सास ससुर की सेवा करियो
ननद जेठानी का पटाय रखा री
फूफू देंइ असीस कि मंगल गामंई।

कन्या की विदा के समय माता आशीष देकर मंगल वचन उच्चारण करती हैं। जहाँ मेरी बेटी जाय, वहाँ राज्य करे। दूध कटोरा भरकर पिये। अनेक पुत्रों की माँ बने।

सभी सखियाँ आशीष देकर मंगल गीत गाती हैं। हमेशा सौभाग्यवती रहना। अपने प्रियतम के मन में स्थान बनाये रहना। अपने प्रिय की पूजा करना। फूफू आशीष देकर मंगल गाती है– सास–ससुर की सेवा करना, ननद एवं जेठानी से झगड़ा न करना।

परछन

सासू गोसाईं तोहरी पैंया लागूं
धीरे किहे परछनियाँ हो
मोरे झूना लरद भइंन
जेठानी गोसाई तोहरी पैंया लागू
धीरे किहे परछनियाँ हो
मोरे झूना लरद भइंन
चाची गोसाईं तोहरी पैंया लागूं

धीरे किहे परछनियाँ हो
मोरे झूना लरद भइंन
ननदी गोसाईं तोहरी पैंया लागूं
धीरे किहे परछनियाँ हो
मोरे झूना लरद भइंन।

हे सासूजी! मैं तुम्हारे पैर पड़ती हूँ तथा अनुरोध करती हूँ कि परछन की रस्म धीरे से पूरा करना, मेरा शरीर थक गया है। जेठानी जी, चाची जी तथा ननद जी मैं आप सबके पाँव पड़ती हूँ। मेरा शरीर झुकते-झुकते थक गया है इसलिये परछन धीरे से करना।

परछन

लाला खोला खोला केमरिया हो
मैं देखौं तोहरी धना
लाला खोला खोला केमरिया हो
मैं देखौं तोहरी धना
धौं सांवरि है धौं गोरी
देखौं मैं तोरी धना
लाला खोला खोला केमरिया हो
मैं देखौं तोरी धना।

विवाहोपरान्त नवदम्पति पालकी में बैठकर दरवाजे पर पहुँचते हैं। पुत्र और पुत्र वधू दोनों पालकी के भीतर हैं। परछन करने वाली नारियों के स्वर गूँजने लगते हैं। वे कहती हैं कि- प्यारे दूल्हेजी! पालकी का द्वार खोलो, हम लोग देखें कि तुम्हारी पत्नी साँवले रंग की है या गोरे रंग की।

परछन

मोरी छोटी है जनक दुलारी
बिदा ना करबय-बिदा ना करबय
बाहर ठाढ़े ससुर समुझामय
ससुर समुझामय
भितरे से रोमय महतारी
बिदा ना करबय-बिदा ना करबय
अंगना मा ठाढ़े जेठ समुझामय
जेठ समुझामय

भितरे से रोमय महतारी
बिदा ना करबय–बिदा ना करबय
दुअरा मा ठाढ़े देवर समुझामय
देवर समुझामय
भितरे से रोमय महतारी
बिदा ना करबय–बिदा ना करबय
मोरी छोटी है जनक दुलारी
बिदा ना करबय–बिदा ना करबय।

मेरी जनक–दुलारी अर्थात् सीताजी अभी छोटी हैं। हम उनकी विदाई अभी नहीं करेंगे। घर के बाहर खड़े हुये उसके ससुर जी विदा करने के लिये समझा–बुझा रहे हैं, परन्तु घर के अन्दर सीताजी की माँ रो रही हैं। हम विदाई नहीं करेंगे। बीच आँगन में दुल्हन के जेठजी खड़े हैं, विदा करने के लिये कह रहे हैं परन्तु घर के अन्दर दुल्हन की माँ रो रही है। इसी प्रकार दरवाजे पर दुल्हन के देवर जी खड़े होकर विदाई की बातें कह रहे हैं। घर के अन्दर दुल्हन की माँ रो रही है। और कहती है कि– मैं अपने पुत्री को विदा नहीं करूँगी, क्योंकि वह अभी कम उम्र की है।

परछन

बिआह लाये रघुवर जानकी का
अपने का लाये रघुवर पागा–पिछौरा
रंगाय लाये चुनरी जानकी का
बिआह लाये रघुवर जानकी का
अपने का लाये रघुवर हाथी–घोड़ा
सजाय लाये मियाना जानकी का
बिआह लाये रघुवर जानकी का
अपने का लाये रघुवर काने के कुण्डल
गढ़ाय लाये बेसर जानकी का
बिआह लाये रघुवर जानकी का।

रामचन्द्र जी विवाह की रस्में पूरी करके सीता जी को लेकर आ गये हैं। रामचन्द्र जी अपने लिये (पगड़ी) पिछौरा (चादर) ले आये हैं तथा सीताजी के लिये चूनर रँगवा कर ले आये हैं। रामचन्द्र जी, सीताजी को विवाह करके ले आये हैं। रामचन्द्र जी अपने लिये हाथी–घोड़े तथा जानकी जी के लिये म्याना (सुन्दर सजी बड़ी पालकी) ले आये हैं। इसी प्रकार रामचन्द्र जी अपने लिये कानों के कुण्डल तथा सीता जी के लिये बेसर (आभूषण) ले आये हैं। रामचन्द्र जी सीता जी को ब्याह कर ले आये हैं।

परछन

केसर की क्यारी बोवाय
राजा बन्ना केसर सोहे
केसर बोवाय गये उनकर बाबुल
होइगे लाल गुलाल
राजा बन्ना केसर सोहे
केसर बोवाय गये उनकर चाचा
होइगे लाल गुलाल
राजा बन्ना केसर सोहे
केसर बोवाय गये उनकर मामा
होइगे लाल गुलाल
राजा बन्ना केसर सोहे
केसर बोवाय गये उनकर फूफा
होइगे लाल गुलाल
राजा बन्ना केसर सोहे।

दूल्हे राजा को केसर बहुत प्रिय है, अत: केसर की क्यारियाँ तैयार करो। उनके पिताजी केसर बोआ दिये थे, जिसके कारण उनका रंग लाल हो गया। इसी प्रकार क्रमश: उनके चाचाजी, मामाजी तथा फूफाजी ने भी केसर तैयार करवाया था, फलस्वरूप लाल रंग के केसर तैयार हुये थे। राजा बन्ना को केसर प्रिय लगते हैं।

परछन

लल्हरी काहे का कराइव,
भितरे चला दुलही।
तोंहरे भितरे हमें भूख लगत हय।
भितरे कंदुआ बसइहौं।
भितरे चला दुलही॥
तोहरे भितरे हमें प्यास लगत हय।
भितरे कहरा बसइहौं।
भितरे चला दुलही॥
तोंहरे भितरे हमे अमला लगत हय।
भितरे बरई बसइहौं।
भितरे चला दुलही॥
तोंहरे भितरे हमें नींदा लगत हय।

भितरे सेजा लगइहौं।
भितरे चला दुलही॥
लल्हरी काहे का कराइव,
भितरे चला दुलही॥

नववधू के प्रथम आगमन पर परछन हो रही है। नववधू नेग लेने के पश्चात् ही घर में प्रवेश करना चाहती है। सखियाँ कहती हैं कि- घर के अन्दर प्रवेश करो। वधू कहती है कि- तुम्हारे घर में प्रवेश करने पर हमें भूख, प्यास, अमल तथा नींद लगेगी। प्रत्युत्तर में परछन करने वाली महिलाएँ कहती हैं कि घर के अन्दर ही तुम्हारे लिये हलवाई लगा हुआ है, कहार (पानी देने वाले) बसा लिये गये हैं, पान की अमल के लिये बरई (पान का धंधा करने वाले) की व्यवस्था कर दी गई है तथा नींद प्राप्त करने के लिये सुन्दर सेज तैयार कर दिया गया है।

परछन

सिया बनरी के करा तैयारी,
ललन ससुरारी से आये
पहिले मिलन का सास रानी आई
सरइन सूप देखाइन
ललन ससुरारी से आये
दुसरे मिलन का ननद रानी आई
कंचन कलश देखाइन
ललन ससुरारी से आये
तिसरे मिलन का जेठानी रानी आई
मोतिन माला पहिनाइन
ललन ससुरारी से आये॥

राम रूपी दूल्हे सीता रूपी दुल्हन को ब्याह कर वापस आ गये हैं। उनके परछन की तैयारी करो। सर्वप्रथम नव वधू से मिलने के लिये उनकी सास आती हैं जो कि सरई से निर्मित सजे हुये सूप को दिखाकर मंगल की कामना करती हैं। इसके पश्चात् वधू की ननद मिलने के लिये आती है जो सोने का कलश दिखाकर मंगल की कामना करती है। तत्पश्चात् तीसरे स्थान पर जेठानी मिलने के लिये आती है जो कि मोतियों की माला पहनाकर मंगल की कामना करती है।

बघेली संस्कार गीत

बाबूलाल दाहिया
सम्पर्क - पिथौराबाद, सतना

सोहर

मचियन बइठीं सुभद्रा,
त सुरिजै मनामइ, त सुरिजै मनामइ हो।
मोरे भइया के होइहैं होरिलवा, बधइया लइ के जाबई हो।
माघै केरी दुइजिया,
त भउजी नहाइन, त भउजी नहाइन हो।
अँचरा परिगा कनेरा क फुलबा,मनै मुसकानी हो॥
होत भोर भिनसारे,
भये है ललनमा, भये है होरिलबा हो।
अब बजैं लगी अनंद बधइया, गामैं सखी सोहर हो॥

मोढ़े में बैठी बहन भगवान सूर्य से विनय कर रही है कि प्रभु! अगर मेरे भइया के यहाँ पुत्र पैदा होगा तो मैं बधाव लेकर जाऊँगी। माघ के दोज को भाभी ने स्नान किया और नहाते समय जब कनेर का फूल झड़कर आँचल में पड़ा तो वे मन में अति प्रसन्न हुईं। समय आने पर भोर में ही सूर्योदय के पहले उनके लाल पैदा हुआ जिससे आनंद का बधाव बजने लगा और औरतें सोहर गाने लगीं।

सोहर

ललि बरन घुन-घुनमा,
घुन-घुनमा हम लेबै,
घुन-घुनमा हम लेबै हो।
हमही घुन-घुनमा कै साध,
पिया मंगवाबा हो॥

धौं तोरे खेलै हैं भइया,
धौं तोरे भतिजबा, धौं तोरे भतिजबा हो॥
एजी धौं तोरे खेलै ललनमा, घुन-घुनमा का करबै हो॥
कहेउ मोरे स्वामी बहुत कुछ,
कहै नहि जानेव, कहै नहि जानेव हो।
स्वामी मरतेव कटरिया कै मार
जिया तज देतिउ हो॥
तोर बाप गोतिया के ऊँचे,
दइज मल दीन्हिन,
दइज मल दीन्हिन हो।
बदना तोरो दुइज केरो चन्दा,
त कउनै अरथ केरो हो॥
जिन ससुरा मुखहूँ न बोलइ,
नजरिया नहीं चितबइ, नजरिया नहीं चितबइ हो।
अब तेई ससुरा पटना लुटामैं,
बहुआ गोहरामइ हो॥
जिन ससुआ मुखहूँ न बोलइ,
रोजै गरिआमइ, नितै गरिआमइ हो।
अब तेई सासू पिपरी पियामई,
बहू क गोहरामई हो॥
जिन स्वामी मुखहूँ न बोलइ,
नजरिया नाही चितबइ, नजरिया नाही चितबइ हो॥
तिन स्वामी छठिया पुजामइ,
रनिया गोहरामइ हो॥

पत्नी ने अपने पति से कहा- स्वामी! नील रंग के घुनघुना लेने की मेरी बड़ी इच्छा है, आप मुझे मँगवा दो। पति ने कहा- क्या तेरे घर में खेलने लायक या छोटे-छोटे भतीजे हैं, जो घुनघुना माँग रही है? घुनघुना भला तुम क्या करोगी? पत्नी ने कहा- स्वामी! तुमने ऐसी मर्म को वेधने वाली बात कह दी, जो तुम्हें नहीं कहना चाहिए। मुझे ऐसा लगता है कि कटारी मारकर मर जाऊँ।

पति ने कहा- तुम्हारे पिता श्रेष्ठ कुल के हैं। उन्होंने दहेज भी भरपूर दिया है। तुम्हारा रूप भी दोज के चन्द्रमा की तरह सुन्दर है, पर किस काम का? सूकरी के बदन में कीचड़ और गन्दगी लिपटी रहती है, पर जब उसके आगे पीछे उसके बच्चे चलते हैं तो बड़ी भली लगती है। संयोग से पत्नी के पुत्र पैदा हो जाता है तो वह कहती है कि जो ससुर हमेशा उपेक्षा से मेरी ओर

देखते तक नहीं थे, वही अब वस्त्र लुटा रहे हैं। और बहू कह-कहकर बुलाते हैं।

जो सासू कभी सीधे मुँह बात भी नहीं करती थीं। प्रतिदिन हमेशा गालियाँ ही बकती रहती थी, वही सासू पीपल (दस मूल का काढ़ा) पिला रही हैं, और बहू-बहू कहकर बुला रही हैं। जो पति मुझसे बात करना भी पसंद नहीं करते थे। मेरी ओर कभी नजर भर देखते तक नहीं थे, वही स्वामी अब छठी पुजा रहे हैं और मुझे रानी कहकर बुला रहे हैं।

सोहर

गंगा किनारे एक तिरिया,
तिरिया दुख रोबई, तिरिया दुख रोबई हो।
गंगा एक बेरी लहर लइअउतेउ,
मुकुति कइ लेतिउ हो॥
धौं तोरे सास ससुर दुख, धौं नैहर दूर बसइ हो।
धौं तोरे प्रभु परदेश, कउन दुख रोयउ हो॥
ना मोरे सास ससुर दुख,
न ही नइहर दूरी, न ही नइहर दूरी हो
अब ना मोरे स्वामी परदेश, कोंख दुख परिगा हो॥
थारी भरी धइल्या तु मोतिया,
उपर धरा नरियर, उपर धरा नरियर हो।
अब उबतइ के सुरिज मनाबा
सुरजि लाल देइहइं हो॥
होत बिहान पही फाटत,
ललना जनम भयो, ललना जनम भयो रे।
अब बजै लार्गी अनद बधइया
गमइ सखी सोहर हो॥
हँकरा नगर केरे स्वनरा,
हकर बेगी आबा, हकर बेगी आबा हो।
अब गढ़ि आबा सोने केर कलसा
त गंगा क लेसउबइ हो॥

गंगा के किनारे बैठी एक स्त्री अपना दुखड़ा सुना रही है कि- हे गंगा मइया! एक बार ऐसी लहर लेकर आती कि मुझे प्राणों से मुक्त कर देती। गंगा जी पूछती हैं कि क्या तेरे सास-ससुर दुख देते हैं या तेरा मायका बहुत दूर है अथवा तेरा पति परदेश में रहता है? आखिर तू किस दुख से इतनी दुखी है?

उसने कहा– न तो मुझे मेरे सास–ससुर दुख देते हैं और न ही मेरा मायका दूर है। मेरे पति भी परदेश में वास नहीं करते सिर्फ एक दुख है कि मेरी कोख से पुत्र ने जन्म नहीं लिया। गंगाजी ने कहा– तुम थाल में मोतियाँ भरलो और उसके ऊपर एक नारियल रख लो, प्रतिदिन सूर्योदय के समय भगवान सूर्य की आराधना करो, वे तुम्हें अवश्य ही पुत्र देंगे।

कुछ समय बाद सूर्योदय की पहली किरण के साथ पुत्र को जन्म दिया, जिससे बधाव बजने लगा और सखियाँ सोहर गाने लगीं। उसने नगर के स्वर्णकार को बुलवाया और कहा कि तुम जल्दी एक स्वर्णकलश गढ़कर ले आओ, गंगा माँ के घाट पर कलश रखा जाना है।

सोहर

सासा सोमइ मझोटबा,
ससुर जी बरोठबा, ससुर जी बरोठबा हो।
अब बहुआ तो रंग महलिया,
भये हैं नंदलाला हो॥
द्वारे म ठाँढ़े ससुरबा,
हँसइ हँसि पूछइं, हँसइ हँसि पूछइं हो॥
बहुवा कउन स्वाद फल खाया,
ललन अति सुन्दर हो॥
रंग महलिया से बहुवा,
ललन लिहे बोलइं, होरिल लिहे बोलइं हो।
ससुरा खायन है फोर–फोर नरियर,
न जानेन इहौगुन हो॥
दुवरा म ठाँढ़े हैं जेठा,
बिहँसि हँसि पूछइं, बिहँसि हँसि पूछइं हो।
छोटी कउने स्वाद फल खाया,
ललन अति सुन्दर हो॥
रंग महलिया से बहुवा,
ललन लिहे बोलइं, ललन लिहे बोलइं हो।
जेठा दरिमा क फल हम खायन
न जानेन इहौ गुन हो॥
दुवरा म ठाँढ़े हैं देवरा,
बिहँसि हँसि पूछइं, बिहँसि हँसि पूछइं हो।
भउजी कउने स्वाद फल खाया,
होरिल बड़े सुन्दर हो॥

रंग महलिया से भउजी,
ललन लिहे बोलइं,
ललन लिहे बोलइं हो।
देवरा खांयन है खट्टी-खट्टी अमिया,
न जानेन इहौगुन हो॥
चनुरी खेलइ ननदिया
उहौ हँसि पूछइं, उहौ हँसि पूछइं हो।
भउजी कउन छयल चित दीन्ह्या,
ललन अति सुन्दर हो।
पान कै बिरिया लगायन,
त दोहरी सुपरिया,
त दोहरी सुपरिया हो।
ननदी ननदोइया हाथे म दीन्हेन,
न जानेन इहौगुन हो॥

सासू जी कोठे के मध्य में, ससुर बाहर वाले कमरे में सोते हैं, और पुत्रवधू रंगमहल में सोती है। वहीं उनके पुत्र पैदा हुआ। द्वार में खड़े ससुर पूछ रहे हैं कि- बहू! तुमने कौन सा फल खाया है? तुम्हारा पुत्र तो बड़ा सुन्दर सलोना है। रंगमहल से अपने नौनिहाल को गोदी में लिए बहू ने कहा कि- ससुर जी! मैंने नारियल फोड़कर खाया था, मुझे यह पता नहीं था कि उसमें इतना गुण है। द्वार में खड़े जेठ ने प्रसन्न होकर पूछा कि- छोटी! तुमने कौन सा फल खाया है, जो हमारा भतीजा इतना सुन्दर पैदा हुआ?

बहू अपने रंगमहल से ही गोदी में बालक लिए हुए बोली कि- हे जेठ जी! मैंने अनार का फल खाया था, मुझे यह पता नहीं था कि उसमें इतना गुण है। द्वार में खड़े देवर ने हँसकर पूछा कि- भाभी! तुमने कौन सा फल खाया है कि हमारा भतीजा इतना खूबसूरत है ?

भाभी अपने रंगमहल में पुत्र को गोदी में लिए कहने लगीं कि- देवर! मैंने वही खट्टी-खट्टी अमिया खाया था, जो आप लाकर खिलाते थे, मैं यह नहीं जानती थी कि उस आम की कैरी में इतना गुण है। ननद ने परिहास करते हुए पूँछा कि- भाभी! तुमने किस छैल का मुख देखकर उसे चित्त में बसा लिया था? क्योंकि मेरा भतीजा बहुत सुन्दर है। भाभी ने कहा- ननद जी! मैंने ननदोई के हाथ से लगा पान का एक बीड़ा खाया था, जिसमें सुपारी का एक टुकड़ा डला था।

सोहर

पथरा केरी पथरइली,
एंगुर रंग ढारी, एंगुर रंग ढारी हो।

अब ओही चढ़े रामा दतुन करैं,
नउवा रोचन लाये हो॥
कहना के आहे तैं नउवा,
कहाँ चले जइहे, कहाँ चले जइहे रे।
अब काखे भये हैं नंदलाला,
रोचन लइके आये रे॥
गोकुल के हम नउवा,
अबधपुर आँयन, अबधपुर आँयन हो।
रानी रुकमिन के भये नंदलाला,
रोचन लइके आँयन हो॥
माँग नउवा जउन मन भाबै,
तोरे जउन भाबै रे।
मुँह माँगा देबै इनाम,
रोचन लइकैं आये रे॥
हँकरे नगर केरे सोनरा,
तुरत चले अउते, तुरत चले अउते रे।
अब गढ़ लउते सोने रूपे चुरबा,
त नउवै पहिरउते रे॥
रुपबा तो मोरे बहुत हैं,
त सोनमा कि ओरी चुऐं, सोनमा कि ओरी चुऐं हो।
मोही देत्या जो गाँव दुइ गाँव,
त मैं जस गउतेंव हो॥
माँगे तैं मँगना रे नउवा,
मँगन नहीं जाने, मँगन नहीं जाने रे।
आधी मँगते अजुध्या कै राज,
तुरत दइ देतेंव रे॥

पत्थर की एक चीप पड़ी है जो लाल रंग में रंगी है, उसी में बैठकर रामचन्द्रजी दातून कर रहे हैं। उसी समय नाई रोचन (नीम की डाल, पुत्र होने का सन्देश) लाता है।

रामचन्द्रजी नाई से पूछते हैं कि– नाई! तू कहाँ से आया है और कहाँ जायेगा? किसके पुत्र पैदा हुआ है जिसका तू सन्देश लाया है? नाई ने कहा– मैं गोकुल नगर का नाई हूँ और अवधपुरी आया हूँ। रानी रुक्मिणी के पुत्र पैदा हुआ है उन्हीं का संदेश लाया हूँ।

राम ने कहा– नाई! जो तेरे मन में इच्छा हो माँग ले। हम तुझे मुँह माँगा इनाम देंगे, क्योंकि

तू पुत्र प्राप्ति का सन्देशा लेकर आया है। राम ने हलकारे से सन्देश भेजा कि– नगर के स्वर्णकार तुम शीघ्र ही आओ और नाई के लिए सोने का कड़ा बनाकर ले आओ।

नाई ने कहा– महाराज! मेरे घर में ढेर सारा रुपया पैसा है और सोना तो छप्पर से गिरता है। मुझे आप एक–दो गाँव दे देते तो मैं हर जगह आपके यश का वर्णन करता। रामचन्द्र ने कहा– नाई! तुमने माँग तो लिया पर तुझसे माँगते नहीं बना। गाँव, दो गाँव की क्या बात? आज अगर तू अयोध्या का आधा राज्य भी माँग लेता, तो मैं देने से इंकार न करता।

सोहर

ओनैं आईं कारी बदरिया,
ओनइ जल बरखैं, ओनइ जल बरखइं हो।
अब परैं लागे बड़े–बड़े बूँद,
छैल उचभागें हो॥
एक पग धरिन अँगनमा,
दुसर गज ओबरी, दुसर गज ओबरी हो।
अब तिजे पग धरिन डेहेरिया,
चउथ रानी पलंगा हो॥
धौं तुम चोरबा चहरबा,
धौं राजा के पहरुवा, धौं राजा के पहरुवा हो।
अब धौं तुम ललना के बपना,
पलंग मोरो डोलइ हो॥
न हम चोरबा चहरबा,
न राजा के पहरुवा, न राजा के पहरुवा हो।
अब हम आहेन लाला केरे बपना,
पलंग तोहरो डोलइ हो॥
न तुम चोरबा चहरबा,
न राजा के पहरुवा, न राजा के पहरुवा हो।
अब तुम आह्या लला केरे बपना,
त काहे राती आया हो॥

काली घटा घुमड़कर रिमझिम बरसने लगी। जैसे ही बड़ी–बड़ी बूँद पड़ी, छैल अपना बिस्तर छोड़ बाहर से अन्दर भागे। एक पैर आँगन में, दूसरा दरवाजे के नीचे, तीसरा पैर डेहरी में और चौथा पग अपनी पत्नी के पलंग में रखा।

पत्नी अचानक घबड़ा गई और बोली कि– तुम कौन हो? चोर उचक्के हो, राजा के सिपाही

हो अथवा तुम मेरे पुत्र के पिता हो ? मेरा पलंग क्यों हिल रहा है ?

उसके पति ने कहा– न तो मैं चोर उचक्का हूँ और न ही राजा का पहरेदार। मैं तो तुम्हारे पुत्र का पिता हूँ। तुम्हारे पलंग में पैर रखा तो वह हिल गया। पत्नी ने कहा– जब तुम चोर उचक्के नहीं हो, राजा के सिपाही नहीं हो बल्कि मेरे पुत्र के पिता हो तो तुम्हें फिर अर्द्धरात्रि में इस तरह गुप-चुप आने की क्या जरूरत थी ?

सोहर

बिन्दाबन एक कुइंयाँ,
सुघर धना पानी, सुघर धना पानी भरैं हो।
अब ओहना से आओ मुसाफिर,
ता बोली ठिठोली करइ हो॥
कहाँ बना घर तोरे ओढ़कन,
कहाँ बना बइठक, कहाँ बना बइठक रे।
अब कहाँ बना तोरे बरोठबा,
जहाँ हम चले आई रे॥
कोठवन बनी मोर ओढ़कन,
मझोटबा म बइठक, मझोटबा म बइठक रे।
होई रहै लहुरा देबरबा,
कहाँ से तैं अइहे रे॥
कोठबा म बनी तोरी बइठक,
मझोटबा म ओढ़कन, मझोटबा म ओढ़कन रे।
तोरे लहुरे देवर हमरे भइया,
हुऐं चले अउबै रे॥
जस मोरे हरी कै पनहियाँ,
तइसै तोरे ओठबा, तइसै तोर ओठबा रे।
तोही जइसा मनई जो पाइत
त पनही ढोबाइत रे॥
मचियन बइठी हैं सासू,
बिहसि करइ बतियाँ, बिहसि बतियाँ करइं हो।
बहुआ को हरे तोर गियान,
बिदेशियै नहीं चीन्हेव हो॥

वृंदावन में एक कुआँ था, जहाँ एक सुन्दर स्त्री पानी भर रही थी। वहीं से एक मुसाफिर निकला, जो उससे हँसी-मजाक करने लगा। तुम्हारे घर में ठहरने का स्थान कहाँ है और बैठक

खाना कहाँ है? कहाँ बीच वाला कमरा है, जहाँ जाकर मैं विश्राम करूँ?

उसने कहा- कोठे में सामान रखने की जगह है, और बीच वाले कमरे में बैठक खाना है जहाँ मेरे देवर रहते हैं, तू वहाँ कैसे जा पाएगा? तेरे कोठे में विश्राम की जगह है और मध्य कोष्ठ (बीच वाले) में बैठक है। तुम्हारे छोटे देवर मेरे भइया हैं, मैं वहाँ बगैर रोक-टोक चला जाऊँगा। वह स्त्री नाराज होकर बोली कि- जिस प्रकार मेरे पति की जूतियाँ हैं उस प्रकार तेरी ओंठ हैं। तेरे जैसा व्यक्ति अगर मेरे घर में रहेगा, तो मैं तुझसे जूते ढुलाऊँगी।

उस स्त्री की सास ने अपने बहू का विवाद सुना तो बाहर निकली और अपने पुत्र की पहचानकर कहने लगी कि- बहू! तुम्हारी अक्ल क्या मारी गई है? जो तुम विदेश से लौटे अपने पति को ही नहीं पहचान सकी?

सोहर

बिन्द्रावन के बढ़इया,
बोलाये चले अउते, बोलाये चले अउते रे।
अब गढ़ि लउते लली पलंगरिया,
घरै पहुँचउते रे॥
केही चाही लाली पलंगरिया,
केही दूनौ मोरिला, केही दूनौ मोरिला हो।
अब केही चाही सुवना परेउना,
केही कठपुतरी हो॥
ललना क चाही पलंगरिया,
ससुर दूनौ मोरिला, ससुर दूनौ मोरिला हो।
अब देबरा क सुवना परेउना,
ननद कठ-पुतरी हो॥
झुलैं लागी लाली पलंगरिया,
झुलैं दूनौ मोरिला, झुलैं दूनौ मोरिला हो।
अब पढ़ैं लागे सुवना परेउना,
नचइ कठ-पुतरी हो॥
बिन्दावन के तैं बरिया,
बोलाये चले अउते, बोलाये चले अउते रे।
अब घर-घर देते बोलउवा,
हमरे घरै सोहर रे॥
हकरे नगर केरे नउवा,
बोलाये चले अउते, बोलाये चले अउते रे।

मोरे हरि जी क देत सन्देसबा,
सोहर सुनैं आमइं हो॥

वृन्दावन के बढ़ई तू मेरा सन्देशा पाते ही आ जाना और एक लाल रंग की पलंगरिया (छोटा पलंग) बनाकर मेरे घर भेज देना। बढ़ई ने कहा कि- लाल रंग का झूला किसे चाहिए और उसमें लगे लाल मोर किसे चाहिए? साथ ही उसमें लगे तोता, कबूतर कौन लेगा और कौन कठपुतली पसंद करेगा?

उसने कहा- छोटी पलंग मेरे ललन को चाहिए, मेरे ससुर दोनों मोर पसन्द करेंगे। मेरे देवर तोता-कबूतर ले लेंगे और मेरी ननद कठपुतली पसन्द करेगी। बढ़ई ने वह सुन्दर पलंग बना दिया। उसके झूलने से दोनों मोर भी झूलने लगे। तोता और कबूतर पढ़ने लगे और कठपुतली नाचने लगी। वृन्दावन के बारी तू मेरा सन्देशा पाते ही आ जाना और घर-घर जाकर बुलावा दे दे कि आज हमारे घर में सोहर है। नगर के नाई तू भी मेरा सन्देश पाकर आ जाना और मेरे पति जी को सन्देश सुना देना ताकि वे भी इस खुशी के क्षण में सोहर सुनने आ जायें।

सोहर

स्वामी हो स्वामी मोरे स्वामी,
तुहिन मोरे सब कुछ, तुहिन मोरे सब कुछ हो।
अब एक पेड़ अमुआँ लगउतेव,
करह देखि लेतिव हो॥
धनिया हो सुना मोरी धनिया,
तुहिन मोरी सब कुछ, तुहिन मोरी सब कुछ हो।
अब एकठे जो ललना क जनतेव,
सोहर सुन लेतेउ हो॥
यतना सुनिन जब धनिया,
भईं हईं अनमन, भईं हईं अनमन हो।
अब हन लीन्हिन बजुर केमार,
पलंग बइठे रोमइं हो॥
बिन्दावन के बढ़इया,
हकरि चले अउते, हकरि चले अउते रे।
बढ़ई गढ़ि लउते हरी भरी डोलिया,
नइहर पहुँचउते रे॥
मचियन बइठी हैं माया,
ओऊँ हँसि बोलइं, ओऊँ हँसि बोलइं हो।
बेटी एक ठे ललन जो तुम जनतेव,

सोहर सुन लेतेन हो॥
ओहना से आई हईं भउजी,
ओऊँ हँसि बोलइं, ओऊँ हँसि बोलइं हो।
ननदी एक ललन जो तुम जनतेव,
सोहर हम गाइत हो॥
तरे धरा मोतियन थारी,
उपर धरा नरियर, उपर धरा नरियर हो।
अब उवतै के सुरिज मनाबा,
बड़ा फल होइय हो॥

पत्नी ने अपने पति से कहा कि- प्राणनाथ! आप ही मेरे सब कुछ हैं। आप आम का एक पेड़ लगाओ जिससे वह फले-फूले तो मैं उसका बौर देख सकूँ।

पति ने कहा- हे प्राण प्यारी! तुम्हीं मेरी सब कुछ हो। अगर तुम एक पुत्र पैदा कर देतीं तो मैं सोहर गीत सुन लेता। पत्नी ने जब अपने पति के मुँह से पुत्र जनने की बात सुनी तो वह दु:खित हो गई। किवाड़ बन्द कर पलंग पर बैठकर रोने लगी। उसने वृन्दावन नगर के बढ़ई को बुलवाया और कहा कि- तुम मेरे लिए हरे रंग की एक पालकी बना दो, मैं उसी में बैठकर मायके चली जाऊँ। वह मायके चली गई तो उसकी माँ ने भी वही बात कही कि- अगर तुम एक पुत्र पैदा कर देती तो मेरी सोहर सुनने की अभिलाषा पूरी हो जाती।

कुछ देर में उसकी भाभी आ पहुँची और उसने भी कहा कि- ननद रानी अगर तुम एक ललन पैदा कर देतीं तो हमारी सोहर गाने की अभिलाषा पूरी हो जाती। अपनी ननद को अनमनी देखकर भाभी ने उपाय बताया कि थाली में मोती रख उसके ऊपर एक नारियल रख लो और सूर्योदय के समय भगवान सूर्य की उपासना करो तो वे तुम्हारी मनोकामना पूरी करेंगे।

सोहर

अँगना म बोई है करइली,
रतिया कइसे बितई,
रतिया कइसे बितई हो।
नई बहुआ के लगे दस मास,
पै कोऊ नहिं जागइं हो॥
सासा के दाबौं मैं पिडुली,
ननदिया कै छिंगुरी, ननदिया कै छिंगुरी हो।
अब सइयैं जगऊँ पर पइयाँ,
बोलाये नहीं बोलइं हो॥

होत भोर भिनसारे,
ललन मोरे होइगे, होरिल मोरे होइगे हो।
अब बजैं लागी अनंद बधइया,
सोहर सखी गामइं हो॥
सासा तो आँहीं पिसनहरी,
ननद कुट नहरी, ननद कुट नहरी हो।
पिया मोर घसा के छोलइया,
बोलाये नहीं बोलइं, जगाये नहीं जागइं हो॥

आँगन में करेला का पेड़ लगा है। रात्रि कैसे कटे क्योंकि नई बहू का दसवाँ मास लग रहा है, वह प्रसव पीड़ा में है पर सब कोई सो रहे हैं। नई बहू कह रही है कि- मैंने सासू का पैर दबाया, ननद की छिगुली उँगली और पति से जगने के लिए बार-बार निवेदन किया, पर कोई आवाज देने पर भी नहीं बोल रहा। बड़े भोर में मेरे पुत्र पैदा हो गया, आनन्द बधाव बजने लगे और औरतें सोहर गाने लगीं। पर मेरी सासू तो दूसरे का अनाज पीसने वाली ठहरी, ननद दूसरे का चावल कूटने वाली और पति ठहरे घास छीलने वाले दूसरे के मजदूर इसलिए वे सबके सब सो रहे हैं और जगाने पर भी नहीं जाग रहे।

सोहर

अगहन मा अलसानी,
पूष गरुआनी, पूष गरुआनी हो।
अब माघ म मकर नहानी,
तिरबेनी के संगम हो॥
फागुन मा होरी खेलबै,
चइत नौमी करबै, चइत नौमी करबै हो।
बइसाख म फूलो है टेसू,
त चुनरी रंगउबइ हो॥
जेठ म तपत शरीरा,
असढ़ मोरिला बोलइ,असढ़ मोरिला बोलइ हो।
अब सामन परा है हिंडोलना,
सबै सखी झूलइं हो॥
भादौं कि रात अँधिअरिया,
कँधइया जनम भा, कँधइया जनम भा हो।
अब भादौं मास तिथि आठैं,
यशोदा कोखे जनमइ हो॥

कार्तिक में गर्भ धारण करने के बाद अगहन में उनके चेहरे में मलीनता आने लगी। पूष में पैर भारी लगने लगे। पर वे माघ मास में त्रिवेणी में मकर नहाने गईं। उनने कहा कि- हम फागुन में होली खेलेंगी, चैत्र में रामनवमी का त्यौहार मनायेंगी और बैसाख में जब टेसू फूलेंगे तो उनसे चुनरी रंगायेंगी।

जेठ में गर्मी के कारण शरीर तपने लगा। आषाढ़ में वर्षा हो जाने के कारण मोर बोलने लगे। श्रावण मास में जगह-जगह झूले पड़ गये, तो सभी सखियाँ झूलने लगीं। भादौं मास लगते ही कृष्ण पक्ष अष्टमी को यशोदाजी की कोख से कृष्ण ने जन्म लिया।

सोहर

एक फूल फूलइ अजुध्या,
दुसर फूल मथुरा, दुसर फूल मथुरा हो।
तीजो फूल फूलो है काशी,
चउथ मोरे अचरा हो॥
काहू क दिहे दुइ चार,
काहू क दस पाँचउ, काहू क दस पाँचउ हो।
अब काहू क राखे ललचाय,
त एक ललन बिनु हो॥
अमुआ तो फरा है गउदबन,
औ अमली झपकबन, अमली झपकबन हो।
रामा तिरिया क राखे ललचाय,
त एक ललन बिना हो॥
पनमा तो खाँयउँ एक सौ,
सुपरिया तौ दुइसौ, सुपरिया तौ दुइसौ हो।
पै ना रचइ मोरउ दाँत,
कि एक खयर बिन हो॥
लहँगा तौ पहिरेउं एक सौ,
लुँगरा तौ दुइसौ, लुँगरा त दुइसौ हो,
पै ना मिटइ मोरी तो साधि,
के एक चुनरि बिन हो॥
भइया तो खेलायउँ एक सौ,
भतिजबा तो दुइसौ,
भतिजबा तो दुइसौ हो।

पै ना मिटइ मोरी साधि,
कि एक ललन बिन हो॥

एक फूल अयोध्या, दूसरा मथुरा, तीसरा काशी में फूला है और चौथा फूल मेरे आँचल में फूला है। हे ईश्वर! तेरी माया विचित्र है। तूने किसी को दो चार, किसी को दस-पाँच पुत्र दे रखा है पर किसी-किसी को तो एक पुत्र के लिए भी तरसा रखा है। आम एक साथ घौद में फलता है, इमली का फल अलग-अलग लटकता रहता है। पर तू किसी-किसी स्त्री को एक पुत्र के लिए भी तरसाता रहता है।

मैंने सौ बीड़ा पान खाया और दौ सौ सुपाड़ियाँ परन्तु उसमें खैर नहीं पड़ता तो मेरे दाँत नहीं रचते। मैंने एक सौ लहँगे और दो सौ रंगीन साड़ियाँ पहनी हैं पर बगैर एक चूनर के मेरी इच्छा पूरी नहीं हुई। मेरे आँगन में मेरे सौ भाई और दो सौ भतीजे खेलते थे, पर मेरी इच्छा तब पूरी नहीं हुई थी जब तक मेरे एक पुत्र पैदा नहीं हुआ था।

सोहर

गोरेन मुख केरी धनिया,
देखत बड़ी सुन्दरि, देखत बड़ी सुन्दरि हो।
सुन्दर चढ़ि गईं हईं उंय अटरिया,
त बेदना बियाकुल हो॥
देवरा तुहिन मोरे देवरा,
तुहिन मोरे सब कुछ, तुहिन मोरे सब कुछ हो।
तोहरे भइया तो गये कचहरिया,
बोलाय लिहे आबा हो॥
यतना सुनिन जब देवरा,
त बिरिया उगिल दीन्हिन, बिरिया उगिल दीन्हिन हो।
अब पसबा क दीन्हिन मइका,
पलन घोड़ा चल दीन्हिन हो॥
बाम अंग मोरो कसकइ,
दहिन अंग मसकइ, दहिन अंग मसकइ हो।
राजा उची है पजरबा म पीर,
त कइसे बेदन मिटै हो॥
छनिया जो होतीं छबउत्यंव,
मरद बोलबउतेंव, मरद बोलबउतेंव हो।
धना बिध केरी बँधी य गठरिया,
करइ कर छूटइ हो॥

गौर वर्ण की एक स्त्री जो देखने में बड़ी सुन्दर लगती है। वह सुन्दरी अटारी में चढ़ गई और दर्द से व्याकुल होने लगी। उसने अपने देवर से कहा कि– देवर जी! इस समय तुम ही मेरे सब कुछ हो। मेरे पति कचहरी गये हैं इसलिए इस समय तुम्हीं मेरी मदद कर सकते हो। तुम अपने भइया को शीघ्र ही वहाँ से बुला लाओ। जब देवर ने भाभी के पीड़ा की बात सुनी तो वह पान का बीड़ा उगल दिया और चौपड़ के पाँसे फेंक घोड़े में चढ़कर चल पड़ा और अपने भाई को बुला लाया।

पत्नी ने कहा– मेरे बायें अंग में हल्की–हल्की पीड़ा और दाहिने अंग में असहनीय पीड़ा हो रही है। हे पति जी! मेरे पर्स भाग की पीड़ा कैसे मिटै। उसके पति ने दर्द से व्याकुल अपनी पत्नी को ढाँढ़स बँधाते हुए कहा कि– अगर घर का छप्पर उठाना होता तो मैं सारे गाँव के लोगों को मदद के लिये बुला लेता। पर यह बिध ब्रह्मा की गठरी तो धीरे–धीरे ही छूटेगी। हे प्राण प्यारी! साहस से काम लो।

सोहर

केहि बीना सुनी अजुध्या,
केही बीना चउपल, केही बीना चउपल हो।
अब केहि बिना सूनी रसोइयाँ,
त या दु:ख कहा नहिं जाय॥
रामा बिना सूनी अजुध्या,
त लछिमन चउपाला, लछिमन चउपाला हो।
एजी सिया बिना सूनी रसोइयाँ,
त या दु:ख कहा नहिं जाय॥
राम आये भरगै अजुध्या,
त लछिमन चउपाला, लछिमन चउपाला हो।
अब सिया आईं भरगै रसोइयाँ,
को या सुख बरनै हो॥

अयोध्या किसके बिना सूनी है और किसके बिना चौपाल सूनी है ? रसोई किसके बिना सूनी है ? यह सब दु:ख कहते नहीं बन रहा। राम के बिना अयोध्या सूनी है और लक्ष्मण के बिना चौपाल। सीता के बिना रसोई घर सूना पड़ा है जिससे यह दु:ख कहते नहीं बन रहा।

राम के आने से अयोध्या नगर में खुशहाली छा गई और लक्ष्मण के आने से चौपाल भर गई। सीताजी के आने से सूनी रसोई भरी–भरी सी दिखने लगी, इस आनन्द का वर्णन कौन करे ?

सोहर

स्वामी हो स्वामी मोरे स्वामी,
सुना हो मोरे स्वामी, सुना हो मोरे स्वामी हो।
अब ननदी क लगा अठमासा,
त हरबी बिदा करा हो॥
ससुरा तो गये हैं दखिन का,
औ जेठा पछिम का, औ जेठा पछिम का हो।
मोरे बहनोइया गये हैं बिदेशबा,
त कइसे बिदा करौं हो॥
ससुरा न अइहैं दखिन से,
ने जेठा पछिम से, न जेठा पछिम से हो।
स्वामी ननदोइया बसे दूरु देश,
त हरबी बिदा करा हो॥
लहंगा तो गये हैं सियैं का,
औ लुँगरा बनैं का, औ लुँगरा बनैं का हो।
धना चोलिया तो भईं हैं अमोल,
त कइसे बिदा करौं हो॥
लहंगा तो देवै मया का,
औ लुँगरा हम आपन, औ लुँगरा हम आपन हो।
स्वामी चोलिया क कइद्या उधारै,
त हरबी बिदा करा हो॥

पत्नी ने अपने पति को समझाते हुए कहा कि– हे पति! ननदी के पेट में आठ माह का गर्भ है। उसको शीघ्र ही ससुराल भेज दो वर्ना अगले माह तुम्हें बहुत बड़ा खर्च उठाना पड़ेगा।

पति ने कहा– बहन के ससुर दक्षिण की ओर कमाने गये हैं। उसके जेठ पश्चिम की ओर गये हैं और मेरे बहनोई परदेश में हैं। मैं उसकी विदा कैसे करूँ ? पत्नी ने कहा– ननद के ससुर न तो दक्षिण से आयेंगे और न उसके जेठ पश्चिम से। उसके पति भी परदेश में बहुत दूर हैं। इसलिए आप ही उसे ससुराल भेज आओ।

पति ने कहा– अभी लहँगा सिलने के लिये दिया है, धोती रंगने के लिए दी गई है और चोलियों की कीमत बहुत बढ़ गई है। ऐसी स्थिति में भला विदा कैसे किया जाय? पत्नी ने सुझाव दिया कि– लहँगा तुम अपनी माता जी का दे दो और रंगीन धोती मैं अपनी दे दूँगी। रही बात चोली की तो उसे उधार रहने दो, फिर कभी दे देना, पर विदा शीघ्र कर दो।

सोहर

गोरेन मुख केरी धनिया,
बिरह अति ब्याकुल, बिरह अति ब्याकुल हो।
पिया कहिगे तै चार महिनमा,
लउट नहिं आये हो॥

अचरा क बनबा कगदबा,
नैन मसियानी, नैन मसियानी हो।
अब लहुरे देवरबा कयथबा,
चिठी लिख पठबा हो॥

फुल लीन्हें रोबइ मलिनिया,
पान बरइन ढेरिया, पान बरइन ढेरिया हो।
अब गर धरे रोबइ पतुरिया,
कहाँ चल दीन्हया हो॥

हम जाबै अपने तो देशबा,
मनाये नहीं मानबै, मनाये नहीं मानबै हो।
अब आई है धना कै हमरे चिठिया,
लउटाये नहीं लउटब हो॥

बरहें बरिस पिया बहुरे,
बरा तरी उतरे, बरा तरी उतरे हो।
अब पूँछइं लागे घरबा क भेद,
धना मोरी कहाँ गई हो॥

माया तो दउरी पानी लइके,
बहिनी पीढ़ा लइके, बहिनी पीढ़ा लइके हो।
अब धना दिहे बजुर केमार,
बोलाये नहीं बोलइ हो॥

पुत तोरी धनिया न मारेन,
न मारि के निकारेन, न मारि के निकारेन हो।
व तो हने घर भितरे केमार,
बोलाये नहीं बोलइ हो॥

हँकरा नगर केरे सोनरा,

हँकर बेगि आबा, हँकर बेगि आबा हो।
सोनरा गढ़ि लाबा सोने रूपे गहना,
धना क मनाई हो॥

सास ससुर के लगनियाँ,
खेलइं पलगरियाँ, खेलइं पलगरियाँ हो।
लाला देखतइ भरइ किलकारी,
भवन सुख बरसइ हो॥

ललना कि लटुरी झलरियाँ,
अँखिन भइं मछरियाँ, अँखिन भइं मछरियाँ हो।
पलगरियाँ म उठत हिलोर,
भवन सुख बरसइ हो॥

गौर वर्ण सुन्दर मुखी एक स्त्री पति वियोग में व्याकुल है। वह अपनी सहेली से कहती है कि- मेरे पति चार माह में आने के लिए कह गये थे, पर अभी तक लौटकर नहीं आए। उसकी सहेली ने कहा कि- तुम आँचल को कागज, आँख में लगे काजल की स्याही बना लो और अपने देवर को कायस्थ (लेखक) और पत्र लिखकर भेज दो। उसने पत्र भेज दिया। पति पत्र पाते ही घर लौटने को तैयार हो गया।

उसे घर लौटता देखकर मालिन की लड़की फूल का हार, तमोली की लड़की पान का बीड़ा लिए और नर्तकी उसके सिर को अपने कन्धे में रखकर रोने लगीं कि- तुम हमें छोड़कर कहाँ जा रहे हो? उसने कहा कि- मेरी पत्नी का पत्र आया है इसलिए मैं अपने देश जा रहा हूँ, तुम कितना ही मनाओ मैं लौटने वाला नहीं।

पति बारह वर्ष बाद अपने गाँव पहुँचा। वह एक बरगद के नीचे घोड़े से उतरा और अपनी पत्नी तथा घर द्वार का हाल पूछने लगा कि- मेरी पत्नी नहीं दिखती। वह कहाँ गई? उसकी माता पुत्र को आया देख पानी लेकर दौड़ी और बहिन बैठने के लिए पीढ़ा ले आई। पर उसकी पत्नी ने रूठकर किवाड़ बन्द कर लिया और उसके आवाज देने पर भी नहीं बोली।

उसकी माता ने कहा- बेटा! हम लोगों ने न तो तेरी पत्नी को मारा-पीटा है और न ही घर से बाहर निकाला है बल्कि उसने घर के अन्दर से किवाड़ बन्द कर लिया है और अब आवाज देने पर भी नहीं बोलती। उसने नगर के स्वर्णकार को बुलवाया कि तुम शीघ्र ही आओ और सोने-चाँदी के गहने बनाकर लाओ ताकि मैं अपनी रूठी पत्नी को मना सकूँ।

सुनार ने गहने बना दिए। पति ने बायें हाथ में गहने की पोटली ले लिया और दायें हाथ में पान का बीड़ा, फिर पत्नी से कहा कि- तुम किवाड़ खोलो, हम तुम्हारी सेज में आना चाहते हैं। मेरे सास और ससुर के पास मेरा ललन पलंग पर खेल रहा है।

मेरे ललन की आपस में उलझी हुई लट और मछली की तरह सुन्दर आँख और किलकारी देखकर घर में आनन्द की वर्षा सी हो रही है।

सोहर

लालन कि लुटरी झलरियाँ,
बहुत निक लागइं, बहुत निक लागइं हो।
अब गुह दीन्हें कमल अंख पंखुरी,
भमर अइसी गूंजइं हो॥
ललना कि छोटी-छोटी पिंडुली,
नेबरिया भल सोहइ, नेबरिया भल सोहइ हो।
अब धरइं ठुमकियन पाँव,
नेबरिया छन्नक बोलइ हो॥
ललना कि बड़ी-बड़ी अँखियाँ,
कजल भरि सोहइ, कजल भरि सोहइ हो।
अब आँजइं लागीं फूफू सुभद्रा,
अँगुरिया नहिं डोलइं हों॥
ललना कि छोटी-छोटी हँथुली,
चुरइयाँ भलि सोहइं, चुरइयाँ भलि सोहइं हो।
अब बपना क देखे बिदुराय,
दतुलिया निकि लागइं हो॥

मेरे ललन के घुँघराले बाल बहुत ही सुन्दर लगते हैं। मैं उन्हें कमल की पंखुड़ी की तरह गूँथ देती हूँ तो वे भँवर की तरह गुंजित होने लगती हैं। मेरे ललन के पैरों के छोटी-छोटी पिंडुली में घुँघरू बड़े प्यारे लगते हैं। जब वे ठुमक-ठुमक कर बजते हैं तो छन्न-छन्न की ध्वनि निकलती है।

मेरे ललन की बड़ी-बड़ी आँखों में आँजा गया काजल बड़ा प्यारा लगता है। जब फूफू सुभद्रा अंजन लगाती हैं तो उनकी उँगली नहीं डोलती। मेरे ललन के नन्हें-नन्हें हाथों में चूड़े बड़े प्यारे लगते हैं जब वे अपने पिता की ओर देखकर मुस्कुराते हैं तो दंत पंक्ति बड़ी प्यारी लगती है।

सोहर

हम बनबै लोना दाइन
त नरा छिनउबै, त नरा छिनउबै हो।
सीता हम आगू-पीछू तोहरे रहबै,

छठी पुजबउबइ हो॥
होत भोर पही फाटत,
त ललना जनम भये, ललना जनम भये हो।
अब बजै लगी अनंद बधइया,
गमइं सखी सोहर हो॥
तुम पुत भया है बिपति मा,
बहुति सांसति मा, बहुति सांसति मा हो।
अब कुश ओढ़न अउ कुश दासन,
बनै फल भोजन हो॥
जो पुत होत्या अजुध्या,
बहुत सुख मनते, बहुत सुख मनते हो।
अब राजा तो पटना लुटउते,
कौशिल्या रानी अभरन हो॥
बन परबत के नउवा,
बोलाये चले अउते,बोलाये चले अउते रे।
अब जाते तै धाय अजुध्या,
रोचन दइ अउते रे॥
पहिले दिहे राजा जनक का,
त दुसरे कौशिल्या, त दुसरे कौशिल्या रे।
अब तिसरो रोचन लछिमन देवरा,
पै पिया नहि जानइं हो॥
पथरा के री पथरइली,
एगुर रंग ढारी, एगुर रंग ढारी हो।
अब तेहि चढ़े रामा दतुन करैं,
लछिमन रोचन लाये हो॥
की कोउ लाओ है नउवा,
कि धौं कोऊ बरिया, कि धौं कोऊ बरिया हो।
लछिमन भहर-भहर शिर होंय,
रोचन कहाँ पायउँ हो॥
जे सीता घर से निकारेन,
बनइ पहुँचायन, बनइ पहुँचायन हो।
अब उनहिन के भये हैं ललनमा,
रोचन हम पायन हो॥
भल बउरान्या है लछिमन,

धौं को मति मारे, धौं को मति मारिस हो।
आबा ओही पापिनिया क नउवा,
पै हमी न बताया हो॥
हकरे महल के पहरुवा,
कि तैं चले अउते, कि तैं चले अउते रे।
अब देते नगर का बोलउवा,
हका खेलइ जाबइ हो॥
एक बन नाके दुसर बन,
तिसरे बन पहुँचे, तिसर बन पहुँचे हो।
अब नन्हीं-नन्हीं हाँथ धनुहियाँ,
बलक दुइ खेलइ हो॥
केखर तू पुतबा नातिया,
केखर तू भतिजवा,
केखर तू भतिजवा हो।
लड़िकौ कउने मया केरी कोखिया,
जनम लै जुड़ाया है रे॥
हम राजा जनक के नतिया,
सितल के दुलेरुवा, सितल के दुलेरुवा हो।
अब बापौ का नाव न जानित,
लखन के भतिजवा हो॥

हम दाइन बनकर तुम्हारे पुत्र का नाल छेदन करेंगी और हे सीता! पुत्रोत्सव के सारे कृत्य कराकर छठी पुजवायेंगी, और तुम्हारे साथ-साथ रहेंगी। भोर में सूर्योदय की किरणें छिटकते ही सीता ने पुत्र को जन्म दिया, जिससे आश्रम में आनन्द छा गया, तपस्विनी सोहर गाने लगीं।

सीता अपने पुत्र को सम्बोधित हो कहने लगीं- हे पुत्र! तुम अयोध्या के युवराज थे, पर यहाँ जंगल में पैदा हुए हो, इसलिए यहाँ कष्ट ही कष्ट हैं। जहाँ कुश ही ओढ़ने बिछाने के कपड़े हैं और भोजन के लिए जंगली कंदमूल फल हैं। हे पुत्र! यदि तुम आज अयोध्या में पैदा होते तो महाराज बड़े प्रसन्न होते और दीन-हीनों को वस्त्र लुटाते और तुम्हारी दादी महारानी कौशिल्या स्वर्ण लुटातीं। सीता ने जंगल में वास कर रहे एक नाई को बुलाकर कहा कि- तुम अयोध्या जाकर पुत्र जन्म के सन्देश रूप में नीम की डाल राजमहल के द्वार पर लगा आओ।

पहला सन्देश तुम्हें राजा जनक को देना है और दूसरा महारानी कौशिल्या को। तीसरा सन्देश तुम देवर लक्ष्मण को देना पर मेरे पति राम को यह सन्देशा कदापि न सुनाना। लाल रंग के पत्थर पर बैठे राम दातून कर रहे थे, उसी समय लक्ष्मण प्रसन्न होकर वहाँ पहुँचे। राम को पुत्र जन्म का समाचार सुनाया।

राम ने कहा– यह सन्देश कोई नाई लाया है या बारी ? लक्ष्मण तुम बहुत खुश हो। यह सन्देशा तुम्हें कैसे मिला? लक्ष्मण ने कहा– भइया! जिन सीता को आपने घर से निकाल दिया था और मैं बियावान जंगल में छोड़ आया था उन्हीं के पुत्र पैदा होने का समाचार मिला है।

एक दिन राम ने अपने महल के पहरेदार को बुलाया और उसे आज्ञा दी कि सारे नगर में डुग्गी पिटवा दो कि कल हम जंगल शिकार खेलने जायेंगे। राम अपनी सेना के साथ एक जंगल, दो जंगल को पार करते हुए जब तीसरे जंगल में प्रवेश किया तो हाथ में नन्हें-नन्हें धनुष लिए दो बालक खेलते मिले।

राम ने पूछा– बालकों! तुम किसके नाती, पुत्र और किसके भतीजे हो और किस भाग्यशाली के कोख से पैदा हुए हो? बालकों ने कहा– हम राजा जनक के नाती, सीता के पुत्र और लक्ष्मण के भतीजे हैं, पर हमारे पिता का क्या नाम है? हम यह नहीं जानते।

सोहर

रामा राम कहि गोहराउ मैं,
लखन उचि बोले, लखन उचि बोले हो।
अब भई है कलेउना कै जून,
गउवै दुह लाबा हो॥
कहना बँधी हमैं गइयाँ,
त कहना बछुलना, त कहना बछुलना हो।
अब कहना धरी दोहनी-नोइया,
कहाँ लगबइया हो॥
सार म बँधी हमैं गइयाँ,
त परछिन बछुला, त परछिन बछुला हो।
अब गोरसिन धरी है दोहनिया,
रकेई खूँटी नोइया हो॥
का खाती हईं उँय गइयाँ,
खाँय का बछुला, खाँय का बछुला हो।
अब खाँय का दुहबइया,
गउवै दुह लाबा हो॥
चारा खाँय उँय गइयाँ,
दुधा पियैं बछुला, दुधा पियैं बछुला हो।
माखन मिसरी खाँय दुहबइया,
गइया दुह लाबा हो॥
कउने रंग हमैं गइयाँ,

कउन रंग बछुला, कउन रंग बछुला हो।
अब कउने रंग दुहबइया,
गउवैं दुह लाबा हो॥
लाली रंग हईं गइयाँ,
सुपेत रंग बछुला, सुपेत रंग बछुला हो।
अब समरे बरन दुहबइया,
गउवै दुह लाबा हो॥

मैंने राम-राम कहकर आवाज दी तो लक्ष्मण उठकर आ गये। मैंने कहा कि- कलेवा का समय हो गया है, इसलिए गायें दुहवा लाओ। उनने कहा- गायें कहाँ पर बँधी हैं और कहाँ पर उनके बछड़े बँधे हैं ? दूध दुहने का बर्तन कहाँ है और गायों को दुहने हेतु नोई (दुहते वक्त पैर बाँधने की रस्सी) एवं दुहने वाला कहाँ हैं ?

गायें गौशाला में बँधी हैं, उनके बछड़े सामने वाली परछी में बँधे हैं। दूध दुहने का पात्र गोरसी में रखा है और रस्सी खूँटी में टँगी हुई है। गायें क्या खाती हैं, उनके बछड़े क्या खाते हैं और गाय दुहने वाले क्या खाते हैं ? गायें घास खाती हैं, उनके बछड़े दूध पीते हैं और दूध दुहने वाले ग्वाले माखन-मिश्री खाते हैं। गायें दुहवा लाओ। गायें किस रंग की हैं, उनके बछड़े किस रंग के हैं और दूध दुहने वाले ग्वाले किस रंग के हैं ? गायों को दुह लाओ। गायें लाल रंग की हैं, उनके बछड़े सफेद रंग के हैं और दूध दुहने वाला ग्वाला श्याम रंग का है। गायों को दुह लाओ।

सोहर

मइहर केरी तुम देवी,
मंडिल म बिराजी, मंडिल म बिराजी हो।
अब बिनती करौं कर जोरे,
दरस मइया देतिउ हो॥
दरशन तरसे हैं नैना,
मिलन कांहीं जियरा, मिलन कांहीं जियरा हो।
मइया लीन्हें अनेक रंग फूल,
कै माला सुहावन हो॥
अन्धन देती तैं नैना,
कोढ़िन कांहीं काया, कोढ़िन कांहीं काया हो।
मइया निर्धन का धन देती,
बाँझिन कांहीं लाला हो॥
होत भोर भिनसारे,

ललन मोरे होइगे, ललन मोरे होइगे हो।
मइया तैं मोंहीं ललना जो दीन्हें,
बधइया लइके अउबै हो॥

हे मैहर की माँ शारदे! तुम मन्दिर में विराजमान हो। मैं हाथ जोड़कर विनय कर रही हूँ कि मुझे दर्शन दो। मेरी आँखें तुम्हारे दर्शन के लिए और शरीर भेंट करने के लिए तरस रहा है। माँ मैं अनेक रंग की सुन्दर फूलमालाएँ तुम्हें अर्पित करने के लिये आया हूँ। हे माँ! तुम अंधों को आँखें, कोढ़ियों को स्वास्थ्य और निर्धन को सम्पत्ति तथा बाँझ स्त्रियों को पुत्र प्रदान करती हो। सुबह होने के पहले बड़े भोर में मेरे ललन पैदा हो गये। हे माँ! जो तुमने मुझे पुत्र रत्न दिया है, मैं बधाई लेकर आऊँगी।

सोहर

माघै केरी दुइजिया
तौ भउजी नहाइन, तौ भउजी नहाइन हो।
अचरा परिगा कनेरा क फुलबा,
मनै मुसकानी हो॥
माया गनै दस महिना,
बहिनि दस अँगुरी, बहिनि दस अँगुरी हो।
भइया भउजी के दिन नगिचान,
लेबाय लइ आबा हो॥
सोबत रहिउ अंटरिया,
सपन एक देखिउ, सपन एक देखिउ हो।
माया स्वामी मोरे घोड़िला सवार,
औ डड़िया चन्दन केरी हो॥
बेटी हो बेटी मोरी बेटी,
तुहिन मोरी सब कुछ, तुहिन मोरी सब कुछ हो।
बेटी खाय लेतिउ नरियर चिरउजी,
तौ डड़िया फदाबा हो॥
एक बन नाके दुसरवन,
तिसरे बिन्द्रा बन, तिसरे बिन्द्रा बन हो।
अब पैठी परी है गज ओवरी,
त माया निहारइ हो॥
मचियन बइठी है सासा,
त लुहुर तुहुर करैं, लुहुर तुहुर करैं हों।

बहुआ एक बेरी बेदना निबारा,
त ललना जनम होइहीं हो॥
आपन माया जो होती,
बेदन हर लेतीं, बेदन हर लेतीं हो।
अब प्रभु जी की माया निठ मोहिल,
त ललन ललन करै,
होरिला होरल करैं हो॥

माघ मास की द्वितीया को भाभी ने स्नान किया। उनके आँचल में कनेर का फूल पड़ गया तो वे मन ही मन मुस्करा उठीं। उनकी सासू दस माह कब पूरेगा, गिन रही हैं, उनकी ननद ने अंगुलियाँ गिनते हुए अपने भाई से कहा कि- भइया! भाभी को बच्चा होने का समय नजदीक आ गया है इसलिए उन्हें मायके से बुला लो।

उधर भाभी अटारी में पड़ी सो रही थी, उसने एक स्वप्न देखा और अपने माता से बोली कि- माँ! मैंने स्वप्न में देखा है कि मेरे पति घोड़े में सवार होकर आये हैं और चन्दन काष्ठ की पालकी सजवाकर लाये हैं।

पालकी पहुँच गई, माता ने कहा- हे बेटी! तुम ही मेरी सब कुछ हो, तुम्हारे अलावा मेरे कोई नहीं है, इसलिए पालकी में बैठने के पहले नारियल की गरी और चिरौंजी खा लो। पुत्री खा-पीकर पालकी में बैठ गई, पालकी चल पड़ी। वह एक जंगल दूसरे जंगल को पार करती बिन्द्रावन पहुँची और अपने रंगमहल में प्रवेश किया तो सासू देखने लगी।

बहू को प्रसव पीड़ा शुरू हो गई। मचिया में बैठी सासूजी बार-बार देख रही थीं और धीरज बँधा रही थीं कि थोड़ा-सा दर्द होने के बाद ललन का जन्म हो जायेगा। चिन्ता मत करो। बहू ने कहा- अगर मेरी अपनी माता होती तो पीड़ा निवारण के लिए कोई उपाय करती, पर मेरे स्वामी की माता निर्दयी हैं। जो बार-बार ललन-ललन की रट लगा रही हैं, उपचार कुछ नहीं करतीं।

सोहर

बिछुआ तो बाजइ रून झुन, बाजइ रून झुन हो।
अब बसिया क को है बजाये,
बसिया कहाँ बाजइ हो॥
पँसबा तो खेलइं राजा बेलतरी,
अउर बमूर तरी, अउर बमूर तरी हो।
राजा धना तोहरी बेदना बियाकुल,
त तोहई बोलामइं हो॥

पँसबा तो मिचकिन राजा बेलतरी,
अउर बमूर तरी, अउर बमूर तरी हो॥
अब पेल बेइठे जाय गज ओवरी,
कहाँ धना बेदन हो॥
प्रभु मोरा बाय अंग कसकई,
दहिन अंग मसकइ, दहिन अंग मसकइ हो।
स्वामी मरतिउ पजरिया के पीरा,
त धकरिन बोलाबा हो॥
आँगू क घोड़िला कउन सिंह,
पीछे के कउन सिंह हो।
भइया चला हो बुदेलनी के देशबा,
जहाँ बसै धकरिन हो॥
बटबा म है एक कुइंया,
कुइंया पनिहारिनी, कुइंया पनिहारिन हो।
राजा पूछा शहरबा के लोग,
कहाँ बसै धकरिन हो॥
ऊँच नगरपुर पाटन,
जहाँ बाँसा छाये, जहाँ बाँसा छाये हो।
राजा दुवरा चन्दन केरो रूखबा,
जहाँ बसै धकरिन हो॥
को मोरी टटिया उँघारइ,
बेड़न खरकाइस, बेड़न खरकाइस हो।
अब कउने रजनि केरे पूत,
पतनि बेरा आइसि हो॥
हम तोरी टटिया उघारेन,
बेड़ना खरकायन, बेड़ना खरकायन हो।
धकरिन हम तो फलाने के पूत,
यतनि रात आयन हो॥
जो तोहरे होइहैं होरिलबा,
त काह लुटइया, त काह लुटइया हो।
अब जो तोहरे घर होइहैं ढेरिया,
कउन रंग चूनरि हो॥
जो हमरे होइहैं होरिलबा,
त सोनमा लुटउबै, त सोनमा लुटउबै हो।

जो हमरे होइहंई ढेरिया,
अबध रंग चूनरि हो॥
आँगू के घोड़िला कउन सिंह,
पीछे कउन सिंह हो।
अब बीच चन्दन केरी डड़िया,
सुघर लोनी बइठइ हो॥

बिछुआ के बजने से रुन-झुन, रुन-झुन की आवाज आ रही है। बाँसुरी की मीठी आवाज आ रही है उसे कौन बजा रहा है? वह कहाँ बज रही है? पति बेल और बबूल के नीचे बैठे चौपड़ का खेल-खेल रहे हैं। सन्देश वाहक ने कहा कि- उनकी पत्नी प्रसव पीड़ा से ब्याकुल हैं और उन्हें बुला रही हैं।

पति ने चौपड़ के पाँसा फेंककर वहाँ से चल पड़े। सीधे अपने निवास वाले भवन में पहुँच गये और पूछने लगे कि- प्राण प्यारी! तुम्हें कहाँ दर्द हो रहा है? पत्नी ने कहा- प्राणनाथ! मेरे बायें अंग में कसक हो रही है, दाहिने अंग में तेज दर्द हो रहा है और पर्स भाग में इतना तेज दर्द है कि मैं मरी जा रही हूँ इसलिए आप शीघ्र ही दाई को बुलाओ।

आगे का घोड़ा बड़े भइया (अमुक सिंह) का है और पीछे का अमुक सिंह (नाम) का है, वह बुन्देला देश में धाय को बुलाने जा रहे हैं और भाई से कह रहे हैं कि धाय का घर हम किससे पूछेंगे। रास्ते में एक कुआँ था, जहाँ पनिहारिनें पानी भर रही थीं। उनने कहा कि- नगर में जाकर आप वहाँ के लोगों से पूछ लीजिए कि वह कहाँ बसती हैं?

नगरवासियों ने बताया कि पाटनपुर ऊँचे स्थान पर बसा है, जहाँ बाँस से छाया घर और द्वार पर चन्दन का पेड़ है। वहीं धाया वास करती है। उसके घर पहुँचकर जैसे ही द्वार की टटिया सरकाया तो धाया ने कहा- मेरी द्वार की टटिया कौन खींच रहा है और कौन दरवाजे का लंगड़ हटा रहा है, किस राजा के पुत्र हैं जो इतनी रात्रि में मेरे यहाँ आये हैं? दोनों भाइयों ने अपना परिचय और आने का कारण बताया।

यदि तुम्हारे यहाँ पुत्र का जन्म होगा तो खुशी में क्या लुटाओगे ? और यदि तुम्हारे घर में कन्या रत्न की प्राप्ति होगी तो किस रंग की चूनर दोगे? यदि हमारे घर में पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी तो हम सोना लुटायेंगे और अगर कन्या रत्न की प्राप्ति होगी तो अवध की रंगाई चूनर भेंट करेंगे। घोड़ों के बीच में एक चन्दन की पालकी चल रही है, जिसमें धाया बैठी है।

सोहर

जउने दिन रामा जलम भयो,
रामा जलम भयो, रामा जलम भयो हो।

अब बजै लागी अवध बधइया,
गामै सखी सोहर हो॥
गउवा के नाते एक कपिला,
रमइया मुँह दुध पी, रमइया मुँह दुध पियैं हो।
अब गायन की भई लूट,
कि राम जनम भयो रे॥
सोनमा के नाते बेसरिया,
कौशिल्या नाके सोहै, कौशिल्या नाके सोहइ हो।
सोन मन की भइ लूट,
कि रामा जनम भयो हो॥
कपड़ा के नाते पितम्बर,
रमइया तन सोहै, रमइया तन सोहइ हो।
अब कपड़न की भई लूट,
कि रामा जनम भयो हो॥
भड़बा के नाते करोलबा,
रमइया पियैं पनिया, रमइया हाथे पानी पियैं हो।
अब भड़वन की भई लूट,
कि रामा जनम भयो हो॥
हँथिया के नाते करहुला,
रमइया द्वारे झूलइ, रमइया द्वारे झूलइ।
हँथियन की भई लूट, कि रामा जलम भयो रे॥
घोड़बा के नाते बछेड़बा,
रमइया द्वारे नाचइ, रमइया द्वारे नाचइ हो।
अब घोड़वन की भई लूट,
कि रामा जनम भयो रे॥

जिस दिन राम का जन्म हुआ उस दिन अवध में आनंद की बधाई बजने लगी और महिलाएँ सोहर गाने लगी। गायों में एक कपिला गाय थी जिसका राम दूध पीते थे। गायों की लूट में वह भी दान कर दी गई। स्वर्ण के नाते कौशिल्या जी के नाक में एक बेसर थी, पर जिस दिन सोना लुटाया गया, वह भी दान कर दी गई। कपड़ा के नाते पीताम्बर था जिसे राम पहनते थे, पर जिस दिन वस्त्रों का दान किया गया, वह भी लुटा दिया गया। बर्तन के नाते एक कटोरा था जिसमें राम पानी पिया करते थे, पर जिस दिन बर्तन की लूट हुई वह भी दान में दे दिया गया।

हाथी के नाते करहुला (अल्प वयस्क) हाथी था जो राम के महल के द्वारे पर खड़ा हिलता-डुलता रहता था, पर जिस दिन हाथियों की लूट हुई, वह भी दान कर दिया गया। घोड़ा

के नाते एक बछेड़ा था जो राम के द्वार पर नृत्य किया करता था, पर राम जन्म उत्सव में जब घोड़ों की लूट हुई तो वह भी दान कर दिया गया।

सोहर

मचियन बइठी सुभद्रा
त सुरिज मनामइ, त सुरिज मनामइ हो।
हमरे भइया के होइहैं होरिलबा,
बधइया लइके जाबै, चँगेरिया लइके जाबइ हो॥
यतना सुनिन जब भउजी,
त धाई महल गई, धाई महल गई हो।
स्वामी धीरे-धीरे बाजइ बधइया,
धिरेन उठै सोहरि हो॥
सुन पइहैं ननदी सुभद्रा,
बधइया लइके अइहैं, चँगेरिया लइके अइहंइ हो॥
होत भोर भिन्सारे
त ललना जनम भये, होरिला जनम भयो रे।
अब बजै लागी अनंद बधइया,
गमइ सखी सोहर हो॥
बाजत अमै दसौ बाजा,
त अउर कसायल, त अउर कसायल हो।
अब नाचत अबै ननदी सुभद्रा,
बजै लागी पायल हो॥
यतना जो देखि लीन्हे भइया,
त धाय महल गे हैं, धाय महल गे हैं हो।
धना अउती है बहिनी हमार,
निहुर पइया लाग्या हो॥
ननदी तुहिन मोरी ननदी,
तुहिन मोरी सब कुछ, तुहिन मोरी सब कुछ हो।
ननदी सिठिया भरे है मोर हाथ,
मैं कइसे पइयाँ लागउँ हो॥
ललना की रंगी पलंगरिया,
ओहिन चढ़ि बइठा, ओहिन चढ़ि बइठा हो।
अब ललना के हाथे कुछू डारा,

गरेन पहिराबा हो॥
सोनमा तो मोरे घर सेरभर,
और रूपबा पसेरी भर, रूपबा पसेरी भर हो।
भउजी हम अब लेबै गज मोहना,
भतिजा के निछावरि हो॥
सोनमा तो है मोरे अनधन,
रूपबा कै ओरी चुवै, रूपबा कै ओरी चुवई हो।
ननदी एक नहि देबई गज मोहना,
व गरूऐ दमन केरा हो॥
यतना सुनिन जब ननदी,
रिसाय उचि भागी, रिसाय उचि भागी हैं हो।
अब एक गज मोहना के कारन,
रिसाय ननदी भागी है हो॥
यतना देखिन जब भइया,
तौ धाई महल गे हैं, धाई महल गे हैं हो।
धना कउन बचन तुम बोल्या,
कि ननदी रिसाय गई हो॥
सोनमा तो देत रहिउ सेर भर,
रूपबा पसेरी भर, रूपबा पसेरी भर हो।
राजा एक नहि दीन्हेव गज मोहना,
त ननदी रिसाय गईं हो॥
झोरबा से लीन्हिन भभुतिया,
लिलारे लगाइन, लिलारे लगाइन हो।
भइया होइगे हैं जोगिया बैरगिया,
बहिनिया के कारन हो॥
हँकरउ नगर केरे कहरा,
हँकरि बेगि लाबा, हँकरि बेगि लाबा हो।
कहरा हल भुल डोलिया सजाबा,
तौ ननदी मनाय लई हो॥
सभवा से उठे ननदोइया,
तौ धाई महल गे हैं, धाई महल गे हैं हो।
धना अउती है भउजी तुम्हार,
त सरहज हमारिउ हो॥
बरहौं ठेलइल्या गज मोहना,

त पौंड़ डराबा, गली माँ बिछाबा हो।
वहै चढ़ि आमइ भउजी तोहार,
पलंग बइठाबा हो॥
बारा गज मोहरा तुम्हरे,
पै एकठे हमारे, पै एकठे हमारे हो।
ननदी एक गज मोहना के कारन,
भइया विदेश कीन्हया हो॥
स्वामी मोरे होइगे हैं बैरगिया,
भभुत मेल जोगिया, भभुत मेल जोगिया हो।
ननदी तुम गज मोहना रिसानिउ,
त एक तुम्हारे कारन हो॥

मचिया में बैठी ननद सुभद्रा सूर्य भगवान से मनौती कर रही है कि– हे प्रभु! अगर हमारे भइया के ललन पैदा होंगे तो मैं बधाई लेकर जाऊँगी, और अच्छी-सी डलिया सजाकर ले जाऊँगी। भाभी ने जब अपनी ननद से यह बात सुनी तो अपने रंगमहल में पहुँची और पति से बोली कि धीरे-धीरे बधाव बजे और धीरे-धीरे ही सोहर गाई जाय। यदि ननद सुभद्रा को मालुम हो गया तो वह बधाई लेकर आ जायेगी और साथ में डलिया भी सजा लायेगी, जिसके बदले उसे नेग चुकाना पड़ेगा। बड़े भोर में ललन का जन्म हो गया और उस नौनिहाल के जन्म का आनंद बधाव बजने लगा महिलाएँ सोहर गाने लगीं।

ननद सुभद्रा को जब ज्ञात हुआ कि उसके भतीजा पैदा हुआ तो वह दस प्रकार के बाजा बजवाती नाचती आती है जिससे उसके पैर की पायल बज रही है। सुभद्रा के भाई ने जब यह देखा कि उनकी बहन आ रही है तो वे महल पहुँचे और पत्नी से बोले कि– सुभद्रा बहन आ रही हैं तुम झुककर पैर छू लेना और उनका स्वागत-सत्कार करना। भाभी बहाना बनाते हुए बोली कि– ननद रानी तुम्हारे अलावा भला मेरा और कौन है, पर मेरे हाथ गन्दे हैं इसलिए पैर कैसे पड़ूँ? ललन की रंग-बिरंगी पलंगरिया है, उसी में तुम बैठो और ललन के हाथ में कुछ दाम पैसे रखकर उसके गले में कोई आभूषण पहनाओ।

भाभी आज का दिन बड़े आनंद का है मुझे और कोई वस्तु की चाह नहीं है मेरे घर में सोना एकाध किलो है, चाँदी तो पूरे पाँच किलो होगी, मैं निछावर में गज मोहरा लूँगी। भाभी ने कहा– सोना तो मेरे भरा रखा है और चाँदी की वर्षा होती है। पर ननद रानी तुम गज मोहना की बात मत करना, क्योंकि वह बहुत कीमती है। ननद ने जब भाभी के मुख से यह बात सुनी तो नाराज होकर चल पड़ी। भाई ने बहन को नाराज होकर जाते देखा तो दौड़कर रंगमहल गया और पत्नी से बोला कि– तुमने ऐसा क्या कह दिया कि मेरी बहन रूठकर चली गई?

पत्नी ने कहा– मैं निछावर में एक किलो सोना दे रही थी और चाँदी पाँच किलो, पर मैंने

गज मोहना देने से मना कर दिया तो तुम्हारी बहन नाराज होकर चली गईं। भाई ने झोले से भभूत निकाला और बहन के अपमान के कारण योगी का भेष बना लिया। पत्नी ने कहार को बुलाया और कहा कि- तुम एक टूटी-फूटी पालकी ला दो तो, मैं उसमें चढ़कर जाऊँ और अपनी ननद को मना लाऊँ। कहार पालकी लेकर आ गये।

उधर अपनी सरहज को आता देख ननदोई द्वार से उठकर अपने महल में पहुँचे और अपनी पत्नी से कहा कि- तुम्हारी भाभी यानि मेरी सरहज आ रही हैं। तुम ऐसा करो कि बारह गज मोहना जो हमारे यहाँ है, उनको रास्ते में बिछवा दो ताकि तुम्हारी भाभी उसी से होती हुई महल में प्रवेश करे और फिर उन्हें आदरपूर्वक पलंग में बैठाओ।

भाभी ने गज मोहना बिछे हुए देखकर ननद से कहा कि- तुम्हारे बारह गज मोहने थे और मेरे घर में मात्र एक है, पर तुम एक गज मोहना के ना मिलने से रूठ गई। जिससे तुम्हारे भाई परदेश निकल गये।

कुआँ पूजन

धीरे चलो राधा प्यारी, गगर छलकै ना तुम्हारी।
कउने बरन तोहरे घइला गघरिया, कउने बरन पनिहारी,
गगर छलकै न तुम्हारी॥
सोने बरन मोरो धइला गघरिया,
रूपे बरन पनिहारी।
गगर छलकै न तुम्हारी॥
धीरे चलो राधा प्यारी। गगर ....

राधा प्यारी धीरे-धीरे कदम बढ़ाओ ताकि तुम्हारा घड़ा न छलके। तुम्हारे घड़े किस रंग के हैं और तुम्हारा रंग कैसा है ? मेरे घड़े सोने के रंग के हैं, और मेरा रंग चाँदी जैसा है।

कुआँ पूजन

लाल मोरी गघरी उतारा,
हमारे गरे मोहन माला।
कोया लयाबै साला दुसाला,
कोया लयाबै मसाला,
हमारे गरे मोहन माला॥
जेठा लयामैं साला दुसाला,
देबरा लयामैं मसाला,
हमारे गरे मोहन माला॥

हे देवर प्यारे! तुम मेरा घड़ा उतारो। देखो, मेरे गले में मोहन माला है। मेरे लिए शाला और दुशाला कौन लाया है और कौन मसाला लाया है? मेरे जेठ शाल और दुशाला लाये हैं और मेरे देवर मसाला लाये हैं। मेरे गले में मोहन माला है।

गैलहाई

राम लखन दूनौ भइया,
त ठाढ़े अरज करैं,ठाढ़े अरज करैं हो।
माता मुँह भरि देत्या अशीष,
बनै हम जाबै हो॥
अँखियाँ म खोंसउ सरइया,
त जिभिया अंगर धरौं, जिभिया अंगर धरौं हो।
अब छतियाँ बजुर परिजाय,
बचन कइसे बोलौं हो॥
राम लखन दूनौ भइया,
त ठाढ़े अरज करैं, ठाढ़े अरज करैं हो।
माता मुँह भर देत्या अशीष,
पिता कै अज्ञा पालब हो॥
अँगना तो मोरे लेखे मरघट,
डेहर होइगै परबत, डेहर होइगै परबत हो।
अब भीतर भरा अँधियार,
तीनौ जन बन चले हो॥

राम और लक्ष्मण वन जाने के लिए तैयार खड़े हैं। वे माता से विनय कर रहे हैं कि माँ तुम हमें अपने मुँह से आशीष दो तो हम वन चले जायें। माता कौशल्या ने कहा कि– उन आँखों में सलाई कोंच लूँ जो तुम्हें वन जाते देख रही हैं, जीभ में जलता अंगार रख लूँ और छाती में वज्र पड़ जाय। मैं वन जाने के लिये कैसे कहूँ?

राम लक्ष्मण दोनों भाई खड़े-खड़े विनय कर रहे हैं कि माता हमें आशीष दो ताकि हम पिता की आज्ञा पालन करने वन जायें। कौशल्या ने कहा– आँगन तो मेरे लिए मरघट और द्वार पर्वत के समान हैं। महल के अन्दर अंधकार भरा है। क्योंकि मेरे दोनों पुत्र और पुत्र वधू वन जा रहे हैं।

गैलहाई

राम चले वन वासा,
सीता मन सोचइं, सीता मन सोचइं हो।

अब खेबरे न नइया केवट बिन,
धनिया पुरुष बिन हो॥
ना हमरे ससुरे दुख, ना नइहर दुख हो।
स्वामी तोहरइ तो होई बियोग,
नींद नहीं आबइ हो॥
सासा कै ताक्या रसोइयाँ,
ससुर जेउनरियाँ, ससुर जेउनरियाँ हो।
धना भइया के ललना खेलाया,
हमी तो बिसराया हो॥
तकि जइहैं सासा कै रसोइयाँ,
ससुर जेउनरियाँ, ससुर जेउनरियाँ हो।
पै अलग रहहैं रउरे से भइया,
त कइसे के रहबइ हो॥
सिकिया न डोलइ पवन बिन,
पुरइन जल बिन, पुरइन जल बिन हो।
अब खेबरै न नइया केवट बिन,
धनिया पुरुष बिन हो॥
माया कहइ छाती पीपर,
भउजाई कहइ बइरिन, भउजाई कहइ बइरिन हो।
अब भइया देखइं भउहैं तरेरे,
त कइसे के रहबइ हो॥

राम वनवास को जा रहे हैं सीताजी मन ही मन सोचती हैं कि बगैर केवट के न तो नाव चल सकती और न ही बगैर पुरुष के नारी रह सकती है। राम वन जाने के लिए तैयार हैं, वे सुबह वन चले जायेंगे, पर सीताजी को नींद नहीं आती। वे कहती हैं कि– हे स्वामी! न तो सास-ससुर का भय है और न ही मायके और ससुराल की कोई चिन्ता। अगर चिन्ता है तो आपके बिछुड़ने की, इसलिए नींद नहीं आती।

राम ने समझाया कि– हे सीता! तुम सासू की रसोई सम्हालना, ससुर को भोजन पकाकर खिलाना और मेरे भाइयों के पुत्रों को स्नेह देना और मुझे भुला देना। सीता ने कहा– मैं सासू की रसोई सम्हाल लूँगी। ससुरजी को भोजन पकाकर जिमाऊँगी, पर महलों से अलग रहने वाले आपके भाइयों के पुत्रों को मैं कैसे स्नेह दे पाऊँगी? बगैर पवन के एक तिनका भी नहीं हिल सकता। कमल बगैर जल के नहीं रह सकता। नाव बगैर केवट के नहीं चल सकती, इसी प्रकार पत्नी बगैर पति के नहीं रह सकती।

मायके में भी माता कहने लगती है कि- यह बेटी मेरे लिए छाती का पीपल है। भाभी उसे बैरिन कहने लगती हैं और भाई की भृगुटि भी चढ़ जाती है तो मायके में भी कैसे रहा जायेगा?

गैलहाई

जेठ कै तपी दुपहरिया,
त धरती धधकि बरई, धरती धधकि बरइ हों।
तेहिमा सीता क रामा निकारिन,
त बिरहा बपति परइ हो॥
जे भउजी भूखे क भोजना,
अउ नंगे क ओढ़ना अउ नंगे का ओढ़ना हो।
अत ते भउजी गरूवे गरभ से
मै कइसे निकारउ हो॥
हो भउजी सीतल रानी
बड़ी ठकुराइन, बड़ी ठकुराइन हो।
भउजी आबा है तोहई नेउतबा,
बिहाने बन चलबइ हो॥
अचला म लीन्ह सरसबा,
छिटत सीता निकरी, छिटत सीता निकरी हो।
अब लउटइ जब लछिमन देवरा,
खोटक टोरि खइंहइ हो॥
बइठा नंचू चंद्रन बिरछतर,
चन्दन बिरछ तर हो।
भउजी पनिया कहौं से खोज लाई,
त तोहईं पिआई हो॥
कहाँ गया लछिमन देवरा,
त हमी न बताया,
त हमी न बताया हो।
हिरदइ भर तुमई क देखत्यन,
नजर भर रोउतेन हो॥
को मोर आंगे पीछे बइठइ,
औ को लट छोरई, औ को लट छोरइ हो।
अब को मोरे जागी रयनिया,

को नारा क छीन्ह हो॥
बन से निकरि बन तपसिन,
सितल समुझामइं, सितल समुझामइ हो
सीतल चलो न हमरे मढ़ुलिया
बिपति तोहरी हरबइ हो॥
हम तोहरे आगे पीछे बइठन,
हमिन लटा बेउरब, हमिन लटा बेउरब हो।
अब हम तोहरी जगब रयनिया
त बिपत निवारब हो॥

जेठ की दोपहर आग की तरह जल रही थी। राम ने सीता जी को महल से निकालकर उनके ऊपर विपत्ति का पहाड़ डाल दिया और लक्ष्मण को आदेश दिया कि तुम सीता को बियावान जंगल में छोड़ आओ। लक्ष्मण ने कहा कि– हे भइया! जो सीता भाभी हमेशा भूखों को भोजन और वस्त्रहीनों को कपड़े बाँटती थीं वे आज गर्भावस्था में हैं उन्हें कैसे जंगल छोड़ने जाऊँ? पर राम का आदेश तो राजाज्ञा थी। वे सीता जी के पास पहुँचे और बोले– हे महारानी सीता भाभी! जंगल से तुम्हारा बुलावा आया है, कल वहाँ चलना है। सुबह रथ चल पड़ा, सीता जी अपने आँचल में सरसों के दाने छींटती हुई चल पड़ी कि जब लक्ष्मण लौटकर आये तो उसे खोटकर भाजी खाते जायें। लक्ष्मण वन में पहुँचकर भाभी से बोले कि– भाभी आप चन्दन वृक्ष के नीचे बैठकर आराम करो।

मैं कहीं से पानी खोजकर ले आऊँ और तुम्हें पिलाऊँ। लक्ष्मण पानी के बहाने वहाँ से चले गये। सीताजी अचेत हो गईं। होश आया तो वे विलाप करने लगीं कि– हे देवर लक्ष्मण! तुम कहाँ चले गये? अब तो इस बियावान वन में कोई मेरा रुदन सुनने वाला भी नहीं।

मेरे शीघ्र ही पुत्र पैदा होने वाला है पर मेरे आगे–पीछे कोई नहीं है जो रात्रि में जागकर मुझे ढाँढ़स बधाये। मेरी लटों को खोलकर साफ करके स्नान कराये और बच्चे का नाल छेदन करे। सीताजी का विलाप सुनकर जंगल की कुछ तपस्विनी निकलकर सीता के पास आईं और उन्हें समझाने लगीं कि– तुम हमारी झोपड़ी में चलो। हम तुम्हारे बालों की लट सुलझाकर उन्हें साफ करेंगे। तुम्हारे साथ रात्रि जागरण करके हर विपत्ति में तुम्हारा साथ देंगी।

गैलहाई

कइसे के धरौं मन धीर रे, मोर दूनौ लाला निकरिगे।
केखर आही बागा बगइचा, केखर आही बागा बगइचा॥
केखर आही फुलवार हो, मोर दूनौ लाला निकरिगे॥
राजा के आहीं बागा बगइचा, राजा के आहीं बागा बगइचा।

रानी के आहीं फलबाग हो, मोर दूनौ लाल निकरिगे॥
कइसे के धरौं मन धीर रे, मोर दूनौ लाला निकरिगे॥

मैं अब किस प्रकार धैर्य धरूँ, मेरे तो दोनों पुत्र परदेश निकले जा रहे हैं। बाग-बगीचा किसके हैं और यह फुलवारी किसकी है ? मेरे दोनों पुत्र वन चले गये। बाग-बगीचा तो राजा के हैं और फूलों की बाड़ी रानी की है। मैं किस प्रकार मन में धैर्य धरूँ, मेरे तो दोनों पुत्र परदेश जा रहे हैं।

गैलहाई

लछिमन लिहे बान रामा हिरनिया मारैं,
जबहीं हिरनिया तलाये बिच आई,
धोबियन के ओट रामा हिरनिया मारैं।
जबहीं हिरनिया कुँवन बिच आई,
घइलन लै ओट रामा हिरनिये मारैं॥
जबहीं हिरनिया बगा बिच आई,
फुलवन लै ओट रामा हिरनिया मारैं॥
जबहीं हिरनिया महल बिच आई,
रनियन लिहे ओट रामा हिरनियै मारैं॥

लक्ष्मण हाथ में बाण लिए हुए हैं और राम हरिणियों को मार रहे हैं। हरिणी जब तालाब के बीच आती है तो वे कपड़े साफ कर रहे धोबियों के ओट से उन्हें मारते हैं। जब मृगी कुआँ के पास आती है तो राम उनके ऊपर पनिहारिनों के घड़े की ओट से बाण चलाते हैं।

जब मृगी बाग के मध्य में आती है तो राम उन्हें फूलों के ओट से बाण मारते हैं। जब हरिणी महल के पास आती है तो राम रानियों की ओट लेकर उनके ऊपर बाण चलाते हैं।

गैलहाई

जमुना तोरी ओट बइरिन बसुरिया बाजी,
गंगा जमुन दूनों बहिनी रे बहिनी,
बहैं लागीं एक साथ बइरिन बसुरिया बाजी॥
चन्दा सुरिज दूनौ बहिनी रे भइया,
उवै लागे दिन रात बइरिन बसुरिया बाजै,
जमुना तोरी ओट बइरिन बसुरिया बाजै॥

हे यमुना नदी! तेरी ओट में बैरन बाँसुरी बज रही है। गंगा और यमुना दोनों सगी बहनें हैं। वे दोनों एक साथ बहने लगीं। चन्द्रमा और सूर्य दोनों सगे बहिन और भाई हैं, वे दोनों एक

दिन में और दूसरा रात्रि में प्रकाश करने लगे। हे जमुना नदी! तेरी आड़ लेकर बैरी बाँसुरी बज रही है।

गैलहाई

जोगियन भये श्याम राधा मिलन के कारन,
पहिली मिलन उनखी बागा म भइहै,
मलिया बने श्याम राधा मिलन के कारन॥
दूसरी मिलन उनकी कुँवना म भईहै,
कहरा बने श्याम राधा मिलन के कारन॥
तिसरी मिलन उनकी ताला म भईहै,
धोबिया बने श्याम राधा मिलन के कारन॥
चउथी मिलन उनकी महला में भईहै,
रजवा बने श्याम राधा मिलन के कारन॥

राधा से मिलने के लिए श्याम ने साधु का भेश बना लिया। उनकी पहली मुलाकात बाग में हुई, तब वे राधा से मिलने के लिए माली बन गये थे। दूसरी मुलाकात उनकी कुआँ में हुई थी जब कृष्ण कहार बनकर पानी भरने गये थे। तीसरी मुलाकात उनकी तालाब में हुई, जब राधा से मिलने के लिए उनने धोबी का रूप रख लिया था। चौथी मुलाकात उनकी महल में हुई, जब वे राजा बनकर वहाँ पहुँचे थे।

गैलहाई

बसत्या है राधा दूर हमसे मिलन कब होई।
एक तो बोलिया प्यारी लागइ, बोलिया प्यारी लागइ,
दूजे खाये बीरा पान हमसे मिलन कब होई॥
एक तो पहिरे रंग सारी, पहिरे रंग सारी।
दूजे गोटा लहरेदार हमसे मिलन कब होई॥
एक तो चलन प्यारी लागइ, चलन प्यारी लागइ।
दूजौ चलै मधुरी चाल हमसे मिलन कब होई॥

हे राधा! तुम हमसे बहुत दूर बसती हो। जाने कब तुमसे मुलाकात होगी। एक तो तुम्हारी बोलने की शैली ही बड़ी प्यारी लगती है और तुम पान का बीड़ा भी खाये रहती हो जो तुम्हारी सुन्दरता को और निखार देता है। हमसे कब भेंट होगी? एक तो तुम रंगीन साड़ी पहनती हो, पर उसे गोटादार किनारी और सुन्दर बना देती है। हमसे कब भेंट होगी? हे राधा! एक तो तुम्हारे चलने से ही तुम्हारी चाल प्यारी लगती है, दूसरे तुम्हारी धीमी चाल अति सुन्दर है।

गैलहाई

बरसत बड़े बूँद सीता कदम तरी भींजैं।
कहाँ गये रामा, कहाँ गये लछिमन,
कहाँ गये हनुमान, सीता कदम तरी भींजैं॥
बन गये रामा बनै गये लछिमन,
लंका गये हनुमान, सीता कदम तरी भींजैं॥
बरसत बड़े बूँद, सीता कदम तरी भींजैं॥

पानी की तेज वर्षा हो रही है, पता नहीं राम और लक्ष्मण कहाँ गये? सीता कदम्ब के नीचे भीग रही हैं। हनुमान का भी पता नहीं है। सीताजी भीग रही हैं। राम और लक्ष्मण वन को चले गये है और हनुमान लंका गये हैं। सीता अकेली कदम्ब पेड़ के नीचे भीग रही हैं। बड़ी-बड़ी बूँदों वाला पानी बरस रहा है और सीताजी कदम्ब पेड़ के नीचे भीग रही हैं।

गैलहाई

बेला फूला आधीरात, गजड़ा मैं केखे गरे डारौं।
राम गरे डारौं, श्री राम गरे डारौं।
सीता रस लेंय, गजड़ा मैं केखे गरे डारौं।
ब्रम्हा गरे डारौं, श्री ब्रम्हा गरे डारौं।
ब्रम्हाणी रस लेंय, गजड़ा मैं केखे गरे डारौं।
शंकर गरे डारौं, शिव शंकर गरे डारौं।
गिरजा रस लेंय, गजड़ा मैं केखे गरे डारौं।
कृष्ण गरे डारौं, श्री कृष्ण गरे डारौं,
राधा रस लेंय, गजड़ा मैं केखे गरे डारौं॥

बेला अर्द्धरात्रि में फूला है, मैं इसका गजड़ा बनाकर किसके गले में डालूँ? यह गजड़ा मैं राम के गले में डालूँगी ताकि उसकी सुगन्ध सीताजी ले सकें। यह गजड़ा मैं ब्रह्माजी के गले में डालूँगी ताकि ब्रह्माणीजी उसकी सुगन्ध ले सकें। यह गजड़ा मैं शंकरजी के गले में डालूँगी ताकि उसकी सुगन्ध पार्वतीजी ले सकें। यह गजड़ा मैं श्री कृष्णजी के गले में डालूँगी ताकि उसकी सुगन्ध राधा जी ले सकें।

गैलहाई

सिया माँगैं बरदान, शिव के मढ़ुलिया भीतर।
दसरथ अइसे ससुरा जो माँगैं।
रानी कौशिल्या सास, शिव के मढ़ुलिया भीतर॥

लछिमन जइसे देवरा जो माँगैं।
बर माँगैं भगमान, शिव के मढुलिया भीतर॥
मइके म माँगैं पाँच बिरनमा।
बहिनी माँगैं अकेल, शिव के मढुलिया भीतर॥

सीताजी शंकरजी के शिवालय में जाकर वरदान माँग रही हैं। वे दशरथजी जैसे ससुर और कौशिल्या जैसी सासू का वरदान माँग रही हैं। वे शंकरजी से लक्ष्मण जैसा देवर, राम जैसा पति माँग रही हैं। वे अपने मायके के लिए पाँच भाई माँग रही हैं पर बहिन एक ही चाह रही हैं।

गैलहाई

गेंदा क फूल कहाँ पाऊँ रे,
इं रामा गेंदा क बिरझे।
गेंदा क फूल मोरे ससुरा की बगिया,
सासा टोरन नहिं देंय रे,
इं रामा गेंदा क बिरझे॥
गेंदा का फूल मोरे जेठा के बगिया,
जेठी टोरन नहिं देंय रे,
इं रामा गेंदा क बिरझे॥
गेंदा क फूल मोरे देवरा के बगिया,
लहुरी टोरन नहिं देय रे,
इं रामा गेंदा क बिरझे॥

गेंदा का फूल कहाँ मिले, हमारे राम गेंदा का फूल लेने के लिए जिद कर रहे हैं। गेंदा के फूल मेरे सासूजी की बगिया में हैं, पर सासू तोड़ने नहीं देती। गेंदा के फूल मेरे जेठजी के बाग में हैं, पर जिठानी तोड़ने नहीं देती। हमारे राम गेंदा का फूल लेने की जिद कर रहे हैं। गेंदा के फूल मेरे देवर के बाग में हैं, पर देवरानी तोड़ने नहीं देती।

गैलहाई

ककना कै जोड़ी दोहरिया हो, नदी नारे बिसरिगै।
जो सुन पइहैं ससुरा हमारे,
हिरकइं न देइहीं डेहरिया हो, नदी नारे बिसरिगै।
जो सुनि पइहैं जेठा हमारे,
हिरकइं न देइहीं ओसरिया हो, नदी नारे बिसरिगै।
जो सुनि पइहैं देवरा हमारे,

हिरकइं न देइहीं बरोठबा हो, नदी नारे बिसरिगै।
जो सुनि पइहइं सइंयाँ हमारे,
हिरकइं न देइहीं अटरिया हो, नदी नारे बिसरिगै।

मेरी कंगन के साथ में पहनने वाली दोहरिया नदी नाले में नहाते समय गिर गई। यदि मेरे ससुरजी को पता चल गया तो वे द्वार की चौखट में पैर नहीं रखने देंगे। यदि मेरे जेठजी को उसका पता चल गया तो वे मुझे बरामदे में पैर नहीं रखने देंगे। यदि मेरे देवर को पता चल गया तो वे मध्यकोष्ठ में पैर न रखने देंगे। पर अगर मेरे पति को उसका पता चल गया तब तो वे अपनी अटारी में ही नहीं आने देंगे। मेरे कँगन के साथ पहनने वाली दोहरिया नदी में नहाते समय घाट पर भूल गई।

दादर

घन अमरइया कोइल कहाँ बोलइ रे,
सास माँगइ लहँगा ननद माँगइ लुँगरा,
सइयाँ माँगइ पागा रँगई कहाँ पाऊँ रे।
सास माँगइ खटिया, ननद माँगइ मचिया,
सइयाँ माँगइ माँचा बिनाई कहाँ पाऊँ रे॥

घन अमरइया कोइल कहाँ बोलइ रे।
सास माँगइ आमा ननद माँगइ अमली,
सइयाँ माँगइ निब्बू रसील कहाँ पाऊँ रे।
सास माँगइ ककना ननद माँगइ पहुँची,
सइयाँ माँगइ गजड़ा गुहाई कहाँ पाऊँ रे॥

आम के बाग की सघन अमराई में कोयल कहाँ बोल रही है? सासू जी लहँगा माँग रही हैं और ननद चुनरी तथा मेरे पति सिर की पगड़ी माँग रहे हैं। पर उसके रंगई के लिए मेरे पास पैसे ही नहीं हैं।

मेरी सासूजी खाट, मेरी ननद मचिया तथा मेरे पति पलंग माँग रहे हैं, पर मैं बुनाई के लिए पैसा कहाँ से पाऊँ? सासू मेरी आम माँग रही हैं और ननद इमली। मेरे सइयाँ नींबू माँग रहे हैं पर मैं रसील नींबू कहाँ से पाऊँ? मेरी सासू कंगन, ननद पहुची और मेरे पति गजरा माँग रहे हैं, पर उसके गूँथने के लिए पैसा कहाँ से मिले?

दादर

गुलाब जइसन फूल, राम दीन्हिन ललनमा।
सोवरी पोतन का ननद रानी अइहैं,

नजर लग जइहैं, राम दीन्हिन ललनमा॥
पिपरी पिसन का सास रानी अइहैं,
नजर लग जइहैं, राम दीन्हिन ललनमा॥
पेड़ा बँधन का जेठानी रानी अइहैं।
नजर लग जइहैं, राम दीन्हिन ललनमा॥
बिलुरी रँधन का देउरानी मोरी अइहैं।
नजर लग जइहैं, राम दीन्हिन ललनमा॥
गुलाब कइसा फूल, राम दीन्हिन ललनमा।

भगवान ने मुझे गुलाब के फूल जैसा सुकुमार और सुन्दर पुत्र दिया है, पर सोवर पोतने के लिए मेरी ननद आयेंगी। कहीं उनकी दीठ (नजर) न लग जाय। दस मूल का काढ़ा बनाने के लिए मेरी सासूजी आयेंगी, पर मेरे सुन्दर सुकुमार को देखकर कहीं उनकी नजर न लग जाय।

गुड़ के लड्डू (पीड़ा) बाँधने के लिए मेरी जेठानी जी आयेंगी, पर मेरे सुन्दर सुकुमार को देखकर कहीं उनकी नजर न लग जाय। चावल राँधने के लिए मेरी देउरानीजी आयेंगी, मेरे गुलाब के फूल जैसे सुन्दर ललन को देखकर कहीं उनकी नजर न लग जाय।

दादर

ककनमा मांगइ ननदी लाल की बधाई,
य है ककना मोरे बाप कै कमाई,
रूपइया लइले ननदी लाल की बधाई॥
य है रूपिया मोरे ससुरा की कमाई,
अठन्नी लइले ननदी लाल की बधाई॥
य है अठन्नी मोरे जेठा की कमाई,
चवन्नी लइले ननदी लाल की बधाई॥
य है चवन्नी मोरे देवर कै कमाई,
दुअन्नी लइले ननदी लाल की बधाई॥
य है दुअन्नी मोरे सइयाँ कै कमाई,
एकन्नी लइले ननदी लाल की बधाई॥
य तो एकन्नी है मोरी कमाई,
कुतक्का लइले ननदी लाल की बधाई॥
य है कुतक्का मेरी खुद की कमाई,
दुई डण्डा लइले ननदी लाल की बधाई॥

पुत्र प्राप्ति के बधाई नेग में ननद कंगना माँग रही हैं। यह कंगना मेरे पिताजी का दिया हुआ

है। ननद तुम रुपिया ले लो, मैं ककना नहीं दूँगी। यह रुपया मेरे ससुरजी का कमाया हुआ है, इसलिए– हे ननदी! तू बधाई के नेग में अठन्नी ले लो। पर अठन्नी भी मेरे जेठ की कमाई है, मैं उसे भी कैसे दे सकती हूँ? इसलिए– हे ननदी! तू नेग में चार आने का सिक्का ले लो। यह चवन्नी भी मेरे देवर की कमाई से मिली है, इसलिए– ननदी! तू नेग में दुवन्नी ले लो। पर यह दुवन्नी भी कैसे दूँ? यह तो मेरे पति की कमाई है, इसलिए एक आने का सिक्का ले लो। पर ये एकन्नी तो मेरी कमाई है, इसलिए तू ठेंगा ले लो, पर मैं उसे भी न दूँगी बल्कि नेग में दो डण्डे लगाऊँगी।

दादर

मैं हौं अकेली राजा सबै न लुटाय दिहा,
सोवरी पोतन का ननदी क बोलाय लिहा।
ओऊँ न आमैं मोरे बहिनी क बोलाय लिहा॥
मैं हौं अकेली राजा सबै न लुटाय दिहा।
पिपरी पिसन क ससुइया क बोलाय लिहा,
ओऊँ न आमैं मोरी माया क बोलाय लिहा॥
मैं हौं अकेली राजा सबै न लुटाय दिहा,
पीड़ा बाँधन क जेठानी क बोलाय लिहा,
ओऊँ न आमैं मोरी भउजी क बोलाय लिहा,
पछितिया बोलैं क देवरा क बोलाय लिहा,
ओऊँ न आमैं मोरे भइया क बोलाय लिहा॥
मैं हौं अकेली राजा सबै न लुटाय लिहा।

हे स्वामी! मैं अकेली हूँ इसलिए सारी सम्पत्ति इनाम में मत लुटा देना। सौर घर पोतने के लिए मेरी ननद को बुला लो, पर वे अगर आने में थोड़ा भी देर करें, तो मेरी बहिन को ही बुला लाना। पिपरी पीसने (दसमूल का काढ़ा) के लिए मेरी सासूजी को बुला लेना, पर अगर वे आने में थोड़ा भी आना-कानी करें, तो तुम मेरी माताजी को ही बुला लाना। मैं अकेली हूँ इसलिए सारी गृहस्थी मत लुटा देना। लड्डू बाँधने के लिए मेरी जेठानी को बुला लेना, पर अगर वे आने में आना-कानी करें, तो फिर मेरी भाभी को ही बुला लेना। घर के पिछवाड़े बोलने और घड़ा उतारने के लिए मेरे देवर को कह देना, पर अगर वे आने में आना-कानी करें, तो मेरे भइया को ही बुलवा लेना। मैं अकेली हूँ इसलिए हे स्वामी! सारी गृहस्थी मत लुटा देना।

दादर

जनमा है राज दुलारा मैं बारिजाव,
यसुदा के आँखन क तारा मैं बारिजाव।
सुभ दिन माही ललना जनमें,

सबके आँखन क तारा मैं बारिजाव।
मइया झुलावै ललना क पलना,
आँखिन कजरा है प्यारा, मैं बारिजाव॥

हे यशोदा! तेरे जनमे हुए पुत्र की मैं बलैयाँ ले रही हूँ। यह बड़े ही शुभ घड़ी में पैदा हुआ है और सबके आँखों का तारा है। तू उसे पलने में झुला रही है। इसके आँख में लगा काजल बड़ा प्यारा लगता है। मैं बलैयाँ ले रही हूँ।

दादर

जुग-जुग जियइं हो ललनमा, हम घरै जई।
जइसै बढ़ै गंगा जमुना क पानी,
ओइसै बढ़इ हो ललनमा, हम घरै जई॥
जइसै तेज चन्दा-सुरिज क होत है,
तइसै बढ़इ तोर य ललनमा, हम घरै जई॥
बड़ी उमिरिया होय ललना कै,
नाव करै सगले जहनमा, हम घरइ जई॥

हे बहिन! तुम्हारा यह नौनिहाल युग-युग तक जीवित रहे। हम बधाई देकर घर जा रहे हैं। जिस प्रकार गंगा और यमुना का पानी बढ़ता है, उसी प्रकार तेरा यह पुत्र बढ़े। जिस प्रकार प्रकाश सूर्य और चन्द्रमा में रहता है उसी प्रकार तेजवान यह तेरा पुत्र हो। हम बधाई देकर घर जा रहे हैं। तेरे पुत्र की उम्र बढ़े और वह सारे संसार में अपना नाम रोशन करे। यही आशीष देकर हम घर जा रहे हैं।

मुण्डन

अरी मचियन बइठे है अजबा,
त नतिया अरज करै, नतिया बिरज करै हो।
बाबा झलरी तो छेंकइ लिलरबा,
झलरि मउराबा हो॥
मचियन बइठे हैं पितिया,
त पुतबा अरज करै, पुतबा बिरज करै हो।
काका झलरी तो छेंके लिलरबा,
झलरि मउराबा हो॥
मचियन बइठे हैं बपबा,
त पुतबा अरज करै, पुतबा बिरज करै हो।
दादा झलरि तो छेंके लिलरबा,

झलरि मउराबा हो॥
खाड़िन गोहुआ पिसउबै,
मइदा झोलबउवै, मइदा झोलबउवै हो।
अब नेउतब कुल परिवार,
झलरिया जग रोपबइ हो॥
केखर चुटकी खियानी, चन्दनमा के रगड़त हो।
अब केखर मोती लर टूटी, झलरिया के परछत हो॥
फूफा कै चुटकी खियानी,
चन्दनमा के रगड़त, चन्दनमा के रगड़त हो।
अब फूफै के मोती लर टूटी,
झलरिया के परछत हो॥

मोढ़े पर बाबा बैठे हैं तो उनका पोता उनसे विनय कर रहा है कि- हे बब्बा! मेरे सिर के बाल बार-बार मेरे माथे को ढँक लेते हैं, इसलिए आप मेरा मुण्डन करा दीजिए। मोढ़े में चाचा बैठे हैं, उनका भतीजा विनय कर रहा है कि- चाचाजी! मेरे सिर के बड़े-बड़े बाल मेरे माथे को ढँक लेते हैं, इसलिए मेरा शीघ्र ही मुण्डन कराओ।

इसी प्रकार बालक अपने पिता से मुण्डन के लिए विनय करता है कि- मेरे सिर के बड़े-बड़े बाल मेरे माथे को ढँक लेते हैं, इसलिए मेरा मुण्डन करा दो। बाबा ने कहा कि- हम कुन्टलों गेहूँ पिसाकर उसका मैदा (महीन आटा) निकलवायेंगे और मुण्डन संस्कार का उत्सव करेंगे। और सारे कुटुम्ब-परिवार को निमंत्रण देंगे। मुण्डन संस्कार के बाद बालक के माथे में चन्दन रगड़ने में किसकी अँगुलियों को बल पड़ा और बाल की लटों को अलग करने में किसके मोतियों का हार टूट गया है? बच्चे के फूफा की अँगुलियाँ चन्दन रगड़ने में घिस गईं और उन्हीं के मोतियों के हार की लड़ी सिर के बाल अलग करते समय टूटी थी।

मुण्डन

हँसि बोली पूछइ फलाने रामा,
पूछइ फलाने रामा हो।
फूफू कउने गहनमा कै साध,
झलरिया निउछाबरि हो॥
रांगा पीतर पहिरइं बनिनियां,
कि पहिरइं कलनिया, कि पहिरइं कलनिया हो।
बेटा पियर मोहरबा कै साध,
झलरिया निउछाबरि हो॥
हँसि-हँसि पूछइ फलाने रामा,

पूछइ फलाने रामा हो।
फूफू कउने ओढ़नमा कै साधि,
झलरिया निउछाबरि हो॥
लाल पियर पहिरइ बानिन,
य पहिरइं कलारिन, य पहिरइं कलारिन हो।
हमहीं सेंत कपड़बा कइ साध,
झलरिया निउछाबरि हो॥

भतीजे का मुण्डन संस्कार हो रहा है, वह अपने बुआ से कहता है– बुआ! तुम्हें मेरे मुण्डन के न्योछावर में कौन से गहने की इच्छा है? बुआ ने कहा– बेटा! मुझे सोने की मोहर पहनने की इच्छा है। भतीजा हँसकर पुन: पूछता है कि– बुआ! तुम्हें मेरे मुण्डन के न्योछावर में किस तरह के कपड़े पहनने की इच्छा है? बुआ ने कहा– मुझे तो श्वेत वस्त्र पहनने की इच्छा है।

मुण्डन

दुवरा म बइठे हैं बाबा फलाने रामा,
गोदी बइठे नतिया अरज करै लाग।
झलरिया मोरी उलरू, झलरिया मोरी झुलरू।
झलरिया सिर झुकइ लिलार॥
नतिया से बाबा अरज करै लाग,
सुना भइया आमै देव बसंत बहार,
झलरिया हम देवइ मुड़ाय॥
फुफुआ जो अइहैं मोहर पाँच देबइ,
झलरिया सिर देबइ मुड़ाय॥
दुवरा म बइठे हैं बपबा फलाने रामा,
गोदी बइठे बेटबा अरज करै लाग,
झलरिया मेरी उलरू, झलरिया मेरी झुलरू।
झलरिया सिर झुकइ लिलार॥
बेटबा से बपबा अरज करै लाग,
आमई दे बेटा बसंत बहार।
फुफुआ जो अइहैं करन फूल देबई,
झलरी सिर देबई मुड़ाय।
दुवरा म बइठे हैं ककबा फलाने रामा,
गोदी भतिजबा अरज करै लाग।
झलरिया मोरी उलरू झलरिया मोरी झुलरू,

झलरिया सिर झुकई लिलार।
काका झलरी मोरी देऊ मुड़ाय।
बेटा से काका अरज करै लाग,
सुना बेटा बात हमार
फुफुआ जो अइहैं जेबर दई देबई।
झलरिया सिर देबई मुड़ाय।

द्वार पर बच्चे के बाबा बैठे हैं। गोद में बैठा उनका पोता कहने लगा– बब्बा! मेरे सिर के बड़े–बड़े बाल माथे तक झूल रहे हैं। बाबा ने कहा– पोते! तू थोड़ा धैर्य रख और वसंत ऋतु आ जाने दे, हम तेरा मुण्डन करा देंगे। तुम्हारी फूफू आयेंगी तो उसे नेग में पाँच स्वर्ण मुद्राएँ देंगे। और मुण्डन करा देंगे। द्वार में बच्चे के पिताजी बैठे हैं उनका पुत्र गोदी में बैठा–बैठा कहने लगा– पिताजी! मेरे सिर के बड़े–बड़े बाल माथे तक झूल रहे हैं और सारा सिर बालों से ही ढँका रहता है, इसलिए आप मेरा मुण्डन करा दें। पुत्र की बातें सुनकर पिता ने कहा– बेटा! बसंत ऋतु आ जाने दो। हम तुम्हारा मुण्डन संस्कार करेंगे और तुम्हारी फूफू नेग माँगेगी, तो उसे कर्ण फूल देंगे। इसी प्रकार बालक अपने चाचा से कहता है।

बरुआ

ऊँच चउरबा नबा घर, जहाँ खम्हा कुँदेर के भाये हो।
ओही म ओढ़की उनकी माया, सुना पिया बिनती हो॥
पँचयें म लगिगा दुलेरुवा, बरुआ कइ डारित हो॥
काशी क पंडित बोलउबै, सुदिन बन बउबै हो।
काशी क सोनरा बोलउबै, पंच रतनी गढ़उबै हो।
काशी क मलिया बोलउबै, त मउरी मंगउबै हो॥
काशी क दर्जी बोलउबै, त जामा सिबउबै हो॥
काशी का लोहरा बोलउबै, त कंगन बनवउबै हो॥
ऊँची चउरबा नबा घर, जहाँ खम्हा कुँदेर के भाये हो।

नये मकान के द्वार में ऊँचा चबूतरा बना है। उस नये मकान में बेलबूटेदार लकड़ी के खम्भे लगे हैं उसी के सहारे बैठी लड़के की माँ अपने पति से विनय कर रही है कि– मेरा पुत्र अब पाँच वर्ष का हो गया है, उसका व्रतबन्ध कर दीजिए।

उसके पति ने कहा– हम काशी का पंडित बुलवाकर उससे मुहूर्त्त निकलवायेंगे। वहीं का स्वर्णकार बुलवाकर पंचरतनी (पाँच रत्न जड़ित ताबीज) बनवायेंगे। काशी का ही माली बुलवाकर उससे मौर लाने को कहेंगे और वहीं के दर्जी से लड़के के लिए पोशाक सिलायेंगे तथा काशी का लोहार ही उसके लिए कंगन बनाकर लायेगा।

बरुआ

प्राण पियारे ललनमा हो, परदेशा निकरि गे।
खाँय क मागइं पेड़ा-मिठइया,
मुँह पोंछइ का मागइं अंगउछी हो।
परदेशा निकरि गे।
घूटइं का मागइं सोने के गेडुआ,
चढइं क लीला बछेड़बा हो।
परदेशा निकरि गे।

प्राणों से भी अधिक प्यारे मेरे ललन निकलकर परदेश जा रहे हैं। वे खाने के लिए पेड़ा की मिठाई और मुँह पोंछने के लिए अंगरखा माँग रहे हैं। वे पानी पीने के लिए सोने का लोटा और सवारी के लिए लीला बछेड़ा माँग रहे हैं।

बरुआ

जउने बन सिकिया न डोलइ, कोइलिया नहीं बोलइ हो।
अब तउने बन गये हैं दुलेरुआ, हेरइं क मृगछाला हो।
हेरे मिरग नहीं पामइं, बनै बन भटकइ हों।
अब घामा लगइ सिर ऊपर, पाँयन लागइ भूँभुर हो।
फलाने रामा बपना हो,
अब गलियन क्षत्र तनाबा, न लागइ घाम भूँभुर हो।
जउन बन सिकिया न डोलइ, हवा नहीं झुरखइ हो।
अब तउने वन चले हैं दुलेरुवा, हेरइं क मृगछाला हो।
काका फलाने रामा काका हो,
तुमहिन गइल क्षत्र तनावा, लगइ न घामा भूँभुर हो।

जिस वन में एक तिनका तक नहीं हिलता और कोयल नहीं बोलती हैं, अब उस वन में दुलारे पुत्र मृगछाला खोजने गये हैं। खोजने से मृगछाला नहीं मिला तथा जंगल में भटकते-भटकते अब सिर पर धूप और जमीन के गर्म होने से पैर के तलवे जलने लगे। ऐसी स्थिति में अमुक (नाम) के चाचा और पिता अपने बेटे को धूप और तपती भूमि से बचाने के लिए रास्ते में छतरी लगवाइए।

बरुआ

खेतबा बोवाया फलाने राम,
जहां हीरा मोती उपजइ हो।

मोतिया क अरझे दुलरूआ, हिरा मोती लेबइ हो।
बपबा तो दउरइ झिकझोर, मया हिरदइ लगामइ हो॥
आबा ललन हमरे कनिया, हिरा मोती देबइ हो॥
खेतबा बोवाया फलाने रामा, जहाँ हीरा मोती उपजइ हो।
मोतिया क अरझे दुलेरुवा, आजी हीरा मोती लेबइ हो॥
आजा उनके धउरैं झिकझोर, आजी हिरदै लगामइं हो॥
आबा ललन हमरे कनिया, त हीरा मोती देबइ हो॥
मोतिया क बिरझे दुलेरुवा, काकी हीरा मोती लेबइ हो।
काका उनके झिकझोरइ, काकी हिरदइ लगामइ हो।
आबा ललन हमरी कनिया, हीरा मोती देबइ हो।

हे अमुक जी! आपने वह खेत बुवाया है जहाँ हीरा-मोती की पैदावार होती है। दूल्हे हीरा-मोती लेने की जिद कर रहे हैं। उनके पिताजी झिड़क कर दौड़ते हैं, पर उनकी माता ने हृदय से लगाकर कहा- आओ बेटा! मेरी गोद में बैठो। मैं तुम्हें हीरा-मोती दूँगी।

हे अमुक जी! आपने वह खेत बुवाया है जहाँ हीरा-मोती की पैदावार होती है। दूल्हे हीरा-मोती लेने की जिद कर रहे हैं उनके बाबा तो नाराज होकर दौड़े, पर उनकी दादी माँ हृदय से लगाकर बोली- बेटा! तुम मेरी गोद में बैठो। मैं तुम्हें हीरा-मोती दूँगी।

मोती के लिए दुलेरुवा जिद कर रहे हैं, चाची मैं हीरा-मोती लूँगा। उनके चाचा तो झिकझोर कर दौड़े, पर चाची ने हृदय से लगाकर कहा- बेटा! तुम आओ और मेरी गोद में बैठो। मैं तुम्हें हीरा-मोती दूँगी।

बरूआ

कजरी के बन एक नरियर, कउन गुन हरियर हो।
धरमी है उनके अजबा फलाने रामा, नरियर उन्हिन गुन हरियर हो।
कजरी के बन एक नरियर, कउन गुन हरियर हो।
धरमी है उनके बपबा फलाने रामा, नरियन उन्हिन गुन हरियर हो।
कजरी के बन एक नरियर, कउन गुन हरियर हो।
धरमी है उनके काका फलाने रामा, नरियर उन्हिन गुन हरियर हो॥

कदली वन में एक नारियल का पेड़ है, पर वह पता नहीं किसके प्रताप से हरा है ? वर के बब्बा धर्म को मानने वाले हैं, शायद इसीलिए वह पेड़ हरा है। कदली वन में एक नारियल का पेड़ है पर पता नहीं वह किसके प्रताप से हरा है? वर के पिताजी बड़े ही धर्मिष्ठ हैं। शायद इसी से वह नारियल हरा है। कदली वन में एक नारियल का पेड़ है पर वह पता नहीं किसके प्रताप से हरा है? वर के चाचाजी धर्म को मानने वाले हैं। शायद इसीलिए वह पेड़ हरा है।

निमंत्रण

हरे-हरे पर्वत सुवना, नेउता दइ आबा हो॥
गाँव क नाव न जानव, ठाकुर नहि चीन्हव हो॥
गाँव क नाव अजुध्या, ठाकुर राजा दसरथ हो।
हरे-हरे पर्वत सुवना, नेउता दइ आवा हो॥
पहिल नेउत राजा दसरथ, दुसर कौशिल्या रानी हो।
तीसरा नेउता चारिउ भइया, तीनौ दल आमइ हो॥
हरे-हरे पर्वत सुवना, नेउता दइ आवा हो॥

हे पर्वत के हरे रंग के तोता! तुम हमारा निमंत्रण पहुँचा आओ। तोता ने कहा कि- न तो मैं गाँव का नाम जानता और न ही आपके रिश्तेदार राजा को पहचानता हूँ। गाँव का नाम अयोध्या और राजा का नाम दशरथ है। इसलिए हे पर्वत के हरे तोता! तुम निमंत्रण दे आओ। पहला निमंत्रण तुम राजा दशरथ को देना, दूसरा रानी कौशिल्या को और तीसरा निमंत्रण चारों भाइयों को देना, जिससे तीनों दल यहाँ पधारें। हे पर्वत के हरे-हरे तोता! तुम निमंत्रण दे आओ।

मागर माटी

करबा के ऊपर दुइ बिछुआ, दइया दइया हो लाल।
जे खोदे ओखे चाबिस दुइ बिछुआ, दइया दइया हो लाल।
ओखर भाई उतारह दुइ बिछुआ, दइया दइया हो लाल॥
करबा के ऊपर दुइ बिछुआ, दइया दइया हो लाल॥

करबा के ऊपर दो बिच्छू बैठे, जिसने मागर माटी खोदा, उसे दोनों बिच्छुओं ने काट खाया। उसके भाई ने मंत्र पढ़कर बिच्छुओं के डंक को उतारा। हाय दइया! करबा के ऊपर दो बिच्छू बैठे हैं।

तिलक

एतना तिलक हमी काँकर पाथर, नहि पहिरइया के जोग।
यतना तिलक मोंहीं मनहि न भावइ, बरु रामा रहिंहीं कुमार॥
असिया मने कै राजा थरिया मँगाइन, नौ मन केर जनेऊ।
लाख रुपइया राजा रोंक लइ आये हो, राम क तिलक चढ़ाव॥
हँसि-हँसि अँगना लिपामइं कौशिल्या रानी, गजमोतिन चउक पुराव।
सोने क कलसा अगनमा धरामइं, राम जी क तिलक चढ़ाव॥

राजा दशरथ तिलक की सामग्री देखकर कहते हैं कि- यह तिलक हमारे लिए तुच्छ कंकड़-पत्थर के समान है। हम इतने कम तिलक में विवाह नहीं करेंगे, भले ही हमारे राम

कुँवारे रह जायें। राजा जनक ने दशरथ की बात सुनकर अस्सी मन की थाली मँगाया और नौ मन का जनेऊ, साथ ही एक लाख रुपये नगद थाल में रखा, तब राम का तिलक सम्पन्न हुआ।

तिलक के समय कौशल्या जी ने हँस-हँस कर आँगन लिपाया और मोतियों का चौक पुराकर उसमें सोने का कलश रखा गया तब राम का तिलक चढ़ा।

तिलक

काह तैं तिलक चढ़ाये मोरे बाबुल, नंचौ बेलम नहि लाग।
पाँच परग जिमिया नगर अजुध्या, दुइ वर राज कुमार।
का देखि मोरे बाबुल आसन मारे, का देखि रहेय लुभाय।
का देखि के बाबुल हमहीं बियाहे, भल मति मारी तोहार॥
मचिया बइठ माया ककरी बेसाहै, नहिं जानइ करुई कि मीठ।
नगर पइठि बेटी हम वर ढूँढ़ेन, नहिं जानी करम तोहार॥

पुत्री ने पिता से कहा कि- पिताजी! आपने कैसे तिलक चढ़ाया कि जरा भी देरी नहीं लगी। पिता ने कहा- पाँच परगने की अयोध्या नगरी है, जहाँ दो श्रेष्ठ राजकुमार हैं। पुत्री ने पुनः कहा कि- क्या देखकर आप वहाँ बैठ गये थे और प्रसन्न हो गये? क्या देखकर आपने मुझे ब्याह दिया, आपकी बुद्धि कहाँ खो गई?

पिता ने कहा- मचिया में बैठी तुम्हारी माता ने ककड़ी खरीदा, पर उसे क्या मालूम कि वह कड़वी है अथवा मीठी ? मैंने नगर में जाकर अच्छा वर तलाश किया, वह स्वभाव से कैसा है? यह तुम्हारी किस्मत जाने।

मण्डप

अनइन वन केरी कनई मँगाइन, वन बिन्द्रा केर बाँस।
ओही क मोरे बाबा मँड़बा छबाइन, धरम क राखि दुवार॥
बेदी रचाइन माँय धराइन, छाइन हरियर बाँस।
ओहि तरी बइठे है बेटी के बाबा, पूजै सकल परिवार॥
भतबा रांधाय बाड़ा पगरा उचाइन, बरा केरी ओंसरी बनाय।
धिउ कै मिढुलियां मड़ये तर धइके, दीन्हिन तेहि दह बोरि॥
पाँच भोहरि कै सुपरिया मँगाइन, नेउतिन कुल परिवार।
पहिले नेउतिन गया के गजाधर, दुसरे अयोध्या के राम॥
तिसरे म नेउतिन जगत की जननी, मोर जग पूरन होय।
का चढ़ि आमइं गया के गजाधर, का चढ़ि आमइं राम।
का चढ़ि आमइं जगत की जननी, मोर जग पूरन होय॥

बियावान जंगल से बाँस की पतली-पतली डालें मँगाई गईं और वृन्दावन से बाँस मँगाये गये। उसी से कन्या के दादा ने मण्डप छबाया और द्वार पर एक धार्मिक कार्य किया। वेदी रचाया, घड़े में माँय (आटे की गोलियाँ) भराया, जहाँ हरे बाँस का मण्डप छाया है। उसी के नीचे बेटी के दादा सम्पूर्ण परिवार के साथ पूजा कर रहे हैं। चावल इतना राँधा गया कि उसकी दीवाल बन गई और बड़ा इतने बनाये गये कि ओंसरी खड़ी हो गई। घी का बड़ा भारी बर्तन मण्डप के नीचे रखकर बड़ों को उसी में डाल दिया। पाँच स्वर्ण मुद्राओं की सुपाड़ी मंगाया जिससे सम्पूर्ण परिवार कुटुम्ब को निमंत्रण दिया। सबसे पहले न्यौता गया के गदाधर भगवान को दूसरा अयोध्या के राम को, तीसरा जगत जननी माँ दुर्गा को दिया। गया के गदाधर किसके ऊपर सवार होकर आयेंगे और भगवान राम किसमें ? माँ दुर्गा किसमें चढ़कर आयेंगी कि मेरा यज्ञ पूरा हो ?

मण्डप

सेमी क मड़वा झाला रे, अरहर कै पाती।
कहना केरी कमटी रे, कहना की थून्ही।
कहना केर डरइया रे, अरहर कै पाती॥
बिन्दावन की कमटी रे, गोकुला की थून्ही।
फलाने गाँव केर डरबइया रे, अरहर कै पाती॥

सेम के फैलने के लिए जिस तरह मण्डप बनता है उस तरह का मण्डप का झाला बनाया गया है, जिसमें अरहर की पत्तियाँ डाली गई हैं। बाँस की कमटी कहाँ से लाई गई है और उसके आधार के लिए खम्भे कहाँ से लाये गये हैं ? उसे डालने के लिए किस गाँव के लोग बुलाये गये हैं ? कमटी वृन्दावन से मँगवाई गई हैं, थून्ही (खम्भे) गोकुल से बुलवाये गये हैं और डालने वाले अमुक गाँव के हैं।

मण्डप

चलो सखी देखन चलिए रे, जहाँ मड़वा परति है।
कुम्हरा के बालक तैं मोरे भइया,
अच्छे-अच्छे कलसा लयाइये, जहाँ मड़वा परति है।
चलो सखी देखन चलि रे, जहां मड़वा परति है।
बढ़ई के बालक तै मोरे भइया,
अच्छे-अच्छे खम्हा लयाइये हो, जहाँ मड़वा परति है।
मलिया के बालक तैं मोरो भइया,
अच्छी-अच्छी मउरी लयाइये, जहाँ मड़वा परति है।
दरजी के बालक तैं मोरे भइया,

अच्छे-अच्छे जामा लयाइये, जहाँ मड़वा परति है।
लोहरा के बालक तैं मोरे भइया,
अच्छे-अच्छे कंगन लयाइये, जहाँ मड़वा परति है।

हे सखी! चलो, वहाँ चलकर देखें, जहाँ मण्डप डाला जा रहा है। कुम्हार के बालक तू मेरे भइया के समान है। तू अच्छे-अच्छे कलश ले आओ। बढ़ई के बालक! तू मेरे भाई की तरह है। तू वहाँ अच्छा सा खम्हा (मगरोहन) लाना, जहाँ मण्डप डाला जा रहा है। माली के बेटे! तू मेरे भइया के समान है, तू वहाँ अच्छी सी मौर लाना, जहाँ मण्डप डाला जा रहा है। दर्जी के बालक! तू मेरे भाई के समान है, तुम अच्छा सा जामा जोड़ा (दूल्हे की पोशाक) लाना, जहाँ पर मण्डप पड़ रहा है। लोहार के पुत्र! तू मेरे भाई की तरह है, तू वहाँ अच्छे-अच्छे कंगन लेकर आना, जहाँ मण्डप पड़ रहा है।

मंत्री पूजा

दुलहा बाबा नेउता ल्या, आज हमारे मइहर है।
आँधी-पानी नेउता ल्या, आज हमारे घर मइहर है।
माछी-कूछी नेउता ल्या, आज हमारे मइहर है।
बीछी-कूछी नेउता ल्या, आज हमारे घर मइहर है।
चींटी-माटा सब नेउता ल्या, आज हमारे घर मइहर है॥
खेर भमानी नेउता ल्या, आज हमारे मइहर है॥

हे दूल्हे देव! तुम निमंत्रण स्वीकार करो, क्योंकि आज हमारे यहाँ मंत्री पूजा है। आँधी-तूफान और पानी तुम भी निमंत्रण स्वीकार करो, क्योंकि हमारे यहाँ मंत्री पूजा है। मक्खी-मच्छर तुम भी निमंत्रण स्वीकार करो, क्योंकि हमारे यहाँ मंत्री पूजा है। बिच्छू-बर्र तुम भी निमंत्रण स्वीकार करो, क्योंकि हमारे यहाँ मंत्री पूजा है। खेर-भवानी तुम भी निमंत्रण स्वीकार करो, क्योंकि हमारे यहाँ मंत्री पूजा है।

तेल चढ़ाई

तेलिया क तेल महँग भयो बाबा, को तेलिया घर जाय।
फूफू फलाने देई बहुत पियारी, ओंई तेलिया घर जाँय।
तेलिया बेटउना हबै बड़ा अड़ियल, लिहिस फुफुइयै चढ़ाय॥
बनिया कै हरदी महँग भै बाबा, को बनिया घर जाय।
काकी फलानी देई बहुत पियारी, ओंई बनिया घर जाँय।
बनिया बेटउना है बड़ा अड़ियल, लिहिस तरजुवा चढ़ाय॥
कुँवना कै दूब महँग भई बाबा, को रे लयामइं जाय।
दुलहे कै बहिनी हबइ सोहागिन, कुँवना से दुबिया लयाय॥

तेल महँगा हो गया, अब कौन बेचने वाले के यहाँ तेल लेने जाये? वर की बुआ बहुत सुन्दर हैं, वही तेल लेने के लिये जायें। बनिया की हल्दी महँगी हो गई, अब उसे खरीदने कौन जाये? वर की काकी बहुत सुन्दर हैं, वही हल्दी लेने जायें। कुआँ की दूब महँगी हो गई, उसे लाने के लिये कौन जाये? दूल्हे की बहिन कुँवारी हैं, वही कुआँ से दूब ले आयें।

वर प्रस्थान

अँखियाँ दुइ लड़िहइं रे हजारी बना,
हरियारे बना मउरैं सम्हारउ जलदी से,
मोतियाँ लीन्हें माई तो खड़ी रे जलदी से।
अँखियाँ दुइ लड़िहइं रे हजारी बना,
हरियारे बना चूड़ा सम्हारउ जलदी से॥
फेंटा लिहे माई तो खड़ी रे हजारी बना,
हरियारे बना तेगा सम्हारो जलदी से,
पनही लिहे माई तो खड़ी रे हजारी बना,
हरियारे बना पनही सम्हारो जलदी से।
अँखियाँ दुइ लड़िहइं रे हजारी बना॥

हजारों में एक वर की दोनों आँखें लड़ गईं हैं। हे प्यारे वर! तुम अपनी मौर सम्हालो, तुम्हारी माँ उसमें लगाने के लिए मोतियाँ लिए खड़ी हैं। हे प्यारे दूल्हे! तुम अपना चूड़ा सम्हालो, माँ कंगन हाथ में लिए खड़ी हैं।

हजारों में एक प्यारे दूल्हे! तुम अपना जामा शीघ्र ही सम्हालो, क्योंकि तुम्हारी माँ कमर में बाँधने के लिए फेंटा लिए खड़ी हैं। तुम अपनी तलवार सम्हालो, क्योंकि तुम्हारी माँ तुम्हारे पहनने के लिए जूता लिए खड़ी हैं। क्योंकि तुम्हारी आँखें किसी से लड़ गई हैं।

बारात प्रस्थान

बना के लम्मे-लम्मे केश, हमैं गोलारी अँखियाँ रे।
उनके ससुरारी से आमइं, मउरी दुइ-दुइ जोड़ा रे।
पहिरो-पहिरो रे हजारी, दुलहा का छवि लागइ रे॥
उनके ससुरारी से जामा आवइं, दुइ-दुइ जोड़ा रे।
पहिरो-पहिरो रे हजारी, दुलहा का छवि लागइ रे॥
बेला लाल-लाल लहरिया, कांहीं हमहूँ देखबइ रे।
उनके पामन के पनहिया, कांहीं हमहूँ देखबइ रे॥
उनके करिहाँ मा पियरी, परदनिया हम पहिरउबै रे।
उनके सिर पर के पागा काहीं तो, हमहिन बाँधबैं रे॥

वर के लम्बे-लम्बे केश और गोल-गोल आँखें हैं। उनके ससुराल से दो जोड़ी मौर आई है। हे हजारों में एक सुन्दर दूल्हे! तुम उन्हें पहनो, तब हम देखें कि तुम्हारी छबि कितनी अच्छी लगती है? वर के ससुराल से जामा और जोड़ा आये हैं। हे हजारों में से एक दूल्हे! पहनो, ताकि हम तुम्हारी सुन्दरता को देखें कि वह कैसी लगती है? जामा में लगे बेलबूटा और लाल रंग का चुन्नट हम भी देखेंगी। उनके पैर की जूती और कमर में बँधी पीली धोती हम भी देखेंगी। उनके सिर में बाँधी जाने वाली पगड़ी हम ही बाँधेंगी।

बारात प्रस्थान

बनै तो जल्दी करो तयार, उन्हैं कोऊ सजन बोलामैं रे।
हाथी सजगे घोड़ा सजगे, सजगे छयल बराती रे॥
अब तो सज-धज चलै बरात, उन्हैं कोऊ सजन बोलामैं रे॥
बना के कंकन करो तयार, उन्हैं कोऊ सजन बोलामैं रे।
घोड़ा सजगे हाँथी सजगे, सजगे छयल बराती रे॥
बना को जामा करो तयार, उन्हैं कोऊ सजन बोलामैं रे।
बना की मउरी करो तयार, उन्हैं कोऊ सजन बोलामैं रे।
हाथी सजगे घोड़ा सजगे, सजगे छयल बराती रे॥
बना की कलगी करौ तयार, उन्हैं कोऊ सजन बोलामैं रे।
बना की पनही करौ तयार, उन्हैं कोऊ सजन बोलामैं रे॥

दूल्हे को शीघ्र ही तैयार करो, उन्हें कन्या पक्ष के सम्बन्धियों ने बारात लेकर आने का आमंत्रण दिया है। हाथी-घोड़ा सभी सजकर तैयार खड़े हैं और सभी छैल-छबीले बाराती भी। दूल्हे को शीघ्र ही जामा जोड़ा (विवाह की पोशाक) पहना दो, उन्हें ससुराल चलना है। उनके सिर में मौर रखो। दूल्हे के माथे में कलगी बाँध दो, उनके पैर में जूते पहना दो और शीघ्र ही तैयार करो, क्योंकि उन्हें घराती की ओर से आने का आमंत्रण मिल चुका है।

बेलनहाई

ए जू मथुरा शहर एक लगी बजरिया, कि मेंहदी तो आई बिकाय।
ए जू जइहा देवरबा मेहंदी लयइहा, रुपिया कै सेर बिकाय॥
ए जू मेहंदी तो रचिगै कोइली परगै देखन बाले बिदेस।
ए जू काह फार मैं कगदा बनाऊँ, काह फार मस देंव॥
ए जू काही बनाऊँ मैं असल कयथबा, हरि जू क पाती लिख देय॥
ए जू अचर फार मैं कगद बनाऊँ, नैन कजर मस देंव।
ए जू देवरै बनाऊँ मैं असल कयथबा, हरि जू क पाती लिख देय॥
ए जू आँचर छोर अँटारी म चढ़ गई, तपैं लागीं राम रसोय।

ए जू जब सुधि आबै अपने पिया कै, मरैं उँय बिसूर-बिसूर॥
ए जू आँचर फार मैं कगदा बनाऊँ, नैन कजर मसि देंव।
अँगुरी काट मैं कलम बनाऊँ, लिखौं पिया के बोल॥
ए जू हरि जू क पाला रे सुवना चरेरू, वहै चिठिया लइके जाय।
चिठिया तो लइके कदम चढ़ि बइठा, बोलै रयामन बोल॥
ओही तरी पिया मोर पंसा जो खेलै, चिठिया गिरी छहराय।
ए जू चिठिया क बाँच मनै मुसकाने, असुवन झरि लगि जाय॥
दइद्या हो साहेब हमरी नोकड़िया, आजु घरै हम जाब।
ए जू आजु न देबइ काल्हिन न देबइ, परसौं तो देबै चुकाय॥
आगी लगै तोहरे आजु औ काल्हि म, परसौ बजुर परि जाय।
ए जू दइद्या हो साहेब हमरी नोकड़िया, आजु घरै हम जाब॥
माया मोरी लाई बइठैं क पिढ़ुलिया, बहिनी गंगा जल पानि।
ए जू बहिनी हो बहिनी तुहिन मोरी बहिनी, गोरी धना देतिउ बताय॥
धनिया तो तोहरी भइया ताला गईं हैं, होईं त लगाये बड़ी देर।
ए जू ताला के ईरे-तीरे घोड़िला कुदामैं, गोरी धना कहूँ न देखान॥
बहिनी हो बहिनी तुहिन मोरी बहिनी, गोरी धना देतिउ बताय।
ए जू धनिया तोहरी भइया कुँवना गईं हैं, कुँवना लगाये बड़ी देर॥
कुँवना के ईरे-तीरे घोड़िला कुदामैं, गोरी धना कहूँ न देखान॥
ए जू बहिनी हो बहिनी तुहिन मोरी बहिनी, गोरी धना देतिउ बताय।
धनिया तोहारी भइया बागा गईं हैं, बागा लगाये बड़ी देर॥
ए जू बागा के तीरे-तीरे घोड़िला कुदामैं, गोरी धना कहूँ न देखान॥
बहिनी हो बहिनी तुहिन मोरी बहिनी, गोरी धना देतिउ बताय।
ए जू धनिया तोहारी भइया गईं नइहरबै, हुऐं त लगाये बड़ी देर॥
ससुरार के ईरे-तीरे घोड़िला नचामैं, गोरी धना कहौं न देखान।
ये जू बहिनी हो बहिनी तुहिन मोरी बहिनी, गोरी धना देतिउ बताय।
सारी रे देख्यिव सरहज देख्यिव, गोरी धना कहौं न देखान॥
ए जू धनिया तोहार भइया चढ़ी है अटरिया, तपै लगी राम रसोंय।
जा भइया जा भइया अपने अटरिया, होई हईं भउजी हमार॥

मथुरा नगर में एक बाजार लगी हुई है जहाँ मेहंदी बिकने के लिए आई है। हे देवर जी! क्या तुम वहाँ जाकर मेहंदी ला सकते हो? वह रुपये किलो बिक रही है।

देवर मेहंदी ले आये, वह हाथ में रचकर फीकी पड़ गई, पर देखने वाले परदेश में वास कर रहे हैं। मैं क्या फाड़कर कागज बनाऊँ और लेखक किसे बनाऊँ, जो मेरे पति को चिट्ठी लिख दे। मैं आँचल फाड़कर कागज बनाऊँगी और आँख के काजल की स्याही, लिखने के

लिए कायस्थ (लेखक) मैं अपने देवर को बनाऊँगी, जो मेरे पति को चिट्ठी लिख दें।

यह कह आँचल छोर अटारी में चढ़ गईं और रसोई तैयार करने लगीं, पर जैसे ही पति की सुध आती, बार-बार चिंतित हो जाती। उस सुन्दरी ने कहा- नहीं, मैं आँचल फाड़कर कागज बनाऊँगी, अँगुली काटकर कलम बनाऊँगी और पति के ही शब्दों में लिखूँगी। मेरे पति का पाला हुआ तोता पक्षी है, वही चिट्ठी लेकर जायेगा। तोता चिट्ठी लेकर उड़ा और कदम्ब के पेड़ पर बैठकर मीठी बोली बोलने लगा। उसी पेड़ के नीचे मेरे पति चौपड़ खेल रहे थे। तोते ने चिट्ठी नीचे गिरा दिया। मेरी चिट्ठी पढ़कर वे मुस्कुरा उठे और फिर आँसुओं की झड़ी लग गई।

वे अपने सेठ से बोलने लगे कि- मेरा वेतन दे दीजिए, मैं आज ही अपने घर चला जाऊँगा। सेठ ने कहा- अभी आज और कल तुम्हारा वेतन नहीं दिया जायेगा, परसों ले लेना। पति ने कहा- आपके आज-कल में आग लगे और परसों में वज्र पड़ जाय, अगर देना है तो आज ही दीजिए, मैं एक पल भी रुकने वाला नहीं। आज ही घर चला जाऊँगा। वह घर चला गया, उसकी माँ बैठने के लिए पटा लाई और बहिन पीने के लिए गंगा जल। वह बहिन से बोला- बहिन! तुम्हारी भाभी कहाँ है ? मुझे बताओ।

बहिन ने कहा- भइया! भाभी थोड़ी देर पहले तालाब गई थीं, वहीं इतना समय लगा दिया। वह घोड़े पर चढ़ा और तालाब के किनारे पहुँचकर ढूँढ़ने लगा, पर उसकी पत्नी वहाँ नहीं मिली। वह पुनः लौटकर बहिन से पूछा कि- तुम्हारी भाभी तालाब में नहीं है। बताओ! वह कहाँ है ? बहिन ने कहा- भइया! भाभी थोड़ी देर पहले कुआँ पर गई थीं, वहीं से आने में देर हो गई। वह कुआँ पहुँचा, पर उसकी पत्नी वहाँ भी नहीं मिली। बहिन से पुनः पूछा कि- तुम्हारी भाभी वहाँ भी नहीं है। तो उसने कहा कि- भाभी बाग गई थीं, वहीं से आने में देर कर दी। वह घोड़े को दौड़ाता बाग पहुँचा, पर वहाँ भी उसकी पत्नी नहीं मिली। वह पुनः घर आकर बहिन से बोला कि- तुम्हारी भाभी कहाँ है, जल्दी बताओ! बहिन ने अबकी बार कहा कि- वह तो मायके गई थीं, लगता है वहाँ से लौटकर आने में देर कर दी।

भाई तुरन्त ससुराल पहुँचा, पर उसकी पत्नी वहाँ भी नहीं थी। वह बहिन से खीझकर बोला कि- ससुराल में साली, सरहजें सभी देखने को मिलीं, पर तुम्हारी भाभी वहाँ भी नहीं है, बताओ वह कहाँ है ? बहिन भाई को बार-बार परेशान करने के बाद कहा कि- भइया! भाभी तो अटारी में चढ़ी तुम्हारे लिए पकवान बना रही हैं। तुम नाहक ही परेशान हो। अटारी में जाओ, वे तुम्हें मिल जायेंगी। मैं यह सब भाभी के कहने पर ही तो करती रही।

रोटी बेलना

बागा बनी गुलजारी,
मलिन तोरी बागा बनी गुलजारी।
लउंगइ तो बोइ गईं लइंची तो बोइ गईं,

जइफर बोइ गईं निनारी,
मलिन तोरी बागा बनी है गुलजारी॥
लउगैं तो सिंच गईं लइंची तो सिंच गईं,
जइफर सिंच गईं निनारी,
मलिन तोरी बागा बनी है गुलजारी॥
लउगैं तो जम गईं लइंची तो जम गईं,
जइफर जम गईं निनारी,
मलिन तोरी बागा बनी है गुलजारी॥
लउगैं तो फर गईं लइंची तो फर गईं,
जइफर फरी हैं निनारी,
मलिन तोरी बागा बनी है गुलजारी॥
लउगैं जो कट गईं लइंची जो कट गईं,
जइफर कट गईं निनारी,
मलिन तोरी बागा बनी है गुलजारी॥

हे मालिन! तेरी बगिया फूलों से भरपूर है। तेरे बाग में लौंग-इलायची बोई गई और जायफल भी अलग बोई हुई है। मालिन! तेरी लौंग-इलायची सिंच गईं और जायफल में भी पानी सींच दिया गया है। मालिन! तेरे बाग के क्यारियों में लौंग-इलायची जम आईं और उनसे अलग लगे जायफल के पौधे भी अंकुरित हो गये। मालिन! तेरे क्यारियों में लगी लौंग-इलायची में फल लग गये, उधर जायफल भी फलों से लद गई। मालिन! तेरी लौंग की फसल कट गई। इलायची की भी कट गई। उधर जायफल की फसल भी कट गई, जो लौंग-इलायची से अलग बोई गई थी।

रोटी बेलना

सखी फूलइ कहाँ कचनार, चमेली कहाँ फूल रही।
सखी बगिया म फूली कचनार, चमेली बन फूल रही॥
सखी कुइनी कमल कइसे फूलइ, भमर पाती भूल रही॥
सखी बेला फुलइ आधी रात, चमेली भोरै फूल रही।
देखे सुरिज कमल मुसकाय, पै कुइनी चन्दा चूम रही॥

हे सखी! कचनार का फूल कहाँ फूलता है और कहाँ चमेली का? दूसरी सखी ने कहा- सखी! कचनार तो बाग में फूलता है और चमेली वन में फूलती है। देखो! कमलिनी और कमल कैसे खिले हुए हैं कि भौंरा सब कुछ भूल जाता है। बेला तो अर्द्धरात्रि में फूलता है और चमेली सूर्योदय के समय। कमल सूर्य को देखकर खिलता है और कमलिनी चन्द्रमा को देखकर।

रोटी बेलना

उड़ जाती सगुन चिरइया,
ननद मोरी उड़ जाती सगुन चिरइया।
अपने ननद कांहीं बहुंटा गढ़उबै,
चुरबा गढ़ाबै तोरो भइया,
ननद मोरी उड़ जाती सगुन चिरइया॥
अपने ननद का ककना गढ़उबै,
दोहरी गढ़ाबै तोरे भइया।
ननद मोरी उड़ जाती सगुन चिरइया॥
अपने ननद कांहीं खोसबा ढरउबै,
बेसर गढ़ाबै तोरो भइया,
ननद मोरी उड़ जाती सगुन चिरइया॥
अपने ननद कांहीं छन्नी गढ़उबै,
बेंदी गढ़ाबै तोरो भइया,
ननद मोरी उड़ जाती सगुन चिरइया॥
अपने ननद कांहीं सँकरी गढ़उबै,
पायल गढ़ाबै तोरो भइया,
ननद मोरी उड़ जाती सगुन चिरइया॥

ऐ मेरी शुभदायिनी ननदी! तू अब चिड़िया की तरह उड़ जा। यानी अपने ससुराल चली जा। मैं अपनी ननद को बाँह में पहनने के लिए बहुँटा बनवाऊँगी और पैर के चूड़ा उसके भाई यानी मेरे पति बनवायेंगे। मैं अपनी ननदी को ककना बनवाऊँगी और उसके भाई दोहरी बनवायेंगे। हे ननदी! तू सगुन की चिड़िया की तरह उड़ जा। मैं अपनी ननदी को माथे में लगाने के लिए खोसबा बनवा दूँगी और उसके भाई नाक की बेसर बनवा देंगे। मैं अपनी सगुन चिरइया ननदी को छन्नी बनवा दूँगी और बेंदी वह अपने भाई से बनवा ले। मैं अपनी प्यारी ननदी को कमर में पहनने के लिए सकरी बनवा दूँगी और पायल वह अपने भाई से बनवा ले। वह सगुन की चिड़िया की तरह यहाँ से उड़ जाय।

जेउनार

पातिन-पातिन परी हैं पतरियाँ हो,
बइठे सजन जँघ जोरी,
कि हाँ जू हो, बइठे सजन जँघ जोरी।
काहे केरी पतरी, काहेन केरे दोनमा हो, काहेन डोभ डोभाई।
कि हाँ जू हो काहेन डोभ डोभाई॥

सोने केरी पतरी रूपेन केरे दोना हो, लउँगन डोभ डोभाई।
कि हाँ जू हो लऊँगन डोभ डोभाई॥
बरा रे मुँगउरा दही म दहबोरिन, नेमुअन की अधिकारी।
कि हाँ जू हो, नेमुअन की अधिकारी।
को सखी परसइं कउन हो निकरइं, को सखी गामइं गारी।
कि हाँ जू हो को सखी गामइं गारी॥
सुरत सखी परसन कांहीं निकरीं, निरत सखी गामइं गारी।
कि हाँ जू हो निरत सखी गामइं गारी॥

पाँत में पत्तल पड़े हुए हैं जहाँ सभी बाराती पलथी मारकर बैठे हुए हैं। पाँत में पड़े पत्तल किसके बने हैं और दोना किसके? और वह किससे टाँके गये हैं? पत्तल सोने के और दोने चाँदी के और वे लौंग द्वारा टाँक कर जोड़े गये हैं। बड़ा और मुगौड़ा दही में डुबाये हुए हैं और नींबू भी खटाई के लिए रखा है। कौन सखी इस बारात को भोजन परोस रही है और कौन देख रही है तथा गारी कौन गा रही है? सुरत नाम की सखी परोसने के लिए निकली है, निरत सखी गारी गा रही है।

जेउनार

खरचा-खरचा माँगइं फलाने रामा,
खर्चा कोऊ न देय सुने जया, खर्चा कोऊ न देय।
नउवा क लड़िका सग बहनोइया,
खरचा वहै दइदेय सुने जया, खरचा कोऊ न देय।
खरचा-खरचा माँगइं फलाने रामा,
खरचा कोऊ न देय सुने जया, खरचा कोऊ न देय।
बरिया क लड़िका सग बहनोइया,
खरचा वहै पुन देय सुने जया, खरचा वहै पुन देय।
खरचा-खरचा माँगइं फलाने रामा,
खरचा कोऊ न देय सुने जया, खरचा कोऊ न देय।
ढिमरा क लड़िका सग बहनोइया,
खरचा वहै पुन देय सुने जया, खरचा वहै पुन देय।

भोजन करने के बाद दाँत में फँसे अन्न के कण निकालने के लिए अमुक व्यक्ति एक तिनके की सींक माँग रहे हैं, पर उन्हें कोई नहीं दे रहा। नाई का लड़का उनका सगा बहनोई लगता है, शायद वही सींक दे दे। अमुक जी बार-बार सींक माँग रहे हैं, पर कोई सुनता ही नहीं। बारी का छोकरा उनका सगा बहनोई है, शायद वही लाकर दे दे। ढीमर (कहार) का छोकरा उनका सगा बहनोई है, शायद वही लाकर सींक दे दे।

जेउनार गारी

पीठे हथिनिया के हउदा कसा है,
चढ़िके चले हैं चारौ भाई।
कि हाँ जू हो चढ़ के चले हैं चारौ भाई॥
जाइके पहुँचे जमुन जल तीरे, घिस-घिस करत मुखारी।
कि हाँ जू हो घिस-घिस करत मुखारी॥
कहरा क लड़िका तो धोती लयाबै,
धोबिया के लड़िका पिखारी।
कि हाँ जू हो धोबिया क लड़िका पिखारी॥
बम्हना क लड़िका तो चन्दन गारै, दुवादसी तिलक लगावै।
कि हाँ जू हो दुवादसी तिलक लगावै॥
जाइ के पहुँचे जनक जी के द्वारे, जेजम फरद बिछाई।
कि हाँ जू हो जेजम फरद बिछाई॥
गोड़ धोवन कह कोपर माँगइ, सहि जमुना ढरि आई।
कि हाँ जू हो सहि जमुना ढरि आई॥
अस नहि आय कोऊ जेउनेहरी, राम जी क रचै जेउनारी।
कि हाँ जू हो राम जी क रचै जेउनारी॥
सुधर हईं दूनौ राधा औ रूकमनि, राम जी क रचै जेउनारी।
कि हाँ जू हो राम जी क रचै जेउनारी॥
जिरिया क भात उंय रुचि-रुचि राँधिन, मुंगिया कै दार बघारिन।
कि हाँ जू हो मुंगिया कै दार बघारिन॥
बरा औ मुंगउरी दही म मथि बोरिन, लउगन दिहिन बघारी।
कि हाँ जू हो लउगन दिहिन बघारी॥
मइदा कै रोटी रुचि रुचि बेलिन, घिउ सुरही क सुहाई।
कि हाँ जू हो घिउ सुरही क सुहाई॥
कुँदरू करइला आलू औ भांटा, परबर कै तरकारी।
कि हाँ जू हो परबर कै तरकारी॥
राम जी पूछैं भरत सुना भाई, कइसा लगी जेउनारी।
कि हाँ जू हो कइसा लगी जेउनारी॥
चार भाई चारिउ जेमइ क बइठे, सखियां गमइ सब गारी।
कि हाँ जू हो सखियां गमइ सब गारी॥
हम तो अहेन तीनौ लोक के ठाकुर, हमही न चाही अइसी गारी।
कि हाँ जू हो हमही न चाही अइसी गारी॥

जो तुम अह्या तीनो लोक के ठाकुर, काहे क आया ससुरारी।
कि हाँ जू हो काहे क आया ससुरारी॥

हथिनी के पीठ में हौदा कसा हुआ है जिसमें चढ़कर राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न चारों भाई जा रहे हैं। वे चलकर यमुना नदी के किनारे पहुँचे और वहाँ दाँतों में रगड़-रगड़ कर दातून किया। कहार का लड़का उनके पहनने के लिए धोती ले आया और धोबी का लड़का धोती को साफ करने लगा। वहीं ब्राह्मण का पुत्र एक पत्थर में चन्दन घिसकर चारों भाइयों के द्वादश अंगों में तिलक लगाया। वहाँ से चलकर चारों भाई राजा जनक के द्वार पहुँचे, जहाँ पहले से ही साफ सुथरी कालीन बिछी थी।

राजा जनक ने चारों कुमारों के पैर धोने के लिए एक पीतल की परात मंगाया तो जमुना जी स्वत: जल लेकर पहुँच गईं। पर राजा को चिन्ता हुई कि राम के भोजन पकाने के लिए किसे बुलाया जाय? यहाँ तो कोई अच्छा रसोइया नहीं है जो उनके लिए तरह-तरह के व्यंजन पका सके। फिर उन्हें स्मरण आया कि राधा और रुक्मिणी दोनों बहुत अच्छा पकवान बना सकती हैं इसलिए वही राम के लिए भोजन तैयार करें।

राधा और रुक्मिणी ने जिरिया नामक सुगंधित पतले धान का चावल पकाया और मूँग की दाल को घी और लौंग से बघार दिया तथा बरा और मुंगौड़ा को दही में अच्छी तरह से बोर दिया। महीन आटे की रोटियाँ अच्छी तरह रुच-रुच बनाया और उनको सफेद गाय के घी में चुपड़ दिया। साथ ही कुंदरू, करेला, आलू, बैंगन और परवल की तरकारी भी बनाई गई। रामजी भरतजी से पूछने लगे कि- भरत भइया यह भोजन तुमको कैसा लगा? चारों भाई भोजन करने लगे और सभी सखियाँ गारी गाने लगीं। राम ने कहा- हमें ऐसी गाली क्यों सुना रही हो? हम तो तीनों लोक के स्वामी हैं। सखियों ने कहा- यदि आप तीन लोक के स्वामी हो तो मनुष्य देह धर कर ससुराल क्यों आये हो?

जेउनार

कहना रे सोन उपजै, कहना रे रूप उपजै।
कहना रे उपजै ढेरिया लड़िल देई।
मथुरा रे सोने उपजै, गोकुल रे रूप उपजै।
माया कि कोख ढेरिया लड़िल देई॥
कहना के हूम होय, कहना के यज्ञ होय।
कहना बियाह होय ढेरिया लड़िल देई॥
राजा के यज्ञ होय, पंडित के हूम होय।
फलाने के बियाह होय ढेरिया लड़िल देई॥

सोना कहाँ पैदा होता है, चाँदी कहाँ पैदा होती है और लाड़ली पुत्री कहाँ पैदा होती है?

सोना मथुरा में पैदा होता है। चाँदी गोकुल में पैदा होती है और अपनी माता की कोख से लाड़ली पुत्री पैदा होती है। होम कहाँ हो रहा है, यज्ञ कहाँ हो रहा है ? विवाह किसके लाड़ली बेटी का हो रहा है ? यज्ञ राजा के यहाँ हो रहा है। होम पंडित के यहाँ हो रहा है और अमुक की लाड़ली बेटी का विवाह हो रहा है।

जेउनार

धनुष यज्ञ शाला म मुनि जी हैं आये, दुइ बालक लइ आये।
साँवरे हैं रघुराई, गोरे लछिमन हैं भाई,
शोभा बरनी न जाई।
अरे धन्य कहियो माता, जिन गोद मा खेलाये।
शोभा बरनी न जाये॥
जुरी राजन समाज, जहाँ ब्रम्हा महराज,
आये लंका पति आज।
अरे कोप करैं धनुष उठै चलै न चलाये,
दुइ बालक लइ आये॥
बोले लछिमन से राम, तुम धरती लेव थाम्ह,
होई भारी धूम-धाम।
अरे शेष नाग जीवन का लिहा हो बचाये,
दुइ बालक लइ आये॥
धनुष रघुबर टोर डारी, जामे शब्द भओ भारी,
खुशी हो गये नर-नारी।
फूलन की वर्षा सब देवन कराये,
दुइ बालक लइ आये॥
आई हमैं जानकी माई, संग सखियाँ लै आईं,
हाँथ माला सुहाई।
प्रेम के बिवस मा पहिराओ न जाये,
दुइ बालक लइ आये॥
परी रघुबर गर माल, सुखी होइगे नर-नार,
बाजै सुरही सुरतान।
अरे नगर अजुध्या को पाती है पठाये,
दुइ बालक लइ आये॥

धनुष-यज्ञ स्थल में एक महात्माजी पधारे हुए हैं जो अपने साथ दो बालक भी लेकर आये हैं। उनमें राम साँवले रंग और लक्ष्मण गौर वर्ण के हैं, जिनकी सुन्दरता वर्णन नहीं की जा

सकती। उनकी वह माता कितनी भाग्यशाली रही होंगी, जो इन्हें गोद में खिलाती थीं। राजाओं का समुदाय एकत्र है जहाँ ब्रह्माजी भी बैठे हैं और आज लंकापति रावण भी पहुँच गया है। उसने क्रोध करके धनुष को उठाया पर वह तिल भर भी नहीं उठ सका। राम ने लक्ष्मण से कहा– तुम धरती को दबाकर बैठ जाओ जिससे वह डुलकर कोई उत्पात न करे। क्योंकि हे शेष औतारी! सबके जीवन की रक्षा करना भी अपना कर्त्तव्य है। राम ने धनुष को तोड़ दिया, जिससे भयानक आवाज हुई और सभी स्त्री–पुरुष प्रसन्न हो गये। देवताओं ने फूलों की वर्षा की।

उसी समय जानकीजी अपने सखियों समेत आ पहुँचीं। उनके हाथ में जयमाला सुशोभित थी, पर वे प्रेम में इतनी विह्वल हो गईं कि माला को जल्दी पहिना ही न सकीं। राम के गले में माला जैसे ही पड़ी, सभी स्त्री–पुरुष प्रसन्न हो उठे। सुरही सुरताल आदि बाजे बज उठे। राजा जनक ने तुरन्त एक दूत को पत्र लेकर अयोध्या भेजा।

जेउनार

राजा जनक ने बरात बोलवाई, चलो मिथिला पुर भाइ।
पाती माता ने पाई, खुशी आनन्द छाई,
बाजै रहस औ बधाई, मोती देत है लुटाई।
अरे धन्य घरी आज खबर रघुबर के पाई,
चलो मिथिलापुर भाई॥
नेउता देवन पठाये, सबै मुनिगन जुरिआये।
संग शंकर जी आये, अपने वाहन चढ़ि आये।
अरे सजिगै बरात शोभा बरनी न जाई,
चलो मिथिलापुर भाई॥
पीनस पालकी मंगाई, हाथी घोड़ा सजाई,
बजै शंख सहनाई, शोभा बरनिउ न जाई।
अरे चार छड़ी पंख ऊपर क्षत्र की तनाई,
चलो मिथिलापुर भाई॥

राजा जनक ने बारात बुलवाई है इसलिए सब लोग जनकपुर चलो। माता कौशिल्या को जैसे ही पत्र मिला, अयोध्या में आनन्द बधाई बजने लगीं और माता कौशिल्या मोतियाँ लुटाने लगीं और कहने लगी मेरा कितना अहोभाग्य है, जो आज राम के शौर और पराक्रम का समाचार सुन रही हूँ। सभी देवताओं को निमंत्रण भेजा गया। सभी ऋषि–मुनि जुड़कर एकत्र हो गये और शंकरजी भी अपने नंदी में चढ़कर पहुँच गये। बारात इस तरह सज गई कि जिसकी सुन्दरता का वर्णन करना कठिन है। पालकी मँगा ली गई। हाथी, घोड़ा सभी सज गये। शंख और शहनाई बज उठे, जिनकी सुन्दरता का वर्णन नहीं किया जा सकता। हाथी के हौदे के चार छड़ी लगाकर क्षत्र तान दिया गया।

जेउनार

मोरे को-को नेउते आओ मोरी बेला-कली,
मोरे फलाने नेउते आए मोरी बेला-कली।
उनकर अच्छा आदर करियो मोरी बेला-कली।
उनका ऊँच बइठका दइयो मोरी बेला-कली।
उनको पान-सुपाड़ी दइयो मोरी बेला-कली।
उनको खसुआ कइ बइठइयो मोरी बेला-कली।
मोरे को-को नेउते आओ मोरी बेला-कली॥

हे सखी! बेला-कली मेरे यहाँ कौन-कौन निमंत्रण में आए हैं ? मेरे यहाँ फला साहब निमंत्रण में आए हैं, उनकी अच्छी खातिरदारी करना। उनके बैठने के लिए ऊँचा आसन देना। उन्हें पान-सुपाड़ी भी खिलाना और उन्हें नामर्द बनाकर बैठा देना।

जेउनार

मोरे पलका के तरे-तरे लोट सारे, तोही मजूरी देवाय देहौं।
मोर ओतिया फीच, मोर धोतिया फीच,
मोरे साया म सगुन लगाव सारे, तोही मजूरी देवाय देहौं॥
मोर अगना लीप मोर फरका लीप, मोर सार क गोबर उचाव सारे।
तोही मजूरी देवाय देहौं।
मोर गइया ढील मोर बरदा ढील,
मोरे भइसी कै सानी बनाव सोरे, तोही मंजूरी देवाय देहौं॥

हे समधी! तू मेरे पलंग के नीचे लोट, मैं तुझे उसकी मजदूरी दूँगी। मेरी धोती कपड़े साफ कर और मेरे पेटीकोट में साबुन लगा, मैं तुझे तेरी मजदूरी दिलवा दूँगी। तू मेरा आँगन घर की चौगान लीप और पशुशाला का गोबर साफ कर, मैं तुझे मजदूरी दिलाऊँगी। मेरे गाय-बैलों को ढीलकर खारिक में ले जा और मेरी भैंस के लिए सानी तैयार कर, मैं तुझे इसकी पूरी मजदूरी दिलाऊँगी।

गारी

एजी छोट बादी चिरई बकोटा भर पखना,
रेउँजा म लेत बस्यार।
एजी ससुरा जो होते त रेउजा कटउते,
चिरई क देते उड़ाय॥
एजी जेठा जी होते त रेउजा कटउते,

चिरई क देते उड़ाय॥
एजी देवरा जो होते त रेउजा कटउते,
चिरई क देते उड़ाय॥
एजी सइंयाँ जो होते त रेउजा कटउते,
पै उँय बसे परदेश॥

एक छोटी-सी चिड़िया जिसके मुठ्ठी भर पंख हैं, वह बबूल के पेड़ में वास करती है। यदि मेरे ससुरजी होते तो उस पेड़ को कटाकर चिड़िया को उड़ा देते। इसी प्रकार मेरे जेठजी देवरजी घर में होते तो वह भी पेड़ कटाकर उस चिड़िया को उड़ा देते। यदि मेरे पति होते तो भी उसे भगा देते, पर वह परदेश में वास कर रहे हैं।

द्वारचार

जेतने बरतिहा आये रे, सब करयै करिया,
पत्ता कै टोपी लगाये रे, सब करियै करिया॥
बड़े-बड़े मेछन के आये रे, सब करियै करिया।
मट्टी क तेल लगाये रे, सब करियै करिया॥
हाँथी न लाये घोड़ा न लाये, हाँथ झुलावत आए रे।
सब करियै करिया।
जेतने बरतिहा आए रे, सब करियै करिया॥

जितने बाराती आए हुए हैं सभी काले रंग के हैं। इनमें एक भी गोरा नहीं है और सभी पत्तों का टोप लगाये हुए हैं। सभी बारातियों की मूँछें बड़ी-बड़ी हैं और सभी काले रंग के हैं। ये लोग इत्र के स्थान पर मिट्टी का तेल लगाकर आए हैं। ये लोग न तो हाथी लाये हैं और न ही घोड़ा। बस यूँ ही हाथ झुलाते हुए चले आए हैं। जितने बाराती आये हैं सभी काले रंग के हैं।

द्वारचार

फूलों गेंदा फूल टोरइन नहिं आय कोई रे,
दुलहा कै बहिनी घूमै बजार, रखइया नहिं आय कोई रे।
फूलों गेंदा फूल टोरइया नहिं आय कोई रे॥
दुलहा कै फूफू बन-बन घूमै, रखइया नहिं आय कोई रे॥
फूलों गेंदा फूल टोरइया नहिं आय कोई रे,
दुलहा कै दीदी बन-बन घूमै, रखइया नहिं आय कोई रे॥
फूलों गेंदा फूल टोरइया नहिं आय कोई रे,
दुलहा कै काकी बन-बन घूमै, रखइया नहिं आय कोई रे॥

गेंदा का फूल फूला हुआ है पर उसे तोड़ने वाला कोई नहीं है। उधर दूल्हे की बहिन आवारा बाजार में घूम रही है। पर उसे रखने वाला कोई नहीं है। दूल्हा की बुआ जंगल में घूम रही है पर उसे रखने वाला कोई नहीं है।

गेंदा का फूल फूला है पर तोड़ने वाला कोई नहीं है। दूल्हे की माँ जंगल में अकेली भटकती रहती है पर उसे रखने वाला कोई नहीं। इसी प्रकार दूल्हे की काकी भी वन-वन भटकती है पर उसे कोई रखने वाला नहीं।

द्वारचार

बापौ-पूत बियाहन आये, उढ़री महतारी रे।
काटे-कूटे पान लयाये, खोखली सुपारी रे॥

मात्र पिता-पुत्र ब्याह करने आए हैं और बारात नहीं लाये, क्योंकि दूल्हे की माँ रखेल है, ब्याहता नहीं। पूजा में लगने वाले पान कटे-फटे और सुपाड़ी छेददार लाए हैं।

सोहाग

पाँच बँधनमा कै टटिया बँधाबा हो,
मड़ये म दिहा ओढ़काय, राजा के सोहगवा।
टटिया उलिट आई अजिया फलानी देई,
देखै निता नतनी सोहाग,
नतनी सोहाग बहुत निक लागै,
कि जुग-जुग बढ़ई सोहाग, राजा के सोहगवा॥
टटिया उलिट देखै माया फलानी देई,
देखि लेउ बिटिया सोहाग राजा के सोहगवा।
बिटिया सोहाग बहुत निक लागै,
कि जुग-जुग बढ़ै अहिबात, राजा के सोहगवा॥
टटिया उलिट देखै काकी फलानी देई,
देख लेऊँ बेटी कै सोहाग, राजा के सोहगवा।
बेटी क सोहगबा बहुत निक लागै,
कि जुग-जुग बढ़ै अहिबात,
राजा के सोहगवा॥

पाँच बन्धन वाली टटिया बाँधकर मंडप के चारों ओर लगा दो, पर उस आवरण को हटाकर अमुक नाम वाली कन्या की दादी अपनी पोती का विवाह देखने लगी। पोती के सुहाग संस्कार को देखा और प्रसन्न होकर युग-युग जीने का आशीर्वाद दिया। उस टटिया के आवरण

को हटाकर कन्या की माता और चाची पुत्री का सुहाग देखने लगीं। उन्हें सुहाग बहुत ही अच्छा लगा। आशीष दिया कि उनका दाम्पत्य जीवन युगों-युगों तक चलता रहे।

सोहाग

ऊँची टिकुरिया सोहगिया कै बगिया,
सोहगिया के लम्मे लम्मे पात, राजा के सोहगवा।
ओही होइ के निकरे हैं दुलहे दुलेरुवा,
कि बाँधे केशरिया रंग पाग, राजा के सोहगवा॥
भितरे से निकरी है ढेरिया फलाने देइ,
पूँछैं दुलेरुवा से बात, राजा के सोहगवा॥
काहे रंग रंगी साहेब तुम्हरी पगड़िया,
कि काहे रंग दाँत तुम्हार, राजा के सोहगवा।
कुशुम रंग रंगी धना हमरी पगड़िया,
कि पनमा रचे हैं हमारे दाँत, राजा के सोहगवा॥
काहे रंग रंगी धना तुम्हरी चुनरिया,
कि काहे भरी माँग तुम्हार, राजा के सोहगवा।
पियरी रंग रंगी हमरी चुनरिया,
कि सेंदुरा भरी है हमरी माँग, राजा के सोहगवा॥

ऊँची पहाड़ी में सुहाग का पेड़ है जिसके लम्बे-लम्बे पत्ते हैं। यह राजा का सुहाग है। उसी के नीचे से दूल्हेजी सिर में लाल रंग की पगड़ी बाँधकर निकले। उसी समय अन्दर से कन्या भी निकल पड़ी और दूल्हे से प्रश्न पूछने लगी। हे दूल्हे जी! तुम्हारी पगड़ी किस रंग से रची है और तुम्हारे दाँत किससे रंगे हैं ? दूल्हे ने कहा- हे सुन्दरी! मेरी पगड़ी कुसुम रंग से रंगाई गई है और दाँत पान खाने के कारण रच गये हैं।

दूल्हे ने भी प्रश्न किया कि- हे सुन्दरी! तुम्हारी यह चूनरी किस रंग से रंगी है और यह माँग किस रंग से भरी गई है ? दुल्हन ने कहा- हे स्वामी! मेरी चूनरी पीले रंग से रंगी गई है और माँग में लाल सिन्दूर भरा हुआ है।

सोहाग

ईंटिया पथाया बाबू बंगला छवाया हो,
कि बंगला के चारिउ कइती झींझरी लगाया हो।
बंगला छवाया बाबू झींझरी लगाया हो,
कि बंगला के आस पास बसगे सोनार हो॥
बंगला के आस पास बसगे सोनार हो,

कि गाढ़ि सोनरा माथ बेंदी बेटी का सोहाग हो।
ईंटिया पथाया बाबू बंगला छवाया हो,
कि बंगला के आस पास बसगे सोनार हो॥
सिंकिया कै डड़िया फंदाना मोरे भइया कि,
चलै रवै कामरू के देश रानी कै सोहाग रे॥
कामरू के देशवा न जा मोरी बहिनी कि,
मरि जइहा भुँखबा पियास, रानी कै सोहाग रे॥
बाबा के दुवारे हवै चन्दन क बिरबा कि,
ओही तरी सेंदुर बिकाय, रानी कै सोहाग रे॥
पहिले जो अउतिउ ढेरिया बट चुट देइत,
तोहऊं क देइत भरि माँग, रानी कै सोहाग रे॥
ओही तरी ठाढ़ी हईं ढेरिया फलाने देई,
ठाढ़े-ठाढ़े गईं कुम्हलाय, रानी कै सोहाग रे॥
यतना किहिन हमै भइया फलाने रामा,
झरि पोछि लिहिन उचाय, रानी कै सोहाग रे॥
अपनौ सोहाग बहिनि दइराखा कि,
बहिनी सोहगइली होइ जाय, रानी कै सोहाग रे॥

हे पिताजी! आपने ईंट पथवा कर बंगला तो बनवा लिया और उसके चारों ओर झरोखा बनवा दिया है, पर उस बंगले के आसपास स्वर्णकार लोग बस गये हैं। पिता ने कहा- हे स्वर्णकार! तुम माथे की बेंदी बनाओ जो बेटी के श्रृँगार के काम आये। बहन ने कहा- हे भइया! तुम घास के तिनके की पालकी सजाओ, मुझे बंगाल देश जाना है। भाई ने कहा- बहन! तुम बंगाल देश मत जाओ, वहाँ भूखी प्यासी मर जाओगी। बाबा के द्वार में चन्दन का पेड़ लगा है उसी के नीचे सिन्दूर बिक रहा है। बेचने वाले ने कहा कि- हे सुहागिन! यदि तुम पहले आ जाती तो तुम्हें भी कुछ मिल जाता और तुम माँग में भर लेतीं पर अब तो समाप्त हो गया है। उसी चन्दन के पेड़ के नीचे बहन खड़ी थी, व्यापारी की बात सुनकर वह मूर्च्छित होकर गिर गई।

सुहागिन के बड़े भाई आये और उसके शरीर की धूल झाड़-पोंछकर उठा लिया और अपनी पत्नी से कहा कि- तू अपने माथे का सिन्दूर बहन को लगा दे ताकि वह भी सुहासिनी बन जाय।

सोहाग

छम-छम घोड़िला हाथिन केरी पँतिया,
कि साजी लये डोलिया कहार, रानी के सोहगवा।

सिर म मउरिया सुरिज उँजिअरिया,
औ चाँदी जइसे चमकै लिलार, रानी के सोहगवा॥
सोने अइसी देहिया, कमल मुख रनिया,
कि चन्दन जइसन आबै सुवास, रानी के सोहगवा॥
जामा है केसरिया पियर परदनिया,
और बाँधे हमैं फेंटा औ कटार, रानी के सोहगवा॥

छम-छम नृत्य कर रहे घोड़े और हाथियों की कतार लगी है। कहार लोग डोली सजाकर ले आये हैं। दूल्हे के सिर की मौर सूर्य की तरह प्रकाशमान हो रही है और मस्तक चाँदी जैसा चमक रहा है। कन्या की देह सोने जैसी है और कोमल सलोना मुखड़ा कमल जैसा साथ ही चन्दन जैसी सुगन्ध आ रही है। दूल्हे का जामा केशरिया रंग का और धोती पीले रंग की है, कमर में कमरबन्द और कटार बँधी हुई है।

सोहाग

नन चुका बुँदिया छिमाबा मोरी मेंघिया,
कि सेंदुर परै दे मोरी माँग, रानी कै सोहाग रे।
कइसे के बुंदिया छिमऊ मोरी ढेरिया,
कि घुमड़ के लागो असाढ़, रानी कै सोहाग रे॥
बिनतिन बइठी हैं ढेरिया फलानी देई,
सुना भइया बिनती हमार, रानी कै सोहाग रे।
काहे म जोगवउ सिर कै मउरिया कि,
काहे माही मँगिया सिंदूर, रानी कै सोहाग रे॥
बिनतिन बइठे हैं ढेरिया के भइया कि,
सुन बहिनी बिनती हमार, रानी कै सोहाग रे।
ढाल म जोगबा तुम सिर कै मउरिया औ,
मँगिया के सेंदुर तरबार, रानी कै सोहाग रे॥

सुहागिनी ने कहा - हे मेघ! तुम कुछ देर के लिए बूँदा-बाँदी बन्द कर दो ताकि मेरी माँग में सिन्दूर भरा जा सके। किन्तु मेघ ने कहा कि- हे सुहागिनी! मैं बूँदा-बाँदी कैसे रोक दूँ? आषाढ़ माह लग गया है, जिससे बादल छाये रहते हैं।

बहिन सुहागिन अपने भाई से निवेदन कर रही है कि- सिर की मौर को किससे ढँकूँ और माँग के सिंदूर की रक्षा किससे करूँ? हाथ जोड़कर सुहागिन के भाई ने कहा कि- बहिन! तुम ढाल से ढँककर सिर के मौर की रक्षा करो और तलवार से माँग के सिंदूर की।

चढ़ाव

बेरिया क बेर तोही बरजेव फलाने सिंह, कि जेठबा न रचेउ बियाह।
हथिया अउ घोड़बा पियासन मरिहैं, औ बर जइहैं कुम्हलाय॥
राह-राह हम अम्मा लगउबै औ, पग-पग सगरा खनाय।
अपने दुलेरूआ का क्षत्र तनउबै, का करी भँभुरा औ घाम॥
बाजत आवै करइली क बाजा, घुमड़त आवै निसान।
आवै नचत पतरेगवा हो समधी, अउ बिहसत दुलहे दमाद॥
ऊँच चउतरा चौखुट्ट बना है, घन तुलसी कइ छाँव।
ओही तरी बइठे हैं बेटी के बाबुल, घमकत आवइ बरात॥
यतनी बरात देख बाबा हो फलाने सिंह, हन लीन्हे बजुर केमार।
भितरे से निकरी हैं बेटी कि माया, पूँछै बरतिया कै हाल॥
घोड़बा तो आये हैं इनतिन गिनतिन, हथिया तो पूर पचास।
सारे बरतिहन कुछू नहि सूझै, सूझै दुवारे कै चार॥

अमुक सिंह जी! आपको मैंने बार-बार समझाया कि आप ज्येष्ठ माह में विवाह मत रचो, क्योंकि हाथी, घोड़ा बारात में जाते समय प्यास के मारे मर जायेंगे और दूल्हे को भी धूप में परेशानी होगी। कन्या के पिताजी ने कहा- हम पूरे रास्ते में आम के पेड़ लगवा देंगे और दूल्हे के लिए क्षत्र तनवा देंगे। ज्येष्ठ मास की तेज धूप और तपन क्या कर पायेगी? बारात आ पहुँची, बाजे बजने लगे, पतले शरीर वाला समधी नाचता आ रहा था और दूल्हा मुस्कुरा रहा था। एक ऊँचा चबूतरा बना था जिसमें सघन तुलसी के पौधे लगे थे। उसी चबूतरे में बेटी के पिता बैठे थे कि बारात समीप पहुँच गई। इतनी भारी संख्या में आई बारात देखकर बेटी के बाबा ने द्वार के किवाड़ लगा लिए। अन्दर से बेटी की माँ निकली और बारात का हाल-चाल पूछने लगी। लोगों ने बताया कि- घोड़े तो अनगिनत और हाथी पूरे पचास आये हैं। बारातियों को और कुछ नहीं भा रहा था, वे बस द्वारचार करवाने की रट लगाये हुए हैं।

बनरा

बना के सिर मउरी मोतियन गुही,
आबा हो मालिन बइठा दुलइचा।
करा मउरी केर मोल हो मोतियन से गुही,
बना के सिर मउरी मोतियन गुही॥
नौ लख बावा मोल किहिन हो,
दस लख आजी दीन हो मोतियन से गुही।
बना के सिर मउरी मोतियन से गुही॥
मउरी तो बाँधे दुलहे फलाने रामा,

बाँध ससुराररियै जाय हो मोतियन से गुही,
बना के सिर मउरी मोतियन से गुही॥
वा ससुररिया कै साँकर गलिया,
मउरी कै अरझै झेप हो मोतियन से गुही॥
बनरी बियाह बना घर का आये,
निहुर नबामै माथ हो मोतियन से गुही।
बना के सिर मउरी मोतियन से गुही॥

दूल्हे की मौर मोतियों से जड़ी हुई है। हे मालिन! तुम आओ और दुलैचा में बैठकर उसका मूल्य बताओ। दूल्हे के दादाजी ने उसका मूल्य नौ लाख रुपये आँका, पर उनकी दादी ने पूरे दस लाख दिये। दूल्हे के सिर की मौर मोतियों से जड़ी गई है। मौर को अमुक नाम वाले दूल्हे बाँधकर ससुराल जा रहे हैं। उनकी मौर मोतियों से जड़ी है। उस ससुराल का रास्ता इतना संकीर्ण है कि मौर की लटकें इधर-उधर उलझ जाती हैं। दुल्हन को ब्याह कर दूल्हे घर आये और सबको सिर झुकाकर प्रणाम किया। उनकी मौर मोतियों से जड़ी है।

बनरा

आजु बना है बनरी के नगर मा,
मउरी सम्हारै बना अपने नगर मा,
कलंगी सम्हारै बनरी के नगर मा,
आजु बना है बनरी के नगर मा।
कुण्डल सम्हारै बना अपने नगर मा,
फेनिया सम्हारै बनरी के नगर मा,
आजु बना है बनरी के नगर मा॥
कंठा सम्हारै बना अपने नगर मा,
सेल्ही सम्हारै बनरी के नगर मा।
आजु बना बनरी के नगर मा॥
जामा सम्हारै बना अपने नगर मा,
फेंटा सम्हारै बनरी के नगर मा।
आजु बना बनरी के नगर मा॥
कंगन सम्हारै बना अपने नगर मा,
चूड़ा सम्हारै बनरी के नगर मा।
आजु बना बनरी के नगर मा॥

आज दूल्हे जी अपनी होने वाली दुल्हन के नगर में हैं। सिर में बाँधी गई मौर को तो अपने

नगर में ठीक-ठाक किया, पर कलंगी को दूल्हन के नगर में। कुण्डल तो वे अपने नगर में सम्हाल रहे थे, पर कटारी वे बन्नी के नगर में सम्हाल रहे हैं। गले में बाँधा कंठा वे अपने नगर में सँभाल रहे थे, पर सेल्ही (कंठी) वे बन्नी के नगर में सँभाल रहे हैं। विवाह परिधान वे अपने नगर में सँभाल रहे थे, पर कमर में बाँधा फेंटा वे बन्नी के नगर में सँभालेंगे। आज दूल्हे जी अपनी दुल्हन के नगर में हैं। हाथ में बँधा कंगन तो वे अपने नगर में सँभाल रहे थे, पर हाथ का चूड़ा वे बन्नी के नगर में सँभाल रहे हैं। क्योंकि आज वे अपनी बन्नी के नगर में हैं।

बनरा

राजा बना बेगि चले आबा हो, तोहरे बिना नीको न लागै।
राजा बना अपने आजा के प्यारे, आजिन प्राण अधार हो,
तोहरे बिना नीको न लागै॥
राजा बना बेगि चले आबा हो, तोहरे बिना नीको न लागै।
राजा बना अपने दादा के प्यारे, दीदी के प्राण अधार हो,
तोहरे बिना नीको न लागै।
राजा बना बेगि चले आबा हो, तोहरे बिना नीको न लागै॥
राजा बना अपने काका के प्यारे, काकिन के प्राण अधार हो।
तोहरे बिना नीको न लागै।
राजा बना बेगि चले आबा हो, तोहरे बिना नीको न लागै॥
राजा बना अपने फूफा के प्यारे, फूफुन के प्राण अधार हो,
तोहरे बिना नीको न लागै।
राजा बना बेगि चले आबा हो, तोहरे बिना नीको न लागै॥
राजा बना अपने भइया के प्यारे, भउजिन के प्राण अधार हो।
तोहरे बिना नीको न लागै।

हे दूल्हे राजा! तुम शीघ्र ही ससुराल से लौट आना, तुम्हारे बिना तो हमें अच्छा ही नहीं लगता। हे दूल्हे जी! तुम अपने दादा के प्यारे और दादी के प्राणों के आधार थे। हे दूल्हे राजा! तुम अपने पिताजी के प्राणों के प्यारे किन्तु माँ के जीवन आधार हो, इसलिए शीघ्र आओ, तुम्हारे बिना किसी को अच्छा ही नहीं लग रहा।

हे दूल्हे जी! तुम अपने चाचा के प्राणों के प्यारे हो, पर अपनी चाचियों के तो जीवन आधार ही हो, इसलिए ससुराल से शीघ्र ही लौट आओ। हे दूल्हे जी! तुम अपने फूफा के प्राणों के प्यारे हो और फूफुओं के प्राणों के आधार, इसलिए शीघ्र लौट आओ, तुम्हारे बिना यहाँ अच्छा ही नहीं लगता। हे दूल्हे राजा! तुम अपने भाइयों को प्राण से भी अधिक प्यारे हो, पर भाभियों के जीवन आधार हो, इसलिए ससुराल से शीघ्र ही लौट आओ, तुम्हारे बिना अच्छा ही नहीं लग रहा।

बन्नी

कच्ची ईंट बाबुल डेहरी न धरियो,
बेटी न दिहा परदेश मोरे लाल।
माया के रोये नदिया बहति है,
बाबुल के रोये सागर ताल मोरे लाल॥
भइया के रोये छतिया फटति है,
भउजी क जियरा कठोर मोरे लाल॥
माया कहै बेटी निस दिन अइहैं,
बाबुल कहइं छै मास मोरे लाल॥
भइया कहै बइया सादी समइया,
भउजी क जियरा कठोर मोरे लाल॥

पुत्री ने कहा– हे पिताजी! आप कच्ची ईंट कभी–भी दरवाजे में मत लगायें और न ही बेटी का ब्याह परदेश में करें। विदाई समय माता के रुदन से आँसुओं की धार बहने लगी और पिताजी के रोने से तालाब भर गया। जब भइया रुदन करते हैं तो मेरा सीना विदीर्ण हो जाता है पर मेरी भाभी का ह्रदय बड़ा कठोर है। मेरी माता ने कहा– बेटी! हमेशा आती रहना। पिता ने कहा– बेटी छः मास में एकाध बार जरूर आ जाना। भइया ने कहा– बहन! हम तुम्हें विवाह आदि मांगलिक अवसरों में बुलाया करेंगे, पर कठोर ह्रदय वाली भाभी ने कुछ नहीं कहा।

बनरा

बनरा के माथे मौरी सोहै, कलगी सम्हारे घरी रे घरी।
बनरा के काने कुण्डल सोहै, फेनिया सम्हारे बन्ना घरी रे घरी॥
बन्ना के मोती सोहै लरी रे लरी,
बन्ना के गरे म कंठा सोहै। सेल्ही सम्हारै घरी रे घरी।
बन्ना मोती के सोहै लरी रे लरी॥
बन्ना के हाँथे कंगन सोहै घड़िया सम्हारै घरी रे घरी।
बन्ना के मोती सोहै लरी रे लरी॥
बन्ना के देहे जामा सोहै, फेटा सम्हारै घरी रे घरी।
बन्ना के मोतिन सोहै लरी रे लरी॥
बन्ना के गोड़े पनही सोहै, मोजा सम्हारै घरी रे घरी।
बन्ना के मोतिन सोहै लरी रे लरी॥

दूल्हे के सिर में मौर बँधी है और वह बार–बार कलगी को सँभाल रहे हैं। उनके कान में कुण्डल हैं और वे कमर में बँधी कटार को बार–बार सँभाल रहे हैं। मोतियों की लड़ी भी

सुशोभित हो रही है। दूल्हे के गले में सोने का कंठा सुशोभित हो रहा है और वे सेल्ही नामक आभूषण को बार–बार सँभाल रहे हैं। दूल्हे के हाथ में कंगन सुशोभित हो रहा है और वे घड़ी को बार–बार सँभाल रहे हैं। मोतियों की लड़ी सुशोभित हो रही हैं। दूल्हे राजा जामा पहने हुए हैं और कमर में बँधे फेटे को बार–बार सँभाल रहे हैं और मोतियों की लड़ी सुशोभित हो रही हैं। उनके पैर में जूते सुशोभित हैं और वे बार–बार मोजे को सँभाल रहे हैं। उनके मौर में मोतियों की लड़ी लटक रही है।

विवाह

पान क पठयब दुलहे दुलेरुआ, कहना रह्या हो बेलमाय।
की तुम बेलम्या राजा दरबरिया, की बेलम्या ससुरार॥
ना हम बेलमेन राजा दरबरिया, ना बेलमेन ससुरार।
हम तो बेलमेन आजा के बगइचा, जहाँ कोइली रयामन बोल॥
हाँथे कै हिरउधी मैं तोही देहौं फँसिया, कोइली पकड़ लइ आव।
डार–डार बउड़ै फँसिया बेटउना, पात–पात कोइली लुकाय।
कोइली पकड़ पुन जाँघ बइठाइन, पूछैं कोइलिया से बात॥
काहे मढ़ाऊँ तोरे अखना रे पखना, काहे म मढ़ाऊँ तोरी चोंच।
रुपबा मढ़ाबा मोरे अखना–पखना, सोनमा मढ़ाबा मोरी चोंच।
साथ चलौं महूँ दूल्हे दुलेरुआ, बोलौ रयामन बोल॥

माँ ने कहा– हे दूल्हे राजा! हमने तुम्हें पान लाने के लिए भेजा था, तुम रास्ते में कहाँ ठहर गये? या तो तुम राजा के दरबार में ठहर गये अथवा ससुराल में। दूल्हे ने कहा– न तो मैं राजा के दरबार में बैठा रह गया और न ही ससुराल में, बल्कि मैं तो अपने बाबा के बगीचे में ठहर गया था, जहाँ कोयल अपनी मीठी कूक सुना रही थी।

माता ने बहेलिया को बुलाकर उससे कहा कि– हे बहेलिया! यदि तुम कोयल को अपने जाल में फँसाकर ला दोगे तो मैं तुम्हें हीरे से जड़ी अँगूठी दूँगी। बहेलिया का लड़का पेड़ पर चढ़ने लगा। वह अगर किसी डाल में जाता तो कोयल पत्ते में छिप जाती अन्त में उसने कोयल को पकड़ लिया। दूल्हे ने उसे अपने जंघा में बिठा लिया और बोला– हे कोयल! तू बता.... मैं तेरे पंख किससे मढ़ाऊँ? किससे तेरी चोंच मढ़ाऊँ? कोयल ने कहा– दूल्हे जी! आप मेरे पंख चाँदी से मढ़ा दो और चोंच सोने से। मैं भी हमेशा तुम्हारे साथ रहूँ और अपनी मीठी बोली सुनाया करूँ।

विवाह

बना सोंमइ अटारी जगाबा सखी,
उनके मउरी म लागी अनार कि कली,

हो अनार कै कली, कचनार कै कली।
बना सोमइं अटारी जगाबा सखी॥
उनके कलगी म बनी है अनार पुतरी,
हो अनार पुतरी, हो कचनार पुतरी।
बना सोमइं अटारी जगाबा सखी॥
उनके कंगन म लगी है अनार कै कली,
हो अनार कै कली, कचनार कै कली।
बना सोमइं अटारी जगाबा सखी॥
उनके जामा म लगी है अनार कै कली,
हो अनार कै कली, कचनार कै कली।
बना सोमइं अटारी जगाबा सखी॥

वर जी अटारी में सो रहे हैं। हे सखी! कोई जाकर उन्हें जगाओ। उनके मौर में अनार और कचनार फूल की कली लगी हुई हैं। उनके कलगी में अनार और कचनार की पुतली बनी हुई हैं। हे सखी! तुम वर जी को जगाओ, वे अटारी में सो रहे हैं। उनके कंगन में भी अनार और कचनार की कली लगी हुई हैं। हे सखी! तुम वर जी को जगाओ वे अटारी में सो रहे हैं। वर जी के जामा में अनार और कचनार की कली लगी हैं। वर जी अटारी में सो रहे हैं, हे सखी! कोई जाकर उन्हें जगाओ।

विवाह

ए जू एक अमरहिया एक आमा पियरा,
एक आमा समरे है पात।
एक आमा मोरे आजा के दुवारे, ओही तरी उतरी बरात॥
ए जू सोवत रहेउ मैं तो माया के कोरबा,
भोर भयो भिनसार।
केखे दुवारे तो बाजन बाजैं, केखर होय बियाह॥
ए जू तुहीं बेटी एगल तुही बेटी गेंगल,
तुहीं बेटी चतुर सुजान।
तोहरे दुवारेन बाजन बाजैं, तोहरै होय बियाह॥
ए जू सीखैं न पायवँ गुन गिरहथिया,
तपय न पायवँ रसोय।
सास ननदिया तो मिल गरियइंहैं, मोसे सही न जाय॥
ए जू सिख ल्याहा बेटी गुन गिरहथिया,
तपि ल्याहा महरी रसोय।

सास ननदिया जो मिल गरिअइहैं, लइ लिहा अचरा पसार॥
ए जू तसुआ मने करा ढोलिया मने करा,
मने सहनइया के बोल।
पंडित विप्र तुम बेद मने करा, मोर ढेरिया रहिहैं कुँवारि॥
ए जू खम्हा के ओट से बोलैं दुलेरुआ,
सुना धना बिनती हमार।
तसबा न मने करा ढोलबा न मने करा, पंडित उचारा तुम बेद॥
ए जू सूरिज देउता कै सखिया भरति हौं, खैइहौं मैं नइया तुम्हार॥

बगीचे में एक पीले पत्ते वाला आम है और एक का पत्ता श्याम रंग का है। एक आम मेरे बाबा के द्वार में भी उसी प्रकार का है, जहाँ पर बारात ठहरी हुई है। मैं अपनी माता की गोद में सो रही थी। बड़े भोर में जब मेरी नींद खुली तो अपनी माँ से पूछा कि– यह बाजे किसके द्वार पर बज रहे हैं, क्या किसी का ब्याह हो रहा है?

बेटी! तुम बड़ी भोली और चतुर सुजान भी हो। ब्याह तो तुम्हारा ही हो रहा है और तुम्हारे ही द्वार पर बाजे बज रहे हैं। बेटी ने कहा कि– न तो मैं घर गृहस्थी का कोई काम सीख पाई और न ही भोजन बनाना सीख पाई। सास और ननदी मिलकर गालियाँ बकेंगी। जो मुझसे सहा नहीं जायेगा। माँ ने कहा– बेटी! तू घर गृहस्थी का काम और भोजन पकाना सीख लेगी, परन्तु अगर सास तथा ननद गालियाँ बकती हैं तो तू प्रतिउत्तर मत देना, बल्कि गालियों को आँचल पसारकर ले लेना।

यह कहती–कहती माँ दु:खी हो गईं और बोलीं– तासे, ढोल और शहनाई बजाने वालों को रोक दो तथा पंडित को भी रोक दो कि वे मंत्रोच्चारण न करें। मेरी बेटी अब कुँवारी ही रहेगी। खम्भे की ओट में बैठे दूल्हे ने कहा– सासू माँ जी! आप ढोलक, नगाड़े और शहनाई बजाने वालों को मना मत करो और पंडितजी आप मंत्रोच्चारण बन्द मत करो। मैं भगवान सूर्य की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि आपकी पुत्री को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने दूँगा।

विवाह

काहे क सेयव हरदी क बिरबा, काहे क मैन मजीठ।
काहे क सेयव ढेरिया फलानी देई, खोरवन दूध पियाय॥
पियरी क सेयव हरदी के बिरबा, चुनरी क मैन मजीठ।
धरम क सेयव ढेरिया फलानी देई, खोरवन दूध पियाय॥
खोरवन दूध कटोरबन पानी, आजी ओखी लीन्हे है ठाढ़।
एक नन्चू दुधबा पिया तुम मोरी नातिन, चउके म फेर पुन जाव॥
तब नहि दुधबा पिआया मोरी आजी, जब रहेव बारि कुँवारि।

अब कइसे दुधबा पियौं हो मोरी आजी, ठाढ़ बिदेशिया दुआर॥
खोरवन दूध कटोरबन पानी, माया उनखीं लीन्हे हैं ठाढ़।
एक नन्चू दुधबा पिया हो मोरी बेटी, तब पुन चउके म जाउ॥
तब नहि दुधवा पिआया मोरी माया, जब रहेव बारि कुँवारि।
अब कइसे दुधबा पियौं हो मोरी माया, ठाढ़ बिदेशिया दुवार॥

मैंने हल्दी पेड़ और मैन मजीठ को पाल-पोसकर क्यों बड़ा किया था और लड़की को कटोरा में दूध पिलाकर क्यों पाला था? मैंने हल्दी के पौधे को पियरी (पीले रंग की धोती) को रंगने के लिये और मैन मजीठ को चुनरी रंगने के लिये पाला था। इसी प्रकार पराया धन समझते हुए भी मैंने कटोरों दूध पिलाकर बेटी को पाला था।

चौके में बैठने की तैयारी हो रही है, कन्या की दादी माँ एक कटोरे में दूध और दूसरे में पानी लेकर खड़ी हैं और कह रही हैं कि- हे पोती! तुम थोड़ा सा दूध पी लो, फिर चौके में बैठो। पोती ने कहा- दादी माँ! जब छोटी थी तब आपने दूध नहीं पिलाया, भला अब दूध पीने का समय कहाँ, जब परदेशी 'दूल्हा' द्वार पर खड़ा है? एक कटोरे में दूध और दूसरे में पानी लिये लड़की की माँ खड़ी है और कहती है कि- थोड़ा सा दूध पी लो बेटी, फिर तुमको चौक में जाना है। वह लड़की बोली- माया! मैं जब छोटी थी तब आपने दूध नहीं पिलाया, भला अब दूध पीने का समय कहाँ, जब परदेशी 'दूल्हा' द्वार पर खड़ा है?

विवाह

जइसै सेंधउरी म सेंदूर झलकै, जइसै गंगा जल पान।
तइसै झलक दइके निकरी फलानी देई, चउके म बइठी हैं जाय॥
काहे बेटी अनमन, काहे बेटी उनमन, काहे बेटी बदन मलीन।
धौ तोर सोनमा मलिन हबै बेटी, धौ रूपिया हइ खोट॥
नाहिन माया मोर सोनमा धूमिल भा, नाहिन रुपिया है खोट।
मै धना गोरि पिया मोरे सांवर या गुन बदना मलीन॥
सांवर-सांवर ना करा बेटी, सांवर रहे भगमान।
सँवरे कँथइया मुख मुरली बजामै, मोह रहो संसार।
माया कै कोख कुम्हार क आबा, कोऊ करिया कोऊ गोर॥

जिस प्रकार सिंधौरी (काष्ठ की एक डिबिया) में लाल सिंदूर और गंगाजी का जल झलकता है उसी प्रकार अपने रूप राशि को झलकाती कुँवरि चौक में आकर बैठ गई। माँ ने पूछा- बेटी! तेरा मन क्यों दुखी है और शरीर क्यों मलीन होता जा रहा है? क्या वर पक्ष से लाये गये स्वर्ण आभूषण खोटे हैं या रुपये खोटे हैं?

बेटी ने कहा- माँ! न तो स्वर्ण आभूषण नकली हैं और न ही रुपया खोटा, बल्कि मन

मालिन्य का कारण यह है कि मैं तो गौर वर्ण की खूबसूरत कन्या हूँ, पर मेरे होने वाले पति श्याम रंग के हैं। माँ ने समझाया कि- बेटी! साँवला-साँवला मत कहो, इस रंग के तो भगवान भी थे। वे श्याम रंग के कँधइया जब बंशी बजाते थे, तो सारा संसार मोहित हो जाता था। माता की कोख से जन्म लेने वाले बालक-बालिका और कुम्हार के घड़ा पकाने वाले भठ्ठे से कब-कौन श्याम या गौर वर्ण हो जाय? यह कोई नहीं जानता।

विवाह

फलाने कि ढेरिया कि बड़ी-बड़ी अँखिया, ओठवन चुवत ओगार।
फलाने के पुतबा कै मउरी सजति है, भँवरी लेत बसेर॥
एक चिठिया लिखि भेजइं हो फलानी कुँवरि, दिहा राजा दुलहे के हाँथ।
मउरी म तोहरे तो भमरी बसति है, हमहूँ जोगिन होइ जाब॥
एक चिठिया लिख भेजै झुला ने रामा दीन्हन तुम कुमरि जबाब।
बनके री भमरी बनै उड़ि जइहैं, हमरा तुमसे होइ बियाह॥
कउन आहीं दुलहा कउन दूल्हे भइया, कउन आही दुलहे के बाप॥
छोटी-मोटी हथनी सवारी म साजे, सोनमा मढ़ाये ओखे दाँत।
सोनन हउदा कँसाये जउन आमैं, ओई आंहीं दुलहे के बाप॥
जमुना के ईरे तीरे घोड़िला कुदामैं, बाँधे बैजनी तो पाग।
सिर ऊपर कलंगी तो चमकत आबै, ओईं आंही दुलहे के भाइ॥
छोटी-मोटी डड़िया सवारी किहै हैं, छोटेन लगे हैं कहार।
माथे मउर सिर झलकति आबै, ओईं आंहीं दुलहे तोहार॥

अमुक (नाम) की पुत्री की बड़ी-बड़ी आँखें हैं और ओंठों से सादगी और मधुरता झलक रही है। अमुक जी के पुत्र के मौर में भमरी बसती है, जिसके कारण उस व्यक्ति को देश-परदेश घूमते रहना पड़ता है। अमुक कुँवरि ने एक पत्र दूल्हे राजा के पास भेजा और कहा कि- आप इसका उत्तर देना। आपके मौर में भमरी वास करती है, जिसके कारण मुझे भी जोगिन बनकर आपके साथ फिरना पड़ेगा। पत्र के उत्तर में एक पत्र दूल्हे राजा ने भी लिखा और कहा कि- दुल्हन रानी! तुम उत्तर देना। मौर में बैठी जंगल की भमरी अपने आप उड़कर जंगल चली जायेगी और मेरा तुमसे विवाह हो जायेगा। पत्र पढ़कर कन्या मन ही मन प्रसन्न हो जाती है और अपनी सहेलियों से पूछती है कि- दूर से आ रही बारात में दूल्हे राजा कौन हैं, कौन उनके छोटे भाई हैं, और कौन उनके पिता हैं?

सखियों ने कहा कि- छोटी किन्तु मोटी सी हथिनी, जिसके दाँत सोने से मढ़ाये हुए हैं उसमें जो सवार हैं वह दूल्हे के पिताजी हैं। जो जमुना नदी के किनारे-किनारे घोड़ा नचाते आ रहे हैं और जिनके सिर में बैंगनी रंग की पगड़ी और उसमें बँधी कलंगी चमक रही है वही दूल्हे के

भाई हैं। परन्तु जो छोटे-छोटे कहारों की छोटी-सी पालकी में सवार हैं और जिनके सिर में बँधी मौर दूर से ही चमक रही है, वही तुम्हारे दूल्हे राजा हैं।

विवाह

बखरी तो भली बनबाया हो फलाने राम, सुरिजन मुँहे क दुवार।
ओही होइ के निकरी हैं बेटी रे फलानी देई, गोर बदन कुम्हलाय॥
कहा त ओ मोरी बेटी छत्र तनाऊँ, कहा करौं सुरिज अलोप।
काहे क मोरे बाबुल छत्र तनइहा, काहे करा सुरिज अलोप॥
आज के रात बाबुल तोहरे मड़ये तरी, काल्हि से बिदेशिया के हाथ॥

अमुक जी! आपने मकान तो बहुत सुन्दर बनवाया और सूर्य मुँह अर्थात् पूर्व दिशा की ओर दरवाजा भी है। उसी द्वार होकर पुत्री निकली पर उसका गोरा बदन मलीन पड़ गया। पिता ने कहा- बेटी! यदि तुम कहो तो मैं द्वार में क्षत्र तना दूँ अथवा सूर्य को ही डुबा दूँ। बेटी ने कहा- पिताजी! आप एक दिन के लिए व्यर्थ क्यों क्षत्र तनायेंगे और सूर्य का प्रकाश रोकेंगे? आज की रात्रि मैं आपके घर बसूँगी और कल आप मुझे परदेशी के हाथ सौंप देंगे।

विवाह

हमरे पछितिया कदम केरो बिरबा, मोतियन करही है डाल।
ओही तरी मालिन फुलबा गुहति है, गोरे बदन कुम्हलान॥
काहे गुन मालिन तोर ओठबा सुखाने, काहे गुन बदन मलीन।
खाहु न मोरी मालिन खैर सुपरिया, कतरा बेलहरिन पान॥
सोबा तु मालिन हमरी सेजरिया, हमी देख जियरा जुड़ाय॥
अगिया लगै तोरे खैर सुपरिया, बजुर बेलहारिन पान।
बना रे रहै मोर मलिया छोकरबा, जेहि देखे जियरा जुड़ाय॥

दूल्हे ने कहा- हमारे मकान के पिछवाड़े एक कदम्ब का पेड़ है, जिसके डाल में मोती जैसे फूल खिले हैं। वहीं पर बैठी एक मालिन फूलों का गजरा गूँथ रही थी और अचानक उसका गोरा बदन मलीन पड़ गया।

मैंने कहा कि- हे मालिन! तुम्हारे ओंठ क्यों सूख गये और बदन क्यों मलीन हो गया? तुम हमारी खैर, सुपाड़ी और डिब्बे में रखा पान खाओ और तुम हमारी सेज में विश्राम करो। हमें देखकर प्रसन्न रहो। मालिन ने कहा- तुम्हारे खैर, सुपाड़ी में आग लगे और डिब्बे के पान में पत्थर पड़ जाय। मेरा माली छोकरा जीवित रहे, उसी को देखकर मेरा मन प्रसन्न रहेगा।

विवाह

आज सबेरे जमुन जी के तीरे,
कृष्ण जी गउवै चरामैं मोरे लाल।
ओही होइ के निकरी है ग्वालिन गुजरिया,
कृष्ण गहै लागे बाँह मोरे लाल॥
मचियन बइठी हैं माता यसोमति,
ग्वालिन तो ओरहन देय मोरे लाल।
दहि मोरो खाइन मटकि मोरी फोरिन,
टोरिन है मोतियन क हार मोरे लाल॥
हमरे दुलेरूवा गौधुरिया खेलन गे,
कइसन करौ परतीत मोरे लाल॥
सुन ग्वालिन मोरो बारो कँधइया,
नाहकै न दोख लगाव मोरे लाल॥

आज सुबह जमुना जी के किनारे कृष्णजी बंशी बजा रहे हैं। वहीं से होकर ग्वालिन छोकरी निकली, तो कृष्ण ने उसकी बाँह पकड़ लिया। माता यशोदा मोढ़े में बैठी थी, ग्वालिन ने आकर उलाहना दिया कि तुम्हारे कँधइया ने मटकी फोड़कर दही खा लिया और मेरा मोतियों का हार भी तोड़ दिया। माता यशोदा ने कहा कि– मेरा कँधइया तो गोधुलि बेला में खेलने चला गया था, उसको व्यर्थ दोष मत लगा। मैं तेरी बातों पर कैसे विश्वास करूँ? क्योंकि अभी वह नादान है।

विवाह

बापा मोरे दीन्हिन नौ मन सोनमा,
माया मोरी लहर पटोर।
भइया मोरे दीन्हिन असने कै घोड़ी,
भउजी सेंदुर भरि माँग॥
नौ मन सोनमा काहे बापा दीन्ह्या,
फट जइंहै लहर पटोर।
असने कै घोड़िउ रामा दूरी रखबइ,
लेबइ सेंदुर भरि माँग॥

मेरे पिता ने नौ मन सोना दिया, माता ने लहँगा। भइया ने अपने चढ़ने की घोड़ी और भाभी ने माँग पर सिन्दूर। हे पिताजी! तुमने नौ मन सोना क्यों दिया? मुझे उसकी जरूरत नहीं है।

माँ का दिया लहँगा भी फट जायेगा। भइया के द्वारा चढ़ने के लिए दी गई घोड़ी भी दूर रखूँगी। मुझे तो बस भाभी द्वारा दिये गये माँग भर सिन्दूर की ही आवश्यकता है।

विवाह

मालिन दुवारे सुघर सुपरिया,
अलग-बिलग ओखी डार मोरे लाल।
ओहिन होइके निकरे हैं दुलरे दुलेरुवा,
कतरे सुपरिया कै डार मोरे लाल॥
मचियन मांहीं बइठे फलाने रामा,
मालिन तो ओरहन देय मोरे लाल।
बरजा हो साहेब अपने दुलेरुवा,
कतरे सुपारी कै डार मोरे लाल॥
कुँवना जो होत त भठतेव रे मालिन,
सगरा भठा नही जाय मोरे लाल।
पोथिया जो होत त बाँच सुनउतेंव,
करम न बाँचा जाय मोरे लाल।
बालक जो होत बरजतेव रे मालिन,
छयल बरज नहीं जाय मोरे लाल॥

मालिन के द्वार में एक सुन्दर सा सुपाड़ी का पेड़ था जिसकी डाल चारों ओर फैली थी। वहीं से होकर दूल्हे जी निकले और उसकी डाल को काट दिया। दूल्हे के पिताजी मोढ़े में बैठे थे। मालिन ने उनसे उलाहना दिया कि- श्रीमान! आप अपने पुत्र को रोकिए उन्होंने सुपाड़ी की डाल काट डाली।

दूल्हे के पिता ने कहा- हे मालिन! छोटे से कुआँ को तो पाटकर नष्ट किया जा सकता है, पर तालाब कैसे पाटा जा सकता है? अगर कोई पुस्तक हो तो उसे बाँच कर सुनाया जा सकता है, पर तकदीर को कैसे बाँचा जा सकता है। इसी प्रकार छोटे बच्चे को तो समझाया जा सकता है पर जवानों को कैसे समझाया जा सकता है।

विवाह

बइठी अटारी म सुघर सुवासिन,
सउहे धरे दर पनिया,
कि हाँ जू हो सउहे धरे दर पनिया।
मोतिन हार सोनेन केरे कंगना,

लहरै कमर करधनिया,
के हाँ जू हो लहरै कमर करधनिया॥
साड़ी म झलकइ चन्दन जइसी देहिया,
झलकइ चोली चिकनिया,
कि हाँ जू हो झलकइ चोली चिकनिया॥
हाँथे म रतन अँगूठी तो चमकइ,
नाके म चमकइ बेसरिया,
कि हाँ जू हो नाके म चमकइ बेसरिया॥

अटारी पर सुन्दर सुहागिन बैठी हुई है और अपने आगे एक दर्पण रखे हुए है। उसके गले में मोतियों की माला और हाथ में सोने के कंगन हैं तथा कमर में करधनी शोभायमान है। साड़ी के अन्दर से उसकी चन्दन जैसी देह झलक रही है और खूबसूरत चोली भी। उसके हाथ में रत्न जड़ित अँगूठी एवं नाक में बेसर शोभा दे रही है।

विवाह

राम लखन दोऊ बन के अहेरिया,
बन-बन खेलइं अहेर मोरे लाल।
एक बन नाके दुसर बन नाके,
तिसरे म लगी है पियास मोरे लाल।
अस नहिं आय कोऊ धरम मनइया,
एक बुँद पनिया पिआव मोरे लाल॥
बँसवा के ओटे निकरी सितल देई,
पायन नेवर झहनाय मोरे लाल।
केखर अह्या बरी बियाही,
केखर लागा भउजइ मोरे लाल॥
रामा कि आंहीं बरी बियाही,
लछिमन की भउजाई मोरे लाल।
राजा दसरथ के कुल की नंदिनी,
पनिया पिया न बिचार मोरे लाल॥

राम और लक्ष्मण दोनों जंगल के शिकारी हैं जो जंगल में घूम-घूम कर शिकार खेलते हैं। वे जब एक के बाद दूसरा वन घूमते हुए तीसरे में पहुँचे तो उन्हें प्यास लग आई, पर ऐसा कोई धर्मात्मा नहीं है जो उन्हें एक बूँद पानी पिला दे। वहीं बाँस के झाड़ की ओट से सीताजी निकल पड़ीं, जिनके पैर से घुँघरू की आवाज आ रही थी। राम ने कहा- आप किसकी ब्याहता पत्नी

और किसकी भावज हो ? सीताजी ने कहा– मैं राम की ब्याहता पत्नी और लक्ष्मण की भावज हूँ। राजा दशरथ के कुल की बहू, मैं आपको पानी पिलाने के लिए निकली हूँ इसलिए बगैर चिन्ता किये पानी पी लें।

विवाह

मैं तोसे पूँछउ गंगा गोसाइन, कउने गुन ढावर पानी मोरे लाल।
धौं तोरे पानी मगर हिलोरिस, धौं तोरी ओधसी कगारी मोरे लाल॥
ना मोरे पानी मगर हिलोरिस, नहिं मोरी ओधसी कगारी मोरे लाल।
हँथिया घोड़िला लइ उतरे राजा दसरथ, ढावर पानी देखाय मोरे लाल॥
कै लख उनके हाथी और घोड़ा, कै लख सजी है बरात मोरे लाल।
नौ लख उनखे हाथी और घोड़ा, दस लख साजे बरात मोरे लाल॥

हे माँ गंगे! मैं तुझसे पूछ रही हूँ कि– तेरा पानी मटमैला क्यों है ? क्या तेरे जल को मगर ने उछल–कूदकर मटमैला कर दिया है अथवा तेरा किनारा टूटकर गिर गया है ? गंगा ने कहा– न तो मेरे जल में मगरमच्छ ने उछल–कूद किया और न ही मेरे किनारे की भीट टूटकर गिरी है, बल्कि मटमैला पानी होने का कारण तो यह है कि– राजा दशरथ अपने हाथी–घोड़ा के समूह के साथ उतरकर गये हैं। उनके कितने हाथी–घोड़ा थे और बारात की संख्या कितने लाख थी ? गंगा ने कहा– उनके नौ लाख हाथी–घोड़ा थे और दस लाख बाराती थे।

भाँवर

पहिल भमरि फिर आयउ बाबा,
अबहूँ तोहारी हौं हो।
दूसरि भमर फिरि आयउ बापा
अबहूँ तोहारी हौं हो॥
तीसरी भमरि फिरि आयउ काका
अबहूँ तोहरी हौं हो।
चउथी भमरि फिरि आयउ भइया
अबहूँ तोहरी हौं हो।
पाँचउ भमरि फिरि आयउ नाना
अबहूँ तोहारी हौं हो॥
छठउँ भमरि फिरि आयउ फूफा
अबहूँ तोहारी हौं हो।
सातउँ भमरि फिरि आयउ माया
अब भयउँ पराई हो॥

कन्या ने कहा– हे बाबा! मैं पहली भाँवर फिर चुकी, पर अब भी तुम्हारी ही हूँ। हे पिताजी! मैं दूसरी भाँवर फिर चुकी, पर फिर भी अभी तुम्हारी ही हूँ।

हे चाचा! मैं तीसरी भाँवर फिर चुकी, पर अब भी तुम्हारी ही हूँ। हे भइया! मैं चौथी भाँवर फिर चुकी फिर भी अभी तुम्हारी ही हूँ। हे नाना! मैं पाँचवीं भाँवर फिर चुकी फिर भी अभी तुम्हारी ही हूँ। हे फूफा! मैं छठवीं भाँवर फिर चुकी फिर भी अभी तुम्हारी ही हूँ। हे माँ! मैं सातवीं भाँवर फिर चुकी इसलिए अब पराई हो गई।

भमरी

रामा बियाहन चले राजा दसरथ, बरहौं बजन बजबाय।
जाइ बरात बरा तरी मेली, भँटबा बखानन लाग॥
अच्छे-अच्छे कवित कहा राजा भटबा, तुहीं देबइ असने क घोड़।
आइ बरात जमुन दह मेली, जमुना धरे दोऊ पाव॥
हाँथे कइ हिरौंधी मैं तोह देहों केवटा, रामा क पार लगाव।
रामा रे उतरे औ लछिमन उतरे, उतरी है सकल बरात॥
अच्छे-अच्छे कलस लेसाया रानी चेरिया, तुहीं देबई कपिला क दान।
होइगा बियाह राम कोहबर गे, सरहज छेकइ दुवार॥
आउरे नउवा आउरे बरिया, धाइ अजुधिया क जाउ।
हमरे मुड़उसे मोतिन माला, धाइ के जलदी लइआउ॥
पहिरा हो सरहज मोतिन माला, छोड़ि द्या पँवर दुवार॥

राम का विवाह करने के लिए दशरथजी बारात सजाकर जा रहे हैं, जिसमें बारह प्रकार के बाजा बज रहे हैं। जैसे ही बारात बरगद के पेड़ के नीचे विश्राम करने लगी, भाँट बिरदावली बखान करने लगे। दशरथ ने कहा– हे भाँट राज! तुम अच्छे-अच्छे कवित्त सुनाओ, हम तुम्हें चढ़ने के लिए अपना घोड़ा इनाम में देंगे। जैसे ही बारात जमुना नदी के तीर पहुँची, जमुना के दोनों किनारे जलमग्न थे।

हे केवट! मैं तुझे हाथ में पहनने के लिए हीरे से जड़ी अँगूठी दूँगा, तू हमारे राम को पार उतार। नाव में चढ़कर राम पार हुए, लक्ष्मण पार हुए और सारी बारात उस पार उतर गई। हे सुहागिनों! तुम अच्छे-अच्छे कलश जलाओ, हम तुम्हें सफेद रंग की गायें दान में देंगे। राम का विवाह हो गया और जब वे वरकोष्ट जाने लगे तो सरहज ने रास्ता रोक लिया।

राम ने कहा– हे नाई, बारी! तुम लोग यहाँ आओ और शीघ्र ही अयोध्या के लिए प्रस्थान करो। मेरे सिरहाने मोतियों की माला रखी है उसे ले आओ। हे सरहज! तुम मोतियों का हार पहनो और वरकोष्ट का प्रथम द्वार छोड़ दो।

लाबा परोसना

लाबा परस भाई लाबा,
तोहरी बहिनी पियारी है हो।
पहिल पियार तोही सगा बहनोइया,
दुसरे पिआरी तोरी बहिनी हो॥
लाबा परस भाई लाबा,
तोहरी बहिनी पियारी है हो॥

हे भाई! तू लाबा परोस, तुझे तेरी बहिन बहुत प्रिय है। तू अपने सगे बहनोई को बहुत चाहता है और अपनी बहिन को भी। हे भाई! तू लाबा परोस क्योंकि तुम्हें अपनी बहन बहुत प्रिय है।

गाँठ छोड़ना

देबी तोरे अँगने आँयव, निहुर के पइंयाँ लागौं।
कहाँ देख देवी अँगने आँयव।
कहाँ देखि मुस्कानी निहुर के पइंयाँ लागौं॥
दूधा देखि देवी अँगने आँयव,
पूता देख मुस्कानि, निहुर के पइंयाँ लागौं।
देवी तोरे अँगने आँयव, निहुर के पइयाँ लागौं॥

हे माँ दुर्गा! मैं तुम्हारे आँगन आई हूँ इसलिए झुककर चरण स्पर्श कर रही हूँ। हे माता! मैं क्या देखकर तेरे आँगन में आई हूँ और क्यों इतनी प्रसन्न हूँ?

हे देवी! तुम दूध-पूत से भरपूर करने वाली हो, बस यही इच्छा लेकर तुम्हारे आँगन में आई हूँ और प्रसन्न हूँ कि तुम मेरी अभिलाषा पूरा करोगी।

कोहबर

हमरे दूलह जेवन बइठे, राम जेवइयाँ रे।
छींदा टाठी दइद्या काकी, राम जेवइयाँ रे॥
छींदा दोहनिया हारा बहिनिया, राम जेवइयाँ रे॥
नोबा गइया दइद्या मइया, राम जेवइयाँ रे।
हमरे दूलह जेवन बइठे, राम जेवइयाँ रे॥

हमारे दूल्हे राजा भोजन करने के लिए बैठे हैं, उनके सामने थाली आने से रोको। उन्हें तब भोजन दो, जब वे थाली के बदले अपनी चाची को देने का वायदा करें। इसी प्रकार दोहनी

को रोककर उनकी बहन एवं गाय की नोई के स्थान पर उनकी माता को ले लो, तब भोजन करने देना। हमारे दूल्हे राम भोजन करने बैठे हैं।

कोहवर

ललनै ना लजबाया, उतरि चला दुलहिन।
तोहरे भितर हमी गर्मी लगति है,
भितरै पंखा लगउबै, उतरि चला दुलहिन॥
तोहरे भितर हमी भूखा लगति है,
भितरै कदुइन बसउबै उतर चला दुलहिन॥
तोहरे भितर हमी प्यासा लगति है,
भितरै सगरा खनउबै, उतरि चला दुलहिन॥

परछन होने के बाद महिलाएँ वधू को अन्दर ले जाना चाहती हैं, पर वह अन्दर जाने में शरमा रही है, इसलिए वे कहती हैं कि- तुम अन्दर चलो, दूल्हे को लज्जित मत करो। बहू ने कहा कि- अन्दर मुझे गर्मी लगेगी। महिलाओं ने कहा- हम घर के अन्दर पंखा लगवा देंगी। बहू ने कहा- मैं अन्दर नहीं जाऊँगी, क्योंकि मुझे वहाँ भूख लगेगी। महिलाओं ने कहा कि- तुम अन्दर चलो, हम वहाँ मिठाई बेचने वाली बसा देंगी। वधू ने कहा- मुझे वहाँ प्यास लगेगी। महिलाओं ने कहा- तुम चिन्ता न करो, डोले से उतरकर अन्दर चलो, हम वहाँ तालाब खुदवा देंगी।

कोहवर

भर दुलहिन तैं पइला रे, तोर दीदी धोधइला।
हमार लड़िका जीता,
छिनार कै बिटिया हारी रे, तोर दीदी धोधइला।
भर दुलहिन तैं पइला रे, तोर दीदी धोधइला॥

कोहवर में बहू पैला में चावल भरने का रस्म करती है और वर उसे पैर से गिरा देता है। महिलाएँ गाती हैं कि- तू पइला भर। जब वह जल्दी-जल्दी नहीं भर पाती तो कहती हैं कि- हमारा लड़का जीत गया और बहू की माँ को गाली देती हैं कि- छिनाल की लड़की हार गई।

कलेवा

निवाह लीन्हेव गुंइया हो, तुम प्राण पियारे लाला।
दशरथ सुत कौशिल्या जाये, येइँ ननदोइया हमारे,
निवाह लीन्हेव गुइया हो तुम प्राण पियारे लाला॥

मलिया गिर चन्दन उंय गारे, केशर तिलक सवारे।
निवाह लइयो गुंइया हो, तुम प्राण पियारे लाला॥
एक सखी जल लीन्हे ठाढ़ी, एकै चरन पखारे।
निवाह लइयो गुइया हो, तुम प्राण पियारे लाला॥
बरन बरन के चार सिंघासन, चारिउ मा बइठारे।
निवाह लइयो गुइया हो, तुम प्राण पियारे लाला॥
बरन बरन के छप्पन भोजन, जेवत राज दुलारे।
निवाह लइयो गुइया हो, तुम प्राण पियारे लाला॥

हे सखियों! ए चारों राजकुमार तुम्हारे बीच आ गये हैं तो इनको इस प्रकार रखना कि कोई कष्ट न होने पाये। ये दशरथ और कौशल्या के पुत्र ही तुम्हारे ननदोई हैं। वे माथे में मलयागिर चन्दन का लेप और केशर का तिलक लगाये हुए हैं। इसलिए इन्हें अपने बीच इस तरह रखना कि कोई कष्ट न होने पाये। क्योंकि ये प्राणों से भी अधिक प्यारे हैं।

एक सखी उनके लिए जल लेकर खड़ी है और दूसरी चरणों को धो रही है। हे सखियों! इनको इस तरह निबाहना कि किसी प्रकार का कष्ट न हो, क्योंकि ये प्राणों से अधिक प्यारे हैं। अलग-अलग रंग के चार सिंहासन हैं, जिनमें चारों राजकुमारों को बिठाया गया। छप्पन प्रकार के व्यंजन तैयार हैं, जिन्हें राजकुमार खा रहे हैं। हे सखियों! इनका इस प्रकार ख्याल रखना कि इन राजकुमारों को कोई कष्ट न हो, क्योंकि ये प्राणों से अधिक प्यारे हैं।

विदा

खेत भला जहाँ गोंहुवा रे उपजै हो,
बाग भली गुलजार।
कोरव भली जहाँ उपजै दुलेरूआ हो,
नौबत बजै दुवार॥
कोरे पहिरै रुन-झुन गहना,
कोरे लहर पटोर।
कोरे पहिरै तन म पियरिया हो,
नउबत बजै दुवार॥
माया तो पहिरइं रुन-झुन गहना हो,
माया तो लहर पटोर।
माया पहिरिन तन म पियरिया हो,
दुलहे कै आरती उतार॥
आरती उतारिन पालकी चढ़ाइन हो,
माया गई मुरझाय॥

वह खेत अच्छा है जहाँ गेहूँ पैदा होता है। वह बाग अच्छा लगता है जो हमेशा हरा–भरा रहता है। वह कोख अच्छी मानी जाती है जिससे पुत्र जन्म होता है और जिसके विवाह में नगाड़े बजते हैं। रुन–झुन, रुन–झुन बजने वाले आभूषण कौन पहनता है और कौन चुन्नटदार लहँगा, पियरी पहनता है। रुन–झुन बजने वाले आभूषण, लहँगा और पीले रंग की धोती माताजी पहनती हैं जो दूल्हे की आरती उतारती हैं। वर की आरती उतारकर जैसे ही पालकी में बिठाया, वे कुम्हला कर अचेत हो गईं।

परछन

लाला खोल केमरिया के द्वार, मैं देखउँ तोरि धना।
धउँ सामर हइ धउँ गोर, मैं देखउँ तोर धना॥
लाला फूफू जो खड़ी हैं दुवार, मालिक तोरे कहना गये।
फूफू मालिक गये हैं भण्डार, तिजोड़ी ताला खोल रहे।
लाला खोल केमरिया के द्वार, मैं देखउँ तोरि धना॥
लाला बहिनी जो खड़ी है दुवार, त मालिक तोहरे कहना गये।
बहिनी मालिक गये गउ सार, त गउवा बराय रहे॥

सभी महिलाएँ कह रही हैं– दूल्हे! तुम अपनी पालकी का द्वार खोलो, तो हम तुम्हारी वधू को देखें कि वह श्याम रंग की है अथवा गौर वर्ण की।

ललन! तुम्हारी बुआ द्वार में इनाम लेने के लिए खड़ी हैं। गृह स्वामी कहाँ गये हैं ? दूल्हे ने कहा– बुआ! तुम थोड़ा धीरज रखो, गृह स्वामी भण्डार–गृह में तिजोड़ी का ताला खोलने गये हैं। दूल्हे! तुम पालकी का द्वार खोलो, क्योंकि तुम्हारी बहिन तुम्हारी वधू को देखने और इनाम पाने का बेसब्री से इन्तजार कर रही है। तुम्हारे गृह स्वामी कहाँ हैं? दूल्हे ने कहा– बहिन! तुम थोड़ा धैर्य रखो, गृह स्वामी गोशाला में तुम्हें इनाम देने के लिए गाय चुन रहे हैं।

परछन

ऊँचे नीचे धउ रे, उनकी माया निहारइं हो।
काहा निहारै फलाने बहू, रामा लखन अइसी जोड़ी हो॥
ऊँचे नीचे धउ रे, उनकी काकी निहारइं हो।
कहना निहारइं काका फलाने रामा, उनकी राम लखन अस जोड़ी हो॥
ऊँचे नीचे धउ रे, उनकी फूफू निहारइं हो।
कहना निहारइं फूफा फलाने रामा, उनखी रामा लखन अस जोड़ी हो॥
ऊँचे नीचे धउ रे, उनकी बहिनी निहारइ हो।
कहना निहारै जीजा फलाने रामा, उनखी रामा लखन जइसी जोड़ी हो॥

ऊपर से नीचे आ-जाकर दूल्हे की माँ बार-बार देख रही हैं। वर की भाभी क्या देख रही है ? अरे! वह तो दोनों भाइयों की राम-लक्ष्मण जैसी जोड़ी देख रही है।

ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर बार-बार आ-जाकर उसकी चाची देख रही हैं। उसके चाचा क्या देख रहे हैं? वे दोनों भाइयों की राम-लक्ष्मण जैसी सुन्दर जोड़ी देख रहे हैं। बार-बार ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर आ-जाकर वर की फूफू देख रही हैं। पर उसके फूफा क्या देख रहे हैं? वह तो दोनों भाइयों की राम-लक्ष्मण जैसी जोड़ी देख रहे हैं। बार-बार ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर आ-जाकर उसकी बहिन देख रही हैं। पर उसके जीजा क्या देख रहे हैं? वह तो दोनों भाइयों की राम-लक्ष्मण जैसी जोड़ी देख रहे हैं।

परछन

रइया उतारौं कि नोनमा हो, जादू डारे मलिनिया।
कहना उपजै रइया और नोनमा, कहना उपजै मलिनिया हो,
जादू डारे मलिनिया॥
गोकुला उपजइ रइया औ नोनमा,
मथुरा उपजइ मलिनिया हो, जादू डारे मलिनिया॥

राई या नमक किससे वर की डीठ (नजर) उतारी जाय ? क्योंकि मालिन ने जादू डाल दिया है। यह राई नमक कहाँ पैदा होता है और कहाँ पैदा होती है वह जादू डालने वाली मालिन? राई और नमक गोकुल में पैदा होते हैं और जादू डालने वाली मालिन मथुरा में पैदा होती है। उसने जादू डाल रखा है।

बुन्देली संस्कार गीत

माधव शुक्ल 'मनोज'

सम्पर्क - सी-13, अवन्ति विहार, तेली बाँधा, रायपुर

संचत

कब हुइयें लाल-निहाल, सोचत-सोचत .....
रंजना सांवरी पर गई।
रंजना मंदिर में ठांड़ी, अपने सुखावे केश।
सो ऊ खों दिखाई दै गव, धनवन्तरी सो वेष।
रंजना वैद बुलैयो
चलती नवज दिखाईयो,
तलफत-तलफत ....
रंजना पीरी पर पई।
कोठी के अन्दर कोठरी, चन्दन जड़े किवार।
रंजना तोरे प्रेम कौ, खोलत साजन दुआर।
रंजना धीरे-धीरे आइयो, ढूँढ कें चाबी लै आइयो
कब हुइयें लाल निहाल, रंजना नजरें पीरी पर गईं।
मर-मर कें सेजों पे रंजना, जी-जी कें फिर उठ गई।
हुइयें लाल निहाल सोच कें, फिर बगिया में खिल गई।
कब हुइये लाल-निहाल, सोचत-सोचत ....
रंजना पीरी पर गई।

मुझे कब पुत्र प्राप्त होगा ? उसे पाकर मैं कब सुखी हो जाऊँगी ? मेरी प्यारी सखी रंजना ! यही सोचते-सोचते चिन्ता के रोग से ग्रस्त मेरा गौर वर्ण साँवला हो गया है।

एक दिन मैं अपने घर की छत पर खड़ी अपने बाल सुखा रही थी। इतने में मुझे धनवन्तरी जैसा एक दिव्य पुरुष दिखा। उसे अपनी चलती हुई नब्ज (नाड़ी) दिखाने को जी

चाहा। पुत्र प्राप्ति की चिन्ता में छटपटाती हुई, हे सखी! मैं तो पत्तों की तरह सूखकर पीली पड़ गई हूँ। हे सखी! मेरी तन की कोठी में मन की एक और कोठी है, जो चन्दन के किवाड़ों से जड़ी है। जिसमें प्रेम रूपी ताला पड़ा है। उसे मेरे प्रियतम ही खोल सकेंगे। हे रंजना! तुम धीरे-धीरे आना और प्रेम की चाबी ढूँढ़ कर ले आना। पुत्र जन्म की प्रतीक्षा करते-करते मेरी नजरें पथरा कर पीली पड़ गई हैं।

हे प्यारी सखी रंजना! मैं इसी चिन्ता में न जाने कितनी बार निराश होकर मरणासन्न सी हो जाती हूँ और फिर एक उत्साह उमंग लेकर जी उठती हूँ कि एक दिन मेरी कोख से लाल होगा और मेरे सपनों की बगिया हरी-भरी होकर खिल उठेगी।

संचत

अंगना में नीबू भीतर अनार,
राजा-खिड़किन दाख-चिरौंजी।
मैंने बो दई है- पीपरिया।
अंगना में नीबू सींचूं, भीतर अनार सींचूं
राजा- खिड़किन दाख-चिरौंजी
दरवाजे पे सीचूं हरदिया, मैंने बो दई है- पीपरिया॥
खूब भये निबुआ खूबई अनार
राजा- खिड़किन दाख-चिरौंजी
भर-भर कैं ले गई देवरनिया, मैंने बो दई है- पीपरिया॥
अंगना के निबुआ काटे भीतर अनार काटे
राजा-खिड़किन दाख-चिरौंजी
दरवाजे काटी कचरिया, मैंने बो दई पीपरिया॥
अंगना के दरद उठे भीतर हिलोर उठे
राजा-खिड़किन जाये नंदलाल
दरवाजे पे बाजे मुरलिया, मैंने बो दई है- पीपरिया॥
आंगन में दाई झगड़े भीतर ससुलिया
राजा-खिड़किन देव-जिठानी
दरवाजे पे झगड़े नन्दुलिया, मैंने बो दई है- पीपरिया॥

प्रसूता कहती है- हे प्रियतम! आगे आने वाले समय को देखकर मैंने अपने मन के आँगन में नींबू, हृदय के भीतर अनार, खुशियों की बाड़ी में दाख-चिरौंजी लगाकर सुख का पीपरा बो दिया है। साथ ही प्रसवकाल में उपयोग आने वाली सुखकारी-गुणकारी अन्य वस्तुएँ भी बो दी हैं। मैं आँगन में नींबू-अनार, दाख-चिरौंजी के पौधों को सींचती दरवाजे के सामने

मैदान में बोई हुई हल्दी को सींचती हूँ। फलस्वरूप नींबू-अनार-दाख-चिरौंजी खूब पैदा हुई, जिन्हें भर-भर कर मेरी देवरानी-जिठानी ले गई हैं।

आँगन के नींबू, भीतर के अनार और बाड़ी की दाख-चिरौंजी, दरवाजे के सामने लगी कचरिया मैंने तोड़ ली है। अब मेरे अंगों में प्रसव का दर्द उठ रहा है। पेट के भीतर एक मरोर उठ रही है। मेरी खुशियों की बाड़ी में पुत्र पैदा हुआ है। दरवाजे पर मंगल ध्वनि में शहनाई गूँज रही है। आँगन में दाई नेग दस्तूर के लिये झगड़ रही है, भीतर सास। बाड़ी में देवरानी-जिठानी और दरवाजे पर ननदिया अपना-अपना नेग-दस्तूर माँग रही हैं।

संचत

दुविधा कब जैहे जा मन की।
इन पाऊन परकम्मा दै हो, छाया गोवरधन की।
जब नंदरानी गरभ से हुइयें, आस पुजै मोरे मन की।
दुविधा कब जैहे जा मन की॥
जब मोरो कान्हा कलेऊ मांगे, दध-माखन अरू रोटी।
जब मोरो कान्हा झंगुलिया मांगे, रतन जटत की टोपी।
जब मोरो कान्हा खिलौना मांगे, चंदा-सूरज की जोड़ी।
हँस कैं दैहों- सब कछु दैहों, दुविधा कब जैहे जा मन की।

इस मन से दुविधा कब जायेगी ? मैं अपने पाँवों चलकर गोवर्धन की परिक्रमा लगाऊँगी, हाथ जोड़ विनय करूँगी। मेरी नंदरानी शीघ्र ही गर्भवती हों ताकि मेरे मन की आशा परिपूर्ण हो। जब मेरा कन्हैया भोजन के लिये दही मक्खन रोटी माँगेगा, पहनने के लिये वह झंगुलिया और रत्नों से जड़ी टोपी माँगेगा। तब मैं उसे सहर्ष सभी कुछ लाकर दूँगी। उनके आगे इस तन धन की कुछ भी कीमत नहीं है।

संचत

हलबईया-कढ़इया न दे, जच्चा कौ मन हलुवा में।
जैसें तौ तैसें कढ़इया भी ल्याई, ससुलिया चून न देवै।
जैसें तौ तैसें मैं चून भी ल्याई, जिठानी पलटा न देवै।
जच्चा कौ मन हलुवा में।
जैसें तौ तैसें मैं पलटा भी ल्याई, देवरानी घी न देवै।
जैसें तौ तैसें मैं घी भी ल्याई, नन्दुलिया चीनी न देवै।
जच्चा को मन हलवा में।
जैसें तौ तैसें मैं चीनी भी ल्याई, पड़ौसन बनाने न देवै।

जैसें तौ तैसें हलवा बनाओ, ललुआ न खाने देवै।
जच्चा को मन हलुवा में।

मिठया (मिठाई बनाने वाला) कड़ाही नहीं देता। प्रसूता का मन हलुवा खाने को हो रहा है। मैं किसी भी तरह कहीं से कड़ाही ले आई, किन्तु मेरी सास हलुआ को चून (आटा) नहीं देती। किसी तरह कहीं से चून भी ले आई, किन्तु मेरी जिठानी उस चून को भूँजने नहीं देती है। जैसे-तैसे मैंने वह चून भूँजकर पलटा भी लिया, किन्तु देवरानी घी नहीं देती है। जैसे-तैसे मैं घी भी ले आई, किन्तु मेरी ननद जू उसमें डालने को शक्कर नहीं देती हैं। जैसे-तैसे कहीं से भी शक्कर ले आई, किन्तु मेरी पड़ौसन हलुआ बनाने नहीं देती है। किसी भी तरह हलुवा बना ही लिया, किन्तु मेरा ही लाल मुझे हलवा खाने नहीं देता है। कैसी अद्भुत विडम्बना है?

संचत

राजा तौ पौढ़े पलंग पे रानी मले पीडौली महाराज।
हँस-हँस पूंछे राजा दशरथ कैसी धन अनमनी महाराज।
भौतक तो कहिये राजा अन्न धन भौतक लक्ष्मी महाराज।
सूनौ अयोध्या कौ राज अकेली संचत बिना महाराज।
तुम राजा जइयो बजारे संचत मोल लियइयो महाराज।
तुम रानी मूरख अनजान कहाँ लौ समझाइयो महाराज।
हाटो में हतिया बिकाय संचत नहीं पाइयो महाराज।
नगर कौ नऊआ बुलैयो छुरा मंगवैयो महाराज।
चीरौ अभागिन की कूँख राजा गँवारिन कहैं महाराज।
काशी के पंडित बुलैयो वेद बचवैयो- महाराज।
पैलो पना जब खोलो बांच सुनवाइयो महाराज।
नगर न बाजै बधैयाँ सखी न गावे सोहरो महाराज।
दूजौ पना जब खोलो बांच सुनवाइयो- महाराज।
अहिरा कौ लोबे न गाय मथन नहिं घूमियो महाराज।
तीजौ पना जब खोलो बांच सुनवाइयो- महाराज।
राजा है जनम के मोगिया ग्यावन हिरनी मारियो महाराज।
सोने की हिरनी गढ़वाव, रूपैं के गवेलुऔ महाराज।
वन-वन देव छुड़ाय संचत तब हुइयें महाराज।
तुम राजा जाइयो पहारे सजीवन लियाइयो महाराज।
घिस लुड़िया बटबाइयो कटोरन छानियो महाराज।
पियौ है बांट-बड़ार तीनई रानी अधान से महाराज।
भये हैं नौ-दस-मास ललन चार हो गओ महाराज।

बजन लगीं आनंद बधैयां, सखी गावें सोहरे महाराज।
गौवा के गोबर मंगैयो, अंगना लिपवैयो महाराज
गज मुतियन के चौक पुरा कलश धरवाइयो महाराज।
काशी के पंडित बुलाय वेद पढवाइयो महाराज।
बारा बरस के हुइये राम वन खों जैहें महाराज।
इतनी तौ सुन राजा दशरथ अटरियों चढ़ गओ महाराज।
पाछूं सें गई कौशल्या पूंछे कैसे राजा अनमने महाराज।
वन खों जैहें तौं जान दे- फेर घर आहें- महाराज।
मोरो मिट गओ बांझ कौ नाव तुमारो वंश चलो महाराज।

राजा पलंग पर लेटे हैं। रानी अपने पैरों की पिंडलियाँ मल रही हैं। बार-बार हँस-हँसकर राजा दशरथ रानियों को उदास देखकर पूछते हैं- हे प्रिये! तुम उदास क्यों दिखती हो ? तब रानी उत्तर देती है- हे प्रियतम! अपने घर में धन-धान्य भरपूर है, किन्तु एक संतान के बिना अयोध्या का राज सूना सा लगता है। हे राजन! तुम जब भी बाजार जाओ, मुझे एक संतान खरीद कर ले आना। यह बात सुनकर राजा कहते हैं- हे रानी! मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ? लगता है- तुम मूर्ख, अज्ञानी हो। बाजार में तो हाथी बिकते हैं। सन्तान नहीं बिकती है।

तब रानी ममतामयी हो भावुक होकर कहने लगती है- हे महाराज! नगर के नाई को बुलवाइये और उससे कहिये कि इस अभागिन की कोख चीर डाले। मुझे गँवारिन मत कहिये महाराज। तब राजा ने काशी से पंडित बुलवाकर भविष्य पूछा। पंडित ने वेद का पहला पन्ना खोलकर बतलाया- महल में न तो बाजे बजेंगे, न स्त्रियाँ सोहर गीत गायेंगी। फिर दूसरा पन्ना खोलकर पंडित ने कहा- यहाँ तक कि दूध दुहने वाला अहीर भी गाय के दोनों पैर रस्सी से बाँधकर दुह नहीं सकेगा। अर्थात् दूध ही न होगा और न ही मथानी घूमेगी- महाराज! फिर पंडित न वेद का तीसरा पन्ना खोलकर बतलाया- हे महाराज! आप तो पूर्व जन्म के बहेलिया हैं। आपने गाभिन हिरनी का वध किया था। उसी पाप का ही तो यह फल है।

अब आप सोने की हिरनी तथा चाँदी का बालक बनवाकर जंगलों में छुड़वा दो। तब रानियों के यहाँ बाल-बच्चे होंगे और हे राजन! तुम जंगल से संजीवनी बूटी लाना। उसे पत्थर की लुड़िया से कूट-पीस, छानकर कटोरों में भर रानियों को देना। राजा ने ऐसा ही किया। तीनों रानियों ने आपस में मिलकर अपना-अपना हिस्सा बाँटकर पी लिया और वे गर्भवती हो गईं। नवें दसवें मास राजा के चार पुत्रों ने जन्म लिया। आनन्द के बाजे बजने लगे। स्त्रियाँ सोहर गीत गाने लगीं। तब गाय के गोबर से आँगन लीपा गया। हीरे मोतियों से चौक पूरे गये। चारों दिशाओं में कलश रखे गये। काशी के पंडितों ने भविष्यवाणी की, जब राम बारह वर्ष के होंगे, तब वे वन को जायेंगे। इतना सुन राजा दुखी हो अटारी पर चढ़ गये। तब कौशल्या ने जाकर राजा से कहा- आप अभी से इतने दुखी क्यों होते हो? जब बारह वर्ष बीतेंगे, तब राम वन को जायेंगे। अब तो पुत्र होने से मेरा और आपका बँझुआ (बाँझ) नाम तो मिट गया और आपका वंश चला है।

संचत

लीधतीं धन ओबरी, पोतत पौर दुआर।
हँसत खेलत राजा आ गए, बात कहौ धन एक।
सुनिये मन चित लाय, ब्याव रचें हम दूसरो।
कै हम कुल की टांचरी, कै हम सेवा ने जोग
ब्याव रचौ पिया दूसरो।
कुल कीं तो तुम दो तिल आगरी भौतक सेवा जोग
कूंखरिया बैरन भई जेनें घटाये तोरे मान
ब्याव करें हम दूसरो।
इतनी तो सुन धन अनमनी, हन लए बजर किवार
आई ननद बाई पाहुँनी खोलो भौजी बजर किवार
सांकर खोलो लोहे की।
भौजी भौतक हुइये नंदलाल, अपन दोऊ जेइये
सोने के थार परोसियो, भौजी रूपे कटोरन दूध
अपन दोऊ जेइये।
जेय-जूँठ बैया आवरों पौंची भौतक देत अशीष
फरियो भौजी करई नीम सी, छिछलो बूढ़ी दूब
अचल तोरे हुइयें ऐबात।
मन जो कौ धिया जनमियों मोरे गजबज आहे बरात
लटकत आवैं मोरे सजना, विहँसत दुल्हा-दामाद
घर मोरो रीतो आंगन मोरो रीतो सब सुख रीतो पेट
सजन घिया लैकें निग गए।
मन जो कहे पुत्र जनमियो मोरे गजबज जैहे बरात
घर मोरो भर गव आंगन मोरो भर गव सब सुख भर गव पेट
बेटा-बहू लैकें आइयो।
धन्य मोरी कूंख सुलोचनी जिन मोरे राखे हैं मान
पिया ब्याव रचाते दूसरो।

पत्नी अपना गृह कक्ष लीप रही थी। पौर के द्वार को पोत रही थी। इसी समय हँसते-खेलते उसके साजन आ गये और कहने लगे- प्रिये! एक बात कहता हूँ। ध्यान से सुनो! मैं अपना दूसरा विवाह कर रहा हूँ। दूसरा विवाह रचाने का क्या कारण है ? क्या मैं कुल की खोटी हूँ या आपकी सेवा खुशामद के योग्य नहीं हूँ। (पत्नी ने कहा) तुम तो कुल की श्रेष्ठ हो- दो कदम आगे हो। सेवा करने में चतुर हो। किन्तु तुम्हारी कोख ही तुम्हारी बैरिन बन गई है। उसी ने तेरा मान घटाया है और उसी कारण मुझे दूसरा विवाह करना पड़ रहा है। (पति ने कहा)

इतना सुन पत्नी उदास हो गई। वह अपने कक्ष के मजबूत किवाड़ बंद करके बैठ गई। उसी समय उसकी ननद आ पहुँची। उसने बंद किवाड़ों को धक्का देते हुए कहा- भौजी साँकल खोलो! भौजी ने किवाड़ खोल दिये। ननद ने सान्त्वना देते हुए कहा- भौजी! तुम चिन्ता मत करो। तुम्हारी गोद भरेगी और एक दो नहीं, अनेक पुत्र होंगे। मुझे भूख लगी है। तुम सोने की थाली में भोजन परोसो और चाँदी के कटोरे में दूध। हम दोनों एक साथ भोजन करेंगे। भौजी मन ही मन सोचती है कि यदि मेरी कोख से पुत्री होगी तो मेरे द्वार पर गाजे बाजे के साथ बारात आयेगी। झूमते हुए साजन आयेंगे और दूल्हा बनकर घोड़े पर बैठा दामाद।

फिर वह सोचती है कि यदि पुत्र उत्पन्न हुआ तो मेरे घर से सजधज कर बारात जायेगी। तब मेरा बेटा बहू लेकर आयेगा। बहू के आने से मेरा घर आँगन हृदय प्रसन्नता से भर जायेगा। मैं सभी सुखों से संतुष्ट हो जाऊँगी। मेरी कोख धन्य होगी, जिसने पुत्र पैदा कर मेरा मान रखा अन्यथा प्रीतम तो दूसरा विवाह कर ही रहे थे।

संचत

उड़े कजरा- जैसें रेखा बदरिया।
जिनके पिया परदेश रहत हैं, उनकी धना जैसें कारी कोयलिया।
उड़े कजरा- जैसें रेखा बदरिया।
जिनके पिया घर में ही रहत हैं, उनकी धना छींटा की चुनरिया।
उड़े कजरा- जैसें रेखा बदरिया।
जियरा कहे हम ऐसे जरे हैं, जैसें जेठ की तपती दुपहरिया।
उड़े कजरा- जैसें रेखा बदरिया।
कूँख बिना ललना का सोहे, जल बिन जैसें तड़पे मछरिया
उड़े कजरा- जैसें रेखा बदरिया।
हुइयें लाल कबहुँ दिन आहें, जब चरूआ की चढ़हे गगरिया
उड़े कजरा- जैसें रेखा बदरिया।

आँखों में लगा काजल ऐसा उड़ता हुआ दिखता है, जैसे आकाश में उठी हुई कोई एक श्याम बदरिया। जिनके प्रियतम परदेश में रहते हैं। उनकी विरहिणी पत्नी कोयल की तरह काली होकर कुहूँ-कुहूँ बोलती निर्जन में दुखी है। जिनके प्रियतम घर में ही रहते हैं। उनकी घरवाली सुन्दर रंगीन छींट की चुनरिया जैसी फहराती खुश है। जियरा कहता है कि- मैं इस तरह से जली हूँ जैसे- जेठ मास की दोपहर तपकर लाल अंगारे की तरह हो जाती है। बिना कोख के ललना कैसे पैदा हो सकता है ? बिना जल के तो मछली छटपटायेगी। वह दिन अवश्य ही आयेगा, जब चरूआ की मटकी आग पर चढ़ेगी अर्थात् मेरी कोख से पुत्र उत्पन्न होगा।

संचत

फूल गई बेला की डारी, सखि मोरी! सैंया बुला दो।
पांचवां महिना लागौ ससुरा सें कह दो
सासु खों मायके पठा दो
सखि मोरी! सैंया खों बुला दो।
छटवां महिना लगौ जेठ सें कह दो
जिठानी खों मायके पठा दो।
सखि मोरी! सैंया खों बुला दो।
सातवां महिना लगौ देवर जू सें कह दो
छोटी खों मायके पठा दो।
सखि मोरी! सैंया खों बुला दो।
आठवां महिना लगौ ननदेऊ सें कह दो
ननदी खों सासुरे बुला लो
सखि मोरी! सैंया खों बुला दो।
नवां महिना लगौ सुनो मोरी प्यारी
गोदी में ललना खिलावे बुला लो
सखि मोरी! सैंया खों बुला दो।

गर्भस्थ शिशु होने से स्त्री का पेट फूल कर बड़ा हो गया है। वह कहती है– हे सखी! तुम मेरे प्रियतम को बुला दो। अब पाँचवाँ महीना लग गया है। मेरे सुसर जी से कह दो कि वह सासू जी को मायके भेज दें ताकि मैं तनाव मुक्त रह सकूँ। हे सखी! अब छठवाँ महीना लग गया है। जेठ जी से कह दो कि वह जिठानी जी को मायके भेज देवें ताकि मैं उनके ताने न सुन सकूँ। हे सखी! अब सातवाँ महीना लग गया है। देवर जी से कह दो कि वह छोटी को मायके भेज देवें ताकि मैं शान्त बनी रहूँ। हे सखी! अब आठवाँ महीना लग गया है। ननदेऊ जी से जाकर कह दो कि वह ननद जी को शीघ्र ही ससुराल बुला लेवें ताकि पुत्र जन्म पर मुझे कुछ देना न पड़े। मेरी प्यारी सखी! सुनो, अब नौवाँ महीना लग गया है। अब तुम मेरे ललना को गोदी में खिलाने के लिये मेरे प्रियतम को बुला लो।

संचत

राजा–रतनारी जामुन लिया दो।
हाथ की टूटी राजा हमें नें भावे, सोने की छड़ी मंगा दो।
राजा–रतनारी जामुन लिया दो॥
सेर दो सेर राजा हमें नें भावे, रुपया पसेरी तुला दो।
राजा–रतनारी जामुन लिया दो॥

टपकी नें खेंहों मिथली नें खेंहों, साबुन से हाथों खिला दो।
राजा-रतनारी जामुन लिया दो॥
खट्टी सी जामुन मनभावन जामुन, थोरो सो नोन मिला दो।
राजा-रतनारी जामुन लिया दो॥
सासु नें देखे जिठानी नें देखे, देवरानी मोरी बुला दो।
राजा-रतनारी जामुन लिया दो॥

हे प्रियतम! मुझे रतनारी जामुन ला दो। हाथों से तोड़ी हुई जामुन मुझे पसंद नहीं है। सोने की छड़ी बुलाकर उससे जामुन टपका कर मेरे पास ले आओ। सेर दो सेर जामुन आये तो क्या आये? एक रुपये के पाँच सेर तुलवाकर भिजवा दो। मैं टपकी हुई धूल भरी क्षत-विक्षत जामुन नहीं खाऊँगी। साबुन से घुले साफ हाथों से तोड़ी हुई जामुन खाऊँगी। मेरी मन पसंद खट्टी मीठी जामुन में थोड़ा सा नमक मिला देना। इतना ध्यान रखना कि जामुन खाते समय मेरी सास-जिठानी देख न पाये। बस, मेरे पास, मेरी प्यारी देवरानी को भेज देना।

भौंलोटनी

मोरे डरे-डरे कहरांये, गोविन्द लाल भौं में डरे।
जाय जो कहियो उन राजा ससुर सें, थैली देय लुटाय।
जाय जो कहियो उन राजा जेठा सें, बजाजी देय लुटाय।
गोविन्द लाल भौं में डरे।
जाय जो कहियो उन देवर राजा से, गन्ता देय कराय।
जाय जो कहियो उन राजा नंदेऊ सें, डेवढ़ा देय छुड़ाय।
गोविन्द लाल भौं में डरे।
जाय जो कहियो उन वारी ननद सें, सांतिया देय धराय।
जाय जो कहियो रानी सास सें चरूआ देय चढ़ाय।
जाय जो कहियो कोऊ पुरा-परौसिन सें, सरिया देय गवाय।
गोविन्द लाल भौं में डरे।

माता अपने पुत्र जन्म के हर्ष से मुस्कराती हुई संदेशा दे रही है। धरती पर लेटा हुआ मेरा लाल कहर-कहर की ध्वनि में अपने होने का संकेत दे रहा है। कोई ससुर जी से जाकर कह दो कि वे नाती उत्पन्न होने की खुशी में अपनी धन-दौलत की थैलियाँ खोलकर लुटा दें। जेठ से जाकर कह दो कि वे बजाजी (कपड़े की दुकान) लुटा दें, अर्थात् गरीबों को वस्त्र बाँट दें।

कोई देवर जी से जाकर कह दो कि वे पुत्र जन्म के उपलक्ष में गायन-वादन का समारोह आयोजित करें। कोई ननदेऊ जी से जाकर कह दो कि वे अपनी बन्दूक में बारूद भरकर धमाका गुँजा दें और अपनी खुशहाली जाहिर करें।

कोई ननद जी से जाकर कह दो कि वे दीवालों–दरवाजों पर शुभ मंगल सूचक सांतिया लिखे। कोई सासु जी के पास जाकर कहो कि वे चूल्हे पर चरूआ का सामान लेकर मटकी में पानी भरकर आग पर चढ़ा देवें और पुरा–पड़ौस में बुलौआ फिरवा दें ताकि सभी स्त्रियाँ एकत्रित हो मिलजुलकर सोहर गीत गावें।

नरा छीनना

कैसी मचल रई दाई
अवध में कैसी मचल रई दाई।
सुरग चूनरी कौशल्या लएं ठांड़ी, बई ने लेवै– दाई।
सोने कौ हार कैकई लएँ ठांड़ी, कूलो मरोर गई दाई। अवध में ....
सोने की तिलरी सुमित्रा लएँ ठांड़ी, नजर नें फेरे दाई।
नरा तुमारा जबहि हम छीनें, दरशन दें रघुराई। अवध में ....
रूप चतुर्भुज प्रभु दरसायो, खुशी भई तब दाई
दरशन कर दाई घर आई, घर–घर करत बढ़ाई।
कैसी मचल रई दाई, अवध में कैसे मचल रई दाई।

दाई नरा छीनने को उतावली है। अयोध्या में राजा दशरथ के घर पुत्र जन्म हुआ है। रानी कौशल्या सोलह रंग की चूनरिया लिये खड़ी हैं। वह उसे नहीं भाती। वह तो सबसे पहिले अपना मनवाँछित नेग लेना चाहती है। सामने रानी कैकेई भी सोने का कीमती हार लिये खड़ी हैं। उसे देख वह अपना मुँह दूसरी ओर फेर लेती है।

रानी सुमित्रा भी स्वर्ण जणित हार लिये खड़ी हैं, किन्तु दाई अपने मुँह से कुछ भी नहीं बोलती है अर्थात् किसी भी वस्तु को स्वीकार नहीं करती है। यहाँ तक कि महाराज भी मोतियों से भरा थाल देने के लिये खड़े हैं, किन्तु वह उस ओर तनिक भी नहीं देखती।

चतुर दाई कहती है। जब तक श्रीराम मुझे दर्शन नहीं देंगे तब तक मैं उनका नरा नहीं काटूँगी। उन्हें इसी तरह नग्न भूमि पर लोटने दूँगी। तब श्रीराम ने दाई को अपना चतुर्भुजी रूप दिखलाया। दाई भगवान के दर्शन कर प्रसन्न हो, उनकी बड़ाई करती हुई अपने घर लौट गई।

नरा छीनना

ऐ सखि! ब्रज में महाराज भये।
जब हरि जनम लए मथुरा में, जगत पहरुवा सो सोय रहे
ले वसुदेव चले गोकुल खों, झपट कै जमना चरन गहै।
ऐ सखि! ब्रज में महाराज भये।
आँगू धसे जमना जू गहरी, पीछूं सिंग गुजार रहे

उल्टी रीति भई गोकुल में, कन्या दै गोपाल लये।
ऐ सखि! ब्रज में महाराज भये।
कौंना जाये कौंना खिलाये, कौंना के लाल कहाये।
देवकी ने जाये जशोदा खिलाये, नंद के लाल कहाये।
ऐ सखि! ब्रज में महाराज भये।
काहे के छुरा नरा छीनियो, काहे खपर असनान
सुन्नें छुरा नरा छीनियो, रूपे खपर असनान।
ऐ सखि! ब्रज में महाराज भये।
काहे के सूप संजोइयो, काहे के आखत डार दये।
उरई के सूप संजोइयो, मुतियन आखत डार दये
ऐ सखि! ब्रज में महाराज भये।

हे सखी! श्रीकृष्ण प्रगट हुए हैं। जब कृष्ण ने मथुरा के जेलखाने में आधी रात को जन्म लिया, तब सभी पहरेदार गहरी नींद में सो रहे थे। टोकनी में कृष्ण को लेकर वासुदेव गोकुल को चल दिये। अपने सिर पर टोकनी रखे वासुदेव जी गहरी जमुना को पार करने लगे। पीछे वन में शेर दहाड़ रहा था। जमुना जी भगवान कृष्ण के चरण छूने बढ़ने लगीं। अंत में वे चरण छूकर ही शान्त हुईं।

ब्रजवासी कहते हैं कि– गोकुल की उल्टी रीति हुई है कि कन्या देकर गोपाल को ले लिया। किसने जन्म दिया? किसने लालन–पालन किया ? किसके पुत्र कहलाये ? इतनी बड़ी ठगी कि देवकी ने पुत्र पैदा किया, जशोदा जी ने खिलाया और वह नंद का लाल कहलाया।

किस छुरा से नरा छीना गया। किस प्रकार की थाली में स्नान कराया गया होगा? कहते हैं– गोकुल में सोने के छुरा से नरा काटा गया और चाँदी की थाली में स्नान कराया गया। किस वस्तु का बना सूप सँजोया गया होगा और किस प्रकार के अक्षत (चावल) रखे गये होंगे? कहते हैं– मोतियों के चावल डालकर उरई का सूप सँजोया गया था।

नरा छीनना

राम लए अवतार,
चलो सखि, देखन चलिये।
कौन घरी में भरत भये हैं, कौन घरी में राम।
चलो सखि, देखन चलिये।
सांझ भये में भरत भये हैं, भोर भये राजाराम।
चलो सखि, देखन चलिये।
काहे के सूप संजो लये हैं, काहे के आखत डारे।
चलो सखि, देखन चलिये।

उरहई के सूप संजोये, मुतियन आखत डारे।
चलो सखि, देखन चलिये।
काहे के छुरा नरा छीन लए, काहे के खपर असनान।
चलो सखि, देखन चलिये।
सोने के छुरा नरा छीन लए, रूपे के खपर स्नान।
चलो सखि, देखन चलिये।
राजा-रानी तोरो कन्हैया, राखे सवाई के मान।
चलो सखि, देखन चलिये।

श्रीराम ने जन्म लिया है। हे सखी! हम तुम दोनों उन्हें देखने के लिए चलें। सखी पूछती है- किस समय राम ने जन्म लिया और किस समय भरत ने? सखी उत्तर देती है- प्रात: श्रीराम ने जन्म लिया और सायंकाल भरत ने। सखी जानना चाहती है- किस वस्तु का सूपा सँजोकर लाया गया और कैसे चावल डाले गये? उसे उत्तर मिलता है- उरई से बना सूप सँजोया गया और उसमें चावल की जगह मोती डाले गये। फिर पूछा जाता है- नरा काटने के लिये छुरा किस धातु का था और पुत्रों को किस पात्र में स्नान कराया गया ? उत्तर मिलता है- नरा काटने के लिये सोने का छुरा मँगाया गया था और चाँदी के थाल में उन्हें स्नान कराया गया था। दोनों सखियाँ सभी पुत्रों का दर्शन कर प्रसन्न हो राजा-रानी से कहती हैं- तुम्हारे पुत्रों के जन्मोत्सव में हम सभी को भरपूर मान-सम्मान मिला है।

भौंलोटनी

धन्य धरती तोरे भाग, कन्हैया लाला भौं में डरे।
सासो आहें चरूआ चढ़ाहें, चरूआ चढ़ाई नेंग मंगाहें। कन्हैयालाला .....
जिठानी आहें लडुवा बंधाहें, लडुवा बंधाई नेंग मंगाहें। कन्हैयालाला .....
छोटी आहें भोजन बनाहें, भोजन बनाई नेंग मंगाहें। कन्हैयालाला .....
ननदी आहें सांतिया धराहें, सांतिया धराई नेंग मंगाहें। कन्हैयालाला .....
देवर आहें बंशी बजाहें, बंशी बजाई नेंग मंगाहें। कन्हैयालाला .....
बोल अरी बोल भौजी, कन्हैया से तू क्या मंगाहे।
कन्हैयालाल भौं में डरे॥

हे धरती मैया! तू धन्य हो गई, तेरी गोद में कृष्ण कन्हैया जैसा लाल हुआ है। सास आकर चरूआ चढ़ायेगी, जिठानी लडुवा बँधायेगी, देवरानी भोजन बनायेगी, ननदी साँतिया रखेगी, देवर बंशी बजायेगा और सभी लड़कर-झगड़कर नेग दस्तूर माँगेंगे। चुपचाप लेटी हुई, ओ धरती मैया! कन्हैया से तू क्या माँगेगी?

चरुआ

मैं तो अकेली राजा, मोरो घर नें लुटाय दियो।
चरूवा चढ़ावे मोरी मैया खों बुलाय लियो,
सासो जी आवें तो उन्हें लौटाय दियो।
मैं तो अकेली राजा, मोरो घर नें लुटाय दियो॥
लडुवा बंधावे मोरी काकी खों बुलाय लियो,
जेठानी जी आवें तो उन्हें लौटाय दियो।
मैं तो अकेली राजा, मोरो घर नें लुटाय दियो॥
पच बनवावे मोरी भौजी खों बुलाय लियो,
देवरानी जी आवें तो उन्हें लौटाय दियो।
मैं तो अकेली राजा, मोरो घर नें लुटाय दियो॥
सांतिया धरावे मोरी बहिना खों बुलाय लियो,
ननदी जू आवें तो उन्हें लौटाय दियो।
मैं तो अकेली राजा, मोरो घर नें लुटाय दियो॥
सरिया गुँजावे मोरी सखिया बुलाय लियो,
मिलजुर कें सुर में-सुरों खों मिलाय दियो।
मैं तो अकेली राजा, मोरो घर नें लुटाय दियो॥

प्रसूता अपने घर के एक कक्ष में अकेली बिस्तर पर अस्वस्थ लेटी है। वह उठ बैठ नहीं सकती। इसलिये चिन्तित है। वह सोचती है कि कहीं मेरा घर न लुट जाये। उसे पति परिवार के किसी भी व्यक्ति पर विश्वास नहीं है। वह तो अपने मायके वालों पर भरोसा रखती है। वह अपने पति से निवेदन करती है कि- चरूवा चढ़ाने को मेरी सास आयें तो उन्हें लौटा देना और उनकी जगह मेरी माँ को बुला लेना। लडुवा बँधाने को यदि मेरी जेठानी आये तो उन्हें लौटा देना और मेरी काकी जी को बुला लेना। पच बनवाने को यदि देवरानी जी आये तो उसे लौटा देना और मेरी भौजी को बुलवा लेना। साँतिया लिखने को यदि ननद जी आये तो उन्हें लौटा देना और मेरी बहिन को बुला लेना। सोहर गाने के लिये मेरी सखियों को बुला लेना और उनके स्वरों में अपना स्वर मिलाकर खुशहाली मना लेना।

चरुआ

एक पहर में दो-दो लाल भये।
एक झूले- झूले में एक पालने में।
दो-दो लाल भये।
जच्चा की सासु जी आवेंगी, चरूआ चढ़ाई नेग मांगेगी।
दो-दो लाल भये।

तोरे लाल रहें, आबाद रहें।
दो-दो लाल भये।

एक ही समय में दो-दो पुत्रों ने जन्म लिया। एक झूले में झूल रहा है और दूसरा पालने में। जच्चा की सासुजी आयेंगी, आग पर चरूआ चढ़ाकर अपना नेग माँगेगी, वे आशीर्वाद देंगी, ये दोनों पुत्र जुग-जुग जियें, स्वस्थ सुखी सानंद रहें।

चरुआ

महलों में बैठी जच्चा , गोदी में बच्चा राज करे।
दुआरे के सामू-सासु जी ठाँड़ी, लएं चरूआ कौ सामान
लल्ला तो मेरो, शरद पूनौ कौ चांद।
सासु जी आहें चरूआ चढ़ाहें
दादी जू देंगी दुआ, गोदी में बच्चा राज करे।

सुन्दर सजे हुए महल में जच्चा बैठी है उसकी गोद में उसका लाड़ला किलकारी दे-देकर मुस्करा रहा है। दरवाजे के सामने सासु जी सज-धजकर खड़ी हैं वे चरूआ का सामान लिये हैं और गा-गाकर कह रही हैं- मेरा लाल तो शरद पूर्णिमा का चाँद है। सासु जी आयेंगी वे ही चरूआ चढ़ायेंगी, दादी आशीर्वाद देंगी, हाथ जोड़कर ईश्वर से प्रार्थना करेंगी, गोदी में लाड़ला हमेशा सुखी रहे।

चरुआ

सोंठ के लड़ुवा बहुतई चिरपिरे,
लड़ुआ बंधावे आई परौसन बाई।
बिन्ना तनक सो लड़ुआ हमें तो दे दो,
लड़ुआ फोरत बहियां दुखत कलाई।
लड़ुआ बंधाये मोरी जिठानी आई।।
सेंगो दओ नहिं जाय हाथन में,
पसेरी भर डारो है घी सो मलाई।
लड़ुआ बंधावे मोरी देवरानी आई॥
नरियल के मेला नौ नौ डरे हैं,
खसखस मखानों संग हरदी मिलाई।
लड़ुवा बंधावे मोरी सासु जू आई॥
बदामों के बीजा सौ सौ डरे हैं
चिरौंजी दानें डरे हैं चौथियों-पाई।
लड़ुआ बंधावे मोरी ननद जू आई॥

मेरे घर लडुआ बँधाने के लिए पड़ोस से एक महिला आई। सोंठ के लड्डू स्वाद में बहुत ही चिरपिरे हैं। जब जिठानी लडुआ बँधाने आयीं तब उसने अपने ही मुँह से कहा– ऐ बिन्ना! ज्यादा नहीं, चखने के लिये मुझे एक लड्डू दे दो। तब मैंने कहा– लड्डू बहुत ही सख्त है। उसे फोड़ते समय मेरी कलाई दुखती है। जब देवरानी लड्डू बँधाने आई। तब मैं चुपचाप रह गई, क्योंकि मैंने लड्डुओं में बहुत महँगा पाँच सेर शुद्ध घी बाजार से खरीद कर मिलवाया है। उसे एक पूरा का पूरा गोल लड्डू देने को जी नहीं चाहता। लडुआ बँधाने को मेरी सास जी आईं। तब मैंने उनसे कहा– इन लड्डुओं के गुड़ में मैंने नारियल के नौ–नौ भेले किसकर मिलवाये हैं। कीमती खसखस दाने–मखाने और साथ में भुनी हुई पिसी हल्दी डाली है। लडुआ बँधाने ननद रानी भी आई। उनसे भी कहा– इन लड्डुओं के गुड़ में बादाम के नौ–नौ बीजा और चौथिया पाई से नापकर चिरौंजी के दाने डलवाये हैं। ये लड्डू बहुत ही महँगे हैं।

चरुआ

कमर कस पीर उठी, अब न बचूँगी।
सासो बुलाओ चरुआ चढाओ, कुची का गुच्छा सौंप दूँगी।
कमर कस पीर उठी, अब न बचूंगी।
जिठानी बुलाओ, लड्डू बंधवाओ, माथे की बिंदिया सौंप दूँगी।
कमर कस पीर उठीं, अब न बचूँगी।
छोटी बुलाओ भोजन बनवाओ, कानों की झुमकी सौंप दूँगी।
कमर कस पीर उठी, अब न बचूँगी।
ननदी बुलवाओ सांतिया धराओ, गले का हरवा सौंप दूँगी।
कमर कस पीर उठी, अब न बचूँगी।
सखियाँ बुलाओ सोहर गवाओ, अपने बलमा खों सौंप दूँगी।
कमर कस पीर उठी, अब न बचूँगी।

मेरी कमर में प्रसव का दर्द होने लगा है। अब मैं जिन्दा नहीं रह सकूँगी– मर जाऊँगी। सासू जी को बुलाओ, उनसे चरुआ चढ़वाओ। मैं उन्हें अपनी तिजोड़ी की चाबियों का गुच्छा सौंप दूँगी। जिठानी जी को बुलवाओ, उनसे लडुआ बँधवाओ। मैं उनको अपने माथे की बिंदिया दे दूँगी। देवरानी जी को बुलवाओ, उनसे रसोई भोजन बनवाओ। मैं उन्हें अपनी कानों की झुमकी दे दूँगी। ननदी जी को बुलवाओ, उनसे साँतिया लिखवाओ। मैं उन्हें अपने गले का हार दे दूँगी। मेरी सखियों को बुलवाओ। मैं उन्हें अपना प्यारा साजन उन्हें सौंप दूँगी।

चरुआ

मिलजुल कैं मौके पे आय जइयो।
चुटकी बजाय दुख निपटाय जइयो॥

सासो हमारी माता मोरी चरुआ चढ़ाय जइयो।
मोरे माथे की बेन्दी भारी है, तुम हँसी खुशी से जाइयो।
चुटकी बजाय दुख निपटाय जइयो॥
जिठानी मोरी जिज्जी मोरी, लडुआ बंधाय जइयो।
मोरे कानों की झुमकी, तुम उतार ले जइयो।
चुटकी बजाय दुख निपटाय जइयो॥
देवरानी हमारी छोटी मोरी, नोंनों पच बनवाय जइयो।
मोरे दोई हाथों के कंगना भारी, चुपकें से निपकाले जइयो॥
चुटकी बजाय दुख निपटाय जइयो॥
ननदी हमारी बैया मोरी, सांतिया धराय जइयो।
मोरे गरे की ठुसी है भारी, अपनी समझ के ले लइयो।
चुटकी बजाय दुख निपटाय जइयो॥

तुम सभी समय पर आ जाना और इस प्रसव वेदना की तकलीफों से मुझे छुटकारा दिला जाना। माता के समान मेरी सासु जी! तुम शीघ्र आकर चरुआ चढ़ा देना और मेरी सोने की कीमती बिंदिया खुश होकर ले जाना। दीदी के समान मेरी जिठानी जी! तुम शीघ्र आकर लडुआ बांध देना और मेरे कानों की सुन्दर झुमकी अपने हाथ से उतार कर ले जाना। छोटी बहिन के समान मेरी देवरानी जी! तुम शीघ्र ही आकर पच बनवाकर रख देना और मेरे हाथों के दोनों कंगन उतार कर ले जाना। मेरी ननदी प्यारी बैया जू! तुम आकर साँतिया लिख जाना और मेरे गले की कीमती सोने की ठुसी अपनी समझ कर ले जाना।

चरुआ

कैसें सुनाऊं कहानी, वो तो सुनाने की नइयां।
सासो जी आहें चरुआ चढ़ाहें, चरुआ चढ़ाई नेंग मंगाहें।
बेंदी न देना मोरे साजन, वो तो लगाने के काबिल नइयां।
कैसें सुनाऊं कहानी, वो तो सुनाने की नइयां।
जिठानी जू आहें लडुआ बंधाहें, लडुआ बंधाई नेंग मंगाहें।
झुमकी न देना मोरे साजन, वो पहरवे के काबिल नइयां।
कैसें सुनाऊं कहानी, वो तो सुनाने की नइयां।
देवरानी जू आहें चौक पुराहें, चौक पुराई नेग मंगाहें।
ऊ खों ऐ न देना मोरे साजन, मों दिखावे के काबिल नइयां।
कैसें सुनाऊं कहानी, वो तो सुनाने की नइयां।
ननदी जू आहें सांतिया धराहें, सांतिया लिखाई नेग मंगाहें।

सिन्दूरा नें दैयौ मोरे साजन, वो लगाने के काबिल नइयां
कैसें सुनाऊं कहानी, वो तो सुनाने की नइयां।

मैं कहानी कैसे सुनाऊँ, वह तो सुनाने के लायक ही नहीं है। सास जी आयेंगी, वे चरुआ चढ़ायेंगी और चरुआ चढ़ाई नेग माँगेंगी। मेरे प्रियतम! तुम उन्हें बेन्दी नहीं देना। वह बेन्दी लगाने के लायक नहीं हैं। जिठानी जी आयेंगी, वे लडुआ बँधाई नेग माँगेगी। मेरे प्रियतम! तुम उन्हें झुमकी नहीं देना। वह झुमकी पहनने के लायक नहीं हैं। देवरानी जी आयेंगी, चौक पुरायेंगी। फिर चौक पुराई का नेग माँगेंगी। मेरे प्रियतम! तुम उन्हें दर्पण नहीं देना। वह अपना मुँह दिखाने के लायक नहीं हैं। ननदी जी आयेंगी, साँतिया धरायेंगी। तब साँतिया लिखाई नेग माँगेंगी। मेरे प्रियतम! तुम उन्हें सिन्दूर नहीं देना। वह सिन्दूर लगाने के लायक नहीं हैं।

चरुआ

मोरो बालू-रेत कौ बंगला
शीतल रानी कौन गुन है?
नींबू भी खाई नारंगी भी खाई
भेला नारियल के खाये।
न जाने कछु बेई गुन हैं?
माघ नहाये मैंने कातक नहाये
इतवार उपासी बारह मासी।
न जाने कुछ बेई गुन हैं?
मैं सपरत ती अपने सपरना
देवर की परी हुइये छैंया
न जाने कुछ बेई गुन हैं ?
ननदी खों माने ननदेऊ खों माने
राखत है भनेजों कौ मान
न जाने कुछ बेई गुन हैं?

हे गोरी! तुममें ऐसा कौन-सा गुण है? जिसके प्रभाव से तुम्हारा यह धूल रेत से बना भवन इतना शीतल-ठण्डा मन को शांति देने वाला है। गोरी उत्तर देती है- मैंने नींबू खाये, नारंगियाँ खाईं और नारियल के दूधिया भेला खाये हैं। हो सकता है उनका ही यह गुण हो। मैंने कार्तिक मास और माघ मास के व्रत के रूप में श्रद्धापूर्वक नहाया है। बारह महीनों इतवार का उपवास किया है - हो सकता है - उसका ही यह गुण हो। फिर वह मुस्कराकर कहती है- मैं तो अपने स्नानागार में नहाती थी। हो सकता है मेरे रसिक प्रेमी देवर की छाँह मेरे भवन पर पड़ी हो और उसका ही यह प्रभाव हो। मैं तो अपनी ननदी और ननदेऊ को श्रद्धा भाव से मानती हूँ

और हमेशा अपने भानजों का सम्मान करती आई हूँ। शायद यह उनका ही गुण असर हो और मेरा यह भवन सुख–शांति से परिपूरित हो।

चरुआ

काहे दिल डारें ठांड़ी अंगना
काहे के तोरे बाजू बंदा काहे के ककना,
काहे की तोरी मोहन माला जप रई अंगना।
सोने के तोरे बाजू बंदा चाँदी के ककना।
रूपे की तोरी मोहन माला जप रई अंगना।
काहे दिल डारें गोरी ठांड़ी अंगना।
कौने ले दये बाजूबन्दा कोना ने ककना।
कौने ले दई मोहन माला जप रई अंगना।
देवरा ने ले दये बाजू बंदा ननदी नें ककना।
ससुरा ने ले दई मोहन माला जप रई अंगना।
काहे दिल डारें गोरी ठांड़ी अंगना।
कैसे टूटे बाजूबन्दा कैसे कें ककना।
कैसे टूटी मोहन माला जप रई अंगना।
खेलत टूटे बाजू बंदा निहुरत में ककना
लिपटत टूटी मोहन माला जप रई अंगना।
काहे दिल डारें गोरी ठांड़ी अंगना।

हे गोरी! आँगन में अनमनी क्यों खड़ी हो? तेरे बाजूबन्द काहे के हैं और मोहन माला काहे की है? सोने के बाजूबंद हैं, चाँदी के ककना और रूपे की मोहन माला है। तुम आँगन में अनमनी क्यों खड़ी हो, भला यह तो बताओ किसने बाजूबंद ले दिये हैं? किसने ककना ले दिये हैं और किसने मोहन माला? देवर ने बाजूबंद ले दिये हैं। ननद ने ककना ले दिये हैं। और ससुर ने मोहन माला। तुम आँगन में अनमनी क्यों खड़ी हो? तेरे बाजूबंद कैसे टूटे, ककना कैसे टूटे और कैसे टूटी मोहन माला? खेलने में बाजूबंद टूटे, निहुरने (झुकने) में ककना टूटे और पिया से लिपटने में मोहन माला? तुम आँगन में अनमनी क्यों खड़ी हो?

चरुआ

अरे रे, कौ हरे मोरी पीरा।
घर की सासु मोहे ऐसी लगत है, जैसें नीम कौ घौरा।
अरे रे, कौ हरे मोरी पीरा॥
घर की ननद मोहे ऐसी लगत है, जैसें करव होय तुमीरा।

अरे रे, कौ हरे मोरी पीरा॥
घर की जिठानी मोहे ऐसी लगत है, जैसें मिरच बीच कीरा।
अरे रे, कौ हरे मोरी पीरा॥
घर की देवरानी ऐसी लगत है, जैसे लुचई और सीरा।
अरे रे, कौ हरे मोरी पीरा॥

अरे! वह कौन है जो मेरे दुख को दूर करे? घर की सास मुझे ऐसी लगती है जैसे नीम का गुच्छा हो। घर की ननद मुझे ऐसी लगती है जैसे कड़वा तूमा हो। घर की जिठानी मुझे ऐसी लगती है जैसे चिरपिरी मिर्च का जहरीला कीड़ा हो। घर की देवरानी मुझे ऐसी लगती है जैसे पूड़ी और मीठा सीरा हो।

चरुआ

बलमा जिद्दीदार मोसें रार करे री
ओखों पुटया कैं बातों की मार मारूंगी।
मैं तो पनघट पे गई वो तो संग जाय री
पनिहारिन खों देख मोसें रार करे री
मोरे मन आया रस्सा फेंक मारूंगी।
मैं तो बागों में गई जेठा संग जाय री
मलनिया खों देख मोसें रार करे री
मोरे मन आया डाली फेंक मारूंगी।
मैं तो तालों पे गई देवरा संग जाय री
धुवनियां खों देख मोसें रार करे री
मोरे मन आया कपड़ा फेंक मारूंगी।
मैं तो सड़कों पे गई ननदेऊ संग जाय री
सखियों खों देख मोसें रार करे री
मोरे मन आया पथरा फेंक मारूंगी।
मैं तो राजा के महल गई सजना संग जाय री
वो तो रानी खों देख मोसें रार करे री
मोरे मन आया तकिया फेंक मारूंगी।

हे सखी! मेरा बालम जिद्दी स्वभाव का है। वह हमेशा मुझसे तकरार करता रहता है। मैं उसको पुचकार कर व्यंग्य भरी बातों से मारूँगी। जब मैं पानी भरने पनघट पर जाती हूँ। वह मेरे साथ जाता है और पानी भरती पनिहारिनों को देख मुझसे लड़ता-झगड़ता है। तब मेरे मन में आता है कि मैं उसे रस्सा फेंककर मारूँ।

जब मैं बागों में फूल चुनने जाती हूँ तो मेरा जेठ मेरे साथ जाता है। मालिनों को देख वह मुझसे लड़ता–झगड़ता है। तब मेरे मन में आता है कि मैं उसे कंटीली डगाल फेंक कर मारूँ। जब मैं तालाब पर कपड़े धोने जाती हूँ। मेरा देवर मेरे साथ जाता है। वह धोबिनों को देखकर मुझसे लड़ता–झगड़ता है। तब मेरे मन में आता है कि मैं उसे गीला कपड़ा फेंककर मारूँ।

जब मैं घूमने सड़क पर जाती हूँ तो मेरा ननदेऊ मेरे साथ जाता है। वह मेरी सुन्दर सखियों को देख मुझसे लड़ता–झगड़ता है। तब मेरे मन में आता है कि मैं उसे पत्थर फेंककर मारूँ। जब मैं राजा के महल में जाती हूँ तो मेरा बालम मेरे साथ जाता है और सजी सँवरी रानियों को सेजों पर लेटा देख मुझसे लड़ता–झगड़ता है। तब मेरे मन में आता है कि मैं उसे तकिया फेंक कर मारूँ।

चरुआ

मन बहलाओ ने राजा डगरिया में,
मन चीन्हों है तोरी चुनरिया ने।
पहली सेज मैंने तालों पे डारी
कछु जिठानी कहे कछु जेठा कहे
कछु गड़बड़ मचा दई मछरिया ने।
मन चीन्हों है तोरी चुनरिया ने॥
दूजी सेज मैंने बागों में डारी
देवरानी कहे कछु देवरा कहे
कछु गड़बड़ मचा दई कोयलिया ने।
मन चीन्हों है तोरी चुनरिया ने॥
तीजी सेज अटरियों पे डारी
कछु सासो कहे कछु ससुरा कहे
कछु गड़बड़ मचा दई ननदिया ने।
मन चीन्हों है तोरी चुनरिया ने॥
चौथी सेज आधी रात में डारी
मन की बातें ने भईं खुरापातें ने भईं।
झट गड़बड़ मचा दई भुनसरिया ने।
मन चीन्हों है तोरी चुनरिया ने॥

हे प्रियतम! इस जीवन में तुम मेरे मन को झाँसा देकर मत बहलाओ। तुम्हारे मन की भावनाओं को अच्छी तरह पहचान लिया है। मैंने पहिली सेज तालाब के किनारे लगाई। तब न जाने क्या–क्या जेठ और जिठानी जी कहने लगे। यहाँ तक कि तालाब की मछली ने भी मेरे मन में बेचैनी पैदा कर दी। दूसरी सेज मैंने बगीचे में लगाई। देवर और देवरानी न जाने क्या–क्या

कहने लगे। यहाँ तक कि पेड़ पर बैठी कोयल ने मेरे मन में बेचैनी पैदा कर दी।

तीसरी सेज मैंने अपने ही भवन की अटारी पर लगाई। सास और ससुर जी न जाने क्या-क्या कहने लगे। यहाँ तक कि ननदिया ने आकर मेरे मन में बेचैनी पैदा कर दी। चौथी सेज मैंने आधी रात को डाली। जब सभी सो गये थे। तब भी मेरे मन की न हो पाई। सजन के साथ कुछ खुरापात भी नहीं हो पाई और एकदम सुबह हो गई।

चरुआ

मैंने रात के कहरवा खूब सुने री
सासो जी बोलीं ऐरी बहू री
जोगी खों भिक्षा तौ डार आव, मैं अलबेली भूल गई री।
मैं तो जोगी खों ननदिया सौंप आई री।
मैंने रात के कहरवा खूब सुने री॥
सासो जी बोलीं ऐरी बहू री
बछड़ा खों खूँटा सें बांध आव, मैं अलबेली भूल गई री।
मैं तो देवर खों खूंटा से बाँध आई री।
मैंने रात के कहरवा खूब सुने री॥
सासो जी बोलीं ऐरी बहू री
मंदिर में दियला तो लेस आव, मैं अलबेली भूल गई री
मैं तो छप्पर पे दियला लेस आई री।
मैंने रात के कहरवा खूब सुने री॥
सासो जी बोलीं ऐरी बहू री
घूरे में जो कूरा डार तो आव, मैं अलबेली भूल गई री
मैं तो चूल्हे में कूरा डार आई री
मैंने रात के कहरवा खूब सुने री॥

हे सखी! मैंने रात के कहरवा खूब सुने हैं। मेरी सास जी बोलीं- हे बहू! दरवाजे पर साधू खड़ा है, उसे भिक्षा दे आओ। मैं भुलक्कड़ अनोखी भूल गई और साधु को अपनी ननद सौंप आई। सास जी बोलीं- हे बहू! बछड़े को खूँटी से बाँध आओ। मैं अनोखी भुलक्कड़ भूल गई और देवर जी को खूंटे से बाँध आई। सास जी बोलीं- हे बहू! भगवान के मंदिर में दीया जलाकर रख आओ। मैं अनोखी भुलक्कड़ भूल गई और घर के छप्पर पर दीया जला आई।

सास जी बोलीं- हे बहू! घर का कूरा कचरा भरकर घूरे पर डाल आओ। मैं अनोखी भुलक्कड़ भूल गई और वह कूड़ा चूल्हे में डाल आई।

चरुआ

लठिया तो लैकें आव, घर में चोर घुसो।
ठाकुर ऊ नईं खों दौड़त आव।
सांस खों बांधो ससुर खों टांगो
जिठानी खों पटको जेठा लटकाओ
ले गअे ननद खों पकर हत्यारे, ने कोनऊँ नें आकें बचाव।
लठिया तो लैकें आव॥
सैंया खों मारो करकें उघारो
पिट गओ भतीजो कोऊ नें पसीजो
किवारे खोल कें घर दोरो छोड़ कें, अपने खों कैसऊँ संभर कैं बचाव।
लठिया तो लैकें आव॥
मैंने चोरों खों टोको खिरकी सें देखो
देवरानी देवर दबे हैं गोबर में
वे तो सब भग गअे गिरमा सो टोर, पकरने कोऊ नें उनखों पाव।
लठिया तो लैकें आव॥

ठाकुर! मेरे घर में चोर घुसे हैं। वे इसी ओर दौड़ कर आये थे। तुम लाठी लेकर मेरी रक्षा करने आओ। उन्होंने सास को बाँध दिया। ससुर को खूँटी पर टाँग दिया। जिठानी को पटक कर जेठ जी को भी लटका दिया और ननद जी को पकड़कर वे हत्यारे न जाने कहाँ ले गये हैं? किसी ने भी आकर मेरी रक्षा नहीं की है। मेरे साजन को उघारकर मारा है। भतीजे को पीटा है। तुम अपना घर द्वार छोड़कर मेरे घर के किवाड़ खोल अपना ही समझकर किसी भी तरह हम सभी की रक्षा करो। मैंने चारों को टोका था। उन्हें खिड़की में से देखा था। मेरे देवर-देवरानी गोबर में दबे ढँके थे। चोर तो निर्भय होकर भाग गये। उनको कोई भी पकड़ नहीं पाया।

चरुआ

घरई में तीरथ बनें हों, मंदिर में तनकई नें जैहों।
मंदिर के देवता बोलें नें डोलें, का उनसे आसा लगेंहों
मंदिर में तनकई नें जैहों॥
लूटत हैं पंडा छिनारौ लगावें, चरनों नें माथो झुकैहों।
मंदिर में तनकई नें जैहों॥
खाऊत हैं रबड़ी मलाई पेड़ा, नें पूजौ उनखों इक पैसा नें दैहों।
मंदिर में तनकई नें जैहों॥
सासु खों गौरा ससुर जू खों शंकर, पिया जू खों ईसुर बनेंहों।
मंदिर में तनकई नें जैहों॥

अब मैं मंदिर नहीं जाऊँगी। मेरा घर ही तीर्थ स्थान है। मंदिर के देवता तो किसी की भी नहीं सुनते और न ही बोलते हैं। पत्थर की तरह चुपचाप खड़े रहते हैं। उनसे क्या आशा की जाय? मंदिर के पंडा बदमाश लुटेरे हैं। वे मुझे बुरी नजर से घूरते हैं और मुझ पर ही छिनालपन का आरोप लगाते हैं। मैं उनके पैर कभी नहीं छुऊँगी। वे तो रबड़ी, मलाई, पेड़ा खा-खाकर मुटा रहे हैं। अब मेरी उनके प्रति श्रद्धा नहीं है। मैं उनको दान स्वरूप एक पैसा भी नहीं दूँगी। मैं अपने ही घर में अपनी सास को देवी पार्वती, ससुर जी को शंकर जी और अपने प्रियतम को ईश्वर मानकर उनकी पूजा सेवा करूँगी, किन्तु मंदिर नहीं जाऊँगी।

जन्म

पलंग पै अबनें रखो - मोरे राजा।
राजा पैली पीर जब आई, मैं सासो जगाऊन गई मोरे राजा।
राजा पिया सुनतई सें ले गई करोंटा, सासु मतलब की भई मोरे राजा।
पलंग पैर अबनें रखो - मोरे राजा॥
राजा पिया दूजी पीर जब आई, मैं जिठानी जगाऊन गई मोरे राजा।
राजा पिया सुनतई गुंगया गई ऊ तौ, जिठानी मतलब की भई मोरे राजा।
पलंग पैर अबनें रखो - मोरे राजा॥
राजा पिया तीजी पीर जब आई, देवरानी जगाऊन गई मोरे राजा।
राजा पिया सुनतई सें हो गई न्यारी, देवरानी मतलब की भई मोरे राजा।
पलंग पैर अबनें रखो - मोरे राजा॥
राजा पिया चौथी पीर जब आई, ननदिया जगाऊन चली गई मोरे राजा।
राजा पिया सुनतई चली गई ससुराले, ननद मतलब की भई मोरे राजा।
पलंग पैर अबनें रखो - मोरे राजा॥

हे प्रियतम! अब तुम मेरे पलंग पर पैर नहीं रखना, अर्थात् मेरे पास मत आना। मेरे दुख को किसी ने भी नहीं जाना है। हे प्रियतम! प्रसव काल में जब दर्द की पहली पीर (हिलोर) आई, तब मैं सासु जी को जगाने गई। मेरी आवाज सुनते ही उन्होंने गहरी निद्रा में सोने का बहाना किया और दूसरी ओर मुँह कर लिया। मेरी सासु जी बड़ी स्वार्थी निकलीं। हे प्रियतम! जब दर्द की दूसरी पीर उठी, तब मैं जिठानी को जगाने गई, तो वह गूँगी हो गई। वह मुझसे कुछ भी नहीं बोली। मेरी जिठानी भी बड़ी स्वार्थी निकली। हे प्रियतम! जब दर्द की तीसरी पीर उठी, तब मैं देवरानी को जगाने गई। उसने कहा- मैं तो तुमसे अलग रहती हूँ। मैं कुछ भी सहायता नहीं कर सकती। मेरी देवरानी भी बड़ी स्वार्थी निकली। हे प्रियतम! जब दर्द की चौथी पीर उठी, तब मैं ननदिया को जगाने गई। वह मेरी बात सुनते ही अपनी ससुराल को चली गई। ननद भी बड़ी स्वार्थी निकली।

जन्म

चलो सखि, लाल भये हैं नंद के।
टोपी लियाई झंगुलिया लियाई, और लियाई हार मुतियन के।
चलो सखि, लाल भये हैं नंद के॥
चूरा लियाई पैजनियां लियाई, और लियाई पाट रेशम के।
चलो सखि, लाल भये हैं नंद के॥
रो-रो हँस-हँस, दरशन दीनौ, नैंन उठे भगतन के।
चलो सखि, लाल भये हैं नंद के॥

हे सखी! उठो, चलो नंदबाबा के कन्हैया हुआ है। देखो-देखो, मैं नंदबाबा के कन्हैया को टोपी, झंगुलिया और मोतियों का हार लाई हूँ। यह देखो हाथों को चूरा, पांवों को पैजनियाँ और हाथों में बाँधने के लिए रंगीन सुन्दर रेशमी पाट लाई हैं। देखो तो, कन्हैया कभी हँसता है, कभी रोता है, हँसते-रोते उसे सभी देखकर अपने को धन्य मान रहे हैं।

बधावा

सुनो, बारे वीर बहिना बधाव लैकें आ गई।
सुकनी लिआई थाल भरे मोती, दुखनी लिआई हरी भरी दूबा
सुनो, बारे वीर बहिना बधाव लैकें आ गई।
सुकनी तो आई घुड़लों सवारी दुखनी तो निगतई आय
सुनो, बारे वीर बहिना बधाव लैकें आ गई।
सुकनी खों बांधों भौजी- लुचई कलेवा, दुखनी खों पाई भरो कोदों।
सुनो, बारे वीर-बहिना बधाव लैकें आ गई।
सुकनी खों बाँधे मगद के लडुआ, दुखनी खों लडुआ चुनी भुसी के।
सुनो, बारे वीर बहिना बधाव लैकें आ गई।
सुखनी तो हँसमुख खूबई मुस्कावे, दुखनी तो रोऊत किलपत जाये।
सुनो, बारे वीर बहिना बधाव लैकें आ गई।

हे मेरे प्यारे भैया! सुनो तो, तुम्हारी बहिनें बधावा लेकर आई हैं। धन-दौलत से सम्पन्न तुम्हारी सुखी बहिन थाल भरकर मोती लाई है और गरीबी से दुखी बहिन हरी-हरी दूब लेकर आई है। सुखी बहिन घोड़े पर सवार होकर आई और दुखी बहिन पैदल ही चल कर आई है। सुखी बहिन को भौजी ने पूड़ी मेवा दिये हैं और दुखी बहिन को पाई भर कोदों दिये हैं। सुखी बहन को थाल भर मगद के लडुआ और दुखी बहन को चूनी भुसी के लडुआ बनवाकर दिये हैं। सुखी बहिन तो हँसती-मुस्कराती चली गई और तुम्हारी दुखी गरीब बहिन रोती सिसकती जा रही है।

काजल लगवाई

कजरारे तोरे नैंन, लला तोरे प्यारे हैं कारे नैंन।
सोनें की डिबिया में काजर पारौ
कौने लगाये उर पहरी मुंदरिया
तोरे पापा के हँसमुख बैन।
लला तोरे प्यारे हैं कारे नैंन॥
माथे टुड़ी में लगाओ डठूला
कौनें लगा-पहिरी है पायल
कर कर कैं पिया जू खों सेन।
लला तोरे प्यारे हैं कारे नैंन॥
काजर लगाई सांतिया लिखाई
कां कां की चीजें फुआ नें मंगाईं
उनें नेग बिना नें आवे चैन।
लला तोरे प्यारे हैं कारे नैंन॥

हे लाला! तेरे काले कजरारे सुन्दर नयन हैं। तेरे पापा मुस्करा कर पूछते हैं- किसने सोने की डिबिया में काजल जमा कर तेरे आँखों में लगाया है? और नेग में सोने की अँगूठी प्राप्त की है। मेरे प्रियतम को इशारा कर उन्हें किसने उकसाकर, किसने तेरे माथे के कोने में काजल का डठूला लगाकर भेंट स्वरूप चाँदी की पायल प्राप्त की है। न जाने कितने प्रकार की माँग तेरी फुआ ने की हैं। वह काजल लगवाई, साँतिया धराई नेग के लिये बहुत ही बेचैन है।

पालना

मन मोहन उदक नें जांय, धीरे झुलाव सखी पालने।
काहे कौ पलना बनो है, काहे के बुने हैं-बुनाव।
चंदन कौ पालना बनो, रेशम के बुने-बुनाव।
जो मोरे लालन खों पलना झुलैहैं
दे दैहों गरे कौ हार, मुतियन से जड़ों बनाव।
मन-मोहन उदक ने जांय, धीरे झुलाव सखी पालने।

हे सखी! धीरे-धीरे पलना झुलाना। कहीं मेरा प्यारा लाल चौंककर जाग न जाये? किस वस्तु का पालना बना है और किस वस्तु से वह बुना गया होगा? वह तो चंदन की लकड़ी से बनाया गया है और रेशमी निबार से उसे बुना गया है। जो मेरे प्यारे लाल का पलना झुलायेगा उसे मैं मोंतियों से जड़ा अपने गले का हार सहर्ष दे दूँगी।

पालना

मैं वेदों में सुन आई, अनोखे जाये ललना।
मथुरा में हरि जनम लियो हैं, गोकुल में झूले पलना।
अनोखे जाये ललना॥
ले वसुदेव चले गोकुल खों, मारग खों रोके जमना।
अनोखे जाये ललना॥
काहे के सखि बने पालना, काहे के लागे-फुंदना।
अनोखे जाये ललना॥
रतन सिंहासन बने पालना, मुतियन लागे-फुंदना।
अनोखे जाये ललना॥
सब सखियां मिल पलना झुलावें, झूलत परौ हँसे मोहना।
अनोखे जाये ललना॥

हे सखी! मैने वेद पुराणों से सुना है कि देवकी ने चमत्कारी पुत्र पैदा किया है। कन्हैया ने मथुरा में जन्म लिया और गोकुल के पालने में झूला-झूला है। जब कन्हैया को लेकर उनके पिता वासुदेव गोकुल की ओर चले, तब जमुना जी ने उनका रास्ता रोका। हे सखी! कन्हैया जू का पालना किस वस्तु का बना होगा और उसमें किस प्रकार से फुँदना लगाये गये होंगे? रत्नों से जड़े सिंहासन की तरह पालना बना होगा और उसमें मोतियों के फुँदना चारों कोनों में लटकाये गये होंगे। सभी सखियाँ ऐसे सुन्दर पालने को झुला रही होंगी। उसमें लेटा हुआ कन्हैया खिल-खिलाकर हँस रहा होगा।

पालना

प्यारे सोजा बारे वीर, वीर की बलैयां लैहों।
जमना के तीर, सोजा बारे वीर॥
वर से बाँधो पालनौ, पीपर से बाँधी डोर।
आउत-जाउत झौका देऊँ, कबहूँ नें टूटे डोर।
सोजा बारे वीर॥
ताती-ताती खीर बनाई, निरबक डारो घी।
दोई कौर खा ले भैया, जो ठंडे परहें जी।
सोजा बारे वीर॥
चुन-चुन कलियां महल बनाओ, उते बिछा दई सेज।
मोरे भैया तुम सो जइयो, तनक नें करियो परहेज
प्यारे सोजा वारे वीर॥

मेरे प्यारे लाल! तू सो जा। मैं जमुना जी के किनारे तेरी बार-बार बलैंया लेती हुई चूम रही हूँ। मेरे प्यारे लाल तू सो जा।

देखो तो, जमुना किनारे बरगद के पेड़ से झूलने के लिये तेरा पलना बँधा है। और पीपल के पेड़ से पलना झुलाने के लिये डोर बँधी है। कोई भी आयेगा या जायेगा भले ही वह कितना धक्का देगा या झकझोरेगा, तेरे पलना की डोर कभी नहीं छूटेगी और न ही टूटेगी। मैंने तुझे गरम-गरम खीर बनाई है, उसमें शुद्ध घी डाला है। मेरे प्यारे लाल! तू दो ही कौर खीर खा ले, ताकि मेरे जी को संतोष हो जाये। मैंने चुन-चुनकर कलियों से सुकोमल महल बनाया है। जिसमें तुझे सोने के लिये फूलों की सेज बिछा दी है। मेरे लाल! तू उस पर सो जाना। आना-कानी मत करना।

पालना

झुला दे भैया, श्याम परे हैं पलना।
काहू गुजरिया की नजर लगी है
सो रोऊत है- कहर-कहर ललना।
झुला दे भैया, श्याम परे हैं पलना॥
रानी नोंन उतारो जशोदा जू
कुनुर-मुनुर उछल रहो ललना।
झुला दे भैया, श्याम परे हैं पलना॥
जो मोरे ललना खों पलना झुलाहे
दे दै हों जड़ाऊ जे कंगना।
झुला दे भैया, श्याम परे हैं पलना॥

श्याम पलना में लेटे हैं। उनकी मैया उन्हें झुला रही हैं। किन्तु आज वे कहर-कहर की ध्वनि में बार-बार क्यों रो रहे हैं ? क्या उन्हें किसी ग्वालिन की नजर लग गई है ? जशोदा मैया ने अपने श्याम की नजर राई नोंन से उतारी। तब खुशी से कुन-मुना कर श्याम पलना में उछलने लगे। जशोदा जी स्नेह से विह्वल हो कहती हैं जो कोई मेरे श्याम का पलना झुलायेगा, मैं उसे अपने हाथों के सोने के कंगन उतार कर दे दूँगी।

पालना

झुलाव सखी, ललना के पलना री।
कै आली सबरी-बिरज की सखियां
घेर लये ललना के पलना री।
झुलाव सखी, ललना के पलना री॥
कै मोरी आली कोरी मटकिया

दहिरा जुठार गओ सांवरो री।
झुलाव सखी, ललना के पलना री॥
कै मोरी आली गुजरी मदमाती
पलन मोरो झूले लाड़लो री।
झुलाव सखी, ललना के पलना री॥

हे सखी! मेरे लाल का पलना झुला देना। हे सखी! क्या मेरे लाल का पलना झुलाने के लिये ब्रज की सभी गोपियाँ पलने को घेर कर खड़ी हो गई हैं? गोपियाँ यशोदा जी को उलाहना देती हैं। तेरे श्याम ने दही खाकर मेरी मटकिया का पूरा दही जूठा कर दिया है। जशोदा जी गोपियों को हँसकर उत्तर देती हैं– तुम तो मदमाती जवान सियानी हो। मेरा लाल तो अभी अबोध है, जो पलना में झूल रहा है अर्थात् वह ऐसा नटखटी काम कैसे कर सकता है?

पालना

झूल भैया झूल, तोरी टोपी में फूल।
चम्पा तोरी कलियां तोरी और चमेली फूल।
झूल भैया झूल, तोरी टोपी में फूल।
आऊत है मालिन कौ लरका, ले लैहें झंगा–झूल।
झूल भैया झूल, तोरी टोपी में फूल।
फट गई टोपी बगर गए फूल, गिरियों ने भैया जा लग जैहें–धूल।
झूल भैया झूल, तोरी टोपी में फूल।

बहिन अपने भाई को झुलाती हुई गाती है। मेरे प्यारे भैया! तू झूले में झूल, तेरी टोपी में फूल ही फूल भरे हैं। चंपा और चमेली के दूधिया कोमल फूल तेरे ही तो हैं। तू अपने पालने में सावधान होकर झूलता जा। मालिन का वह झगड़ालू लड़का आता ही होगा। वह आकर कहीं तेरी पोषाक और पलना छुड़ा न ले। देख–देख तेरी टोपी फट गई है, उसमें रखे सभी फूल नीचे बिखर गये हैं। अब तू नीचे मत गिर जाना। नीचे धूल ही धूल है, जो तुझे लग जायेगी।

पालना

पलना सोनो सो सुहानौ, झूले तोरो ललना रे
झुलावे वाकी मैया, बजेगा तेरा झुनझुना रे।
दरवाजे पे ठांड़ो बढ़ैया, पलना ले लो जशोदा मैया
बाबा ने मोल लिया, दादी ने दाम दिया
भैया झुला हे झुलना रे, बजेगा तेरा झुनझुना रे॥
बाबा ने मंगाया ताऊ ने गढ़ाया

मखमल की सेजें, रेशम की डोरी
दादी लगा गई फुंदना रे, बजेगा तेरा झुनझुना रे॥

सोने के सुन्दर पालने में तेरा ललना झूलेगा। तू तो उसकी मैया है। तू ही उसे झुलायेगी। ललना के सामने तेरा ही झुनझुना बजेगा।

देखो, दरवाजे के सामने बढ़ई खड़ा है और आवाज लगा रहा है– जशोदा मैया! पलना ले लो। उस पलना को नंदबाबा ने खरीद लिया है। दादी ने चुपचाप उसका मूल्य दे दिया। जशोदा मैया अपने ललना को पलना में लिटाकर झुलाने लगी। उस सुन्दर पालने को नंदबाबा ने मंगाया। ताऊ जी ने उसे बनवाया था और दादी ने उस पालने में मखमल की सेजें बिछा-रेशम की डोरी बाँधकर सुन्दर झालरें लटकाई थीं।

बधाव

मांगो मांगो री ननद बैया जो मांगौ से देंय।
अन्न तो जिन मांगौ बैया – बंडा कौ सिंगार री।
अन्न में सें तेवरा लै जा, देवली लैहों काढ़ री।
बासन खों जिन मांगौ बैया, चौका कौ सिंगार री।
बासन में से लुटिया लै जा, कुढरी लैहों काढ़ री।
मांगौ-मांगौ री ननद बैया जो मांगौ सो देंय।
जेबर तो जिन मांगौ बैया, डब्बन कौ सिंगार री।
जेबर में से नथनी लै जा सरजा लैहों काढ़ री।
उन्ना तौ जिन मांगौ बैया, पेटी कौ सिंगार री।
उन्ना में से अंगिया लै जा, तनियां लैहों काट री।
ललुआ तौ जिन मांगौ बैया, गोदी को सिंगार री।
पलका पै के राजा लै जा, धक्का दे दैहो चार री।
मांगौ-मांगौ री ननद बैया जो मांगौ सो देंय।

भाभी पुत्र जन्म की खुशी में अपनी ननद से कहती हैं– हे ननद जी! इस खुशहाली में जो भी माँगना चाहो सो माँगो, मैं वही दूँगी, किन्तु अनाज मत माँगना, क्योंकि वह मेरे अन्नागार (संग्रहालय) का शृँगार है। किन्तु तुम अन्न ही चाहो तो मैं तुम्हें तेवरा ही दे सकूँगी, वह भी देवली निकालकर सिर्फ उसकी भूसी ही दूँगी। और हाँ बर्तन मत माँगना क्योंकि वे मेरे रसोई की शोभा हैं और हठ करोगी तो मैं तुम्हें एक लुटिया दूँगी जिसके नीचे की तरी (पेंदी) निकाल लूँगी अर्थात् बिन पेंदी की लुटिया ही दूँगी।

मुझसे कोई भी जेवर मत माँगना क्योंकि वह तो मेरी पेटी का सिंगार है। हे ननद जी! यदि उसके लिये भी हठ करोगी तो मैं तुम्हें सिर्फ नथनी दे सकूँगी और उसमें लगा मोतियों का

कीमती झुमका निकाल लूँगी। तुम वस्त्र कपड़ा भी मत माँगना। और यदि हठ करोगी तो मैं अपने कपड़ों में से सिर्फ अँगिया चोली दे सकूँगी, वह भी उसकी तनी काट कर। और सावधान किये देती हूँ कि तुम मेरे लाल ही को मत माँगने लगना। फिर भी हठ करोगी तो मैं अपने पलंग के सभी आभूषण अपने प्रियतम को दे दूँगी और तुम्हें चार धक्के लगाकर घर से बाहर कर दूँगी। इस प्रकार सब कुछ देने का वादा कर रमणी कुछ भी नहीं देना चाहती है।

बधाव

जशोदा भये नंदलाल, बधाव ल्याई मालनियां।
मालन ल्याई हार, तमोलन ल्याई बीड़नियां।
बधाव ल्याई मालनियां।
जरी कौ बन्दनवार, बना ले आई पटवारनियां।
बधाव ल्याई मालनियां।
मालन मांगे सोने कौ हार, तमोलिन मांगे चूनरिया।
बधाव ल्याई मालनियां।
मांगे मुतियन जड़ो चीर, सुघर पटवारनियां।
बधाव ल्याई मालनियां।

जशोदा मैया के यहाँ कृष्ण कन्हैया पैदा हुए हैं। इस खुशी में मालिन बधावा लेकर आई है। मालिन अच्छे सुन्दर हार और तमोलिन पान के बीड़ा लगाकर आई है और चमचमाती जरी का बन्दनवार पटवारिन ले आई है। अब मालिन सोने का हार और तमोलिन कीमती चुनरी माँग रही है। पटवारिन बड़ी चतुर है। वह दक्षिणा में मोती जड़ी साड़ी (धोती) माँग रही है।

बधाव

मोरी भौजी कें लाल भये, मैंने खबर जो पाई।
आधी रात नंदलाल भये।
ई घरी कौ मोरे सुनरा कैं जैहें
बहुर मोरे सुनरा कैं जैहें
उठो मोरे राजा खोलो कुची तारे
ऐचों मुहरें पचास प्यारे
मोरी भौजीं कें लाल भये।
काहे के चार चूरा-छिगुनियां
काहे की करधुनियां
सुन्ने के चार चूरा-छिगुनियां
रूपे की करधुनियां

मोरी भौजी कें लाल भये।
काहे की बा टोपी-झंगुलिया
कैं सौं लगी फुंदरियां
हरे रेशम की टोपी-झंगुलिया
सोला सौ लगी फुदरियां
मोरी भौजी कें लाल भये।

ननद कहती है- मेरी भौजी के पुत्र हुआ है। पुत्र होने की खबर मुझे आधी रात को मिली है। वह सोचने लगी कि शीघ्र ही बधावा लेकर जाना होगा। किन्तु इस समय सोना लेने सुनार के घर कौन जायेगा ? उसने अपने पति को जगाकर उठाया और कहा- हे प्राणनाथ! बधावा बनवाने के लिए सन्दूक का ताला खोलो और पचास मुहरें निकालो।

तब पति-पत्नी ने सोच-विचार किया कि किस धातु के चार चूरा छिगुनियाँ और किस धातु की करधौनी बनवाई जाये ? तब निर्णय हुआ कि सोने के चार चूरा छिगुनियाँ और चाँदी की करधौनी बनवाई जाये। उसके साथ किस कपड़े की टोपी और किस रंग की झंगुलिया (सूट) बनवाई जाये ? हरे रेशम की टोपी और सूट बनवाया जाये तथा उसमें सोलह सौ फुंदना लटकवाये जायें।

बधावा

रूमकत-झुमकत आई वारी ननदी, पौंची वीरन द्वार।
आओ मोरी बहिनी बैठो गलीचो, राखों मान तुमार।
पुरा-परौसन सब जुर आई, काहो ल्याई बधाव
देख बधाव आनंद भई सखियां, वीरन खों तुरतई बुलाव।
भैया भौजी दोई मतो करत हैं, काहो बहिन खों दैइये।
जो देनें सो दे दो चुपके, काहू सें का कैइये।
पीतर के चार चूरा ल्याई, कांसे की करधुनियां।
हरे अमौआ की टोपी झंगुलिया, एकऊ नें लागी फुंदरियां।
सौ कौ ल्याये पचासई ने पाये, हम झक मारन आये।
भैया के घर मिली भेंट नें, ऊंसई के हम जायें।

बधावा लेकर झूमती ननद जी अपने भाई के घर पहुँची। भाई ने आदरपूर्वक अपनी बहिन को गलीचा बिछाकर बैठाया। पड़ोस की स्त्रियाँ एकत्रित हो पूछने लगीं- बधावा में क्या-क्या आया है ? बधावा देख सखियाँ प्रसन्न हो गईं। भाई को शीघ्र ही बुलवाकर बधावा दिखाया गया है। भाई भौजी मिलकर विचार करते हैं कि बधावा के उपलक्ष में बहिन को क्या भेंट दी जाये ? तब भौजी कहती है- जो भी देना हो, चुपके से दे दो। किसी से कुछ मत कहो।

अपनी ननद जी के प्रति भौजी की सहानुभूति नहीं है। वह सोने के चार चूरों को पीतल के और चाँदी की करधौनी को काँसे की आँकने लगी और रेशमी टोपी झँगुलिया को हरे रंग की सूती कपड़े की बतलाकर कहने लगी कि- इनमें एक भी फुंदना नहीं लगवाया है। सौ रुपये के सामान पर पचास रुपये भी नहीं। क्या मैं झक मारने के लिए आई थी ? बेचारी ननद सोचती है- इस खुशहाली के अवसर पर भैया के घर से मुझे कुछ भी भेंट भलाई नहीं मिली। मैं व्यर्थ ही बहिन होकर जन्मी हूँ।

बधावा

बधाई ल्याई ननदी - अरे श्यामलिया
कहाँ से आई पीपर कहाँ से आई सोंठ
कहाँ से आई ननदी अरे श्यामलिया।
सागर से आई पीपर झाँसी से आई सोंठ
महोबे से आई ननदी अरे श्यामलिया।
काहे में आई पीपर काहे में आई सोंठ
काहे में आ गई ननदी अरे श्यामलिया।
पुड़िया में आ गई पीपर डब्बा में आई सोंठ
म्याने में आ गई ननदी अरे श्यामलिया।
काहे खों आई पीपर काहें खों आई सोंठ
काहे खों आ गई ननदी अरे श्यामलिया।
जच्चा खों आ गई पीपर बच्चा खों आई सोंठ
नेग खों आ गई ननदी अरे श्यामलिया।

गीत में अपने पति को श्यामलिया शब्द से सम्बोधित कर पत्नी कहती है- ननद जी बधावा लाई हैं। पता नहीं वे कहाँ से पीपर और कहाँ से सोंठ लाई हैं और किस जगह से ननद जी का आगमन हुआ है ? सागर से पीपर और झाँसी से सोंठ लाई गई है। वे महोबा से आई हैं। किस वस्तु में रखकर पीपर और किस वस्तु में सोंठ रखकर लाई हैं तथा किस वाहन में वे बैठकर आई हैं ? कागज की पुड़िया में पीपर और डिब्बा में सोंठ लाई है तथा वे डोली में बैठकर आई हैं। किसलिये पीपर और सोंठ लाई गई है और किसलिये ननद जी आई हैं ? प्रसूता के लिये पीपर और शिशु के लिये सोंठ लाई गई है तथा नेग दस्तूर के लिए ननद जी आई हैं।

जन्म

कौना के अंगना जिमरिया लहर-लहर होवे
महर-महर आवे बास तो नींद नहि आइयो
कौना की नार गरभ सें मधुरियन पग धरै रे

ललन-ललन कहे- होरल-होरल कहे
ससुरा के अंगना जिमरिया लहर-लहर होय
महर-महर आवे बास नींद नहि आइयो
जेठा की नार गरभ में मधुरियन पग धरै रे
भोर भये भुनसारे भौजी-मोती अनमनी
ननदी छम-छम उतरी अटरियों पूंछन लगी
भौजी तुमरौ काहो पिराय -काहो दुखत है
बैया वीरन खों देव बुलाय पेट मोरो दुखत है
मोरे राजा कचहरी सें आये तुमारो का दूखत है
सिर मोरो दूखे कमर मोरी टूटे -
राजा आई करेजें पीर, सुघर दाई चाहत हों।
ऊँचे पाटनपुर गाँव जहाँ दाई रहे रे
राजा घुड़ला पे भये असवार दाई घर निग चले
कौने टटा मोरो खोलो, कूकर मोरे भौकें रे
लाला कौना राजन के पुत्र, इतनी रात आये हो
कै तुमरी भाई चाहे दाई बहिन चाहे दाई
कै घर नार पिरयानी सुगर दाई चाहे रे
ने मोरी माई चाहे दाई बहिन चाहे दाई
हम घर नार रिरयानी सुगर दाई चाहे रे।
दाई तो बैठी घिनौंची-घिसन मजन करे
तोरी धन हाथ की गाढ़ी मुँह की पातरी रे
लाला ठीक ठैराव करे जाव सुघर दाई तब चलहै
जो कऊँ हू-है नंदलाल मोतन हार हम लैहें
जोरा लड़ेती सी धिया री तो सब रंग चूनरी।
भर भादों की रात झिमक जल बरसे
भींजत मोरे कौ जैहें!
तुम दाई ओढ़ो दुशाला रिमझिम बरसत मेह
भींजत दाई हम जैहें।
लाला गलियों मची है कीच खवत मोरे कौ जैहें
दाई घुड़ला पे हो जा सवार खबत दाई हम चलहें
दाई रिमकत-झिमकत बाई अंगनवा में उतरी रे।
रानी धरियक पीर संभारो ललन तोरे हुइयें री
तुम रानी पौढ़ो पलंग पे मलो तोरी पीडोली
दाई ने फेरे हैं हाथ, ललन प्यारे हो गअे

बजन लगी आनंद बधैयां सखी गावें सोहरे
सात शब्द सैनैयां ससुर घर बज रईं
दाई लै-लै अधेली कोदों छिड़ियों में भग जा री
जो कऊँ आ गए रंगीले देवर
रखा हे तोरे पेट जुगत से भग जा री।

किसके आँगन में जिमरिया लहरा रही है? जिसकी महक से नींद नहीं आई। किसकी स्त्री गर्भवती है जो हौले-हौले कदम रखती चलती है और बार-बार रटती है- ओ प्यारे पुत्र! मेरे लाल! ससुर के आँगन में जिमरिया लहरा रही है। जिसकी महक से नींद नहीं आई। मेरे जेठ की स्त्री गर्भवती है जो गर्भ के भार से हौले-हौले पाँव उठाती चलती है। सबेरा होते ही ननद अटारी से छमछम करती उतरी। देखा, भौजी का मुख उदास है।

उसने पूछा- भौजी! क्या कोई दर्द है ? भौजी बोलीं- तुम अपने भाई को बुला दो। मेरा पेट दर्द कर रहा है। कचहरी से भाई आया और पूछने लगा- प्रिये! क्या बात है ? पत्नी उत्तर देती है- मेरा सिर दुखता है। कमर टूटती है और कलेजे में दर्द हो रहा है। मुझे चतुर दाई की आवश्यकता है।

एक पहाड़ी पर पाटनपुर गाँव में दाई रहती है। पति घोड़े पर सवार होकर दाई को बुलाने चला। उसने दाई के घर के सामने का बन्द फाटक खोला। फाटक खोलने की आवाज सुनकर कुत्ते भौंकने लगे। दाई बोली- किसने फाटक खोला है ? इतने में वह उसके सामने पहुँच गया। दाई कहने लगी- लाला तुम किसके पुत्र हो ? जो इतनी रात बीते आये हो। तुम्हें किसके लिये दाई की जरूरत है? माँ, बहन या घरवाली के लिये?

वह बोला- मेरी स्त्री प्रसव पीड़ा से कराह रही है। उसके लिये तुम जैसी चतुर दाई की जरूरत है। शीघ्र चलो! दाई पनघरा में बैठी बर्तन माँज रही थी। वह बोली- मैं तुम्हारी स्त्री के स्वभाव से परिचित हूँ। वह बहुत कंजूस और मुँहफट है - तीखा बोलने वाली है। अत: तुम पहिले मेरा पारिश्रमिक देना निश्चित कर लो। तब मैं चलूँगी। यदि पुत्र हुआ तो मोतियों का हार लूँगी और पुत्री हुई तो सतरंगी चुनरिया लूँगी।

शर्तें मंजूर कर ली गईं। भादों मास की अँधेरी रात रिमझिमाते बरसते मेघ देख दाई सिकुड़ती हुई बोली- ऐसी वर्षा में भीगती हुई मैं कैसे चलूँगी? उत्तर मिला- तुम दुशाला ओढ़ लो, मैं भीगता चलूँगा। दाई ने फिर आनाकानी की - रास्ते में कीचड़ है। कीचड़ में धँसती कैसे चल सकूँगी? उत्तर मिला- तुम घोड़े पर बैठ जाओ। मैं कीचड़ में धँसता चलूँगा।

किसी भी तरह पानी से बचती हुई दाई जच्चा के घर पहुँची और जच्चा को देखकर बोली- बहूरानी, घड़ी भर की पीर सह लो? तुम्हारे पुत्र पैदा होगा। ऐसा कह उसने जच्चा को पलंग पर लिटाकर उसकी पिंडली मली और पेट पर हाथ फेरा। थोड़ी ही देर में पुत्र उत्पन्न हुआ। तब तो ससुर जी के दरवाजे आनंद उत्सव के साथ सप्त स्वरों में शहनाईयाँ बजने लगीं।

स्त्रियाँ बधाई नाचती हुई सोहरे गाने लगीं। चतुर बहूरानी बोली– ओ दाई! तू आधी पाई कोदों ले ले और चुपचाप इस घर की सीढ़ियाँ उतर कर भाग जा। यदि मेरे रसीले देवर आ गये तो तुझे छोड़ेंगे नहीं। तेरे भी पेट रह जायेगा। मेरा कहा मान और किसी भी तरह यहाँ से भाग जा।

जन्म

मोरे उठत कमर घन पीर आस नईयां जीवे की
सुन राजा रे – मोरी सास कौ देव बुलाय
आस नईयां जीवे की।
सुन माता री, तोरी बहू बेहाल तुम्हें बुलाऊत है
सुन बेटा रे रानी बहुआ के बोल–कुबोल
करेजे में हन गओ, आस नईयां जीवे की।
सुन माता री, अपने बेटा के खातिर बोल बिसर जा री
सुन रानी री, महारानी री तूने बोले है बोल कुबोल
आस नईयां जीवे की।
सुन राजा रे, महाराजा रे मोरी जिठनियां खों देव बुलाय
आस नईयां जीवे की।
सुन भौजी री, तोरी देवरानी बेहाल, तुम्हें बुलाऊत है
सुन लाला रे, देवरनियां के बोल–कुबोल
आस नईयां जीवे की।
भोर भये भुनसारे, ललन प्यारे हो गओ
राजा लियाव गुड़–सोंठ विस्वार बांधो लडुआ
अब बिरिया है – लडुओं के खावे की
अब तो आस बड़ी जीवे की।

गर्भिणी की कमर और पेट में दर्द उठ रहा है। अब उसे जिन्दा रहने की आशा नहीं है। वह बेचैन हो अपने साजन से कहती है– सुनो! तुम मेरी सास को बुला दो। अब मुझे जीवित रहने में संदेह होने लगा है। बेटा माँ के पास जाकर कहता है– हे माँ! तुम्हारी बहू बहुत व्याकुल हो रही है। वह तुम्हें बुलाती है। माँ कहती है– बेटा! तेरी बहू ने जो दुर्वचन कहे हैं– वे मेरे हृदय में चुभ रहे हैं। बेटा प्रार्थना करता है– हे माँ! मेरी खातिर उन बातों को भूल जाओ। किन्तु माँ नहीं मानती।

गर्भिणी को प्रसव पीड़ा कम करने तथा परिचर्या के लिये एक आत्मीय स्त्री की नितान्त आवश्यकता है। वह व्यथित हो जेठानी–देवरानी–ननद का नाम ले–लेकर पुकारती है। तब पति अपनी पत्नी के पास जाकर कह देता है– हे प्रिये! तुम्हारे दुर्वचनों के कारण तुम्हारे पास कोई भी नहीं आना चाहता है।

सारी रात प्रसव पीड़ा सहने के बाद प्रात:काल पुत्र उत्पन्न हो गया। पत्नी ने कहा– प्रियतम! तुम बाजार जाकर पुराना गुड़, सोंठ, विस्वार (मसाला) खरीद लाओ। अब लड़ुआ खाने का समय आ गया है। देखो तो अपना प्यारा पुत्र पैदा हुआ है। अब तो जीने की आशा बलवती हो गई।

जन्म

पहले पहर कौ सपनौ सुनो मोरी सासो जी महाराज।
राम लखन दोऊ भैया अंगन बिच तप करें महाराज।
बैया लएं बेला भर तेल सांतिया लिख रही महाराज।
भौजी बैठी माझ–मझौटे हार नौंने गुह रही महाराज।
गांव से आ गई बारी बैया वे हँस बोलियो महाराज।
भौजी हुइये तुम्हारे नंदलाल हार हम लै लेहें महाराज।
चूमो बैया तोरी हनुलिया धिया गुर मुँह भरो महाराज।
जो बैया हुइये नन्दलाल हार तुम ले लियो महाराज।
भोर भये भुनसारे ललन प्यारे हो गअे महाराज।
धीरे–धीरे बाजे बधैयां धीरे गावें सखी सोहरे महाराज।
जो सुन पैहें ननदिया हार मोरे ले लैहें महाराज।
भोर भये भुनसारे ननदबाई आ गई महाराज।
कैसी बाजें धीरी बधैयां कैसे धीरे सोहरे महाराज।
भौजी के जनमे नंदलाल कै धिया री महाराज।
बैया हम जनमें नंदलाल धिया तुम जनों महाराज।
गांव के ढिमरा पकर मंगवैयो महाराज।
अक्का धतूरे की जरें खुदवा मंगवैयो महाराज।
घिस लुड़िया पिसवैयो कटोरन छानिये महाराज।
सो बारी बैया खों दियो पियाय हार मोरे बच जेहें महाराज।
मायं से आ गअे राजा वीरन वे हँस बोलियो महाराज।
जो पूजे सो दे बहन मोरी जिन मारो महाराज।
काशी के पंडित बुलैयो–वेद बचवैयो–महाराज।
लरका के आजुल कौ गोत सुनवाइयो महाराज।
आजा उनके राजा–महाराजा–आजी पटरनियां महाराज।
भैया उनके अर्जुन भीम बहन सुभद्रा सी महाराज।
भैया उनके मृदंग बजावें, बहन जग बेड़िनी महाराज।
मो जग बेड़िनी कौ लाला कोऊ नें खिलाइयों महाराज।

तोरे नई भौजी लाला गरब नईं कीजिये महाराज।
जे अर्जुन भीम के लाला, सबई खिलाइयो महाराज।

एक बहू अपनी सास को प्रथम पहर का सपना सुना रही है। वह कहती है– राम लक्ष्मण दोनों भाई मेरे आँगन में बैठकर तप कर रहे हैं। और ननद जी कटोरा लिये सेंदुर घुले तेल से साँतिया लिख रही हैं। मैं मझधरा में बैठी हार गूँथ रही हूँ। इतने में गाँव से छोटी ननद जी आ गईं और वे सपना सुनकर बोलीं– भौजी! तुम्हारा सपना शुभ है। तुम्हारी गोद भरेगी और नंदलाल ही होंगे। तब मैं तुम्हारा यह सोने का हार, जो तुम पहिने हो– उसे मैं ले लूँगी। भौजी ऐसे प्रिय शब्दों को सुनकर प्रसन्न हो कह उठी– मेरी प्यारी ननद जी? मैं तुम्हारे मुँह में घी–गुड़ देकर तुम्हारा हाथ चूमना चाहती हूँ। यदि तुम्हारा यह वचन सत्य हुआ तो मैं अपना सोने का हार तुम्हें दे दूँगी।

कुछ दिन पश्चात् ननद जी के वचन सत्य निकले। वधू गर्भवती हुई और नौ मास पश्चात् सुबह पहर में बहू के पुत्र हुआ। तब बहू को ननद के लिये अपना हार देने की बात याद आ गई। अब वह नहीं चाहती थी कि ननद जी पुत्र जन्म का शोर सुनकर आ धमके और उसे अपना कीमती हार देना पड़े। इसलिये उसने धीरे–धीरे बधाई बाजे और धीरे–धीरे सोहर गीत गाने को कहा? किन्तु सुबह होते ही ननद जी आ गईं और बोलीं– बधाई वाद्य धीरे–धीरे क्यों बज रहे हैं? स्त्रियाँ सोहर गीत धीरे–धीरे क्यों गा रही हैं? क्या भौजी के लड़का नहीं लड़की पैदा हुई है? ननद जी मेरे तो लड़का पैदा हुआ है। तुम ऐसा अशुभ क्यों सोचती हो? फिर वह रूखे स्वर में बोली– लड़की होगी तो तुम्हारे यहाँ?

भौजी ननद को अपना हार देना नहीं चाहती थी। उसने मन में ननद को विष देकर मार डालने की युक्ति सोची। उसने तत्काल गाँव के ढीमरों को बुलाकर आदेश दिया कि वे शीघ्र ही आक और धतूरे की जड़ें खुदवा कर लायें और उन्हें सिल पर पीस छानकर ननद को चुपके से पिला देवें, ताकि वह मर जाये और मेरा हार मेरे ही पास रह जाये। इतने में उसका पति आ गया। अपनी बहिन को हार न देने का षड्यंत्र वह जान गया था। वह अपनी पत्नी से बोला– प्रिये! तुम अपना हार मेरी बहिन को नहीं देना चाहती हो तो मत देना। हँसी–खुशी से जो कुछ भी देना चाहो, वह उसे दे देना, किन्तु मेरी बहिन को जान से मत मार डालना।

काशी के पंडित बुलवाकर नवजात शिशु के आजा तथा नाना का गोत्र बखानने का आयोजन किया गया। ननद भी अपने प्रति रचे जा रहे षड्यंत्र को जान गई थी। उसने सिखा–पढ़ा कर अपनी ओर कर भौजी को अपमानित करना चाहा। तब पंडित ने आजा का गोत्र वर्णन करते हुए कहा– इस बच्चे का आजा–राजा और आजी–महारानी हैं। उसके पिता काका–अर्जुन भीम के समान हैं और फुआ कृष्ण की बहन सुभद्रा सदृश्य हैं। फिर नाना का गोत्र बखानने को कहा गया। उसके मामा मृदंग बजाते हैं और उनकी मौसियाँ बेड़िनी हैं जो गाने बजाने तथा नाचने का पेशा करती हैं। जब भौजी ने अपने मायके पक्ष की बुराई सुनी तो वह आग बबूला हो गई और बोली– जब मैं बेड़िनी हूँ तो मेरे बच्चों को कोई मत छूना। ननद ने जले पर नमक छिड़कते हुए

कहा– हे भौजी! गर्व मत करो बच्चा तुम्हारा नहीं वह तो मेरे भाई अर्जुन भीम का है, उसे हम सभी प्यार से खिलायेंगे।

जन्म

पिया जात हो देश विदेश खुनखुना लएँ आइयो
रानी नें तोरे बारे ने छोटे खुनखुना कौन खों खिलाइयो
इतनी तो सुन धन अनमनी ऐ धन अनमनी
हन लए बजर किवार–साँकर दे लई लोहे की।
माँय से आ गये बारे देवरा बेरूख बोले– वे हँस बोले
खोलो भौजी बजर किवार– सांकर खोलो लोहे की
भौजी कैसी बदन मलीन– कैसी भौजी अनमनी
लाला तुमारे भैया बोले हैं बोल– करेजे में हन गअे
नौ दस महिना के बीच ललन नौंने हो गअे
बजन लगी आनंद बधैयां सखी गावें सोहरे
सात सबद शहनैयां ससुर घर बाज रहीं रे
मोरे पछीते सुनरवा तौ वेगी बुलवाय लइयो रे
मोय खुनखुना कौ शौक वेगी गढ़वाइयो रे
बारा बरस में लौटे पिय प्यारे खुनखुना ले आये रे
रानी लय ले अपनो खुनखुना–खुनखुनवा हम ल्यारे रे
खुनखुना देव अपनी माई खों बिरन तोरे खेले रे
राजा ने मोरे बारे ने ओली, झड़ूले खुनखुना कौन खिलावे रे
राजा मोय खुनखुना कौ शौक, सोने कौ गढ़वालव रे।

हे साजन! तुम विदेश जाते–आते रहते हो। मेरे बेटे को खुनखुना लेते आना। पति आश्चर्य से बोला– हे प्रिये! तुम्हारे तो कोई बालक नहीं है फिर खुनखुना किसके लिए मंगवाना चाहती हो? इतना सुनते ही पत्नी का मुख मंडल कुम्हला गया। उसे अपने को संतानहीन होने का दुख हुआ। वह किवाड़ बन्द कर लोहे की साँकल चढ़ा घर के भीतर बैठ गई। इतने में उसका देवर आया। लोहे की साँकल खटखटा कर उसने किवाड़ खुलवाये। भौजी को उदास देख उसने पूछा– भौजी! आज तुम अनमनी क्यों हो? कौन–सा दुख तुम पर आ पड़ा है? भौजी ने कहा– लाला! तुम्हारे भाई मुझसे कड़वे वचन बोलकर परदेश चले गये हैं। उनके वे वचन मेरे हृदय में चुभ गये हैं।

सौभाग्य से इस घटना के पश्चात् पति के जाते ही उसके गर्भ से पुत्र उत्पन्न हुआ। उसके आँगन में बधाई नाची जाने लगी। सखियाँ सोहर गीत गाने लगीं। उसके ससुर के द्वार पर सात स्वरों की शहनाई गूँजने लगी। जच्चा को तो पहिले से ही खुनखुना की चाह थी। सुनार पड़ोस में

ही था। उसने सुनार को शीघ्र बुलवाकर सोने का खुनखुना बना लाने को कहा।

उसका पति परदेश गया था। वह बारह वर्ष बाद घर लौटा और साथ में खुनखुना भी ले आया। उसने आते ही कहा- प्रिये! यह लो अपना खुनखुना। पत्नी को याद आया कि उसकी सास उसे रोज ही बाँझ होने का ताना देती थी। पत्नी ने व्यंग्यात्मक जवाब दिया- हे प्रियतम! यह खुनखुना तुम अपनी माँ को दे दो। तुम्हारे भाई उससे खेलेंगे।

जन्म

मथुरा में जनमें किसन-कन्हाई।
नंद बाबा के भाग बड़े हैं, भागवती यशोदा माई।
मथुरा में जनमें किसन कन्हाई॥
सखियां गावें गीत मनोहर, नाचे-ता-ता-थाई।
मथुरा में जनमें किसन-कन्हाई॥
देवता मगन सुमन बरसावैं, मोय देव दरस दिखाई।
मथुरा में जनमें किसन-कन्हाई॥
नंदबाबा जू सब कछु बांटें, दोरे बजवाई शहनाई।
मथुरा में जनमें किसन-कन्हाई॥

यशोदा मैया भाग्यवान हैं, नंदबाबा बड़े भाग्यशाली हैं। ता-ता-थैया की धुन में सभी सखियाँ मधुर गीत गा रही हैं। देवता प्रसन्न हो आकाश से फूल बरसाते हैं और प्रार्थना करते हैं - हे प्रभु! मुझे भी दर्शन दीजिये। नंदबाबा दक्षिणा देते हुए सभी कुछ बाँट रहे हैं, वे प्रत्येक घरों-दरवाजों पर सुहानी शहनाई बजवा रहे हैं।

जन्म

गोकुल बजत बधैयां,
चलो सखि जनमें कन्हैया।
झिलमिल-झिलमिल दिया जरत हैं
जगमग होत-जोत-अँधियाँ
चलो सखि जनमें कन्हैया॥
गलियन-गलियन धूम मची है
नाचें सब साख-सकुंयां।
चलो सखि जनमें कन्हैया॥
वरन-वरन के बाजे बजत हैं
बाज रही रे शहनैयां

चलो सखि जनमें कन्हैया।
कोऊ-कोऊ देखे मगन हो संवरिया
कोऊ-कोऊ लेत-बलैयां।
चलो सखि जनमें कन्हैया॥

हे सखी! गोकुल चलो, वहाँ कृष्ण कन्हैया के जन्म दिवस की खुशी में बधाई बज रही है। अंधेरे में झिलमिल-झिलमिल दीयों की ज्योति जगमगा रही है। गली-गली में धूम मची है, सखा-सखियाँ सभी मिलकर नाच रहे हैं, कई किस्म के वाद्य बज रहे हैं, शहनाई गूँज रही है। कोई प्रसन्न हो, कोई एकटक हो कन्हैया को देख रहा है। कोई कन्हैया की बलैयां ले-लेकर अपना प्रेम दिखा रहा है।

जन्म

राजा दशरथ घर राम भये।
राजा जनक घर लाड़ली पली।
भजो दशरथ नन्दन जनक लली॥
जे दोऊ बन्धु जनकपुर आये
फूल बिछावें सखियां गली-गली।
भजो दशरथ नन्दन जनक लली॥
टोरो धनुष शंभु कौ भारी
वरमाला पहिराय-चली
भजो दशरथ नन्दन जनक लली॥
पूजत गौरी मनावत शंकर
वर पायौ रघुनाथ-बली
भजो दशरथ नन्दन जनक लली॥

राजा दशरथ के घर राम पैदा हुए और राजा जनक के यहाँ राजदुलारी जानकी जी पैदा हुईं। दशरथ नन्दन श्रीराम और जनक लली सीता जी को भजिये। एक दिन राम और लक्ष्मण दोनों भाई जनकपुर आये। तब जनकपुर की नारियों ने उनकी गलियों में फूल बिछा दिये। राम ने शिव का विशाल धनुष एक पल में खींचकर तोड़ दिया। तब सीता ने रामजी को वरण कर वरमाला पहिनाई। सभी जनकपुर वासी देवी-दुर्गा और शंकर भगवान का स्मरण कर उनकी पूजा-अर्चना करने लगे और कहने लगे- सीताजी ने राम जैसा शक्तिशाली दूल्हा पाया है।

जन्म

अवध में आज भये अनंदा।
रामचन्द्र खों जाये कौशल्या पूरन परमानंदा

अवध में आज भये अनंदा॥
देश-देश के भूपति आये जुर गओ हैं- मुनिवृन्दा।
अवध में आज भये अनंदा॥
देत निछावर हरष महीपति गज धनु और तुरंगा।
अवध में आज भये अनंदा॥
बन्दनवार बँधे सब दुआरन उड़त गुलाल-चुनिन्दा।
अवध में आज भये अनंदा॥
मगन भये नर नारी मन से दर्शन कर रघुनन्दा।
अवध में आज भये अनंदा॥

आज अवध में पुत्र जन्म की खुशहाली छा गई। सम्पूर्ण जगत को सुख-शांति देने वाले रामचन्द्र जैसे पुत्र को कौशिल्या ने पैदा किया है। अयोध्या में देश-विदेश के राजा-महाराजा आये। संत-महात्मा, ऋषि-मुनि सभी एकत्रित हो गये। राजा दशरथ प्रसन्न हो घोड़ा-धन-दौलत निछावर स्वरूप देने लगे। सभी घर द्वारों पर वन्दनवार बँधे हुए हैं। रंग-बिरंगी गुलाल उड़ रही है। श्रीराम के दर्शन कर सभी नर-नारी हृदय से भारी प्रसन्न हुए।

जन्म

राजा दशरथ के भये हैं लाल, दिनों दिन प्यारे लगें।
अरे कोने के भये हैं, भरत-चरत अुर
कोंना के लछमन राम दिनों दिन प्यारे लगें।
अरे कैकई के भये हैं भरत चरत अुर
कौशल्या के लछमन राम, दिनों दिन प्यारे लगें।
कौंना घरी में चरत-भरत भये
अरे कौन घरी भये राम, दिनों दिन प्यारे लगें।
अरे सांझ घरी में चरत भरत भये
भोर भये राजा राम, दिनों दिन प्यारे लगें।
नचत-बजत आनंद बधैयां
फर-फर घूमें निशान, दिनों-दिन प्यारे लगें।

राजा दशरथ के यहाँ पुत्र पैदा हुए हैं। सभी के मन में पुत्रों के प्रति हर दिन अधिक से अधिक प्यार बढ़ता ही जाता है। वे सभी को प्यारे और प्यारे होते चले जाते हैं। कोई प्रश्न करता है कि- अरे! किसके यहाँ भरत-शत्रुघ्न हुए हैं और किसके यहाँ राम-लक्ष्मण? कोई उन्हें बताता है कि रानी कैकेयी के भरत-शत्रुघ्न और कौशिल्या के यहाँ श्रीराम-लक्ष्मण पैदा हुए हैं। किस घड़ी में भरत-शत्रुघ्न हुए और किस समय श्रीराम? अरे! साँझ के समय भरत-शत्रुघ्न और सुबह

श्रीराम पैदा हुए हैं। आनंददायक समय बधाई बजाता हुआ नाच रहा है और गौरव गरिमा का प्रतीक अयोध्या का सुखकारी ध्वज लहरा रहा है।

जन्म

जो बन्दनवारौ कहाँ लएँ जातीं।
नगर अयोध्या में सुत भये सजनी
राजा महीपति के नाती।
जो बन्दनवारौ कहाँ लएँ जाती॥
राजा दशरथ कै पुत्र भये हैं
रघुकुल जोत उजयार दई बाती।
जो बन्दनवारौ कहाँ लएँ जाती॥
रानी कौशल्या की कूंख जुड़ानी
सखियों की शीतल भई छाती
जो बन्दनवारौ कहाँ लएँ जाती॥
नगर अयोध्या में दान भये हैं
लै-लै दान मगन भई सखियां
छम-छम पैजनियां बजातीं।
जो बन्दनवारौ कहाँ लएँ जाती॥

एक महिला ने जाती हुई मालिन से पूछा- तुम यह फूल पत्तियों से पिरोया हुआ वन्दनवार किसके यहाँ लिये जाती हो? तब उत्तर मिलता है- हे सखी! नगर अयोध्या के महाराजा के नाती और राजा दशरथ के यहाँ पुत्र उत्पन्न हुए हैं। जिनने एक ज्योति जलाकर रघुकुल को प्रकाशित किया है। उन्हीं के यहाँ यह वन्दनवार लिये जा रही हूँ। पुत्र जन्म से रानी कौशिल्या की कोख तृप्त हुई और सभी सखियों के मन को सुख-शांति मिली है। वहीं यह वन्दनवार लिये जा रही हूँ। पुत्र जन्म की खुशी में नगर अयोध्या में जो दान-दक्षिणा दी जा रही है। उसे पाकर सभी सखियाँ अत्यंत प्रसन्न हो रही हैं। जो खुशी से विह्वल हो यहाँ- वहाँ दौड़ती हैं। उनकी छमछमाती पैजनियाँ बज रही हैं। मालिन कहती है कि- यह वन्दनवार वहीं उसी ओर लिये जा रही हूँ।

जन्म

ललन बड़े सुन्दर हैं।
अंगना में ठांड़ो ससुर मों सें पूछे
बहू कौन फल खाये।
ललन बड़े सुन्दर हैं।
पौर में ठांड़ो जेठा मों सें पूंछे

बहू कौन व्रत कीन्हों
ललन बड़े सुन्दर हैं।
द्वारे पे ठांड़ो देवर मों सें पूंछे
कौन सेज भौजी सोई
ललन बड़े सुन्दर हैं।
जीना पे ठांड़े ननदेऊ मों सें पूंछे
कौन से दान हैं- कीन्हे
ललन बड़े सुन्दर हैं।
सेजों पे लेटे सजन मों सें पूंछे
धना कोंना सें कीन्ही प्रीत
ललन बड़े सुन्दर हैं।
मैं तो पिया की अपने पिया की
पिया प्यारे से कीन्ही हैं-प्रीत
ललन बड़े सुन्दर हैं।

पुत्र बहुत सुन्दर हैं। आँगन में खड़े ससुर जी मुझसे पूछते हैं- हे बहू! तुमने कौन से फल खाये हैं? जिससे यह तुम्हारा पुत्र सुन्दर हुआ है। पौर में खड़े जेठजी मुझसे पूछते हैं- हे बहू! तुमने ऐसा कौन सा व्रत उपवास किया है, जिसके प्रभाव से तुम्हारे यहाँ सुन्दर पुत्र हुआ है? दरवाजे पर खड़े देवर जी पूछते हैं- हे भौजी! तुम किस प्रकार की सेजों पर सोई हो। जिस कारण तुम्हारे यहाँ सुन्दर पुत्र हुआ है। जीना पर खड़े ननदेऊ जी पूछते हैं- हे भाभी! तुमने कौन से दान पुण्य किये हैं जिससे तुम्हारा यह सुन्दर पुत्र हुआ है। सेजों पर लेटे हुए मेरे प्रियतम ने भी पूछा- हे प्रिये! तुमने कौन से ऐसी प्रीत की है? जिसके कारण से तुम्हारा यह सुन्दर पुत्र हुआ है। तब मैंने उन्हें उत्तर दिया- मैंने तो अपने ही प्रियतम से ही प्रीत की है। उनके ही प्रभाव से यह सुन्दर पुत्र पैदा हुआ है।

जन्म

जनमे हैं कुंअर कन्हाई-मोरी मैया।
रेशम डोरी के बन्दनवारे
लैकें खवासन आई मोरी मैया।
जनमें हैं कुंअर कन्हाई मोरी मैया॥
बाल सखा सब दोरे में ठांड़े
गोरस कीच मचाई मोरी मैया।
जनमें हैं कुंअर कन्हाई मोरी मैया॥
नौ लख गौयें नंद मंगाईं

विपरन दान दुआई मोरी मैया।
जनमें हैं कुंअर कन्हाई मोरी मैया॥

जशोदा मैया के घर कृष्ण कन्हैया ने जन्म लिया है। नाईन रेशमी वन्दनवार लेकर आ गई है। खुशहाली लिये बाल गोपाल सब दरवाजे के सामने खड़े हुए हैं। स्नेहवश गायों के स्तनों से अपने आप दूध की धारा निकलने लगी है। धरती दूधिया कीच में सन गई। नंदबाबा ने एक लाख गौयें बुलवाईं और उन्हें विधिवत ब्राह्मणों को दान में दी हैं।

जन्म

मोहे राम जी ने ललना दीन्हो
सासो तुमने कछु नहिं कीन्हो
माता मोरी बेन्दी फेरें जइयो।
मोहे राम जी ने ललना दीन्हो॥
जिठानी तुमने कछू नहिं कीन्हो
जिज्जी मोरी झुमकी फेरें जइयो।
मोहे राम जी ने ललना दीन्हो॥
देवरानी तुमने कछु नहिं कीन्हो
छोटी मोरी कंगना फेरें जइयो।
मोहे राम जी ने ललना दीन्हो॥
ननदी तुमने कछु नहिं कीन्हो
बैंया मोरी ठुस्सी फेरें जइयो।
मोहे राम जी ने ललना दीन्हो॥

मुझे तो भगवान ने पुत्र दिया है। हे सास जी! प्रसवकाल में तुमने मुझे कुछ भी सहयोग–सहायता नहीं दी। माता के समान मेरी सास जी अब तुम वह सोने की बेन्दी मुझे लौटा दो, जो मैंने तुम्हें दी थी। हे जिठानी जी! तुमने प्रसवकाल की पीर नहीं जानी। मेरी बड़ी बहन! अब तुम वह सोने की झुमकी मुझे लौटा दो, जो मैंने तुम्हें दी थी। हे देरवानी जी! तुम भी निष्ठुर निकलीं। तुम मेरे पास सान्त्वना देने नहीं आईं। मेरी छोटी बहिन! अब तुम वह सोने के कंगन मुझे वापिस कर दो, जो मैंने तुम्हें दिये थे। हे ननद जी! तुमने भी मेरी दुख तकलीफों में साथ नहीं दिया। मेरी बैया जू! अब तुम वह सोने की ठुसी मुझे लौटा दो, जो मैंने तुम्हें दी थी। मुझे तो भगवान ने सकुशल पुत्र दे दिया है।

जन्म

देवी दुर्गा ने दये वरदान
हमारे घर भये लाल।

कौन घरी राम कौन घरी लछमन
कौन घरी भरत-भुवाल।
हमारे घर भये लाल॥
अनघरी राम सुघर घरी लछमन
भुनसरिया में भरत-भुवाल।
हमारे घर भये लाल॥
कौंना लुटावे अन्न-धन-सोनो
कौन मुतियन के माल।
हमारे घर भये लाल॥
राजा लुटावे अन्न-धन-सोनो
रानी मुतियन के थाल।
हमारे घर भये लाल॥

हे दुर्गा देवी ! तुम्हारे ही आशीर्वाद से मेरे घर पुत्र पैदा हुआ है। कोई व्यक्ति प्रश्न करता है- किस समय में राम, किस समय लक्ष्मण और किस समय में भरत ने जन्म लिया है ? अज्ञात समय में राम ने, अच्छी घड़ी में लक्ष्मण ने और सुबह पहर में भरत जी ने जन्म लिया है। किसने अन्न धन सोना दान किया ? और किसने मोतियों की मालाएँ दीं ? राजा ने अन्न-धन-सोना दान में दिया और रानी ने मोतियों से भरे थाल दान किये।

कुआँ पूजन

गर्रा पे डोरी डार गुइयां।
डार गुइयां री डराव गुइयां॥
गर्रा पे डोरी डार गुइयां॥
गर्रा पे डोरी जबहिं बिराजै
रेशम रस्सी होय गुइयां।
गर्रा पे डोरी डार गुइयां॥
रेशम रस्सी जबहिं बिराजै
सुन्ने घड़ेलन होय गुइयां।
गर्रा पे डोरी डार गुइयां॥
सुन्ने घड़ेलना जबहिं बिराजै
सैंया रसीले होय गुइयां।
गर्रा पे डोरी डार गुइयां॥
सैंया रसीले जबहिं बिराजै

पतरी सी धनियां होय गुइयां।
गर्रा पे डोरी डार गुइयां॥

हे सखियों! तुम सभी मिलकर इस कुएँ से गर्रा पर रस्सी डालने में मेरी मदद करो? तब एक के बाद एक सखी कहती है– रेशम की रस्सी होगी तो वह गर्रा पर अच्छी लगेगी। रेशम की रस्सी में सोने का घड़ा बँधा होगा, तभी रेशम की रस्सी शोभायमान होगी। गोरी के साजन जितने रसिक-रसीले होंगे, उतना ही सोने का घड़ा अच्छा लगेगा। रसीले साजन तभी अच्छे लगेंगे जब उनकी गोरी पतली लोच-लचक वाली होगी।

कुआँ पूजन

जल खेंचे रेशम की डोर
ओय ऐं गुइयां।
रेशम डोरी जबहिं बिराजै
सुन्ने घुड़ेला होय ऐ गुइयां
जल खेंचे रेशम की डोर, ओय ऐं गुइयां।
सुन्ने घुड़ेला जबई बिराजै
मोतन कुड़रिया होय रे गुइयां
जल खेंचे रेशम की डोर, ओय ऐं गुइयां।
मोतिन कुडरी जबईं बिराजै
रेशम चुनरिया होय ऐं गुइयां
जल खेंचे रेशम की डोर, ओय ऐं गुइयां।
रेशम चुनरी जबईं बिराजै
ओली ललनवा होय रे गुइयां
जल खींचे रेशम की डोर, ओय ऐं गुइयां।
ओली ललनवा जबई बिराजै
राजा हंसैया होय ए गुइयां
जल खींचे रेशम की डोर, ओय ऐं गुइयां।

रेशम की डोरी से जल खींचती हुई युवती अपनी प्रिय सखी से कहती है– रेशम की डोरी तब अच्छी लगेगी जब उसमें सोने का घड़ा हो। सोने का घड़ा तब अच्छा लगेगा जब उसके लिये मोतियों से जड़ी सुन्दर कुड़री हो। मोतियों जड़ी सुन्दर कुड़री तब अच्छी लगेगी जब पहिनने वाली स्त्री की गोद में बच्चा हो। और गोद में बच्चा तब अच्छा लगेगा जब उसका पति बच्चे को देख-देख खुश हो, प्रसन्न हो।

कुआँ पूजन

चलो देवरनियां- चलो जिठनियां
हिलमिल पनियां चलिये हो।
ऐले कुआँ कौ तुम भर लिआओ, पैले खों हम जैहें हो।
ऐले कुआँ में ऊँदा नें बूंदा, पैले में डुबकैंयां हो।
हिलमिल पनियां चलिये हो।
घैला नें फूटौ गगरी ने फूटी, माथे की बिंदिया चमकी हो।
पानी भरकैं पौरिन आई, ससुरा दे गारी हा दैया हो
हिलमिल पनियां चलिये हो।
गारी तो तोरी-तोई खों लगहें, मैं तो बड़े घर की बेटी हो।
नीलो सो घुड़ला बगल बंधो हे, ओई चढ़ मैके चली जैहों।
हिलमिल पनियां चलिये हो।
दादा मारें भाई मारे तौ, मामा जू कैं भग जैहों
मामा लय दैहें सुरग चुनरिया, माई लय दैहें झुमकैया हो
हिलमिल पनियां चलिये हो।

हे देवरानी जी! हे जिठानी जी! हम तुम सभी मिलकर कुएँ पर पानी भरने चलें। इस पार के कुएँ का पानी तुम दोनों भर लाना और उस पार के कुएँ का पानी मैं भर लाऊँगी। उस पार के कुएँ में एक बूँद भी पानी नहीं है और इस पार का कुआँ पानी से लबालब भरा है कि उसमें डुबकी ली जा सकती है। मेरी गगरी न फूट जाये। बड़ी सावधानी के साथ मैं अपने माथे की बिंदिया चमकाती हुई पनघट पर गई और पानी भरकर घर आई। विलम्ब हो जाने पर मेरे ससुर मुझे गालियाँ देने लगे। ससुरजी का यह दुर्व्यवहार मुझे अच्छा नहीं लगा। मैंने तुरन्त जवाब दे दिया, तुम्हारी निचली गाली तुम्हें ही लगे। मैं तो ऊँचे बड़े परिवार की बेटी हूँ। मेरे मैके वालों ने नीला घोड़ा दिया है जो सार में बँधा है। मैं उसपर बैठकर अपने मैके चली जाऊँगी। मेरी इस उदण्डता पर यदि मेरा दादा या मेरा भाई मुझे पीटेगा, तो मैं अपने मामा जी के यहाँ चली जाऊँगी। मेरा मामा मुझे सितारों जड़ी चुनरी-लहँगा देगा और मेरी माई (मामी) मुझे सोने की झुमकिया देंगी।

पासनी

मामा के घर में भूखे नें रैयो।
जो चाहौ मन की खैयो॥
मामा की तलैया में धान उगत है
चांवल की बनी खीर खैयो।

मामा के घर में भूखे नें रैयो॥
मामा के खेतों में गेहूँ पजत है
हलुआ बना कें खूब खैयो।
मामा के घर में भूखे नें रैयो॥
मामा के कछुआ रें चना फरत हैं
मगद के लडुआ बनवैयो।
मामा के घर में भूखे नें रैयो॥
मामा की सारे भैसें उर गैंया
गडुआ भर दूध पी लैयो।
मामा के घर में भूखे नें रैयो॥

प्यारे भतीजे! अपने मामा के घर भूखे मत रहना, जो चाहो उसे भर पेट खाना। तुम्हारे मामा की तलैया में धान उगती है, तुम चावल की बनी हुई खीर खाना। तुम्हारे मामाजी के खेतों में गेहूँ पैदा होता है, तुम उसे पिसवाकर उसका हलुआ बनाकर खाना। मामाजी के बगीचे में चना पैदा होता है, तुम उसे पिसवाकर मगद के लड्डू बनवाकर खाना। मामा की गोशाला में गायें और भैंसें हैं, लोटा भर-भरकर खूब दूध पीना, किन्तु भूखे मत रहना।

पासनी

मामी तुमारी हँसकैं उठाहे
पकर नुगरिया चलाहें।
मामा जू दैहें चाँदी के बर्तन
माथे पे चन्दन लगाहें।
मामा जू दैहें कुरता पजामा
सिर पे टुपिया धराहें।
मामी पैराहें पैरों में पनईयां
खिलोना ले दैकें खिलाहें।
नानी तुमारी चूमें गालों खों
सोने कौ चूरा पहिराहें।
नानी जू आंगन में चौक पुराहें
पटा पे तुम खों बिठाहें।
मामा जू फूलों की माला पहिरा के
घी अुर बताशा खुआहें।
कैंया ले सखियां तुमसे बतियाहें
गा-गा कें सोहर सुनाहें।

तुम्हारी मामी तुम्हें हँसकर उठायेगी और अँगुली पकड़कर चलायेगी। मामाजी तुम्हें चाँदी के बर्तन देंगे और माथे पर चन्दन लगायेंगे। वे नया कुर्ता-पजामा पहिनाकर तुम्हारे सिर पर टोपी रखेंगे। मामी पैरों में जूतियाँ पहिनाकर तुम्हें खेलने को सुन्दर खिलौने देंगी। नानी तुम्हारी प्यार से गाल चूमेंगी और हाथों में सोने के चूरा पहिनायेंगी। नानी जी आँगन में चौक पूरकर तुम्हें पटा पर बिठायेंगी। फिर मामा जी तुम्हें फूलों की माला पहिनाकर घी के साथ बताशा खिलायेंगे। तुम्हें हाथों में लेकर उपस्थित सभी सखियाँ तुमसे मीठी-मीठी बातें करेंगी और सोहर गीत गा-गाकर तुम्हें सुनायेंगी।

पासनी

खालो दूध बताशा खीर, तुमारी मैया कटोरा भर ल्याई।
सोने के कटोरा में चांदी सो चांवल
चंदा सो गोरो दूध घोर ल्याई।
तुमारी मैया कटोरा भर ल्याई॥
कंचन झाड़ी गंगा जल पानी
रूपा की थारी, नानी रसगुल्ला ल्याई।
तुमारी मैया कटोरा भर ल्याई॥
चंदा से मामा चंदनिया सी मामी
भर-भर कै दोना जलेबी ले आई।
तुमारी मैया कटोरा भर ल्याई॥
दादी है मीठी नुनखरी जिठानी
देवरानी ननद मिल दिखावें मिठाई।
तुमारी मैया कटोरा भर ल्याई॥

हे कन्हैया! तुम्हारी मैया दूध बताशा और खीर से भरा कटोरा लाई हैं। तुम उसे खा लो। सोने के कटोरे में चाँदी जैसे सफेद चावल और चन्द्रमा जैसा गोरा दूध तुम्हें लाई हैं। तुम्हारी नानी भी सोने के लोटे में गंगा जल और चाँदी की थाली में रसगुल्ला भर लाई हैं। तुम्हारे चंदा जैसे मामा और चाँदनी जैसी गोरी मामी भी तुम्हें दोना भर-भर कर जलेबी लाई हैं। तुम्हारी दादी जी शक्कर जैसी मीठी और काकी बहुत ही नमकीन मिजाज की हैं। तुम्हारी छोटी काकी और फुआ दोनों मिलकर तुम्हें प्रसन्न करने के लिये बार-बार मिठाईयाँ दिखाती हैं।

मुण्डन

झालरे जबहिं मुड़ाय हों, जब आजुल घर होंय
चुका दैहे वे सबरे दस्तूर, झालर मोरी पाहुँनी।
झालर जौ कौ खेत है, झालर मोरी पाहुँनी।

ये झालर के कारनें, सहे हैं कष्ट अनेक
ये झालर के कारनें, तजे हैं अम्मा इमलिया-बेर।
ये झालर के कारनें, मैनें सहे हैं बोल-कुबोल
झालर मोरी पाहुँनी।

मेरे प्यारे बच्चे के सिर पर बैठी प्यारी पाहुँनी झालर, मैं तुझे तब ही मुड़वाऊँगी, जब मेरे आजुल (अजा) घर में होंगे। वे ही सभी प्रकार के नेग-दस्तूर चुकाना जानते हैं। जौ (जवा) के खेत सी लहराती पाहुँनी झालर तेरे कारण मैंने अनेक दुख तकलीफें सही हैं। तेरे ही कारण मैंने आम-इमली-बेर खटाई खाना छोड़ दिया था ताकि मेरा बच्चा स्वस्थ रहे। तेरे ही कारण मैंने सभी प्रकार के व्यंग्य सहे हैं।

कर्णछेदन

रूई फोहा से कान लला के।
मखमल से हाथ लगैंयो।
छिदना हौले-हौले करियो, तनकई ने लला रूलैंयो।
मखमल से हाथ लगैयो॥
सोने की सूजी अतर में डूबी, खुशबू सुंघा बहलैयो।
मखमल से हाथ लगैंयो॥
सूजें नें दूखें कान लला के, पाँच रूपैया लय लैंयो।
मखमल से हाथ लगैंयो॥
रोग दोख नें होय लला खों, तुम ऐसी फूक लगैंयो।
मखमल से हाथ लगैंयो॥
राम-किसन ने पहिरे कुंडल, ई खों सोई पहिरन दैंयो।
मखमल से हाथ लगैंयो॥

हे कान छेदने वाले भाई! मेरे बेटे के कान रुई की तरह कोमल हैं। तुम अपने मखमल जैसे हाथों से कान छेदना। कानों में छेद आहिस्ते-आहिस्ते करना। मेरा लाल तनिक भी न रोये। तुम सोने की सुई इत्र में डुबो लेना, ताकि उसकी सुगन्ध से मेरे लाल का मन बहलता रहे। मेरे लाल के कान दुखें नहीं और न ही उसमें सूजन आये। मैं तुम्हें पाँच रुपये दूँगी। तुम अपने मुँह से ऐसी फूँक चलाना कि जिससे उसे कोई रोग दोष न हो सके। भगवान राम और कृष्ण ने कानों में सुन्दर कुंडल पहिने थे, उसी तरह मेरे लाल को भी कानों में कुंडल पहिनने देना।

जनेऊ

तीन तगा कौ डोरा री , दमरी कौ सूत ऐ भैया।
तीन तगा कौ जनवा री, कैसो हे मजबूत ऐ भैया।

पहले तगा में विश्वेश्वर जू, दूजे में देव अगन भैया।
तीजे सूत में पितर बिराजै, जे खों पहिरो ऐ भैया।
पहले तगा में भोलेनाथ जू, दूजे में ब्रह्मा देव भैया।
तीजे सूत में सूर्य देव जू, जीवन जगमग होय भैया।
पहले तगा में धरम बिराजै, दूजे सूत ईमान भैया।
तीजे सूत में करम हँसे अुर, जय जय सबकी होय भैया।

यह तीन लड़ी का धागा जिसको जनेऊ कहते हैं। बहुत ही शक्तिशाली है, जिसके पहले धागे में विश्वेश्वर, दूसरे धागे में अग्निदेव और तीसरे धागे में पितरों (पुरखों) का निवास है। ऐ भाई! ऐसे शक्तिशाली जनेऊ को पहनो।

जिसके पहले धागे में भगवान शंकर, दूसरे धागे में ब्रह्मा और तीसरे धागे में सूर्य देव का निवास है। ऐसे तीन धागों से बना जनेऊ पहिनने से यह जीवन जगमगा उठता है। जिसके पहले धागे में धर्म, दूसरे धागे में ईमान और तीसरे धागे में मुस्कराते हुए कर्म का वास है। ऐसे शक्तिशाली तीन धागों का जनेऊ पहनने से मनुष्य की हर जगह विजय होती है।

जनेऊ

हरदी रंग के तीन तगा।
एक में ब्रह्मा, एक में विष्णु
एक शंकर रहें -सदा।
हरदी रंग के तीन तगा॥
पंडित जी ने करम-धरम की
तुरत खड़ाऊ दईं मंगा।
हरदी रंग के तीन तगा॥
गायत्री की फूंक मार के
कानों में दओ मंत्र जगा।
हरदी रंग के तीन तगा॥
भिक्षा मांग लिआओ राजा
सूदी रास्ता दई बता।
हरदी रंग के तीन तगा॥
बेन-भुजाई पकरें बहियां
कहूँ नें जइयो नेह लगा।
हरदी रंग के तीन तगा॥

हल्दी से रंगे जनेऊ में तीन धागे (लरें) होते हैं जो यज्ञोपवीत संस्कार के समय लड़के को

पहिनाये जाते हैं। एक धागे में ब्रह्मा, दूसरे धागे में विष्णु और तीसरे धागे में शंकर भगवान का निवास है। पंडित ने कर्म-धर्म निभाने के लिये सबसे पहिले खड़ाऊँ बुलवा दीं। उन्होंने लड़के के कानों में गायत्री मंत्र फूँककर उसका अर्थ बताया और फिर लड़के को वैरागी हो जाने के लिये भिक्षा मांग लाने की राह दिखाई। उस समय बहिनें-भाभियाँ मिलकर उसे मनाकर लौटाती हैं और वैरागी न होने के लिए आग्रह कर रोकती हैं, और कहती हैं- हम सभी से मोह प्रेम लगाकर कहीं मत जाओ।

जनेऊ

कहांना में बरूआ चले, ठांड़े कहांना दोर।
काशी सें बरूआ चलो, ठांड़ो आजुल दरबार।
भीखें दे आजी भीखें दे, तोरो बरूआ उपासो है।
भीखें दे आजी भीखें दे, तोरो बरूआ रिसानो है।
अयोध्या सें बरूआ चलो, ठांड़ो भैया के दुआर।
भौजी भीखें दे- भीखें दे, तोरो बरूआ प्यासो है।
मथुरा सें बरूआ चलो, ठांड़ो मामा के दुआर।
माई भीखें दे- भीखें दे, तोरो बरूआ हारो थको है।
वृन्दावन सें बरूआ चलो, ठांड़ो जीजा के दुआर।
बहिना भीखें दे- भीखें दे, मोंय अपनो घर प्यारौ है।

कहाँ से यह जनेऊधारी चला है? किसके दरवाजे पर खड़ा है? शायद काशी से जनेऊधारी चला है और आजुल के दरवाजे पर खड़ा है। वह भिक्षा माँग रहा है- हे दादी! मुझे भिक्षा दो। मैंने उपवास रखा है। हे दादी! भिक्षा के लिये तेरा जनेऊधारी रूठ गया है। अयोध्या से बरूआ चला है। भाई के दरवाजे पर खड़ा है। भौजी भीखें दे। तेरा बरूआ बहुत प्यासा है। मथुरा से बरूआ चला है। मामा के दरवाजे पर खड़ा है। मामी भीखें दे। तेरा बरूआ थका-हारा है।

वृन्दावन से बरूआ चला है। जीजा के दरवाजे पर खड़ा है। हे बहिन! मुझे भीखें दो। मैं शीघ्र घर लौट जाना चाहता हूँ। मुझे संन्यास पसंद नहीं, मुझे तो अपना घर प्यारा है।

लगुन

आज मोरे राम जू खों लगुन चढ़त है
लगुन चढ़त है- आनंद बढ़त है।
कानन कुन्डल मोरे राम जू खों सोहे
सो गालन बिच मुतियन लर सरकत है।
आज मोरे राम जू खों लगुन चढ़त है॥

केशर खौर मोरे राम जू खों सोहे
सो गर बिच–गोप–जंजीर लसत है।
आज मोरे राम जू खों लगुन चढ़त है॥
कंचन चूरा मोरे राम जू खों सोहे
सो हाथन बिच–गजरा सोहत है।
आज मोरे राम जू खों लगुन चढ़त है॥
मिलमिल बागो मोरो राम जू खों सोहे
सो दरशन खों मोरो जिया ललचत है।
आज मोरे राम जू खों लगुन चढ़त है॥

आज मेरे राम जैसे दूल्हा की लगुन चढ़ रही है, जिसकी खुशियाँ मनाई जा रही हैं। मेरे राम के कानों में कुन्डल शोभायमान हो रहे हैं। उनमें लटकती मोतियों की लड़ी उनके गालों पर बार–बार फिसल रही हैं।

रामजी के माथे–भौहों के ऊपर केशर की सुनहरी टिपकियाँ शोभायमान हैं और गले के मध्य सोने की गोप और जंजीर दमक रही है। उनके हाथों में सोने का चूरा और हाथों के मध्य सोने का गजरा दर्शनीय है। उनके शरीर पर चमकता हुआ ब्याह का बागा बहुत ही आकर्षक है। ऐसे सजे–संवरे राम जैसे दूल्हा को देखने के लिये मेरा जी ललचाता है।

हरदौल सुमरनी

हरदौल लला
मोरी कही मान लियो हो
हरदौल लला।
कहूँ भूला परे कहूँ चूका परे
तो संभार लिये हो
हरदौल लला।
माथे कौ सैरो हरदौल जू खों सोहे
सो कलियन की लटकन, संभार लियो हो
हरदौल लला।
कानों में कुन्डल हरदौल जू खों सोहे
सो झुमको की लटकन, संभार लियो हो
हरदौल लला।

हे हरदौल लाला! तुम मेरी प्रार्थना सुन लेना, मैं जो कहूँ उसे मान लेना। यदि कहीं भूल चूक हो जाय तो उसे आप ही संभाल लेना। जैसे तुम्हारे माथे पर बँधा सेहरा शोभायमान है वैसे

ही इधर सेहरा की लटकती लटकनों को आप संभाल लेना। जैसे तुम्हारे कानों में कुण्डल शोभायमान है वैसे ही इधर उसकी झुमकियों की लटकनों को आप संभाल लेना अर्थात् मेरी सभी ओर से रक्षा करना।

मटयावनो

गुमान बब्बा- मोरी जा पत राखो।
हरदौल लला मोरी जा पत राखो॥
मोरी पत राखो मोरी रैयत की राखो
बस्ती पे डार दियो जयमाला
सब देवी देवताओं खों नरियल सुपारी
हरदौल बब्बा खों कोरे बरा। मोरी पत राखो ....
शंकर बब्बा खों जनेऊ चन्दन
गनेश बब्बा खों कोरे बरा
सरग नसेनी सें उतर आओ देवा
कुलदेव बब्बा खों कोरे बरा। मोरी पत राखो ....
बिच्छू-ततैयों खों गुर अुर शक्कर
आंधी बेहर खों कोरे बरा
धरती देवा खों दूध मलीदा
सूरज अुर चन्दा खों कोरे बरा। मोरी पत राखो ....
रिद्दी-सिद्दी खों फूलों की माला
हनुमान बब्बा खों कोरे बरा
भूले बिसरे खों घी अुर बतेशा
शारदा मैया खों कोरे बरा। मोरी पत राखो ....

हे गुमान बाबा! हे हरदौल लाला! मेरी इज्जत बनाये रखना। मेरी और मेरे कुटम्ब परिवार की शान-आन बढ़ाकर इस गाँव, नगर, पड़ोस में मेरी सफलता के गले में विजय माला डाल देना। हे देवी-देवताओं! मेरी ओर से भेंट स्वरूप नारियल सुपारी स्वीकार करो। हे हरदौल लाला! मैं आपको अपने खानदान से श्रद्धा स्वरूप कोरा बरा (पकवान) भेंट कर रहा हूँ। आप उसे सहर्ष स्वीकार करें। हे भगवान शंकर! यह लो आपका मन पसन्द चंदन जनेऊ। हे गणेश बाबा! आप स्वीकार करो, शुद्ध तिली के तेल में उबला हुआ कोरा बरा।

हे कुल देवता! सभी देवताओं! तुम स्वर्ग की नसेनी से नीचे उतर कर आओ। मैं तुम्हें कोरा बरा का भोग लगा रहा हूँ। बिच्छू ततैयों को गुड़, शक्कर और आँधी तूफान मौसम को कोरा बरा रख रहा हूँ। धरती के देवताओं को दूध, मलीदा और सूरज चन्द्रमा को कोरा बरा चढ़ा रहा हूँ। रिद्धि-सिद्धि को फूलों की माला और हनुमान बाबा को कोरा बरा चढ़ा रहा हूँ। हाथ जोड़

शीश नवा भूले बिसरे देवताओं को बताशा रख रहा हूँ। शारदा मैया को कोरा बरा चढ़ा रहा हूँ। चारों ओर से आप सभी मिलकर मेरी रक्षा करना। मेरी बिगड़ी को बना देना।

तेल चढ़ाई

कौंना ने तेलो चढ़ाव, कौ लाये बैंह दुलिया।
बहनी नें तेल चढ़ाव, जीजा लाये बैंह दुलिया।
कौ ल्याओ तेल फुलेल, छुटक रहीं पांखुरियां।
तेलन ल्याई तेल फुलेल, मालिन ल्याई पांखुरियां।
भौजी नें तेल चढ़ाव, वीरन लाये बैंह दुलिया।
चढ़ गओ तेल फुलेल, छुटक रहीं पांखुरियां।

बेटी के पाँवों में घुटनों-कंधों और माथे पर किसने गीत गाकर तेल चढ़ाया है। बहिन ने तेल चढ़ाया है और जीजा ने बेटी की ओली में सोने की बिंदिया डाली है।

कौन यह तेल फुलेल लाया है? जिससे बेटी का मन प्रसन्न हो फूलों की पँखुड़ियों की तरह खिल उठा है। यह तेल फुलेल गाँव की तेलन लाई है और गाँव की मालिन फूलों की महकती पँखुड़ियाँ लाई हैं। भाभी ने तेल चढ़ाया है और भाई ओली में डालने सोने की बिंदिया लाया है। थोड़ी ही देर में बेटी को तेल फुलेल चढ़ गया। बेटी फूल पँखुड़ी की तरह खिल उठी।

हल्दी तेल चढ़ाना

हरदी कहे- मैं पियरी- सुनहरी
मौं बिन काजौ नें होय।
तिलनियाँ ल्याई तेल फुलेल
बनिनियाँ ल्याई हरदी
मौं बिन काजौ नें होय।
लाड़ी की बहिनियां चढ़ाये तेल फुलेल
बाबुल गए बजारे हरदी लिआये
मौं बिन काजौ नें होय।
मामा गए बजारे सें ल्याये
पीरो चीर रंग प्यारो हरदिया
मौं बिन काजौ नें होय।
बगिया सें मालिन लाई हार
हजारी गेंदा फूलन के
मौं बिन काजौ नें होय।

चढ़ गई हरदी-तेल छुटक रही बैहिनियां
बुआ जू हरदी चढ़ाय छुटक रहीं भौजनियां
भौजी ने तेल चढ़ाव छुटक रही नानदिया
सखियों ने हँस-हँस कर दये सिंगार
पहिराये बासन्ती फूलों के हार
मौं बिन काजौं नें होय।

हल्दी कहती है- मैं पीली सुनहरी सोने रंग की हूँ। मेरे बिना कोई भी मंगल कार्य नहीं हो सकते हैं। तेल बेचने वाली अपने घर से तेल ले आई और हल्दी बेचने वाली अपनी दुकान से हल्दी ले आई। बन्नी की बहिनें तेल चढ़ाती हैं। बाबुल बाजार से हल्दी लाते हैं और मामा बाजार से हल्दी रंग की धोती-कपड़ा लाते हैं। अपनी बगिया से मालिन हल्दी के रंग के हजारी गेंदा के पीले फूलों की मालायें गूँथकर लाती है।

तेल और हल्दी चढ़ाई गई। बन्नी की बहिनें बधाई नाचने लगीं। जब बुआ ने हल्दी चढ़ाई तब भाभी खूब नाची और जब भौजी ने तेल चढ़ाया तब ननदी खूब नाची। सखियों ने हँस-हँस कर बासन्ती रंग के खिले हुए हजार दलों वाले गेंदा के फूलों के हार से बन्नी का शृँगार किया।

हल्दी तेल चढ़ाना

सो आज मोरे राम जी खों तेल चढ़त है
तेल चढ़त है - फुलेल चढ़त है
सोने के कटोरा में तेल भरायौ
सो हरदी मिलाकैं कैसे झलकत है
सो आज मोरे राम जू खों तेल चढ़त है।
क्वांरिन नें मिल तेल चढ़ायो
सो नारिन मंगल गीत मढ़त है
सो आज मोरे राम जी खों तेल चढ़त है।

आज मेरे राम जी को तेल चढ़ रहा है उन्हें गुदगुदाता सा कपास की फुईयों से तेल चढ़ाया जा रहा है। सोने के कटोरा में तेल भरा है, उसमें हल्दी मिला दी गई है। वह हल्दिया तेल झलकता हुआ सभी को बहुत अच्छा दिख रहा है। क्वाँरी लड़कियों ने मिलकर तेल चढ़ाया है स्त्रियों ने मंगल मधुर गीत गाये हैं।

चीकट

उठब नें हो मोरी सांवल गोरी
तुम घर बीध उलायतीं

जा बीध रे साईं हमें नें सुहाये
हमारे बीरन परदेश में
तुमारे बीरन खों पतियां पठाहौं
गोरी धन बीर बुलाइयो
चिठियन साईं बोरो नंईं आवै
संदेशे भौजी कैसे आइहैं।
उठै नें मोरे बेटा अमुक राये
जाओ लला ममयाऊरें
मामुल खों बेटा नेंवतो दियो
मामी लुवाय घर आइयो।

आधी रात को पति अपनी पत्नी को जगाकर कहता है– मेरी साँवली–सलौनी प्रियतमा! उठो, तुम्हारे घर विवाह नजदीक आ गया है। अब सोने का समय नहीं है। पत्नी कहती है– यह विवाह हमें अच्छा नहीं लग रहा है। क्योंकि मेरा भाई परदेश गया है। पति उत्तर देता है– मैं तुम्हारे भाई को चिट्ठी पाती भेजकर बुलवाऊँगा। स्त्री कहती है– निमंत्रण पाकर वे कैसे आयेंगे? सिर्फ संदेशा भेज देने से क्या मेरी भौजाई आ जायेगी – कभी नहीं? यह सुन उसका पति अपने पुत्र को बुलाता है और उससे कहता है– बेटा! तुम आज ही अपने मामा के घर जाओ और मामा को निमंत्रण देकर अपनी मामी को अपने साथ लेकर आओ।

चीकट

चलो देवरनियां चलो जिठनियां
राजा बीरन खों आगो दे लिआइयो
भैया बहिन बैठ दोई मतो करत हैं
कौन खों का पहिराइये।
सास ननद खों छींट–छिमरिया
देवरानी–जिठानी खों चूरी
हमखों बीरन मोरे जेवर गढ़ैयो
पाट बरैयो बहनेऊ खों पचरंग पगड़ी।
जेखों बहन मोरी इतनौ नें पूजै
वो कैसे बहन घर आइयो
जेखों बीरन मोरे इतनौ नें पूजै
तो पीरो खदा ले आइयो
जोरा बीरन तुमें इतनोई नें पूजै
तो रीते भले सब आइयो।

अपनी देवरानी-जिठानी को साथ लेकर बहिन अपने भाई को आदरपूर्वक घर ले आती है और विचार-विमर्श करती है कि किसको पहिनने के लिये क्या-क्या लाया जाये?

बहिन कहती है- सास ननद के लिये छींट के लहँगे, देवरानी-जिठानी के लिये चूरी, मेरे लिये पाट से बरा हुआ सोने का हार और बहनोई के लिये पचरंग पाग ले आना। तब भाई कहता है- हे बहिन! जिसको इतना देने की शक्ति न हो तो वह अपनी बहन के घर कैसे आयेगा?

बहिन कहती है- भाई की यदि इतनी गुंजाइश (हस्ती) न हो तो वह सस्ता सा पीले रंग का खादी का कपड़ा ही लेता आये और यदि वह भी न हो तो मन में प्रेम-मोह लिये रीता ही आये, किन्तु आये अवश्य।

बारात आगमन

ऊँचौ सो चौंरा रैया मांझ-मझोटें ईंगुर ढोरे हैं बान
जे चढ़ देखे लड़गहरी के बाबुल मोरे केतक आवें बरात
इक लख हतिया सवा लख घोड़े, पैदल कौ आर ने पार
इतनौ जो देखो राजा बाबुल डराने अब मोरी घिया रही कुंवारी
काहें खों बाबुल थर-थर कांपो, काय खों जहर विष खाव
अपने ससुर सें विनती कर हों-आधे सें दई हों भगाय
उजरे हो उजरे रैया लोग बराती मैले से देखन हार
देखन हारे पलट घर जैहें-रैहें वे छैला बरात।
कहाँ बसाऊँ अराती-बराती कहना तो घुड़ला पचास
कहाँ बसाहों बाबुल गरय से साजन कहना दुलहा दामाद
बागों बसाहों अराती-बराती मेखों से घुड़ला पचास
जनवासे बसाहों मोरे गरय से समधी मंड़वा में दुलहा दामाद
कहा दे समझाहौं अराती-बराती काहो दे घुड़ला पचास
कहा दे समझाहौं गरय से साजन काहो दे दुलहा दामाद
भात दे समझाहौं अराती-बराती दानों दे घुड़ला पचास
दायज दै समझाहौं गरय से साजन दुल्ही से दुल्हा दामाद।
अचहड़ दैहों पचहड़ दैहों-दैहों बच्छा तरें गाय
एक नें दैहों अपनी धिया री लड़न दे माई की परम अधार
अचहड़ छोड़े पचहड़ छोड़े छोड़ी बच्छा तरें गाय
एक नें छोड़ो अपनी बहुआ लड़नदे, जिनबिन सूनी बरात।

दरवाजे के मैदान के मध्य एक ऊँचा लाल रंग का चबूतरा है। लड़की का पिता उस चबूतरे पर चढ़कर देखता है कि मेरे यहाँ कितनी बारात आने वाली है। एक लाख हाथी, सवा

लाख घोड़े, पैदल मनुष्यों का तो ओर छोर ही न था। यह देखकर वह घबरा जाता है और सोचने लगता है- क्या मेरी बेटी कुँवारी ही रह जायेगी। वह काँपने लगता है और प्राण देने के लिये तैयार हो जाता है।

इतने में पिता के पास वह लड़की पहुँचती है। वह पिता को धैर्य बँधाकर कहती है- आप डर के मारे थर-थर क्यों काँप रहे हैं और जहर खाकर मर जाने का विचार क्यों कर रहे हैं? मैं अपने ससुर जी से विनती कर आधी बारात वापस करा दूँगी। जो तुम इतनी बड़ी बारात देख रहे हो वह उतनी नहीं है। इसमें गाँव के दर्शक अधिक हैं, जो लोग साफ-सुथरे, सजे-धजे, उजले कपड़े पहने हुए हैं, वे बाराती हैं। जो मैले वस्त्र पहने साधारण वेशभूषा में अस्त-व्यस्त हैं, वे अपने ही गाँव के लोग हैं। जो बारात लगने पर अपने घर चले जायेंगे और छैला बाराती ही रह जायेंगे। बेटी की बात सुनकर पिता के मन में धैर्य उत्पन्न हो जाता है।

अब कुछ बाराती और पचास घोड़े रह जाते हैं। उन्हें ठहराने की विधि सोची जाती है। बागों में अराती-बाराती, घुड़साल में घोड़े और समधी दूल्हा-दामाद जनवासे में ठहराये जायें। फिर सोचा गया किसको क्या देना उचित होगा? बारातियों को भात, घोड़ों को दाना, समधी को दायजा और दुल्हा-दामाद को दुल्हन देकर प्रसन्न किया जाये। लड़की की माँ कहती है- मैं पीतल के बड़े-बड़े हंडे दूँगी। बछड़ा तरे गाय दूँगी। किन्तु मैं अपनी प्राणों की आधार अपनी बेटी को नहीं भेज सकूँगी। समधी उत्तर देता है- मुझे अचहड़-पचहड़ और बछड़ा सहित गाय नहीं चाहिये। मैं सब कुछ छोड़ने को तैयार हूँ, किन्तु अपनी बहू को यहाँ छोड़कर नहीं जा सकता। क्योंकि उसके बिना सारी बारात सूनी रह जायेगी।

ऊबनी

कँहना के भले मालिया - जिन बाग लगाये
कँहना की बेटी कोकिला-फुल बीनन आई
कँहना के भले कोटिया - जिन कोट उठाये
कँहना के बड़े तापसी - चढ़ ब्याहन आये।
सागर के बड़े कोटिया - जिन कोट उठाये
देवरी के बड़े तापसी - चढ़ ब्याहन आये
कोट नवै - परवत नवै सिर नवै नईं कोई
बाबुल जू के माथे जब नवै जब साजन आवें।

वह कहाँ का माली है? जिसने यह सुन्दर बाग लगाया है। यह कोकिला के समान मधुर वाणी बोलने वाली किसकी लड़की है, जो बाग में फूल चुनने आई है? यह कौन बड़ा आदमी है? जिसने यह स्वागत गढ़ तैयार किया है और वह ऐसा कौन सा भाग्यवान तपस्वी है जो इस गढ़ पर चढ़कर ब्याहने आया है? सागर शहर के धनी-मानी ने यह सुन्दर बाग लगाया है। उसने

ही यह सब स्वागत की तैयारियाँ की है और यह देवरी ग्राम के शाह सेठ बड़े धनी तपस्वी हैं। वे ब्याह करने आये हैं। कोट किले झुक जाते हैं। पर्वत भी झुक जाते हैं। किन्तु मनुष्य अपना मस्तक नहीं झुकाता। उसका सिर उसी समय झुकता है जब उसके दरवाजे पर उसका समधी-दामाद आता है।

ऊबनी

चंदन की झंझ ओबरी मोतिन जड़ी है किंवारी
जँहना बाबुल उनके पौढ़ियों माई ढोरें बिजनियां
झमक अटारी बेटी चढ़ गई बाबुल सो गअे कै जागे
नें हम सोवें, नें जागें बेटी-संसे -तुमारे
संसे बाबुल मोरे जिन करो उठ पौठे संजाओ
अपनी लड़नदे के कारने उठ शीश नवाओ
इन्ती-विनती हम कैसें करें मोरे दोई कुल ऊँचे
इन्ती-विनती वे करें-जिनके दोई कुल नीचे।

दूल्हा दरवाजे पर खड़ा है। बाराती टीका की राह देख रहे हैं। लड़की का पिता बारात की विशालता देख घबड़ा रहा है। वह चन्दन की झँझरी और मोतियों जड़ी किवड़ियों से सुशोभित शयन कक्ष में जाकर लेट जाता है। लड़की की माता उसे पंखा झलने लगती है। लड़की छमक कर अटारी पर पहुँच जाती है और कहती है- पिताजी! सोते या जागते हो ? पिता उत्तर देता है- बेटी! न मैं सोता हूँ, न जागता हूँ। तुम्हारी चिन्ता में डूबा हूँ। बेटी कहती है- पिताजी! मेरी चिन्ता छोड़ो और उठकर शीघ्र ही टीका की सामग्री सजाओ। अपनी प्यारी पुत्री के कारण उठ कर समधी जी के सम्मुख सिर झुकाओ। पिता कहता है- मैं कैसे सिर झुकाऊँ ? मेरे तो दोनों कुल ऊँचे हैं। सिर तो वे झुकाते हैं- जिनके दोनों कुल नीचे होते हैं।

ऊबनी

एक समय मुनि जा कैं कहें, मोरे रंजन भौंरा!
चलिये जनकपुर गांव मंडप, सिया के रंजन भौंरा।
काहे के मंडप बनें, मोरे रंजन भौंरा।
काहे के दोऊ खम्ब जनक मंडप तरें
मोरे रंजन भौंरा।
हरे बांस मंडप बने मोरे रंजन भौंरा
मलयागिर के खम्ब मोरे रंजन भौंरा
सोहत सीता राम जनक मंडप तरें
मोरे रंजन भौंरा।

कारी घटा-सिया-राम जू दामिनी
मोरे रंजन भौंरा
देख राम के रूप थकित भये, भूप मंगन भईं भामिनी
मोरे रंजन भौंरा।

एक समय मुनि ने कहा- मेरे मन को मोहने वाले, मन रंजन श्री राम! सिया जी के रंजन भौंरा! आप जनकपुर के मंडप में चलिये। वहाँ किस प्रकार का मंडप बना होगा? और उसमें किस प्रकार के खम्बे लगे होंगे? हरे-हरे बाँस-पत्तों का मंडप बना है, उसमें मलयागिर चन्दन के खम्बे लगे हैं। उसके नीचे जनक जी के साथ सीता-राम की सुन्दर जोड़ी शोभायमान हो रही है। जहाँ श्री राम जी श्यामल छटा से और सीता जी दामिनी जैसी दमक रही हैं। श्रीराम का सौन्दर्य देख सभी राजा-महाराजा टकटकी लगा देखते ही रह गये। सिया की माता ऐसा भव्य वातावरण देखकर अति प्रसन्न हुई।

ऊबनी

अवधपुरी सें बारात चली राम की
जनकपुर में सिया जानकी।
मिथलापुर में जा रघुराई, धनुआं टोरौ पाती आई।
दशरथ जू खों जनक पठाई।
दूत आयो है खबर लएँ बारात की।
जनकपुर में सिया जानकी॥
बांची जनकपुरी की पाती, फूली दशरथ जू की छाती
सजधज कर आवे बाराती।
खबर घर-घर में होने लगी ब्याह की,
जनकपुर में सिया जानकी॥
छाई खुशी अवधपुर भारी, घर-घर होन लगी तैयारी।
हाथी-घोड़न पे असवारी।
कोनों-कोनों सजन लगी पालकी।
जनकपुर में सिया जानकी॥
मिथलापुर खों भई अवाई, बाजें ढोल और शहनाई।
सुनवे नगर निवासी आई।
आतिसबाजी लै त्यारी द्वारचार की।
जनकपुर में सिया जानकी॥

अयोध्या से जनकपुर बारात चली, जहाँ सीता जी हैं। श्रीराम ने जनकपुर के स्वयंवर में भाग लेकर शिव का धनुष तोड़कर सीताजी को वरण किया है। जनकजी ने दूत द्वारा दशरथजी

को पाती लिखकर भेजी कि आप श्रीरामजी की शानदार बारात लेकर आयें।

दशरथजी पाती पढ़कर अत्यंत प्रसन्न हुए। नगर में घर-घर ब्याह की चर्चा होने लगी। अयोध्या में खुशहाली दौड़ने लगी। घर-घर तैयारियाँ होने लगीं। हाथियों-घोड़ों के सवार अपने वाहनों सहित सजने लगे। हर तरफ पालकियाँ सजने सँवरने लगीं। ढोल शहनाई बाजे बजते हुए जनकपुर बारात पहुँची। जिसे देखने नगर निवासी एकत्रित हो गये। आतिशबाजी के बीच द्वारचार के लिये बारातियों के स्वागत सत्कार की तैयारियाँ होने लगीं।

ऊबनी

आनंद बरनत न बनें देखो आज कें
मुकुट बंधी सिर पे श्रीराम कें।
जिनकी कौशल्या महतारी बन गअे दूल्हा अवध बिहारी।
ब्याहन चल दये जनक दुलारी।
जाकें पहुँचे हैं घरे जनक राज कें।
मुकुट बंधी सिर पे श्रीराम कें।
दूल्हा की है छवि न्यारी, दुल्हन चंदा सी उजयारी।
जाऊँ सूरत पे बलिहारी।
चमक चेहरा की रहें सब निहार कें।
मुकुट बंधी सिर पे श्रीराम कें।
डूढ़ा बैल पे त्रिपुरारी, कौनों-कौनों गरूड़ सवारी।
पैदल-पलटन फौजें भारी।
कोटन देवता लों संग में बारात कें।
मुकुट बंधी सिर पे श्रीराम कें।
ब्याहे जावें चारों भ्राता, जो हैं तीन लोक के दाता।
धन्य-धन्य पिता अुर माता।
सगर जन्में जे पूत कहाँ जाय कें।
मुकुट बंधी सिर पे श्रीराम कें।
सखियां बता रही हैं-मन में, राजा दशरथ के घर जनमे।
जिनके लिखे हते करमन में।
लएँ जाते हैं- घरे सीता ब्याह कें।
मुकुट बंधी सिर पे श्रीराम कें।
हो गओ ब्याह चाप आधीना, खटरस भोजन खाना-पीना।
राजा जनक बिदा कर दीना।
बात रहती न तोरे बिना चांप कें।

मुकुट बंधी सिर पे श्रीराम कें।
धनुष टोरौ राम बिहारी/जब तो ब्याही जनक दुलारी।
नातर सीता रहती क्वांरी।
भरे रहे कई भूप अरमान कें।
मुकुट बंधी सिर पे श्रीराम कें।

आज श्रीराम के सिर पर ब्याह का सेहरा बाँधा गया है। उसके अपार आनंद का वर्णन नहीं किया जा सकता। दूल्हा बनकर श्रीराम सीताजी को ब्याहने जनकपुर पहुँच गये। जिनके साथ उनकी माता कौशिल्या जी भी हैं। दूल्हे की मनमोहिनी सुन्दरता और दुल्हन का निखरा हुआ सौन्दर्य देख सभी मोहित हो टकटकी लगाकर देखते ही रह गये। शिवजी अपने डूढ़ा बैल पर और विष्णु अपने गरूड़ पर सवार हैं। फौज पलटन के साथ असंख्य पैदल और देवलोक के देवता बारात में शामिल हैं। तीनों लोकों के स्वामी चारों भाई एक साथ ब्याहने जा रहे हैं। उनके धन्य हैं माता-पिता। राजा सगर के अंश-वंश के जाये पुत्र आज दूल्हा बने हैं।

सखियाँ आपस में बतिया रही हैं- राजा दशरथ के भाग्य में लिखा होगा तभी तो उनका पुत्र सीता जैसी लक्ष्मी को ब्याह कर अपने घर लिये जा रहे हैं। स्वयंवर में धनुष तोड़ने के कारण ही यह शादी-ब्याह सम्पन्न हो रहा है। राजा जनक ने सभी बारातियों को भरपूर आदर-सत्कार देकर उन्हें सभी प्रकार के भोजन कराकर विदा किया है।

एक सखी कहती है- श्रीराम ने धनुष तोड़ दिया तभी तो सीताजी की शादी हो रही है। यदि धनुष नहीं टूट पाता तो सीताजी कुँवारी ही रह जातीं। दूसरी सखी बोली- उस धनुष को तोड़ने कई राजा-महाराजा अपना अरमान अपने ही मन में लेकर चले गये।

ऊबनी

जब रघपत दूल्हा देशों हों आये, देश रवाने होंय भलें जू।
जब रघुपत दूल्हा गेंवड़े हो आये, दूब रही हरयाय भलें जू।
जब रघपत दूल्हा तालों हो आये, ताल हिलोरें लेय भलें जू।
जब रघपत दूल्हा बागों में आये, फूल रही फुलवार भलें जू।
बेला हो फूली चमेली हो फूली, केवड़े की बास सुहाई भलें जू।
जब रघपत दूल्हा कुवलों हो आये, मोह रही पनिहार भलें जू।
जब रघपत दूल्हा मंडवो हो आये, सखियों ने मंगल गाये भलें जू।
जब रघपत दूल्हा दुआरे पे आये, भुवन जगामग होंय भलें जू।

बुन्देलखंड की नारियाँ दूल्हे को राजा राम के समान देखती हैं। जब रघुपति दूल्हा अपने नगर से दूसरे नगर गाँव की ओर जाते हैं, तब रास्ते का वातावरण अपने आप बदल जाता है। जब

रघुपति दूल्हा किसी गाँव के किनारे पहुँचते हैं तो वहाँ की दूब हरी-भरी हो उठती है। जब वह किसी तालाब के किनारे से निकलते हैं तो तालाब में आनंद की हिलोरें उठने लगती हैं। और वह जब किसी बाग के नजदीक से निकलते हैं तो बागों के फूल खिल उठते हैं।

बेला-चमेली और केवड़ा की सुगन्ध चारों ओर महक उठती है। जब वह कुएँ के पास से निकलता है तो उसकी शोभा-सुन्दरता देख पनिहारिनें उस पर मोहित हो जाती हैं। और जब वह मंडप तले आते हैं तो समस्त पुरा-पड़ौस की सखियाँ मिल-जुलकर उसके स्वागत में मंगल गान गाती हैं।

वरमाला

सीता जू फूलों के गजरा सज लाईं
घड़ी आनंद की आई।
केवड़ा-गुलाब लाल, चम्पा चमेली लाल।
मोगरा-मरूआ विशाल, कदम्ब कुन्द रसाल।
हीरा अरू मोतियों की दिव्य कला गाई।
घड़ी आनंद की आई॥
तेवरी शोभा अपार, गेंदा कई एक हजार।
लाल-पीले सुकुमार, कानों कुन्डल उजार।
तारा गन चन्द्रमा की जोत छिप जाई।
घड़ी आनंद की आई॥
हीरा हजारों लगे, गहनों बीच मोति जगे।
हरे-पीरे नग भी लगे, रत्नों की रास लगे।
हीरों की चमक-दमक देखी न जाई।
घड़ी आनंद की आई॥
बज रई हैं शहनाई, नच रई है बधाई।
नोंनी जोड़ी मिलाई, हंस रई है पहुँनाई।
सीता ने राम जू खों वरमाला पहिनाई।
घड़ी आनंद की आई॥

इस आनंददायी बेला में सीताजी मनहर फूलों की मालाएँ पहनकर आईं। उन मालाओं में केवड़ा, गुलाब, चम्पा, चमेली, मोगरा और कदम्ब के फूल पिरोये गये हैं। वे फूल हीरा-मोती की तरह जगमगाते हुए दिख रहे हैं। ऐसे सुन्दर फूलों में हजारी गेंदा और तिवरैया के लाल फूलों की शोभा अपनी ओर आकर्षित करती हैं। लाल-पीले रंग के छोटे-छोटे कुण्डल कानों में दमक रहे हैं। जिनके आगे शशि तारों की ज्योति फीकी सी होकर शरमाती सी लगती हैं।

अन्य गहनों में हीरा मोती, हरे-पीले रंग के बहुमूल्य रत्न जड़े हैं। थालों में कई प्रकार के रत्नों के ढेर लगे हैं। हीरा-जवाहरातों की चमक-दमक के सामने आँखें चौंधिया जाती हैं। शहनाई गूँज रही है। बधाई नृत्य नाचा जा रहा है। सभी का यथोचित स्वागत सम्मान हो रहा है। विधाता ने राम और सीता की सुन्दर जोड़ी बनाई है। ऐसे सुअवसर पर सीताजी ने श्रीराम को वरमाला पहनाई है।

चढ़ाव

हाँ - हाँ रे, जनकपुरी में चढ़े-चढ़ावो सीता जू खों रे।
हाँ - हाँ रे, पटा के ऊपर बैठी आकें महलन में सें रे।
हाँ - हाँ रे, मुतियन चौक पुरे आंगन में बजत बधाये रे।
हाँ - हाँ रे, पचखंबा में हीरा दमकें पनी चमकती रे।
हाँ - हाँ रे, हीरा-लाल-जवाहर दमकें जड़े-जड़ाये रे।
हाँ - हाँ रे, नंग-नंग जेवर सीता पहिरें-उड़े चुनरिया रे।
हाँ - हाँ रे, रूप देख मोहे नर नारी सुख शोभा खों रे।
हाँ - हाँ रे, बा दिन की तो शोभा न्यारी बनें नें बरनत रे।
हाँ - हाँ रे, इन्द्र पुरी सो लगे जनकपुर प्यारो सुन्दर रे।

जनकपुर में सीताजी को चढ़ाव चढ़ रहा है। सीताजी महलों में से निकलकर मंडप नीचे पटा पर बैठ गई हैं। उनके आँगन में मोतियों से चौक पूरा गया है। जहाँ बधाई बाजे बज रहे हैं। पचखंबों में चाँदी की पनी चमचमा रही है। जड़े हुए लाल-हीरे-जवाहरात दमक रहे हैं। प्रत्येक अंग में जेवर आभूषण पहने, चुनरी ओढ़े सीताजी बैठी हैं। उनका ऐसा सुन्दर रूप सभी को मोह रहा है। जिसकी शोभा वर्णन नहीं की जा सकती है। आज जनकपुरी, इन्द्रपुरी के समान सुन्दर प्यारी लग रही है।

चढ़ाव

चली है बरात मंडवा तरें आई, सो चढ़ाय की भई है तैयारी।
सुरहन गऊ के गोबर मंगाये, ढिग घर आंगन खों लिपवाये।
गज-मोतिन के चौक - पुराये, कंचन कलश उजयार धराये।
अरघ दे बमना अरघ दे निकरी, सजन जू की प्यारी - धिया री।
पाट-पीताम्बर डललन-पललन, सोने रूपे कौ पार नें पाओ।
चढ़ो है चढ़ाव जनक सुत पायो, भली भांति कन्या - पहिराओ।

बराती मंडप के नीचे आ गये, अब चढ़ावा चढ़ने की तैयारी होने लगी। सुरहन गाय का गोबर बुलवाकर आँगन-देहरी-द्वार लिपवा कर छुई से ढिग (लकीर) लगवाई गई। मोतियों के

चौक पूर कर चाँदी से चमकते कलशों पर जलते दिये रखे गये। पंडित ने मंत्र पढ़ जल छिड़का, तब सजन की प्यारी सजनी भीतर से निकलकर मंडप नीचे आ गई।

रेशमी पीले वस्त्र टोकनियाँ भर-भर कर लाये गये। सोने और चाँदी की अपार आभूषण गिने नहीं जा सकते थे। जो भलीभाँति कन्या को पहिराये गये। धन्य है जनक जी जिन्होंने अपनी कन्या का ऐसा धनी वर पाया।

कन्यादान

इड़ियन-छिड़ियन मोरी उतरीं लड़नदे, हार दये सरकाय- भलें जू।
धरियक हार सकेलो सहजादी, आई है धरम की बेर- भलें जू।
गऊअन दान नित होंय राजा बाबुल, धियारी दान नहिं होंय- भलें जू।
गौअन दान बामन-भाट-भिखारी, धियारी दुल्हा-दामाद-भलें जू।
चन्द्र गिहन नित होंय राजा बाबुल, सूरज गिहन नहिं होय- भलें जू।
काय खो बाबुल गंगा खों जैहों, काय खों तीरथ-प्रयाग-भलें जू।
मंडवा भीतर बाबुल गंगा बहत है, उतईं हैं तीरथ-प्रयाग-भलें जू।

घर की सीढ़ियाँ उतरती हुई मेरी लाड़ली बेटी ने गले का हार उतार कर रख दिये। थोड़ी देर में मेरी बेटी वह हार पहन लेगी। शायद उसे नहीं मालूम कि कन्यादान का समय- धर्म की बेला आ गई है। ऐसे समय कन्या सान्त्वना देती हुई समझाकर कहती है- गोदान तो हमेशा होते हैं पर कन्यादान का अवसर सदा नहीं आता है। गोदान तो ब्राह्मण को किया जाता है और कन्यादान दूल्हा-दामाद को दिया जाता है। जैसे चन्द्रग्रहण तो अधिक होते हैं, किन्तु सूर्यग्रहण यदा-कदा ही होते हैं।

हे बाबुल! तुम गंगा-प्रयाग किसलिये जाओगे? आज इस मंडप के नीचे गंगा बह रही हैं। यही तीर्थराज प्रयाग है। कन्यादान के शुभ अवसर पर गंगा और प्रयाग तुम्हारे आँगन में आ गए हैं। जो दान धर्म करना है यहीं कर लो।

कलेवा गारी

करवे कलेवा-जनक जू ने बुलाई
गये राम-लखन भाई।
हँस कें बोलीं सरहज-सारीं।
कैसी अवधपुरी की नारी।
हम खों अचरज होवे भारी।
खा-खा खीर पूत जनें हैं, जा सुनवे में आई।

गये राम-लखन भाई॥
लाला बहिनें जोन तुमारी।
कैंसे राख सके कुंआरी।
वे तो रिसियन संग सिधारी।
जब मरदों सें काम नहिं सो वे हो गई पराईं।
गये राम-लखन भाई॥
जा मरजादा चली पहल सें।
मेटी मिटै न प्यारी हम सें।
पति बिन रहो नें जावे तुम सें।
काहे सीता ब्याही तुमनें करी है ऊ की सगाई॥
गये राम-लखन भाई॥
जब से अवधपुरी सें आये।
सुनवे बात एक हम पाये।
तुम प्यारी हो भले छुपाय।
धरनी सें कन्या पैदा कर अपनी ऊ ऐं बताई।
गये राम-लखन भाई॥
कह गये हाल जानकी जी कें।
उत्तर देत बनें नें सुन कें।
सारी सरहज मेंटें हंस कें
सासो बैठी ज्वाब देत हैं- लाज शरम नें आई।
गये राम-लखन भाई॥

जनकजी के बुलावे पर राम-लक्ष्मण कुँअर कलेवा करने के लिये गये। व्यंग करती हँसती हुई सरहजें बोली- बहुत अचंभे की बात सुनने में आई है कि अवधपुर की नारियाँ खीर खाकर पुत्र पैदा कर लेती हैं। हे लाला! तुम अपनी बहिनों को कुँवारी कैसे रख पाते हो? वे तो ऋषियों के साथ भाग जाती हैं। जब तुम जैसे मर्दों से कुछ करते-धरते नहीं बनता तो वे अपने आप और किसी की हो ही जायेंगी।

तब लक्ष्मणजी ने उत्तर दिया- तुम्हारे जनकपुर में यह मर्यादा तो पहिले से ही चली आ रही है, जो मिटाने पर भी नहीं मिटाई जा सकती है। पति के बिना तुमसे रहा नहीं जाता। यदि यह सही नहीं है तो तुमने सीताजी की सगाई कर उसे अवधपुर क्यों ब्याहा है? तुम्हारी जनकपुरी में आकर हमने भी एक बात सुनी है। हे प्यारी! भले ही तुम उसे छिपाओ, तुम्हारे यहाँ धरती से कन्या पैदा कर उसे अपनी कोख का जाया बतलाया जाता है। इस प्रकार सीताजी का हाल सुनकर किसी से भी उत्तर देते नहीं बना। सभी सरहजें - शरमाती-हँसती हुई बात टालने लगीं। तब सीता की माता ने उन्हें डाँटा कि तुम सभी बेशर्म हो।

कलेवा : गारी

बची हुइये नें अवधपुर की नारियां, तुमसें प्यारे रघुवर लला।
सूरत चेहरा तेज तुमारे।
जैसे चमकें चांद सितारें।
कैसे जै हों भलां बिसारे।
ऐसी कह-कह कें बजा रही तालियां।
अवधपुर की नारियां॥
बड़े कलाकारी तुम भारी।
जादू और मोहनी डारी।
कैसें बचें अवध की नारी।
बैठी महलों में सुना रही गारियां।
अवधपुर की नारियां॥
बोले लखन बहुत बतियाती
जब जे बिना पुरुष रह जाती
घर की घर में अगर समाती
काहे खों जाती जनकपुर बरातियां।
अवधपुर की नारियां॥
हम तो सरहज तुम ननदोई।
लाला बात हँसी की होई।
बुरो मानियो नहिं कोई।
यह कह-कह कें सबरी चढ़ी अटारियां।
अवधपुर की नारियां॥

तुम जैसे सुन्दर मनमोहक युवक से अवधपुर की नारियाँ सुरक्षित कैसे रही होंगी ? तुम्हारे चेहरे पर चाँद-सितारों जैसी चमक है। उसे देख यह मन कैसे समझाया जा सकता होगा ? ऐसा कहकर सभी सखियाँ मुस्कराती हुई तालियाँ बजा रही हैं। किसी का भी मन मोहने में तुम बड़े ही निपुण कलाकार हो। अवधपुर की नारियाँ तुमसे कैसे बच पाती होंगी ? बैठी हुई नारियाँ गीत गा-गा कर ताने दे रहीं हैं।

मजाक करती हुई उन नारियों से लक्ष्मणजी ने कहा- तुम सभी बहुत बातूनी हो। यदि पुरुष बिना नारी रह पाती तो वह घरों में नहीं समा पाती। इसीलिये तो हम बारात लेकर तुम्हें ब्याहने जनकपुर आये हैं। मैं तो तुम्हारी सरहज हूँ। तुम मेरे ननदोई हो। तुम ही मेरे लिये हँसी मजाक करने लायक हो। तुम मेरे इस व्यवहार से बुरा मत मानना। यह कहकर वे हँसती हुई अटारी चढ़ गईं।

जेवनार : गारी

रामचन्द्र जू जेवन बैठे, कहा-कहों जेवनारी बे।
हाँ-हाँ-बे, हूँ-हूँ-बे।
रतन जड़ित थार परोसे, मणिन जड़ित की झारी बे।
दार-भात अुर बरा सुहाये, बूरौ घी संभारी बे।
हाँ-हाँ-बे, हूँ-हूँ-बे।
रोटी फुलका कौच मंगोरा, कड़ी-बरी रूचकारी बे।
पापर पुड़ी कचौड़ी खुरमा, गुजिया सेव सुहारी बे।
हाँ-हाँ-बे, हूँ-हूँ-बे।
भाजी भटा तुरैया सेंमें, राम करेला न्यारी बे।
आदो आम करौंदा निबुआ, चटनी अमित निहारी बे।
हाँ-हाँ-बे, हूँ-हूँ-बे।
मोहन भोग मगद के लडुआ, दूध जलेबी डारी बे।
किसमिस, दाखें, मिसरी, माखन, षटरस चार प्रकारी बे।
हाँ-हाँ-बे, हूँ-हूँ-बे।
सखा सभी सेवा में ठांड़े, सखियां गावें गारी बे
जो यह गारी सुनें-सुनावे, तेहि मुख की बलिहारी बे।
हाँ-हाँ-बे, हूँ-हूँ-बे।

ब्याह मंडप के नीचे दूल्हा श्रीरामजी भोजन करने के लिये बैठे हैं। उन विविध प्रकार के व्यंजनों का वर्णन कहाँ तक किया जाय?

रतन जड़े सोने के थाल और मणियों जड़े कलश सामने रखे गये। जिनमें दाल-चावल-बरा (दही बड़ा) शक्कर और शुद्ध घी परोसा गया। आटे के बने फुलका (रोटी), मंगौड़ा, कढ़ी, बरी, पापड़, पुड़ी, कचौड़ी, खुरमा, गुजिया, सेव बहुत ही जायकेदार हैं। भाजी, भटा, तरैया, करेला की सब्जी तरकारी का स्वाद निराला है। अदरक, आम, करौंदा, नींबू की चटनी को सभी बाराती मुँह में पानी भर-भर कर देख रहे हैं।

मोहन भोग, मगज के लडुआ और गरम दूध में जलेबी डाली गई है। किशमिश, दाखें, मिश्री, मक्खन के साथ चार प्रकार के षटरस भी परोसे गये। बारातियों की सेवा के लिये सभी सेवक खड़े हैं। नारियाँ हास्य-विनोद भरे मधुर गीत गा रही हैं।

पाँव-पखरई

बिच गंगा बिच जमना, तीरथ बड़े हैं - प्रयाग।
जहाँ बिच बैठे बाबुल मोरे, देत कुंआरिन - दान।

तुम जिन जानो बाबुल मोरे, हमरो दियो गिर जाय।
तुमनें दओ-हमने पाओ, गहरी गंगा अन्हाव।
दिइयो भैंस जनेई, साजन जू खोवा खांय।
दिइयो बैल-मलनियां, सुन्नें सींग मढांय।
दिइयो उजरऊ सी गैया, छिनरू कौ गारी खाय।

कन्यादान के समय परात में भरा हुआ पानी गंगा-यमुना के जल के समान पवित्र हैं। हरे मंडप के नीचे कन्यादान का वह स्थल तीर्थराज प्रयाग के समान बन जाता है। ऐसे स्थान पर बैठा पिता अपनी कन्या का दान करता है।

कन्या कहती है- पिताजी! तुम यह मत समझो कि मुझे दिया हुआ दान व्यर्थ गया। जो तुमने दिया वह मैंने पाया है। सचमुच आज सच्ची गहरी गंगा में तुमने स्नान किया है। ऐसी गंभीर विचारधारा के आगे स्त्रियाँ हास्य-विनोद पर उतर आती हैं। वे कहती हैं- दान में सजन को ब्यानी भैंस दे देना ताकि सजन दूध मलाई मावा खा सकें। उन्हें मलनियां नाम के बैलों को भी सोने के सींग मढ़वा कर दे देना। साथ में वह उजार करने वाली (उजरऊ) गाय भी दे देना। जिससे उस समधन को पुरा-पड़ौस से रोज गालियाँ सुनने को मिलती रहें।

बनरा

मोरे राम-लखन युवराज, आज फुलबगिया आये जू॥
पट-पीताम्बर रही सुहाय, मौर-सिर पंख लगाये जू।
मानो प्रगट भई हो चन्द्र, मेघ से फन्द छुड़ाये जू।
आज फुलबगिया आये जू॥
कानन-कुन्डल रहे सुहाय, माथे-तिलक लगाये जू।
टेड़ी-भौहें बाल घुँघराले, अलि-दल चोर चुराये जू।
आज फुलबगिया आये जू॥
आँखें रतनारी अति प्यारी, मधुर-मुस्कार लुभाये जू।
गर्दन सुन्दर शंख-समान, भुजा गज-सूड़ लगाये जू।
आज फुलबगिया आये जू॥
सांवरी सूरत मोहनी मूरत, देखत काम लजाये जू।
दशरथ पुत्र राम सुखधाम, रानी कौशल्या जाये जू।
आज फुलबगिया आये जू॥
छोटे गौर वरन हैं भैया, लखन सुमित्रा जाये जू।
गिरजा पूजन सीता गई, तहाँ वे दर्शन पाये जू।
आज फुलबगिया आये जू॥

राम-लक्ष्मण जैसे राजकुमार इस फूल वाटिका में आये हैं। जिनके सिर पर मोरपंख लगा सेहरा और देह पर गोटा लगा पीला वस्त्र शोभायमान है। जिन्हें देख ऐसा लगा कि घिरे हुए काले बादलों के बीच से एकदम चन्द्रमा निकल कर आ गया हो। उनके कानों के कुण्डल और माथे पर लगा तिलक सभी के मन को मोह रहा है। उनकी धनुषाकार भौंहें, घुँघराले बाल बहुत ही आकर्षक हैं। उन्होंने सभी सखियों का मन चुरा लिया है।

उनकी मधुर मुस्कान, रतनारी आँखें सभी को अपनी ओर लुभा रही हैं। उनकी शंख के समान सुन्दर गर्दन, हाथी की सूंड के समान लम्बी बाँहे हैं। उनकी सांवरी सूरत, मोहनी देह देखकर कामदेव भी शरमा जाता है। ऐसे दशरथ पुत्र सुखदायी राम को रानी कौशिल्या ने अपनी कोख से पैदा किया है। गौर वर्ण उनके छोटे भाई लक्ष्मण को उनकी माता सुमित्रा ने जाया है। दुर्गा देवी पूजन को जब सीताजी गईं, तब उन्होंने ऐसी सुन्दर जोड़ी के दर्शन किये।

बनरा

मोरे रामचन्द्र महाराज आज बनरा बन आये जू।
भरत-लखन-रिपु दमन चार सुन्दर छवि छाये जू॥
सिर सोहत है -मौर-कान कुन्डल लटकाये जू।
चन्दन और लिलाट मनो रवि प्रात ऊँगाये जू॥
जामा है जरतार हार-हिरदे झलकाये-जू।
दुल्हा रूप निहार सखिन के चित्त लुभाये जू॥
मिथलापुर नर-नार जनक नृप धन्य कहाये जू।
वे नर-नारि धन्य दरश प्रभु पद के पाये जू॥

रामचन्द्र जी आज दूल्हा बन कर आये हैं। साथ में लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न भाई भी आये हैं। चारों भाईयों की सुन्दरता सभी निहार रहे हैं। उनके सिर पर सेहरा, कानों में कुण्डल लटक रहे हैं। माथे पर चन्दन ऐसा लग रहा है जैसे सुबह का सूर्य उग आया हो। जरी वाला चमचमाता बागा पहिने हुए हैं। छाती पर सुन्दर कीमती हार झूल रहा है। ऐसे सजे-धजे दूल्हा का रूप देख सखियों का मन मोहित हो रहा है। उनके दर्शन से मिथलापुर के नर-नारी और राजा जनक धन्य हो गये हैं।

बनरा

नीली घोड़ी के बैठईया, बनरा कब घर आहो रे।
उनकी आजी धरें कटोरन दूध, अंगन बिच ठांड़ी हुइये रे।
बन्ना मोरे पी लो ओंटो दूध, जनकपुर ब्याहन जाहो रे।
नीली घोड़ो के बैठईया, बनरा कब घर आहो रे॥

जनकपुर ब्याहन जे हें रे, सिया खों ब्याह कें लाहो रे।
नीली घोड़ो के बैठईया, बनरा कब घर आहो रे॥

नीली घोड़ी पर बैठने वाले ओ दूल्हे राजा! तुम बहू ब्याह कर कब घर आओगे? तुम्हारी आजी कटोरों में दूध भरे बीच आँगन में खड़ी है। दूल्हा राजा! यह औटा हुआ मलाई युक्त दूध पी लो। तुम लड़की ब्याहने जनकपुर जा रहे हो, जनकपुर जाकर सीता जैसी सुन्दर बहू ब्याह कर लाओगे।

बनरा

मोरे राम-लखन से बनरा आली, कौने बिलमा लये री।
मोरो पूनो कैसे चांद बना, सब जग उजायारो री।
मोरे राम-लखन ....
उनके आजुल ने बिलमा लये, आजी कन्ठ लगा लय री।
उनके काका ने बिलमा लये, काकी कन्ठ लगा लय री।
मोरे राम-लखन ....
उनकी जीजी ने बिलमा लये, जीजा कन्ठ लगा लय री
उनकी मामी ने बिलमा लये, मामा कन्ठ लगा लय री।
मोरे राम-लखन ....
उनके वीरन नें बिलमा लये, भौजी कन्ठ लगा लय री
उनके बाबुल ने बिलमा लये, मैया कन्ठ लगा लय री।
मोरे राम-लखन ....

हे सखी! मेरे राम-लक्ष्मण से दूल्हे को किसने अपनी ओर आकर्षित कर रोक लिया है? वह तो पूनम का चन्द्रमा है, जिससे यह संसार जगमगा रहा है। शायद उनके आजुल ने रोका हो और आजी ने कंठ लगा लिया हो। उनके काका ने रोका हो और काकी ने कंठ लगा प्यार किया हो। उनकी जीजी ने रोका हो और जीजा ने प्यार से अपने सीने से लगा लिया हो। शायद उनकी मामी ने रोका हो और उनके मामा ने कंठ लगा लिया हो। उनके भाई ने रोका हो और भाभी ने कंठ लगाया हो। उनके बाबुल ने रोका हो और माता ने प्यार से कंठ लगा लिया हो। अर्थात् सभी ने इस प्रकार अपना-अपना प्रेम दर्शाया हो।

बनरा

रंग बरसत है, अबीर उड़त है,
पलट देखो अंगना में रस बरसत है।
माथे हो सैरो बांधो राजा बनरे

कलियों खों देख मोरो जिया ललचत है।
पलट देखो ....
कानों में कुन्डल पैरो राजा बनरे
सो लटकन खों देख मोरो जिया ललचत है।
पलट देखो ....
गरे में हरवा मोरे बन्ना जू खों सोहे
सो लाकिट खों देख मोरो जिया ललचत है।
पलट देखो ....
हाथों में बन्ना जू खों घड़ियां सोहे
सो कंकन खों देख मोरो जिया ललचत है।
पलट देखो ....
अंगन में बन्ना जू खों बागो सोहे
सो फेंटा खों देख मोरो जिया ललचत है।
पलट देखो ....
पांवों में बन्ना जू के जूता सोहे
माहुर खों देख मोरो जिया ललचत है।
पलट देखो ....
बन्ना जू के संग मोरी बन्नी जू सोहे
सो जोड़ी खों देख मोरो जिया ललचत है।
पलट देखो ....

लौट कर देखो तो रस रंग की वर्षा हो रही है। खुशियों का रंग, प्रसन्नता की गुलाल उड़ रही है। दूल्हा राजा के सिर पर साफा सेहरा बंधा है। उसकी हिलती-झूलती झूमरों को देखकर मेरा जी ललचाता है। जब दूल्हा राजा ने अपने कानों में कुण्डल पहिना तो उन कुण्डलों की मोहक लटकन को देख मेरा जी ललचाता है।

दूल्हा राजा के गले का हार शोभायमान हो रहा है। बीच में लटकते उसके सुन्दर लाकिट को देख मेरा जी ललचाता है। दूल्हा के हाथों में घड़ी शोभा दे रही है और बायें हाथ में लाल कंकन को लटकता देख मेरा जी ललचाता है। दूल्हा राजा की देह पर रंगीन बागा शोभायमान हो रहा है। कम्मर में कसा हुआ रेशमी फेंटा देख मेरा जी ललचाता है। दूल्हा राजा के पाँवों में कीमती जूता शोभायमान है। उनके पाँवों में लगा माहुर देखकर मेरा जी ललचाता है। दूल्हा राजा के साथ दुल्हन रानी शोभायमान है। उन दोनों की सुन्दर जोड़ी देखकर मेरा जी ललचाता है। जरा लौटकर तो देखो! अंगना में खुशहाली का कैसा अद्भुत रस बरस रहा है।

बनरी

लाड़ी बनरी नादान, आजुल जी सों अरज करें।
ऐसे घरे दियो महाराज, जहाँ बेटी राज करे।
जहाँ बम्मन तपत रसोई, कहर दोई पानी भरें।
मोरी झूलों की झूलन हारी, कटोरन दूध पिये।
मोरी रुपयों की परखनहारी, मुहरों के मोल करे।
मोरी छज्जे की पौढ़नहारी, झरोखन बाव ढुरे।

लड़की के आजुल से प्रार्थना करती हुई लड़की की माँ कहती है– मेरी बेटी बहुत ही लाड़ली प्यारी है। उसे ऐसा घर परिवार देना, जहाँ वह राज करे। सभी प्रकार के सुख उसे उपलब्ध रहें। जहाँ रसोई बनाने वाला रसोईया ब्राह्मण हों तथा पानी भरने वाले कहार (ढीमर) लगे हों। मेरी बेटी झूले में झूलने वाली, कटोरों में दूध पीती रही है। जो छज्जों पर बैठने वाली तथा झरोखों से हवा लेने वाली है। उसके लिए ऐसा घर तलाशना, जहाँ उसे किसी भी प्रकार का कष्ट न हो।

बनरी

ओरन–खोरन फिरें बेटी लड़नदे, कौन बाबुल जू के बाग भलें जू।
हरी–हरी दूबा बेटी फूली है चमेली, बेई बाबुल जू के बाग भलें जू।
बीन–बीन फुलवा बेटी भर लई डलियां, घर लई घर की गैल भलें जू।
मांय से आ गअे रघपत दूल्हा, जे फूल हमें दंय जाव भलें जू।
जे फुलवा हमरे बाबुल मंगाये, पूजत गौरी गनेश भलें जू।
जे फुलवा अपने बाबुल खों दैहो, साके के रचे जिन ब्याव भलें जू।
माथे की बेंदी बनरी हमईं ल्याहें, तब हुइयें साके के ब्याव भलें जू।

अपने बाबुल का बाग खोजती हुई प्यारी लाड़ली बेटी यहाँ–वहाँ घूम रही है। हे बेटी! हरी–हरी दूबा और सफेद चमेली के फूल जहाँ खिले हों, वहीं तुम्हारे बाबुल का बाग है। बेटी ने अपने बाबुल के बाग से चुन–चुन कर फूल तोड़े और अपनी डलिया फूलों से भरकर वह अपने घर की ओर चल दी। सामने उसे आते हुए दूल्हा राजा मिल गये तो वह कहने लगे– यह फूल मुझे दिये जाओ। लड़की जवाब देती है– ये फूल तो मेरे पिताजी ने बुलवाये हैं, वे गौरी–गणेशजी का पूजन कर रहे हैं। यह फूल तो मैं अपने पिताजी को ही दूँगी, वे मेरे ब्याह की तैयारी कर रहे हैं। इस पर दूल्हा जवाब देता है– माथे की बिंदिया फूल तो मैं ही लाऊँगा तभी विवाह हो सकेगा।

बनरी

रूनक–झनक बेटी मंडल डोलें,
आजुल लये हैं उठाय भलें जू।

कै मोरी बेटी तुम सांचे की ढारी,
कै गढ़ी है चतुर सुनार भलें जू।
नें आजुल मैं सांचे की ढारी,
नें गढ़ी है चतुर सुनार भलें जू।
माता की कूंखिया सें जनम लये हैं,
सो रूप दये हैं- करतार भलें जू।

अपनी पैजनियों की रुनझुन ध्वनि को गुँजाती हुई बेटी अपने आँगन में डोल रही है। उसके आजुल ने उसे अपनी गोदी में बिठा लिया है। आजुल पूछता है- बेटी! तुम किस साँचे की ढली हो। लगता है तुम्हें किसी चतुर सुनार ने गढ़ा है। ऐसा सुन्दर रूप तो मैंने कहीं नहीं देखा है। बेटी उत्तर देती है- मैं किसी भी साँचे में नहीं ढाली गई हूँ और न ही मुझे किसी चतुर सुनार ने गढ़ा है। मैं तो अपनी माता की कोख से पैदा हुई हूँ और जो यह सुन्दर रूप आप सभी देख रहे हैं- वह तो विधाता ने दिया है।

परछन

माता परछन करे श्रीराम की, दुल्हा दुल्हन बैठे पालकी।
घर-घर मंगल कलश सजाये, पूजा शिव-गनेश करवाये।
देवताओं ने फूल बरसाये, धुन मीठी बजी शहनाई की।
दुल्हा-दुल्हन बैठे पालकी।
सखियां मंगल रही सुनाई, कर में आरती रही सुहाई।
मानो सरस्वती ले आई, दूध-दही और टहनी आम की।
दुल्हा-दुल्हन बैठे पालकी॥
नरियल फूला पान सुपारी, चांवल गोरोचन घर नारी।
सोने थाल में रखी सुपारी, शोभा वरनी ने जाय राम की।
दुल्हा-दुल्हन बैठे पालकी॥
बजन लगी अवध बधाई, परछन करे कौशल्या माई।
शोभा सके कौन कवि गाई, फैली कीरत है राम सुनाम की।
दुल्हा-दुल्हन बैठे पालकी॥

दुल्हा-दुल्हन पालकी में बैठे हैं। श्रीरामजी की माता मुँह दिखाई (परछन) का दस्तूर सम्पन्न कर रही हैं। उस समय प्रत्येक घर में मंगल कलश सजाये गये। शिव गणेश का पूजन कराया गया। मनोहारी वातावरण देख देवताओं ने आकाश से फूलों की वर्षा की। शहनाई की मधुर धुन गूँजने लगी। सखियाँ हाथों में आरती लेकर मंगल गीत गाने लगीं। उस समय ऐसा लग रहा था कि दूध-दही और आम की हरी टहनी लिये देवी सरस्वतीजी आ रहीं हों।

अयोध्या की नारियाँ सोने के थाल में पान, सुपारी, नारियल, अक्षत, गोरोचन लेकर आ गईं। उस समय राम की शोभा वर्णन नहीं की जा सकती। द्वार पर बधाई बजने लगी। मुँह दिखाई का दस्तूर कौशिल्या जी करने लगी। ऐसी मनोहारी शोभा का वर्णन भला कौन कवि गा सकता है। ऐसे लोकनायक राम की कीर्ति अपने आप चारों ओर फैलने लगी।

परछन

परछन परन राम की लागी, शोभा बरनी न जाये जू।
माता लोकाचार करत है, दुल्हा-दुल्हन मुस्कावे जू।
आरति करती बारम्बार, प्रेम न हृदय समाये जू।
भूषण-मणि वस्त्र आभूषण, निछावर करती जावे जू।
सखियां गावे मंगलाचार, वे अपने पुन्य सरावे जू।
सोहें चार सिंहासन नीके, सुन्दरता शरमावे जू।
चारों दुल्हा-दुल्हन बैठे, मातु खुद पांव धुवावे जू।
फूल गिरावे देवता ऊपर, बनरा-बनरी मुस्कावे जू।

राम-सीता की मुँह दिखाई (परछन) है, उनके चेहरे की सुन्दरता का वर्णन नहीं किया जा सकता। माता लोक दस्तूर कर रही हैं। सीता और राम दोनों मंद-मंद मुस्करा रहे हैं।

माता बार-बार दुल्हा-दुल्हन की आरती उतारती हैं। उनका हृदय में उमड़ा स्नेह नहीं सँभल पाता है। वे विह्वल हो आभूषण, वस्त्र, धन आदि सियाराम पर निछावर कर रही हैं।

चार सिंहासन पर चारों भाईयों को बैठा देख सखियाँ शरमा रही हैं। सीता राम के सम्मुख अपने को पाकर अपना भाग्य सराहती मंगल गीत गा रही हैं। चारों दुल्हे-दुल्हनें बैठी हैं। पानी से भरे एक थाल में माता बहुओं के पैर धुलवा रही हैं। यह देख दुल्हा-दुल्हनें आपस में मुस्करा रहे हैं। देवता प्रसन्न हो आकाश से आशीर्वाद स्वरूप फूल बरसा रहे हैं।

गारी : कंकन की गाँठ खोलने की

गांठ कंकन की छोरें श्रीराम री
बात चली कानों-कान री।
जनकसुता की पकर कलाई, कौंचा दबा लये रघुराई।
सब नारी मिल करें हँसाई, कौंचा मोड़े सें निकर जैहें जान री।
बात चली कानों कान री॥
सखियां सभी लगी समझाने, अब नें चलहें यहाँ बहानें।
सुन-सुन राम बहुत मुस्कानें, बैठी-बैठी भई है सिया परेशान री।
बात चली कानों कान री॥

तुमने टोर धनुष खों डारे, वन में जाय राक्षस मारें।
काहे कंकन सें बस हारे, तुमसें नें छूटी है एकऊ गठान री।
बात चली कानों कान री॥
मुख सें राम लला नें बोले, झट से कंकन के बंध खोले।
बोली माता मोरे सुत भोले, जे तो देखत में है सूधे-नादान री।
बात चली कानों कान री॥

राम और सीताजी के कंकन की गाँठें खोलने का दस्तूर हो रहा है। यह बात सभी के कानों में पहुँच गई। रामजी ने सीताजी की कलाई पकड़कर उनका कौंचा अपने हाथों में जोर से दबा लिया है। सम्मुख बैठी नारियाँ उनकी हँसी उड़ाने लगती हैं और कहने लगती हैं- कौंचा मोड़ने से हमारी सुकोमल राजदुलारी की जान निकल जायेगी।

सभी स्त्रियाँ रामजी को समझाने लगीं। आप तो कंकन की गाँठें खोलिये। कोई बहानेबाजी मत करिये। मेरी राजदुलारी इस तरह कब तक बैठी-बैठी परेशान होती रहेगी। तुमने तो शंकरजी के विशाल धनुष को एक पल में तोड़ डाला था। वन में बलशाली राक्षसों को मार डाला किन्तु इस छोटे से कंकन के सामने क्यों हार रहे हो? आपसे अभी तक कंकन की एक भी गाँठ नहीं छूटी है। यह सुन श्रीराम कुछ भी नहीं बोले और उन्होंने झट से कंकन की गाँठें खोल दीं। तब माता बोली- मेरे सभी पुत्र भोले-भाले हैं। मेरा राम तो अभी-भी सीधा-साधा अबोध है।

गारी : कंकन खोलने की

जो नें होय धनुष कौ टोरबो, कठिन कंकन छोरबो॥
तुमने जनकपुरी पग धारे, शिव के धनुष टोर कें डारें।
जो नें होय मारीच कौ मारबो, कठिन कंकन छोरबो॥
जनकपुरी की हँसमुख नारी, आखिर सारीं लगें तुमारी।
जिनखों बिना हथियारन मारबो, कठिन कंकन छोरबो॥
वे तो जनकपुरी की नारी, हाँसी करें तुमारी-भारी।
अब तो सीखो सिया खों कर जोरबो, कठिन कंकन छोरबो॥

जिस प्रकार शिव धनुष तोड़ना कठिन था। उसी प्रकार कंकन की गाँठें खोलना कठिन है। तुमने जनकपुर आकर शिवजी का धनुष तोड़ डाला। किन्तु जिस प्रकार तुम्हें मारीच को मारना कठिन था, उसी प्रकार कंकन की गांठें खोलना कठिन है। जनकपुर की हँसमुख नारियाँ तुम्हारी सालियाँ ही तो हैं, जिनको बिना हथियारों के नैन बाणों से घायल कर अपनी ओर आकर्षित कर लेना कठिन है। वैसे ही कंकन की गाँठें खोलना कठिन है। अब तो जनकपुर की नारियाँ तुम्हारी बहुत हँसी उड़ा रही हैं। अब तो तुम्हें शर्मिन्दा होकर सीताजी के सामने हाथ जोड़ना पड़ेंगे, तभी तुमसे कंकन की गाँठें खुल सकेंगी।

बुन्देली संस्कार गीत

डॉ. ओमप्रकाश चौबे

सम्पर्क-भेषज विज्ञान विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

संचत संस्कार

संचत शब्द संतरित का अपभ्रंश है। संतति की कामना तो पति-पत्नि दोनों में ही होती है, लेकिन स्त्रियों में मातृत्व की भावना बड़ी प्रबल होती है, और संतान के अभाव को स्त्री सहन नहीं कर पाती, वह बड़ी अधीर हो उठती है। इन्हीं सब प्रवृत्तियों की वजह से हमारे देश में नारी का मातृरूप ही सबसे पवित्र और कल्याणकारी माना गया है। बुन्देलखण्ड के संचत गीतों में नारी हृदय की यही विकलता उद्दाम वेग से प्रस्फुटित होकर सहस्त्र स्रोतों से बहती दृष्टिगोचर होती है, उसमें उसकी संतति प्राप्ति की आकांक्षा, अधीरता, करुण वेदना तथा पुत्र प्राप्ति के उपचारों का सरस चित्रण है।

बुन्देलखण्ड में जन्म के पूर्व गर्भावस्था के समय गाये जाने वाले संचत गीतों से ही संस्कार गीतों का श्रीगणेश होता है। गर्भ के आठवें महीने में एक दस्तूर होता है, जिसे आगन्नों या फूल चौक तथा जैन समाज में उसे सादें कहा जाता है। हमारे वेदों में इसे पुंसवन या सीमन्तोन्नयन के जैसा इसे कह सकते हैं। 'सीधे' का मतलब साध पूरी होना या इच्छा पूरी होना है। गर्भिणी के मायके से इस समय वस्त्र, मीठा, बताशे आदि आते हैं। एक उत्सव जैसा यह मनाया जाता है, जिसमें गर्भिणी स्त्री को नये वस्त्र पहिनाकर घर में उस स्थान पर जहाँ उत्सव होना होता है, चौक पूरकर एक पटे पर बैठाया जाता है। मायके से जो भी भाई-भतीजे आते हैं, वे उस स्त्री की गोदी में वस्त्र, मीठा आदि डालकर रस्म पूरी करते हैं, इस अवसर पर जो गीत होते हैं, उन्हें संचत गीत कहा जाता है। चाहे संचत कहें या साधें तात्पर्य तो संतानोत्पत्ति संबंधी ही है।

जन्म

भारतीय समाज में पुत्र जन्म बड़ा शुभ माना जाता है। बुन्देलखण्ड में पुत्र जन्म पर सोहर गीत गाये जाते हैं परंतु पुत्री जन्म के लिए कोई गीत नहीं है। इस ध्रुव सत्य को दृष्टिगोचर रखते

हुए हमें स्वीकारना पड़ेगा कि हमारे समाज में पुत्री जन्म के लिए पहले से ही उचित स्थान नहीं है। एक पौराणिक उक्ति है, 'अपुत्रस्य गतिर्नास्ति' अर्थात् निपूते की गति नहीं होती, इसीलिए हमारे समाज में पुत्र-जन्म का संस्कार सर्वश्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण है। हमारे पुराणों में भी जन्म सर्वश्रेष्ठ संस्कार है। बुन्देलखण्ड में जब कोई स्त्री गर्भवती होती है तो उसे कुछ नियमों का पालन करना आवश्यक होता है, जैसे कि- गर्भवती स्त्री को ग्रहण नहीं देखना चाहिए क्योंकि इसके कारण भावी शिशु पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गर्भकाल में स्त्री की भोजन संबंधी इच्छाओं, जिन्हें संस्कृत में 'दोहद' कहा गया है, की पूर्ति करना आवश्यक होता है। जिस कक्ष में स्त्री सोती है उसमें संभवत: महान पुरुषों के चित्र स्थापित करने का प्रचलन है। गर्भिणी के जिस कमरे में सन्तान होती है उसे 'सोर' कहते हैं। सोर वाले कमरे में पुरुष का प्रवेश वर्जित है। वहाँ पर अंगीठी हमेशा जलती रहती है। पुत्र या पुत्री जन्म के छठवें दिन छठी तथा दसवें दिन दसटोन होता है। 'दसटोन' के ही दिन नवजात शिशु को काजल तथा काजल का टीका लगाया जाता है।

मुण्डन

बुन्देलखण्ड में बालक के जन्म के विषम वर्षों एक, तीन, पाँच, सात, नौ, ग्यारह आदि में शिशु का मुण्डन संस्कार होता है। मुण्डन संस्कार किसी देवालय, नदी तट आदि स्थानों पर किया जाता है। बालक की बुआ उसके बालों को रखती है, उन्हें जमीन पर नहीं रखा जाता है। मुण्डन के पश्चात् बालों को आटे की लोई में रखकर किसी पवित्र नदी में विसर्जित कर दिये जाते हैं।

बरुआ/यज्ञोपवीत/उपनयन संस्कार

यज्ञ+उपवीत=यज्ञोपवीत अर्थात् यज्ञ प्राप्त करने वाला। यह संस्कार प्राय: सात से ग्यारह वर्ष की उम्र में होता है। यज्ञोपवीत संस्कार को बुन्देलखण्ड में 'बरुआ' कहते हैं। इसे उपनयन संस्कार भी कहते हैं। बुन्देली 'बरुआ' शब्द बटुक शब्द से बना है अर्थात् बाल-ब्रह्मचारी।

जिस किसी बालक का बरुआ होना होता है उसका मुंडन कराया जाता है, उसे उबटन लगाकर नहलाते हैं फिर गेरुआ या हल्दी रंग की धोती पहनाते हैं। पाँव में लकड़ी की खड़ाऊँ, एक हाथ में भिक्षा-पात्र एवं दूसरे में लकड़ी का एक दंड उसे देते हैं। जिस घर में जहाँ बरूआ होता है वहाँ आम-जामुन की हरी पत्तियों का मंडप बनाते हैं, उस मंडप के तले उस 'बटुक' बने युवक को बैठाते हैं, वहाँ पंडित उससे पूजन करवाकर जनेऊ पहिनाता है, उसके कान में गुरूमंत्र कहता है। दीक्षा के नियमों को पंडित/गुरू उसे समझाता है। तत्पश्चात् वह बटुक भिक्षा-पात्र लेकर भीख माँगने जाता है। 'भिक्षाम् देहि' कहते हुए वह घर में दादी, माँ, चाची, भाभी, बहिन आदि से भिक्षा माँगता है वे उसे भिक्षा में कुछ द्रव्य आदि उसके पात्र में डालती हैं। इस अवसर पर गीत गाये जाते हैं।

फलदान/लगुन/ओली

विवाह वर-कन्या की कुण्डली मिलान तथा दोनों पक्षों की स्वीकृति के पश्चात् ही तय माना जाता है। इसके पश्चात् वर पक्ष के लोग कन्या के घर आते हैं तथा एक रस्म जिसे 'ओली भरना' कहते हैं, कन्या की गोदी में नारियल, बतासा तथा कोई आभूषण, वस्त्र, मीठा आदि डालते हैं, इसे ओली भरना कहा जाता है। तत्पश्चात् लड़की पक्ष के लोग वर-पक्ष के घर जाकर 'फलदान' नामक रस्म करते हैं। फलदान या वरीक्षा में वर को अँगूठी या पेन, उसके वस्त्र, नारियल, बतासा, मिठाई आदि देकर परीक्षा करते हैं। फलदान के पश्चात् 'लगुन' लग्नोत्सव होता है। यह भी वर को ही कन्या पक्ष की ओर से नेग स्वरूप दिया जाता है। कन्या पक्ष की ओर से लग्न पत्रिका आती है उसमें वैवाहिक कार्यक्रम लिखा होता है, पंडित लगुन बाँधते हैं दोनों पक्ष के लोग सुनते हैं तथा विवाह की रूपरेखा पर विचार करते हैं। इन रस्मों पर स्त्रियों द्वारा गीत गाये जाते हैं।

विवाह संस्कार

विवाह मानव जीवन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संस्कार है। विवाह दो शरीरों का ही नहीं वरन् दो आत्माओं का पवित्र मिलन भी है। भारतीय संस्कृति में विवाह को मनुष्य के पिछले सात जन्मों के संबंध संस्कारों से जोड़ा गया है। विवाह के पश्चात् ही सांस्कारिक संबंधों की सृष्टि होती है। बुन्देलखण्ड में विवाह के अवसर पर प्रचलित विभिन्न रीति-रिवाजों में स्त्रियों द्वारा गीत गाये जाते हैं, ये गीत हृदयस्पर्शी, मार्मिक व सरसता लिये हुए होते हैं। गीतों में सर्वप्रथम देवी-देवताओं के निमंत्रण, फलदान, लगुन, छटा-छटों, मागर माहि, सीधा छुलाना, बनरा-बनरी, मातृका पूजन, मंडपाच्छादन, मैहर पानी, वीद तैल, हल्दी चढ़ाना, बाबू पूजन, चीकट, कंकन पुराई, राछ, बरात निकासी, अवनी, चढ़ाव, कन्यादान, पाँव पखराई, कुँवर कलेऊ, रहल बधाव, पंगत, जोत मिलान, मेहर उलीचना, बंद छुराई, बेला, विदाई, मोचामनो, दूदाभाती, दसमाननी, मौर सिराना आदि रस्मों पर गीत गाये जाते हैं।

मृत्यु संस्कार

यह संस्कार प्रत्येक मानव के जीवन का अंतिम तथा महत्त्वपर्ण संस्कार है। चाहे भले ही हम अन्य संस्कारों की गणना न करें लेकिन मृत्यु तो सर्वाधिक महत्त्व का संस्कार है। जन्म के पश्चात् मृत्यु भी अटल है, यह ध्रुव सत्य है। इसे दुनिया के हर देश के लोग मानते हैं। बुन्देलखण्ड में यह मान्यता है कि जब किसी व्यक्ति के जीवन की आशा छूट जाती है तो उसे भूमि पर सुलाकर उसके मुँह में गंगाजल, तुलसीजल को डालने की प्रथा है। कुछेक लोग मृत्यु प्राप्त कर रहे व्यक्ति को गाय की पूँछ का स्पर्श करा देते हैं उस गौ को दान में दे दिया जाता है जिसे गऊदान कहते हैं। ऐसी मान्यता है कि मृत व्यक्ति के लिए वैतरिणी पार करनी होती है। जोकि गाय की पूँछ पकड़कर ही पार की जाती है इसके लिए ही लोग गौ दान करते हैं। मृत्यु के

दसवें दिन में दशगात्र तथा तेरहवें दिन में गंगाजली पूजन का विधान है। इस समय ब्राह्मणों को भोजन करवाकर मृतक का श्राद्धकर्म किया जाता है।

बुन्देलखण्ड में मृत्यु गीतों की परम्परा नहीं है। मृत्योपरांत केवल होली के अवसर पर अनरये की फागें गाने का प्रचलन है, उनका आशय शरीर की नश्वरता तथा जीवन में सत्कर्म करना आदि ही है।

बुन्देली लोक जीवन की झाँकी इन संस्कार गीतों में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है क्योंकि इन गीतों का सीधा संबंध मन तथा उसके कार्यकलापों से होता है। इन गीतों को अगर मानव जीवन के प्रतिबिंब की संज्ञा दी जाये तो अतिशयोक्ति न होगी। हर तरह के भावों की अभिव्यक्ति इन गीतों में रहती है।

संचत

पोततर्ती धना देहरी, लीपत पौर दुआर
हँस-खेलत पिया आ गये, बात कहों में एक
सुनियो तुम चित लाय, ब्याव करें हम दूसरे
कै राजा हम कुल टांचरी, के सेवा के हम ने जोग
ब्याव करो पिया दूसरे।
कुल की तुम दो तिल आगरीं, भौतऊ सेवा जोग
तुमरी कूख बैरन भई, ओने घटाये तुमारे मान
इतनी सुन अनमनी भईं, हन लये बजर किवार
सांकर खोलो भौजी लोहे की
भौजी तुमरे हुइयें नंदलाल, अपन अव जेइये
सुन्ने के थार परोसियो, रुपों कटोरों दूद
चलो अब जेईये
जेय जूठ बैया आई है, भौतक दये असीष
फूलो फरो तुम कटई नीमसी, छिचलो जैसे दूब
अचल तोरे रयें ऐवात
मन मोरो कये धिया जन्मियो, गजबज आई बरात
डिगरत आवै नीवे साजना, हंसतई दूला दमाद
घर मोरे रीते अंगन मोरे रीते, रीतो मोरो पेट
सजन धिया ले चले

मन मोरों कैवे बेटा जन्मो है, बेटा की गई बरात
घर आंगन मोरे भर गये, सुखों से भर गये पेट
बेटा बहू घर आईयो
धन्न मोरी कूंख सुलोचनी जेनें राखे है मोरे मान
ब्याव रचाउतते राजा दूसरे।

गीत–श्रीमती द्रोपदी बाई–बड़ी देवरी

संतति की आकांक्षा हर स्त्री में होती है लेकिन जिसके संतान न हुई हो वह तो हर क्षण संतान की अभिलाषा अपने मन में लिये रहती है। गीत में संतान की चाह का बड़ा सजीव चित्रण है।

एक स्त्री अपने घर की लीपापोती कर रही है, उसी समय उसका पति हँसता हुआ भीतर आता है। वह अपनी पत्नि से बोला कि सुनो मैं एक जरूरी बात करना चाहता हूँ, तुम ध्यान देकर सुनना। उसने कहा कि मैं दूसरा विवाह कर रहा हूँ। पति की बात सुनकर पत्नि के पैरों तले की जमीन खिसक जाती है। अरे! आप यह क्या कह रहे हैं, पिया। दूसरे विवाह का कोई कारण तो होगा? क्या में कुल की छोटी हूँ या फिर आपकी सेवा सुश्रुषा मैं ठीक से नहीं कर पाती? पति बोला कि प्रिय तुम उत्तम कुल की हो, सेवा में भी कम नहीं हो लेकिन तुम्हारी कोख से अभी तक हमारे घर में कोई बच्चा नहीं हुआ, इसी कारण से मैं दूसरा विवाह कर रहा हूँ। पति के इतने कठोर वचन सुनकर पत्नी ने शयन कक्ष का दरवाजा बंद कर लिया। कुछ समय पश्चात् उस स्त्री की ननद आती है वह भाभी से किवाड़ खोलने को कहती है। दरवाजे बंद किये जाने का कारण पता चलता है तो वह ननद कहती है कि मेरी बात पर भरोसा करो और किवाड़ खोल दो। अरे भाभी! मैं तुम्हें आशीर्वाद देती हूँ कि आपके यहाँ पुत्र होगा। अब तुम दरवाजा खोल दो मुझे बड़े जोरों की भूख लगी है हम भोजन करेंगे। भाभी दरवाजा खोलती है और अपनी ननद को भोजन परोसती है। स्वर्ण के थाल में भोजन तथा चाँदी के कटोरे में दूध परोसा गया। दोनों ने प्रेम से भोजन किया तत्पश्चात् ननद ने आशीष दी कि भाभी आप नीम की तरह फलो–फूलो तथा दूब की तरह बढ़ो। कुछ समय पश्चात् वह स्त्री गर्भवती हुई। वह लेटे–लेटे कल्पना करने लगी कि मेरे कन्या जन्मी है वह बड़ी हो गई, उसका विवाह हो रहा है। बड़ी धूम–धाम के साथ बारात चली आ रही है। समधी मस्तानी चाल से चल रहा है, दूल्हा हँसता हुआ आ रहा है। विवाह हुआ मेरी बेटी चली गई, घर आँगन सब कुछ खाली हो गया।

फिर उसके मन में दूसरा विचार आता है कि मेरे बेटा जन्मा है। बड़ा हुआ, उसका विवाह हो रहा है, बेटा दूल्हा बना है, बारात सजधज के साथ जा रही है, मेरा घर भरा है। दुनिया में दो खुशी बड़ी मानी गई हैं एक पुत्र जन्म दूसरी पुत्र विवाह की। बेटा–बहू के आने पर घर की खुशियों में कई गुना वृद्धि हो गई। वह सोचती है कि मैं बड़ी भाग्यशाली हूँ जो मेरी कोख ने मेरा मान बढ़ा दिया वरन् मेरे पति तो दूसरा विवाह कर रहे थे।

सोहर

भोर भये भुन्सारे ललन प्यारे हो गये।
सुनो राजा रे महाराजा रे, ल्यायो सोंठ बिस्वार॥
लडुवा बंधाओ, तुम बांधो हम खांय।
ललन प्यारे हो गए॥

एक स्त्री जो सारी रात प्रसव वेदना में तड़पती रही। घर में सभी को मदद के लिए बुलवाया, लेकिन कोई नहीं आया। ईश्वर ने उसकी सुन ली, भोर में ही उसके पुत्र हुआ। अपने नवजात शिशु के आगमन पर वह अपनी तकलीफ भूल गई। पति से कहने लगी कि मेरा लाल हुआ है, तुम बाजार जाओ, विस्वार का सामान ले आओ। तुम लड्डू बनाना, हम खायेंगे। अब हम किसी को क्यों बुलायें? जब मुसीबत में कोई काम नहीं आया, तो अब हम खुशी में भी उन्हें शामिल नहीं करेंगे।

सोहर

गेंऊवा बरन एसी धनियां, घुमड़ पीरें आऊती महराज।
जो तुम चाहो पिया, सासो खों बुलवा दिया महराज॥
तुमने फींची नैयां पैरत की धुतियां, मतायी मोरी ने आहे महराज।
जो तुम चाहो राजा जिठनी बुला दियो महराज।
तुमने तपीं नईयां हिल मिल रसुइया, भौजी मोरी ने आहे महराज॥
जो तुम चाहो पिया, नुनरी बुलाईयो महराज।
तुमने कहरी नइयां हिल मिल के भेंटे, बेन मोरी ने आहे महराज॥
जो तुम चाहो पिया, परोसन बुला लियो महराज।
तुमने दई नईयां चूले की आगी, परोसन मोरी ने आवे महराज॥

एक ईर्ष्यालु एवं स्वार्थी स्त्री का चित्रण है। एक सांवले रंग की स्त्री है, उसे प्रसव पीड़ा होने लगी है, वह बड़ी छटपटा रही है, वह अपने पति से कहती है कि आप इस समय मेरी सासू जी को बुला दो, मुझे बहुत कष्ट हो रहा है। पति कहता है कि मैं उनके पास कौन सा मुँह लेकर जाऊँगा? कभी तुमने उनकी पुत्र वधू होने का कर्त्तव्य नहीं निभाया। आज तक तुमने उनके कपड़े नहीं धोये, कभी कोई काम नहीं किया, वे क्या आयेंगी? इस पर पत्नि कहती है कि मेरी जिठानी को बुला दो। पति कहता है तुमने कभी उनके साथ मिलकर खाना तक नहीं बनाया, तुमने अपने आपको कभी छोटा समझा है, जो वे आयेंगी? अरे! वे बिल्कुल नहीं आयेंगी। वे न आयें तो ननद बाई को ले आओ, पति ने जवाब दिया कि उसके ससुराल जाते समय भी तुमने उससे भेंट नहीं की तो हमारी बहिन क्यों आने लगी?

अन्त में पत्नि ने कहा कि चाहो तो मेरी पड़ोसन को ही बुला दो। देखो भाई! तुमने कभी

पड़ोसिनों से भी बनाकर नहीं चलीं। अरे! आज तक उन्हें कभी अपने चूल्हे की आग तक नहीं दी, इससे मुझे लगता है कि पड़ोसन भी नहीं आयेगी।

सोहर

मोरे उठत कमर धन पीर अब नैयां जीने की।
सुन राजा रे महराजा रे, मोरी सासू को देव बुलाय॥
अब नैयां जीने की............
सुन माता री तोरी बहू बेहाल तुम्हें बुलाउत है।
सुन बेटा रे, रानी बहुआ के बोल-कुबोल करेजे में हन गए॥
सुन माता री, अपने बेटा के खातर बोल बिसर जा री।
सुन रानी री, महरानी री तूने बोले है बोल कुबोल॥
तो वे नैयां आने की............
सुन राजा रे महराज रे मोरी जिठनियां खों देव बुलाय।
सुन भौजी री तोरी देवरनियां बेहाल तुम्हें बुलाउत है॥
सुन लाला रे देवरियां के बोल करेजे में हन गए।
सुन रानी री बोले है बोल कुबोल बे नैयां आने की।
मोरे उठत कमर धन पीर अब नैयां जीने की॥

स्त्री के जीवन में प्रसव पीड़ा बहुत बड़ी पीड़ा होती है। कहते हैं कि प्रसव में स्त्री का दूसरा जन्म होता है, लेकिन प्रसव के पश्चात् जब वह अपने नवजात शिशु के रोने की आवाज सुनती है तो वह प्रसव वेदना को क्षण भर में भूल जाती है, पीड़ा का स्थान ममत्व ले लेता है।

एक स्त्री को प्रसव की पीड़ा हो रही है, वह उस पीड़ा से बेहाल हुई जा रही है, अपने पति से कह रही है कि मुझे प्राणघातक कष्ट हो रहा है, मैं अब नहीं बचूँगी। अरे! जरा सासू जी को बुला दो, अब मैं नहीं बचूँगी। उसका पति अपनी माँ के पास जाता है, उससे कहता है कि तुम्हारी बहू को प्रसव वेदना हो रही है, वह तुम्हें बुला रही है, चलो। सास ने कहा कि मैं तो नहीं जाऊँगी। वह मुझे खरी-खोटी सुना चुकी है, उसकी बोली मुझे कलेजे में तीर की तरह चुभ गई है।

बेटे ने कहा- माँ उसके नहीं तो कम से कम अपने बेटे की खातिर वह सब भूल जा। जब वह नहीं मानी तो पति वापस आ गया, बोला- तुम्हारे बुरे व्यवहार के कारण तुम्हारी सास नहीं आई। सास नहीं आई तो क्या हुआ, तुम मेरी जिठानी को ही बुला लाओ। बेचारा अपनी भाभी के पास गया और बोला- भाभी तुम्हारी देवरानी को प्रसव वेदना हो रही है, उसने तुम्हें बुलवाया है। भाभी ने कहा कि देखो लल्ला उसने मुझे इतनी खरी-खोटी सुना दी है, इतना अपमानित कर दिया है कि उसकी सब बातें मेरे कलेजे में समा गई हैं, मैं तो नहीं जाऊँगी।

सोहर

नौ दस महीना के बीच ललन नौने हो गए।
बाजन लगी आनंद बधैयां सखी गावे सोहरे॥
सात सबद से नैयां ससुर घर बाज रही रे।
मोर पंछी ते सुनखा तो बेगी बुलवाइयो रे॥
मोम खुनखुना को शौक बेगी गढ़वाइयो रे॥
बारा बरस में लौटे पिय प्यारे खुनखुना ले आये रे॥
रानी लै लो अपनो खुनखुना खुन खुनवां हम ल्याये रे।
खुनखुना देव अपनी माई खों बिरन तोरें खेलें रे॥
राजा ने मोरे बारे ने ओली झडूले।
खुनखुना कौन खिलाव रे॥
राजा मोय खुन खुना को शौक।
सोने को गढ़वा लब रे॥

नौ दस माह में उस स्त्री के पुत्र हुआ, चारों तरफ खुशियाँ बिखर पड़ी हैं, बधायें बज रहे हैं, स्त्रियाँ सोहरे गा रही हैं। तप्त स्वर में शहनाई की गूँज सुनाई दे रही है। उस स्त्री ने सुनार को बुलवाया, कहा कि मुझे सोने का खुनखुना बना दो। सुनार ने बना दिया। उसका पति बारह वर्ष बाद लौटा। लौटते में अपनी पत्नि के लिए खुनखुना भी साथ ले आया था। उसने पत्नि से कहा कि देखो रानी मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ? स्त्री ने सुनकर उसे जवाब दिया कि यह तुम अपनी माँ को दे दो, वह अपने छोटे लड़के को खेलने को दे देगी, मेरा कोई छोटा बच्चा तो है नहीं, जो खुनखुना से खेलेगा। हाँ, मुझे जरूर खेलने का शौक था, सो मैंने सोने का खुनखुना बनवा लिया है।

सोहर

हमें पीरा भई राजा, ललन भये महलों में।
चलो चलो री मतायी मोरी, हड़ियां धराव अंगना में॥
अरी मूरख अनाड़ी राजा, कछू ने जानी राजा।
हमखों लजायें का लौं समजांय॥
हड़िया ने कहा पिया, चरुआ कहो अंगना में
चलो चलो री भौजाई तुम, लुड़िया धराव अंगना में
अरी ऐसे मूरख हमारे पिया, कछू नें जानें पिया
हमखों लजायें पिया, का लौं समजाये पिया
लुड़िया नें कब राजा, लडुआ कहो अंगना में

चलो चलियो बहू मोरी, हप्पा बनाव अंगना में
ऐसे मूरख पिया, कछू नें जानें पिया
हमखों लजाये पिया, कां लौ समजांय पिया
हप्पा नें कओ पिया, भात कहो अंगना में
उठ चलियो बेना मोरी, लिखना लिखाव अंगना में
ऐसे मूरख पिया, कछू नईं जानें पिया
हमखों लजायें पिया, कां लौ समजांय पिया
लिखना ने कव पिया, सांतिया कहो अंगना में॥

एक भोले-भाले पति की पत्नि को जब प्रथम पुत्र हुआ उस समय की स्थिति का इस गीत में वर्णन है।

पत्नि ने अपने पति से कहा कि हे स्वामी! मुझे बड़े जोर की पीड़ा हुई थी, उसके पश्चात् हमारा पुत्र हुआ। यह सुनकर पति घबराया हुआ माँ के पास गया। माँ से बोला- माँ जल्दी चलो तुम्हारी बहू को पुत्र हुआ है, तुम चलकर चूल्हे पर हाँडी चढ़ा दो। उसकी बात को सुनकर उसकी पत्नी बोली- तुम बड़े मूर्ख तथा अनाड़ी हो, मुझे तुम्हारी हरकतों से बड़ी लाज आती है, कहाँ तक तुम्हें समझाऊँ? इसे हाँडी नहीं बल्कि 'चरुवा' कहा जाता है। फिर पति अपनी भाभी के पास गया, उनसे बोला कि भाभी जल्दी चलो आँगन में लुड़िया रखवा दो। बहू ने सुना तो माथा पीट लिया। अरे मूर्ख! मैं तुम्हें हर समय कहाँ तक समझाती रहूँगी कि लुड़िया नहीं 'लडुवा' कहा जाता है। इसी तरह उसका पति बहू तथा बहन के पास जाता है।

चरुवा

सासो चरुवा चढ़ाव जरा धीरे-धीरे
जरा होले होले ललन रोय रोय
जिठनी चरुआ चढ़ाव जरा धीरे-धीरे
जरा होले होले ललन रोय रोय
जच्चा तो मोरी शरद पूनम का चांद
महलों के नीचे-नीचे सासो फिरत हैं
लिये सब चरुये का समान
महलों के नीचे नीचे जिठनी फिरत है
लिए सब चरुये को समान
महलों के नीचे नीचे बहुआ फिरत है
लिये सब भोजन का समान
महलों के नीचे नीचे ननदी फिरत है
लिये सब सांतिये का समान

महलों के नीचे नीचे देवर फिरत है
लिये सब बांसुरी का समान

ऊँची अटारी पर कागा (कौवा) बोल रहा है, मेरा मन डाँवाडोल हो रहा है, क्योंकि मेरा बेटा रो रहा है। मेरा बेटा हुआ है, उसका चरुआ चढ़ाने को मेरी सास आयेगी, उसमें सासू को नेग मिलेगा। उनका नाती होना तो सबसे बड़ी उपलब्धि है। सासू चरुआ जरा धीरे-धीरे चढ़ाना, मेरा लाल जरा सी आहट में उठ जायेगा और रोने लगेगा। जिठानी तुम भी चरुवा का नेग धीरे-धीरे करवाना। महल के नीचे सासू जी घूम रही हैं, ये अपने हाथ में चरुवे का सामान लिए हैं। जिठानी भी घूम रही हैं, महलों के नीचे ही बहू घूम रही है, वह भोजन की सामग्री लिये है। वहीं पर ननद भी है, वह साँतिया लिखने का सामान लेकर आई है। महल के नीचे ही मेरे देवर जी बाँसुरी का सामान लिये घूम रहे हैं।

बधावा

मोरी भौजी के लाला भये.................
नंदलाला भये मैंने खबर जो पराई आधी रात।
अबे मोरे को सुनरा के जैहे, बहुत मोरे को सुनरा के जैहे॥
उठो मोरे राजा खोलो कुची तारे ऐचो मुहरें पचास।
अबे मोरे सुनरा के जैहो, बहुत मोरे को सुनरा के जैहो॥
काहे के चार चूरा छिगुनियां काहे की करधुनियां॥
सुन्ने के चार चूरा छिगुनियां सौ की करधुनियां॥
काहे की व टोपी झंगुलिया के सौ लगी फुंदरियां।
हरे कसब की टोपी झंगुलिया सोरा सौ लागीं फुंदरियां॥

एक ननद को आधी रात के समय खबर मिली है कि उसकी भाभी के पुत्र हुआ है। वह बहुत खुश है। मैं सुनार के यहाँ जाऊँगी, गहने बनवाऊँगी। वह अपने पति से कहती है कि मुझे बड़ी खुशी मिली है। आप तिजोरी खोलिये और उसमें से पचास मुहरें निकालिये, मैं सुनार के यहाँ जाऊँगी, चार चूड़ा नवजात को सोने के बनवाऊँगी। अँगूठी भी बनवाना है, उसको छोटी सी करधन भी बनवाऊँगी। उसके वस्त्र, झबला, टोपी जिसमें रंग-बिरंगे फुंदने लगे हों, बनवाना है। इस गीत में बधाये में लाने वाली चीजों का वर्णन है जो कि ननद लाती है। उसे कितनी खुशी हो रही है, उस खुशी में अपना घर ही लुटा देना चाहती है।

झूला

तुम तो सो जा वारे बीर,
बीर की बलैयें लैंहों जमना के तीर
तुम तो...........

बर से बांदो पालना, पीपर से बांदी डोर
आऊत जात में झौका दें हों, कबऊं ने टूटे डोर
तुम तो...........
ताती ताती खीर बनाई,
ओई में डारो घी
दोई कौर तुम जे ले भैया,
ओई में ठंडो जी
तुम तो सोजा वारे बीर॥

मेरे बेटे! मेरे भैया! तुम सो जाओ। मेरे भैया की बलायें यमुना जी के किनारे लूँगी। बरगद के पेड़ से झूला बाँधा गया तथा पीपल के पेड़ से डोर बाँधी गई। आते-जाते मैं झोंका देती रहूँगी, जिससे कभी भी झूलने का क्रम न टूटे। गर्म-गर्म खीर बनी, जिसमें घी डाला गया, बेटे इसे दो कौर खा लो तो उससे तुम्हारा मन ठीक हो जायेगा।

कुआँ पूजन

हम पैरें मूंगन की माला
हमारी कोऊ गगरी उतारो
कहां गये मोरे सैयां गुसैयां
कहां गये मोरे बारे लला
हमारी कोऊ.............
एक हांत मोरी गगरी उतारो
दूजे से घूंघट समारो
हमारी कोऊ.........
एक हांत मोरी गगरी समारो
दूजे से ललना समारो
हमारी कोऊ........
हम पैरें मूंगन की माला
हमारी कोऊ गगरी उतारो॥

बहू कुआँ पूजन के पश्चात् घर लौटी, अपने सिर पर कलश रखे हुए है। वह कहती है कि मैं अपने गले में मूँगों की माला पहने हूँ, कोई आकर मेरे सिर की गागर उतार दो। अरे! मेरे पति कहाँ चले गये? मेरे देवर भी नहीं हैं? देवर से कहो कि एक हाथ से मेरी गागर उतारें तथा दूसरे हाथ से मेरा घूँघट ठीक कर दें। मैं तो मूँगे की माला पहने हुए हूँ। पति देव से कहना कि वे आकर मेरी गागर उतारें, एक हाथ से गागर उतार दें तथा दूसरे हाथ से मेरे लाल को सँभालें। मैं तो मूँगों की माला पहने हुए हूँ।

कुआँ पूजन

तुम सांचऊं सुघर पनहार
कुअला उमंग परौ॥
कै तुम गोरी धना सांचे की ढारीं
कै तोय गढ़े री सुनार
कुअला......
ने गोरी धना सांचे की ढारी
ने हमें गढ़े री सुनार
माई बाप नें जनम दियो है
रूप दियो करतार
कुअला उमंग परौ॥

तुम तो बड़ी सच्ची सुघड़ पनिहारी हो, तुम कुएँ पर पानी भरने आईं तो कुआँ आप ही भर गया। तुम्हारा रूप भी बड़ा आकर्षक है, क्या तुम्हें किसी साँचे में ढाला गया है? या फिर तुम्हें किसी चतुर स्वर्णकार ने गढ़ा है? न तो मैं साँचे में ढालकर बनाई गई हूँ, और न ही मुझे किसी स्वर्णकार ने गढ़ा है। मुझे मेरे माँ–बाप ने जन्म दिया है, तथा मुझे यह रूप ईश्वर ने प्रदान किया है।

मुण्डन

झालर को जो है खेत
झालर मोरी पाउनी
ये झालर के कारने मैंने सहे हैं दु:ख अनेक
झालर मोरी......
ये झालर के कारने मैंने तजे हैं अम्मा इमलिया बेर
झालर मोरी......
ये झालर के कारने मैंने सहे हैं बोल कुबोल
झालर मोरी पाउनी॥

यह तो झालर का खेत है, झालर पाउनी होती है। इस झालर के पीछे मैंने बड़े दुख उठाये। प्रसव जैसी पीड़ा को सहन किया है। इसके लिए मैंने इतने दिनों से आम, इमली तथा बेरों का त्याग किया है। इसके कारण मैंने घर के कई लोगों की अपमानजनक बातें सुनी हैं। झालर तो पाउनी है।

मुण्डन

मैं काहो रचों जेवरना, झालर मोरी पावनी
कहना झालर उपजियो, कौनों पड़े हैं मिलान

कुखियन झालर उपजियो, उलियन पड़े हैं मिलान
झालर जबई मुड़ाइयो आजी घर होंय, आजुल घर होंय
झालर जबई मुड़ाइयो माता घर होंय, बाबुल घर होंय॥
मैं काहो रचों जेवरना, झालर मोरी पावनी॥

झालर अर्थात् नवजात शिशु के सिर के बाल जब तक मुण्डन न हुआ हो तब तक झालर कहे जाते हैं। शिशु की झालर तो पाहुंनी जैसी है? कभी न कभी तो उसे मुंडना ही है। झालर कहाँ से आई और कहाँ उसे मूंड़ा गया? झालर माता की कोख से ही शिशु के सिर पर आती है और उस बालक का मुंडन होने पर उसको गोदी में बैठाकर नाई द्वारा झालर उतारी जाती है। तो कोख से गोदी तक झालर का समय होता है। मैं आपके बालक की झालर तभी उतराऊँगी, जब उसके बाबा, दादी, माँ, पिता घर में होंगे।

जनेऊ

निकरो बाहर माता जोगी ठांड़े हैं द्वार
बीच गली में ठांड़े जोगी, अड़ गये बीच द्वार
थार भरकें मोती ले लये, आंचल भर लये लाल।
ने चइये माता थार भर मोती, ने आंचल भरकें लाल
तेरे मुख की आज्ञा पा लऊं, विद्या पड़ लऊं जाय।
कासीपुरी में शाला खुली है, विद्या पड़ लऊं जाय
जनम तुमीं ने दे दीना, और दूध पिलाओ माय
कर्ज तुमारो बढ़ रहो है, ऋन चुका दऊं जाय।
जोगी ठांड़े हैं द्वार॥

यज्ञोपवीत एक महत्त्वपूर्ण संस्कार है। जिसका यज्ञोपवीत होना होता है उसका मुंडन कराया जाता है। गेरुवे वस्त्र पहनाकर खड़ाऊँ तथा लकड़ी लेकर वह अपने परिजनों से भिक्षा माँगता है। घर की माता, दादी, चाची, बहिनें भिक्षु को भिक्षा देती हैं। चूँकि पहले विद्यारंभ के लिए घर से गुरू के आश्रम में जाना पड़ता था, इसलिए वह अब प्रतीक रूप में किया जाता है। बुन्देलखण्ड में यज्ञोपवीत वाले को 'बरुवा' कहा जाता है। बरुवा संन्यासी बनकर द्वार पर खड़ा है 'भिक्षा देहि' की आवाज लगाता है। माता उसे थाली में मोती भरकर लाती है। उसे अपने गले लगाती है।

वह कहता है कि हे माता! मुझे आपके हीरे-मोती नहीं चाहिए, ना ही आप मुझे स्नेह से रोकें, मैं तो आपसे गुरू आश्रम में विद्यारंभ को जाने की आज्ञा लेने आया हूँ। आप अनुमति दें तो मैं काशी जाऊँ और वहाँ पढ़ूँ। आपने मुझे जन्म दिया है, दूध पिलाकर बड़ा किया है, आपका मुझ पर ऋण है, मैं पढ़कर उससे मुक्त हो जाऊँ।

मातृका पूजन

सरग नसेनी पाठ की जे चढ़ नेवतों देंय।
तुम मोरें नेवते गनेश देव, तुम मोरें आइयो।
तुम मोरे नेवते महादेव पार्वती, तुम मोरें आइयो।
तुम मोरें नेवते पवनसुत, तुम मोरें आइयो।
तुम मोरें नेवते कुलदेवता, तुम मोरें आइयो।
तुम मोरें नेवती कुलदेवी, तुम मोरें आइयो।
तुम मोरें नेवतें दूलादेव, तुम मोरें आइयो।
तुम मोरें नेवतें हरदौल बाबा, तुम मोरे आइयो।
तुम मोरें नेवते बड़े जेठे, तुम मोरें आइयो।

विवाह का निमंत्रण इष्टदेव, कुलदेव, गौरी, गणेश, दूल्हादेव, हरदौल, ग्रामदेवता, कुल के बड़े जेठे, भूले-बिसरे आदि सभी को दिया जाता है। आप सब इस कार्य में आमंत्रित हैं, आपके बिना यह कार्य कैसे सम्पन्न होगा? आप आयें और विवाह में यथोचित सहयोग दें। हमारे निमंत्रण में जो भी भूले-बिसरे हों, वे भी आमंत्रित हैं। यह आमंत्रण पाट की नसेनी पर जाकर दिया जाता है क्योंकि स्वर्ग के देवताओं के लिए तो पाट (कच्चा धागा) रूपी नसेनी ही लोक मानस का साधन होगा।

हल्दी

जनक लली खों हरदी चढ़त है, केशर खुशबू आय मोरे लाल
सुरहिन गऊ के गोबर मंगैयो, ढिगधर आंगन लिपाओ मोरे लाल।
मोतिन के वे चौक पुरैयो, चंदन पटली डराव मोरे लाल।
रेशम के वे पांवड़े डरैयो, जेपर दियल बिठाव मोरे लाल।
सोने के वे कलश धरैयो, इमरत अरग दिवाओ मोरे लाल।
हरदी को थार महरानी लीने, धिया री खों हरदी चढ़ैयो मोरे लाल।
हरदी को थार चाची रानी लीनी, धिया री खों हरदी चढ़ैयो मोरे लाल।

सीताजी को हल्दी चढ़ाई जा रही है। सात या पाँच सुहागिनें मिलकर उन्हें हल्दी चढ़ा रही हैं। हल्दी को पानी में घोलते समय केशर डाली गई है, जिसकी खुशबू वहाँ फैल रही है। बुन्देलखण्ड में कोई भी मांगलिक कार्य करने के पूर्व उस स्थान को जहाँ यह कार्य सम्पन्न होगा, पहले छुई से चारों तरफ ढिग दी जाती है, फिर गोबर से लिपाई की जाती है, तदुपरान्त चौक पूरा जाता है। जनकजी के घर में भी वह सब हुआ, आँगन में पहले सुरहिन गऊ के गोबर से लिपाई की गई, फिर मोतियों के चौक पूरे गये, चौक के ऊपर चंदन की पटली डाली गई उस पर रेशम का पांवड़ा डाला गया, स्वर्ण कलश रखा गया और उस पर दीपक स्थापित किया गया। फिर

अमृत का अरगा दिया गया। हल्दी की थाली सियाजी की माँ लायीं, सबने मिलकर अपनी लाड़ली सिया को हल्दी चढ़ा दी।

मण्डपाच्छादन

काधों ले धोरिया, कांधो ले पीरिया।
भाई जाई जोरें, दोऊ हांत हो।
जो तू धोरिया कांधो लैहे, पीरिया कांधो लैहे
देहों छिपा भोई पार हो।
मड़दावरी खों ल्यावे नदिया पाहै।
नेहा परत है, कैसें मैं ल्याहो मड़दावरी।
नदिया हो नाको, नेहा हो बाको
ल्याहों मड़दावरी हो।
भैन्या आनंद रहे संगै हो जैयो।
पाँच-पंच तुम संगे हो जैयो॥

गीत में एक बहिन भाई से अनुरोध करती है कि मड़दावरी अर्थात् मंडप की लकड़ी लेने किस प्रकार जाओगे ? भाई जब तुम गाड़ी में जाओ तो उसमें लीलिया एवं पीलिया बैल जोतोगे। रास्ते में नदी है, बहिन का स्नेह यह कहता है कि भाई पाँच लोगों के साथ जायें।

मण्डप

हाँत मण्डप में बेटी के पीले किये
माता पिता रोउन लगे।
आते याद हमें वा दिन की,
विनय करती माता देवन की।
किरपा हमपै हो गई उनकी,
उनकी मरजी सें बेटी ने जनम लियो।
माता पिता रोउन लगे।
घर बारी को पाठ बिठायो।
एक लाल गोदी में आयो।
जोड़ी लख मन में सुख पायो।
दोई खेलत से आँगन में मौज भरे
माता पिता रोउन लगे।

आज जब बेटी के हाथ पीले किये तो माँ-बाप को उस दिन की याद आ गई, जब माँ-

बाप ने देवी-देवताओं की मनोकामना की और उनकी कृपा से कन्या का जन्म हुआ। आज एक पुत्र भी जन्मा, मन में बड़ा सुख पाया। दोनों हँसते-खेलते थे। बेटी बड़ी हुई तो पराये घर भेज रहे हैं। माँ-बाप दोनों की आँखों में आँसू हैं, कैसी सजीव अनुभूति है?

मागरमाटी

कौना के अंगना बीद है पसरी,
कौना को लाल ब्याव हो।
ससुरा के अंगना में बीद है पसरी,
लाला के होत बियाव हो।
टेरो ओ सुगर नउनियां खों,
जो नगर बुलौवा देव हो।
सात सुहागन मिल, माटी खों जाव हो।
रंगी टुकनियाँ कुदारी हो,
सात सुहागन के माथे टींके
भर दीनी अरे ओली हो।
सात सुहागन मिल पौंचीं खदनियां,
विनती करें कर जोर हो।
चंदन चाउर और फूल चढ़ावें,
गुर-घी के भोग लगाउत हो।
तुमखों माता हम न्यौतन आये,
चलियो अंगना बीच हो।
माता तुम बिन कारज नें हुइयें,
हमरे घर पसरी है बीद हो।
लयान कें माटी अंगन बिच डारी,
पानीं सें दई है सींच हो।
सात सुहागन मिल सानवे बैठीं,
बीद तो दई है पसार हो॥

किसके आँगन में बींद फैली है? किसके बेटे का विवाह हो रहा है? ससुर के आँगन में बींद फैली है, उनके बेटे का विवाह हो रहा है। जल्दी से जाकर किसी जानकार नाइन को बुला लाओ, उससे सारे नगर में बुलौवा देने को कह दो। सात सुहागिन स्त्रियाँ मिलकर मागरमाटी लेने जा रही हैं। वे अपने-अपने हाथों में बाँस की रंगबिरंगी टोकनियाँ एवं कुदाल लिए हैं। सातों सुहागिनों के माथे पर टीके लगवाये गये तथा उनकी ओली बतासों से भर दी गई। वे सातों सुहागिनें मंगल गीत गाती हुई खदान पर पहुँच गईं। हाथ जोड़कर वहाँ पूजन किया। चंदन,

चावल, हल्दी, गुड़, घी का भोग लगाया। हे धरती माता! हम आपको न्यौतने आये हैं, आपके बिना विवाह रूपी मांगलिक कार्य कैसे पूरा होगा? न्यौता देकर मिट्टी अपनी-अपनी टोकरियों में भरकर लाईं, उसमें पानी डालकर बींद पसार दी।

मागरमाटी

ऊंगत में सूरज नीके लागें,
मूंदत में लाल दिखांय मोरे लाल।
जे बिटियां मैंने कैसें पालीं,
कच्चे से दूध पिलाये मोरे लाल।
जे बिटियां मोरे काम नें आईं,
आये सजन लै जायें मोरे लाल।
जे लरका मैंने कैसें पाले,
गरी छुवारे सुखाये मोरे लाल।
जे लरका मोरे काम ने आये,
आवै बहू लै जायें मोरे लाल।
जे बछड़ा मैंने कैसें पालें,
हरी-हरी दूब सुवाई मोरे लाल।
जे बछड़ा मोरे काम नें आये,
आवें गाहक लै जायें मोरे लाल॥
ऊंगत में सूरज नीके लागें,
मूंदत में लाल दिखांय मोरे लाल॥

उदित हुआ सूर्य बड़ा सुहावना लगता है। अस्त होते समय लाल रंग का दिखाई देने लगता है। मैंने अपनी बेटी को बड़े नाजों से पाला-पोसा, दूध पिलाया, बड़ा किया लेकिन ये मेरे किसी काम न आई। मेरे समधी आये और मेरी बेटी को ब्याह ले गये। ये लड़के भी मेरे किसी काम न आये, इनको मैंने नारियल, छुआरे खिलाकर बड़ा किया और जैसे ही उनका विवाह किया, बहुएँ आयीं वे उन्हें अलग करके ले गईं। गाय के बछड़ों को मैंने बड़ी मेहनत से पाला, हरी-हरी घास खिलाई और जब ये बड़े हुए तो इन्हें ग्राहक खरीद कर ले गये। यह संसार का कैसा नियम है?

ऊबनी

चंदन की झंझरी भरीं, मोती जड़ी हैं किबरियां।
झमक अटरिये बेटी चढ़ गई, बाबुल सोहे के जागो।

ने हम सोहें ने जागहें, बेटी चिन्ता है तुमारी।
चिन्ता हमारी बाबुल जिन करो, अच्छी लगुने संजोव।
लगन संजोव बिनती करो, तुमरी बेटी कुंवारी।
विनती तो बेटी बे करें, जिनके दोई कुल नेंचे।
हम काहे बिनती करें, हमरे दोई कुल ऊँचे।
झमक अटरिये बेटी चढ़ गई, काकुल सोहे के जागो।
ने हम सोंहे ने हम जागें, बन्नी चिन्ता तुमारी।
चिन्ता हमारी काकुल जिन करो, अच्छे पोठे संजोव।
पोठे संजोव बिनती करो, तुमरी भतीजी कुंवारी।
विनती तो बेटी बे करें, जिनके दोई कुल नेंचे।
हम काहे विनती करें, हमरे दोई कुल ऊँचे।

एक घर में चंदन की लकड़ी के कलात्मक दरवाजे बने हैं, उसके किवाड़ों में हीरा-मोती जड़े हैं। उस घर की बेटी सीढ़ियाँ चढ़कर पिता के शयन कक्ष में जाती है उनसे पूछती है कि हे पिता महाराज! आप सोते हैं कि जागते हैं? पिता कहता है कि बेटी! न तो मैं सो रहा हूँ और न जाग रहा हूँ। अरे! जिसके घर में सयानी बेटी होगी, उसे नींद कैसे आ सकती है? मुझे भी बस तेरे विवाह की चिन्ता लगी रहती है। बेटी कहती है कि- हे पिता जी! आप चिन्ता छोड़िये, मेरे लग्न की तैयारी करिये, लग्न होने पर विवाह करिये, अपने समधी की विनती करिये, क्योंकि आपकी बेटी क्वांरी है उसे वे विवाह कर ले जायें। पिता कहता है कि बेटी विनती तो वे करते हैं जो कुल के हीन होते हैं, हम तो उच्च कुल के हैं। इसी तरह से अपने काका, बाबा से बेटी कहती है।

बन्ना

बने दूला छब देखो भगवान की,
दुल्हन बनी सिया जानकी।
ठांड़े राजा जनक के द्वार
संग में चारहु राजकुमार
दर्शन करते हैं नर नार,
धूम छाई है डंका निशान की,
दुल्हन बनी ....
पंडत ठांड़े सगुन बिचारें,
कोऊ-कोऊ मुख सें वेद उचारें,
सखियां करती हैं न्यौछारें,
माया लुट गई सब हीरा के खान की,

दुल्हन बनी ....
सरपे कीट मुकट के धारे,
बागो बारंबार संमारें,
हो रयी फूलन की बोछारें,
शोभा बरनी न जाये धनुषबाण की,
दुल्हन बनी ....
सखियां फूलीं नहीं समातीं,
दशरथ जी खों गारीं गातीं,
गारीं गातीं हैं गीता और ग्यान की,
दुल्हन बनी ....
ठांड़े जनक दोई कर जोर,
सुनियों-सुनियों अवध किशोर,
कृपा करो हमारी ओर,
मोपे खातिर भई ने जलपान की,
दुल्हन बनी ....
बन्नी सिया बना रगबीर,
कैसे सुन्दर बने शरीर,
ये तो शोभा है सारे जहान की,
दुल्हन बनी ....
जैसे दूला अवध बिहारी,
जैसई दुल्हन जनक दुलारी,
गाऊ तन मन सें बलहारी,
मनसा पूरन भई सबके अरमान की,
दुल्हन बनी ....

श्रीरामजी का दूल्हा वाला रूप देखकर मैं इतना भाव-विभोर हो गया कि उनकी छवि का वर्णन मैं कैसे करूँ? मेरे पास कोई शब्द नहीं हैं। राजा जनक के द्वार पर रामजी दूल्हा बनकर आये। जनकदुलारी सियाजी दुल्हन बनी हुई हैं। उनके दर्शन करने नगर के नर-नारियों की भीड़ उमड़ पड़ी है। श्रीराम चारों भाईयों- लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के साथ दूल्हा के वेष में महाराज जनकजी के द्वार पर उपस्थित हैं। चारों कुमार दूल्हा एवं जनकजी की चार कुमारियाँ दुल्हन बनी हैं, सारे नगर में धूम मची है। द्वारचार हो रहा है, पंडित वेदों के मंत्र पढ़ रहे हैं। जनकपुर की नारियाँ गीत गा रही हैं।

गीतों में दूल्हा-दुल्हन का वर्णन है। नेग में हीरा-मोती दिये जा रहे हैं। श्रीराम के सिर पर किरीट-मुकुट सुशोभित हो रहा है। वे दूल्हा बने हैं इसलिए बागा पहने हुए हैं, उसे बार-बार

संभाल रहे हैं। उस समय उनके ऊपर चारों ओर से पुष्प वृष्टि हो रही है। रामजी के धनुष-बाण की शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता है। सखियाँ उनके रूप को देखकर अति प्रसन्न हो रही हैं, वे गारी गा रहीं हैं। सखियाँ समधी दशरथ को गारी गा रहीं हैं। इतने में विदेहराज जनक आये और दशरथजी के समक्ष हाथ जोड़कर खड़े हुए और कहने लगे- प्रभु! मैंने आपकी खातिरदारी नहीं की, आपकी जलपान की व्यवस्था नहीं कर सका, क्षमा प्रार्थी हूँ। दूल्हा प्रभु राम और दुल्हन जानकीजी का रूप इतना सुन्दर है, ऐसा प्रतीत हो रहा है कि जैसे सारे संसार की शोभा यहीं आ गई हो। श्रीराम का विवाह होने पर सारे संसार की इच्छा पूरी हो गई है।

बनरा

बना रस गैंदिया ने मारो, हमखों लाग जैहे रे
हमखों लाग जैहे रे, गगर सिर फूट जैहे रे
गगर सिर फूट जैहे रे, चुनर ढिंग भींज जैहे रे
चुनर ढिंग भींज जैहे रे, सास मोरी रूठ जैहे रे
सास मोरी रूठ जैहे रे, रसुइया छूट जैहे रे
रसुइया छूट जैहे रे, बलम मोरो रूठ जैहे रे
बलम मोरो रूठ जैहे रे, सिजरिया छूट जैहे रे
बना रस गैंदिया ने मारो, हमखों लाग जैहे रे॥

हे दूल्हे राजा! मुझे गेंदे का फूल क्यों मारते हो? मुझे उसकी चोट लग जायेगी, उसकी चोट से मेरे सिर की गागर फूट जायेगी। गागर फूटने से उसके पानी से मेरी चूनर ही भीग जायेगी। मुझे इस तरह देखकर मेरी सास मुझसे नाराज हो जायेंगी। वे मुझे रसोई में न आने देंगी जिससे मेरे पति मुझसे रूठेंगे और वे मुझे अपनी सेज पर नहीं आने देंगे। इसलिए मुझे गेंदे के फूल की चोट न मारो।

बनरा

मोरे अबध नरेश कुमार, राम बनरा बन आये री।
बना के माथे मोरें सोहे, कलियों में अतर भराये री
बना के कानों कुंडल सोहे, मुतियों अतर भराये री
बना के गरे में गोपें सोहे, गुंजों अतर भराये री।
मोरे अबध नरेश कुमार, राम बनरा बन आये री॥

आज मेरे अवध कुमार श्रीराम दूल्हा बनकर आये हैं। उनके माथे पर मौर बाँधा है उस मौर की कलियों में इत्र की महक है। उनके कानों के कुण्डलों में भी इत्र लगा है। गले में पहनी गोप में भी खुशबू आ रही है।

बनरा

मोरो पूनम कैसो चंदा, बना मोरो जग उजयारो री
मोरी चम्पै कैसी कलियां, बना मोरो छिटकत आबे री
मोरी मुतियन कैसी लड़ियां, बना मोरो लटकत आबे री
बना की माई देखे बाट, बना मोरो कब घर आये री
मोरो पूनम कैसो चंदा, बना मोरो जग उजयारो री॥

मेरे पूर्णिमा के चाँद जैसी सूरत वाला दूल्हा अपने ओज से सबको प्रकाशित कर रहा है। वह मस्तानी चाल से चला आ रहा है उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि चंपे की कलियाँ छिटकी हों। उसकी मोहनी सूरत मोती की लड़ियों जैसी लगती है। उसकी माँ उसकी प्रतीक्षा कर रही हैं कि मेरा बेटा कब तक आता है ?

बनरी

कहनां कटेंहों बाबुल जे पंच खंभा,
कहनां कटेंहों हरे बांस भलें जू।
बागों कटेंहों बेटी जे पंचखंभा,
बगीचें कटेंहों हरे बांस भलें जू।
कहनां गड़ेहों बाबुल जे पंचखंभा,
कहना गड़ेहों हरे बांस भलें जू।
मड़वा गड़ेहों बेटी जे पंचखंभा,
द्वारे गड़ेहों हरें बांस भलें जू।
इड़ियन-छिड़ियन मोरी उतरी लड़नदे,
सूरज भये हैं मलीन भलें जू।
काहें खों बेटी मोरी दोई हांत जोरें,
काहे खों सिरहु नवायं भलें जू।
सूरज खों बाबुल दोई हांत जोरे,
पंचों खों सिरहु नवायं भलें जू।
एक ओर बैठे मोरी माई के मायके,
दूजी ओर बाबुल गोत भलें जू।
एक ओर बैठे मोरे सजना हजारी,
बाबुल की च्यौ दाव भलें जू।
काहो लये बैठे तोरे माई के मायके
काहो लये बाबुल गोत भलें जू।

काहो लये बैठे तोरे सजना हजारी
बाबुल की च्यौ दाव भलें जू।

विवाह के मंडप के लिए पाँच खंभ कहाँ से काटे जायेंगे, कहाँ से हरे बाँस मंडप में छाने के लिए आयेंगे ? बाग से पचखंभ तथा बागीचों से हरे बाँस कटकर आयेंगे ? ये दोनों चीजें किस जगह गाड़ी जायेंगी ? मंडप में पाँच खंभ तथा द्वार पर हरे बाँस गाड़े जायेंगे। विवाह का मंडप सजकर तैयार हुआ। बारात आ गई, चढ़ाव के लिए कन्या को बुलाया जाता है। कन्या को सजाकर उसकी सखियाँ मंडप के नीचे ला रही हैं। जैसे वह लाड़ली सजधज कर सीढ़ियों से उतरकर आती है, तो उसके रूप सौंदर्य से सूर्य भी मलिन पड़ गया। कन्या अपने दोनों हाथ जोड़कर सिर झुकाकर आ रही है। वह दोनों हाथ किसके लिए जोड़े हुए है तथा सिर नीचा करके क्यों आ रही है ? सूर्य देव को वह हाथ जोड़ती है तथा मंडप में बैठे लोगों को देखकर सिर झुकाकर आ रही है। मंडप में एक तरफ कन्या के मामा पक्ष के लोग, एक तरफ पितृपक्ष तथा सामने बाराती और आगे दूल्हा शर्माता हुआ बैठा है। मामा पक्ष, पिता पक्ष, बाराती तथा दूल्हा यहाँ किस प्रयोजन से बैठे हैं ?

बारात निकासी

इन गलियों होंके ल्यइयो री, रघुनाथ बना खों।
राम जू खों सोहे केसरिया बागो,
लछमन खों सोहे लाल री
रघुनाथ बना खों।
इन गलियों होके ल्यइयो री, रघुनाथ बना खों।

बुन्देलखण्ड में दूल्हे को राम या कृष्ण की उपमा दी जाती है। उक्त गीत में भी राम के दूल्हा बने होने का वर्णन है। मेरे बन्ना श्रीराम को इन्हीं गलियों से होकर लाना। रामजी को केसरिया रंग का बागा बहुत अच्छा लग रहा है। लक्ष्मण जी को लाल रंग का बागा अच्छा लग रहा है।

विवाह

रंग महल में दियला जरत है,
दियल जरै सारी रात।
सोउत में माता झमक उठ बैठी,
धिया है ब्याहुन जोग।
देश निकर कें स्वामी धिया वर खोजों,
धिया भई है ब्याहुन जोग।

नीरे गाँव ढूंढ़ो दूर गांव ढूंढ़ो
ढूंढ़ो शिहर गुजरात।
कऊं नें मिले तोरी धिया वर सुन्दर,
तोरी धिया रहै कुँवारी।
माता कहै मैं कच्छ ब्याहों,
पिता कहे सिरदार।
भइया कहै मोरे मन में आवै
बैन ब्याहों पिराग।
चढ़कें मोरी बैना बैठे तखत पै,
उतर कें गंगा अनाय॥

जिस किसी के घर में बेटी सयानी हो जाय उसका विवाह न हो तो माँ–बाप की नींद–चैन सभी जाते रहते हैं। उक्त गीत में बेटी के विवाह संबंधी परामर्श का सजीव चित्रण है– किसी के महल में दिया जलता है वह सारी रात जलता रहता है क्योंकि जब सोने वालों की आँखों में नींद ही न आयेगी तो फिर दिया के बुझाने का प्रश्न ही नहीं उठता। उसी घर में कन्या की माँ अचानक उठ बैठती है और अपने पति से कहती हैं कि हमारी बेटी ब्याह योग्य हो गई है, सो हे पतिदेव! आप शीघ्र ही बेटी के लिए सुयोग्य वर की तलाश करें। लड़की का पिता कहता है, कि हे प्रिये! मैंने पास में, दूर में सभी जगह तलाश किया, यहाँ तक कि गुजरात शहर में भी देखा लेकिन हमारी बेटी के लायक कोई वर नहीं मिला। अब तो ऐसा लगता है कि जैसे हमारी बेटी कुँवारी ही रहेगी। दोनों में विचार–विमर्श चल रहा है। माँ कहती है कि मैं बेटी को कच्छ में ब्याहूँगी, पिता कहते हैं कि मैं पंजाब में अपनी बेटी का ब्याह करूँगा। इतने में भाई उठ जाता है वह कहता है कि मेरा परामर्श यह है कि मैं अपनी बहिन को प्रयाग में ब्याहूँ। जिससे वह तख्त से उतरकर गंगा जी में स्नान करेगी।

विवाह

जेके घरे सियानी है बेटी, बाप मताई खों सोच मोरे लाल।
माता कहे कुअला गिर जेंहों, बाबुल कहे विष खांय मोरे लाल।
वीरन कहे जुगिया बन जेंहों, भौंजी मायकें जाय मोरे लाल।
नें माता तुम कुअलों में गिरियो, ने बाबुल विष खाव मोरे लाल।
ने वीरन तुम जुगिया बनियो, ने भौजी मायकें जाव मोरे लाल।
सजन सें आकें विनती कर लइयो, हरदी के टीका लगइयो मोरे लाल।

कैसा सजीव व मार्मिक प्रसंग है– किसी घर में बेटी सयानी हो गई है। माँ–बाप परेशान हैं, सुयोग्य वर नहीं मिल रहा। पूरे परिवार की चिन्ता का यह विषय है। माँ कहती है कि मैं कुँए

में जा गिरूँगी, पिता कहते हैं कि मैं विषपान कर लूँगा। भाई का कथन है कि मैं घरबार छोड़कर जोगी बन जाऊँगा, भाभी कहती है कि मैं मायके चली जाऊँगी। इन सबके विचार सुनकर कन्या कहती है कि माँ न तुम कुँए में गिरना, न ही पिता विष खायें, भैया जोगी न बनें, भाभी को भी मायके जाने की आवश्यकता नहीं है। आप लोग तो जहाँ मेरा संबंध कर रहे हैं उनसे विनय कर लेना और मुझे सूखी हल्दी का टीका लगाकर विदा कर देना।

विवाह

मोरे आंगन में चंदन के बिरछा, कोहल बसेरो लेय भलेंजू।
उठो मोरी आजुल उठो मोरी आजी, कोहल बचन सुन लेव भलेंजू।
जिन पर रइये बेटी धिया कुँवारी, उन घर काहे की नींद भलेंजू।
उठो मोरे बाबुल उठो मोरी माता, कोहल बचन सुन लेव भलेंजू।
जिन घर रइये बेटी धिया कुँवारी, उन घर काहे की नींद भलेंजू,
उठो मोरे भैया उठो मोरी भौजी, कोहल बचन सुन लेव भलेंजू।
जिनके घर बिन्नां धिया कुँवारी, उन घर काहे की नींद भलेंजू॥

यह बात सर्वविदित है कि जिस घर में बेटी सयानी हो जाय और उसका विवाह न हुआ हो तो उसके घर वालों की नींद ही जाती रहती है। उक्त गीत में भी यही चित्रण है– मेरे आँगन में चंदन का वृक्ष है, उस पर कोयल निवास करती है। सुबह का समय है, कोयल अपनी मधुर आवाज में कुहुक रही है। बेटी उसे सुनकर अपने दादा–दादी के पास जाकर कहती है कि आप लोग चलकर देखें, कोयल क्या कह रही है ? दादा–दादी ने कहा कि बेटी जिनके घर में सयानी बेटी हो उन्हें नीद कहाँ आयेगी ? इसी तरह से माता–पिता एवं भैया–भाभी का जवाब होता है।

विवाह

मोरी लाड़ी बनरी नादान, अजुल जू सें अरज करै।
मोरी ऐसे घरें दियो महराज, जहां बेटी राज करै।
जहाँ बम्मन तपत रसोई, कहर दोई पानी भरै।
मोरी झूलों की झूलन हारी, मुहरों के मोल करे।
मोरी छज्जे की पौढ़न हारी, झरोखन वाव ढुरै॥

माँ कहती है कि मेरी पुत्री बहुत लाड़ती है। उसे ऐसे घर देना, जहाँ वह राज करे। सब प्रकार के सुख उसे उपलब्ध हों। जहाँ रसोईया रसोई बनाता हो, पानी भरने को कहार लगे हों। मेरी बेटी तो झूलों में झूलती है, वह कटोरों में दूध पीती रही है। छज्जे पर बैठने वाली तथा झरोखों से हवा लेने वाली है। उसे ऐसा घर–वर ढूँढ़ना, जहाँ उसे किसी तरह का कष्ट न हो।

विवाह

रुनक झुनक बेटी मंडप डोले,
आजुल लयी है उठाय भलेंजू।
कै बेटी तुम सांचे की ढारी,
कै गढ़ी है चतुर सुनार भलेंजू।
नें आजुल हम सांचे की ढारी,
नें गढ़ी चतुर सुनार भलेंजू।
माता की कुखियों जनम लये हैं,
रूप दये करतार भलेंजू॥

बेटी अपने घर के आँगन में खेल रही है, उसे खेलता देख उसके दादा ने उसे गोद में उठा लिया है। उसके सुन्दर रूप को देखकर उससे पूछते हैं कि क्यों बेटी! क्या तू साँचे की ढली है या कि तुझे सुनार ने बनाया है ? बेटी ने कहा- बाबा! न मैं साँचे की ढली हूँ न ही मुझे सुनार ने गढ़ा है। मैंने तो अपनी माँ की कोख से जन्म लिया है, और परमात्मा ने मुझे रंग-रूप दिया है।

विवाह

ससुरे जइयो जिन घबरइयो, कुल की रीत निभइयो
मोरी बेला कली।
सास ससुर की सेवा करियो, नित उठ पइयां पड़ियो
मोरी बेला कली।
देवर जेठ खों परदा करियो, न्यारी कबऊ ने हुइयो
मोरी बेला कली।
अपने पति की सेवा करियो, सच्चो धरम निभइयो
मोरी बेला कली।
बारी ननदिया ससुरे जेहे, नित उठ उन्हें बुलइयो
मोरी बेला कली॥

मेरी बेला के फूल की पँखुड़ी जैसी बेटी! तू ससुराल जाने में जी छोटा नहीं करना और घबराना भी नहीं, अपने कुल की रीति निभाना। वहाँ जाकर अपनी सास तथा ससुर की सेवा करना, सुबह उठकर उन्हें प्रणाम किया करना। देवर तथा ज्येष्ठ का उचित आदर करना, कभी भी घर से अलग न होना। अपने पतिदेव की सेवा करके पत्नी-धर्म का पालन करना। तुम्हारी छोटी ननद ससुराल चली जायेगी, उसे समय-समय पर बुलाती रहना। इस तरह से अपने गृहस्थ धर्म का निर्वाह करना।

विवाह

गुइयां देखले गिरजा वर बैला असवार गुइयां देखले॥
मूंड घने जटाजूट, गुढ़ गड़ैत काल कूट
गंगाधर है अटूट, उनकी महिमा अपार॥.........
बागो गुल बाघ छाल, नीलकण्ठ मुंडमाल
चन्द्रखौर कढ़ी भात, मूंछ पटवा बार॥.........
मुख की छब है विशाल, नैन तनक लाल लाल
निरखत कंप जाय काल, नागन फुसकार॥........
रमी राख भसम अंग, झूम झाम हाँत चंग
मस्त छके चरस भंग, अट पट दरबार॥.......
हाँतन तूमा त्रिशूल, खप्पर ज्यों अगन फूल
डमरू डम-डमक हूल, बेढ़ब सिंगार॥.......
विकट भूत प्रेत संग, कौनऊ बहु जवर जंग
कोऊ टिटही पसंग, काजर झलकार॥......
कोऊ बकें आंय-बांय, कोऊ इते उते धाय
कौनऊ लंगरात जांय, कौनऊ पद चार॥
झब्बे झबूले कान कोऊ, मुड़िया मसान कोऊ
करें रक्तपान कोऊ, तिरछे मुख फार॥
गढ़े गथिज्सूकर पै, कोऊ गधा कूकर पै
कोऊ खरा लूखर पै, मेंढ़ा असवार॥.......
बजा चले दांत गाल, कोऊ पेट पौद ताल,
कोऊ जिमया तुतकार......... ॥
कोऊ नचें मुँह उठाय, कोऊ नैना मटकाये।
कोऊ कमर खों हलाय, गिरवी फिर भार॥
कोऊ कहै शिव कृपाल, बं बं जय शिव दयाल
धन्न सकल अजब हाल, उनकी पागल उनहार॥......
आई ऐसी बरात, आहे न सुनी बात
बरनत हम सब लजात, कोऊ पावै ने पार॥.......

उक्त गीत में देवाधिदेव महादेव के विवाह का चित्रण है। शिवजी अपने विचित्र वेश में अपने गण लिए देवी पार्वती से विवाह रचाने पहुँचते हैं, इस तरह के दूल्हे को देखकर लोग डर जाते हैं। न तो शिव जैसी बारात कभी किसी ने देखी थी और न ही सुनी थी।

चढ़ाव

चली है बरात मंड़वा तरें आई
अब चढ़ाय की भई तैयारी।
सुरहिन गऊ के गोबर मंगाये,
ढिग घर अंगन लिपाये।
गजमुतियन के चौक पुराये,
कंचन कलश उजयार धराये।
अरघ दे बमना अरघ दे,
निकरी सजन जू की धियारी।
पाट पीताम्बर डल्लन मल्लन, सोने रूपे को पार नैचायो।
चढ़ो है चढ़ाव जनक सुख पायो,
भली भाँति कन्या पहिरायो।

बारात चलकर मंडप के नीचे आ गई। सुरहिन गऊ के गोबर से आँगन को लीपा गया, मोतियों का चौक पूरा गया। स्वर्ण-कलश रखवाने के पश्चात् पंडित ने अर्घ्य दिया, कन्या पाँवड़े पर चलकर आ गई। आज सजनजू की बेटी के लिए स्वर्ण-चाँदी के बहुतेरे आभूषण चढ़ाये गये। पाट-पीताम्बर ढेरो आये। जानकी जी को चढ़ाव चढ़ा तो जनक महाराज को बड़ा सुख मिला। स्त्रियों ने चढ़ाये में आयी सामग्री कन्या को पहनाई।

चढ़ाव

धन्य-धन्य दशरथ नें ऐसे समय पाये, हरे मंडप के नेंचें।
आज मोरी सिया जी खों चढ़त चढ़ाये, हरे मंडप के नेंचें।
माथे खों बैंदा और सीस फूल चढ़ाये, हरे मंडप के नेंचें।
कलियों के बीच-बीच मीना जड़ाव, हरे मंडप के नेंचें।
गले खों ठुसी तिदानो चढ़ाव, हरे मंडप के नेंचें।
माला के बीच-बीच कंकड़ जड़ाव, हरे मंडप के नेंचें।
हातों खों कंकन और चूरा चढ़ाव, हरे मंडप के नेंचें।
कंकन के बीच-बीच कलशा धराव, हरे मंडप के नेंचें।
कम्मर खों पट्टो करधुनियां चढ़ाव, हरे मंडप के नेंचें।
करधुनियां में लाकिट लगाव, हरे मंडप के नेंचें।
पांवों खों पाइल और आइल चढ़ाव, हरे मंडप के नेंचें।
छागल के बीच में घुघरन जड़ाव, हरे मंडप के नेंचें।
धन्य-धन्य दशरथ नें ऐसे समय पाये, हरे मंडप के नेंचें॥

अयोध्या नाथ दशरथ धन्य हैं जिनके घर ऐसा अवसर आया कि आज वे बारात लेकर जनक जी के द्वार पर आये हैं और हमारी जनकदुलारी को हरे मंडप के तले चढ़ाव चढ़ा रहे हैं। चढ़ाव में बेंदी, बेंदा, शीशफूल, गले की ठुसी, तिदानों, माला, कंकन, चूरा, करधन, लाकिट, पाँव की पायल, छागल आदि जेवरात जिनमें हीरे जवाहरात जड़े हैं, वे सब सीता जी को चढ़ाये जा रहे हैं।

भाँवर

पहली भाँवर जब फेरियो, बेटी अब लौं हमारी।
दूजी भाँवर जब फेरियो, बेटी अबलौं हमारी।
सातई भाँवर जब फेरियो, बेटी हो गई परायी॥

बेटी! अभी तक तू मेरी थी, इतने दिन तक तुझे पाला-पोसा बड़ा किया। तू दूसरे की अमानत थी, मैं आज उसे सौंपता हूँ। सातवीं भाँवर पड़ते ही तू परायी हो गई। एक न एक दिन तो यह करना ही था।

भांवर

बाबुल उठ घर भीतर जाव, परन दियो भांवरिया।
बाबुल जनम लये, माता गोद खिले
बाबुल गोद करी, अब परायी हमें
बाबुल कर दये पीरे हांत लगे मोहे लाज
सो उठ तुम जाइयो।
ये बाबुल उठ घर भीतर जाव, परन दियो भांवरिया
काकुल खेले हैं, काकी की गोद
खिलाये तुम खूब हमें
ये भैया उठ तुम भीतर सें बाहर आओ
जोड़ो दोई हांत, रखो मोरी लाज
तो गडुवा उठाइयो,
हे साजन भैया खों देव सजाय
तो हमखो ले जाइयो॥

जब बेटी की भाँवर पड़ती है तो बेटी के माता-पिता, भाई, काका, बाबा मंडप से उठकर भीतर चले जाते हैं। बुन्देलखण्ड में पिता पक्ष के लोग भाँवरे नहीं देखते, क्योंकि भाँवर के पश्चात् बेटी परायी हो जाती है। वह घड़ी बड़ी कारुणिक होती है। बेटी कहती है कि- हे पिता! आपने कन्यादान कर दिया है अब आप भीतर जायें क्योंकि अब मेरी भाँवरे पड़ेंगी। आप यहाँ रहेंगे तो मेरी भाँवर नहीं देख सकेंगे। इसी तरह से इस गीत के माध्यम से महिलायें वधू के चाचा, भैया

सभी के लिए एक संदेश देती हैं कि अब परिजनों का नाता बेटी से टूट रहा है इससे सब भीतर जायें, भाँवरे पड़ने दें।

पाँव पखराई

बिच गंगा बिच जमना, कै तीरथ बड़े हैं पिराग।
जहाँ बिच बैठे बाबुल मोरे, देत कुँवारन दान।
तुम जिन जानो बाबुल मोरे, हमरो दियो गिर जाय।
तुमने दओ हमने पायो, कै गहरी गंगा अनाय।
दिइयो भैंस जनेई तौ साजन को खोवा खाय।
दिइयो बैल मलनिया, तौ सुन्ने सींग मढ़ाय।
दिइयो उजरऊ गैया, छिंवटन को गारी खाय।
दिइयो रोप रूपैया, तौ आँगे को दमकत जाय।
बिच गंगा बिच जमना, कै तीरथ बड़े हैं पिराग॥

कन्यादान हो चुकने के पश्चात् पाँव पखराई के लिए वर-कन्या के सामने परात में हल्दी मिश्रित जल भरा है, वह गंगा जल के समान पवित्र है। कन्यादान स्थल तीर्थराज प्रयाग से भी बढ़कर बन गया है। कन्या अपने पिता से कहती है- हे पिता! आप यह न समझना कि आपका दिया हुआ दान व्यर्थ जायेगा। आपका इस प्रयाग क्षेत्र में जहाँ गंगा-यमुना हैं, हरा मंडप है, दिया हुआ दान बहुत गहरे जायेगा, आपका यह अक्षय पुण्य है। वह पुण्य गंगा में स्नान करने जैसा ही है। अगर आपने जनी हुई भैंस दी तो मेरे पति अर्थात् आपके दामाद उस भैंस के दूध का खोवा खायेंगे। यदि मलनियाँ बैल देंगे तो उसके स्वर्ण के सींग मढ़ाइये। यदि आपने सफेद वाली गाय दहेज में दी तो पुरा-पड़ौस के लोगों की गालियाँ खायेंगे। यदि रुपया-पैसा दिया तो वह चमकता हुआ जायेगा।

गारी

अचंभो मैंने देखो, नदिया नाव में डूबी जाय।
मन भौरा रे....... ।
कुआँ में आग लगी है, सो पानी-पानी सबरो जल गव, मछली खेलें पुगा।
मन भौरा रे........ ।
सगे अजा की पासनी को, नाती खावे भात।
मन भौरा रे......... ।
सास कुँवारी, बहू लरकोरी नातनिया को ब्याव।
मन भौरा रे........ ।
उचटो झींगा भैंस लगावै, मकरी दही जमावै।

मन भौरा रे....... ।
घर में कुतिया ओढ़े लाल चुनरिया, सड़क पै डोलन जाय।
मन भौरा रे...... ।
बैठी बिलैया पटियें पारे, बंदरा ऐना बताय।
मन भौरा रे....... ।
एक अचंभो समदी हमने देखो, नदिया नाव में डूबी जाय।
मन भौरा रे........ ।

आज मैंने बड़े-बड़े आश्चर्य देखे। पहला तो ये कि एक नदी नाव में डूबी जा रही है। एक कुएँ में आग लगी हुई है उसका सारा पानी जल गया तथा उसमें की मछलियाँ होली खेल रही हैं। किसी घर में बाबा का अन्नप्राशन हो रहा है और उसी की नातिन का विवाह है जिसके भात की रस्म हो रही है। सास अभी क्वाँरी है, बहू के बच्चे हैं और नातिन का ब्याह रचा जा रहा है। एक झींगुर उचट-उचट कर भैंस दुह रहा है तथा मकड़ी दही जमा रही है। एक कुतिया लाल रंग की ओढ़नी ओढ़े सड़क पर तफरीह करने जा रही है। बिल्ली बैठकर अपने बालों में कंघी कर रही है तथा बंदर उसे आईना दिखा रहा है।

गारी

मोरे समदी चतुर सुजान, अबे के गये कबे मिलहों।
चरन धोय चरनामृत लीनो, आसन देव बिछाय,
समदन कंचन थार परोसे, सतरस के पकवान,
अबे के गये ....
भाव भगत को भात बनायो, दया दीन की दार
कड़ी कुलौरी कुमत खटाई, शक्कर सुमत मिलाय
अबे के गये ....
पांच जने मिल तपी रसोई, कुचिया कुमत बनाई,
प्रेम फुलकिया परसन लागी, पापर प्रेम अधार
अबे के गये ....
जेव जूठ जब अचवन कीनो, पाप पुण्य के दान,
भूल गये सब ज्ञान
लोंग लाभाची डोड़ा लगाये, लगा दये सखी पान
अबे के गये ....
सेज शांति महलन भीतर, समदन कर सोलह सिंगार
रूप देख समधी मोहित हो गये, भूल गये घर द्वार
अबे के गये ....

कहे कांति हांत जोर कें, ये हैं जग जंजाल,
बिना काय के दोष लगायो, सदा रहे हुसयार
अबे के गये कबे मिलहो॥

बुन्देलखण्ड में विवाह में दिये जाने वाले भोज को पंगत-जेवनार कहते हैं। इस समय बारातियों को विवाह मंडप तले पंगत दी जाती है। कन्या पक्ष की स्त्रियाँ बारातियों तथा समधी के लिए गारी गाती हैं। उक्त गीत में भी पंगत का क्रमवार वर्णन है- अरे समधी जी! आप बारात लेकर वापस जा रहे हैं तनिक यह तो बताते जाईये कि फिर कब आओगे? बारात को भोजन के लिये आमंत्रित किया गया, सबके आने पर कन्या पक्ष के पिता भाई या फिर कन्या के मामा द्वारा बारातियों के चरण धुलाये गये। वह जल चरणामृत जानकर कन्या पक्ष वालों ने माथे से लगाया फिर बारातियों को उचित आसन देकर समधिन ने स्वर्ण के थाल में छत्तीसों व्यंजन परोसे। दाल, चावल, कुचिया, फुलके, पापड़, मिष्ठान यथा योग्य सब परोसने के पश्चात् उन्हें प्रेम पूर्वक भोजन कराया गया। भोजन के उपरांत पान दिये गये। अतिथियों का सत्कार देखकर समधी तथा बाराती भावविभोर हो गये। कांति विनय पूर्वक कहती हैं कि ये तो दुनिया की रीत है अगर कमी-बेशी हो जाये तो दोषारोपण नहीं करना चाहिए, यही समझदारी है।

गारी

मुनि संग आये हैं दोई सुकुमार री, बन्ना श्री रामजी लला।
विश्वामित्र रहे बड़भागी, जिनने भीख लये दोई मांगी
बन में करी यज्ञ रखवारी, प्रभु ने नारी ताड़का मारी
सखी ताको कियो भवपार हो -
बन्ना श्रीराम जी लला।
राह में चलत अहिल्या तारी, गौतम ऋषि की श्राप उतारी
प्रभु के चरनन खों बलिहारी, सखी पततों के प्राण अधार हो
बन्ना श्रीराम जी लला।
धाम ने मिथिलापुर में छाई, बस में कर लये लोग लुगाई
उनके नैनों छबि समाई, सखी अखियों भर लइयो निहार री
बन्ना श्रीराम जी लला।
सर पे क्रीट मुकट खों धारे, कुंडल हिले गाल पे प्यारे
मुस्कावे को नईयां कछु पार री,
बन्ना श्रीराम जी लला।
जिनमें लक्ष्मन भैया छोटे, जिनके पांव में ब्रम्हा लोटे
बिना जप तप के हो गये उद्धार री
बन्ना श्रीराम जी लला।

वे तो भांवरिया पड़ जेहें, फिर तो सीताराम कहें हे
सबकी बिगड़ी बात बने हें, धनुष टोरकें बने हे ससुरार री
मोरी नैया लगे हे पार री
बन्ना श्रीराम जी लला।

अरी सखियों! मुनि विश्वामित्र के साथ में दो कुमार आये हैं, वे श्रीराम तथा लक्ष्मण हैं, जो अब दूल्हा बने हुए हैं। मुनि बड़े भाग्यशाली हैं जिन्होंने इन दोनों कुमारों को यज्ञ की रक्षा के लिए महाराज दशरथ से लेकर आये थे। श्रीराम ने ताड़का नामक राक्षसी को मारा, इसलिए उसे मोक्ष प्रदान हुआ। फिर गौतम ऋषि के शाप से पत्थर बनी अहिल्या को चरण स्पर्श कराके शापमुक्त किया, वह पुन: स्त्री बन गई थी। वे प्रभु पतितों का उद्धार करने वाले हैं। अरे! ये तो ऐसे हैं कि इन्होंने थोड़े से समय में ही अपनी सूरत से जनकपुरी के निवासियों को अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। इनके सिर पर किरीट-मुकुट शोभायमान हो रहा है। कानों में कुण्डल लटक रहे हैं, वे बड़ी लुभावनी मुस्कान बिखेर रहे हैं। उनके अनुज लक्ष्मण के लिए ब्रह्मा नतमस्तक होते हैं, वे उनके चरणों में ही अपना उद्धार मानते हैं। जब इनकी भाँवर पड़ जायेगी तब वे श्रीराम-सीताराम हो जायेंगे। उन्होंने शिव धनुष तोड़ा है, अब जनकपुरी उनकी ससुराल बन गई है।

गारी

हम बेदन में सुन आये, सो जेहैं जुगनू के जाये
राम लछन और भरत शत्रुघ्न, जिनकी बहनी शांता
क्वांरे में इनने बालक जाये, फिर भये इनके ब्याव
इतनी सुनकें क्रोध भये लछमन, बंद करो जा गारी
समझ बूझ में गारी जा गइयो, धरो रहो तोरो ब्याव
भीतर सें बोली रानी सुनैना, मत देव ललन जू खों गारी
खीर खाय सुत पैदा कीन्हें, नइयां ससुर जू के काम
हंस मुसकाय कें रामजू बोले, सुन भैया हमरी बात मोरे लाल
हमरे जो सोरे की उल्टी रीत है, नारी बन नारी ब्याहें मोरे लाल।
धरती सें कन्या उपजी हैं, जिनको होत ब्याव मोरे लाल॥

भगवान राम के विवाह में जनकपुर की स्त्रियाँ उन्हें मीठी-मीठी गारियाँ सुनाती हैं। वे गाती हैं कि हमने तो वेदों में सुन रखा है कि ये दूल्हे राजा रामजी जुगनू के बेटे हैं। इनकी बहिन सांता क्वांरे में ही माँ बन गयी थी। इसके बाद ही उनका विवाह हुआ था। उन साली-सलहजों की चुटीली गारियाँ सुनकर लक्ष्मण जी क्रोधित हो जाते हैं, वे गुस्से में बोले कि अब बंद करो ये बेहूदी गारियाँ। अरे! कुछ समझ-बूझकर तो बोला करो। यह सुनकर रानी सुनयना कहती हैं कि देखो अब इस तरह की गारियाँ मत गाओ। वे बोलीं कि इनकी माताओं ने तो खीर खाकर इन्हें पैदा किया है हमारे समधी का क्या काम। उनकी बात सुनकर श्रीराम मुस्कराकर बोले कि

हमारी ससुराल की भी बड़ी निराली रीत है, यहाँ तो स्त्रियों के बजाय धरती ने ही कन्या पैदा कर दी और अब उसी का विवाह मुझसे हो रहा है।

गारी

काहे समदी रये अनमने, का बदन मलीन ए दैया
का तुमने खा लई भांगोली, के चढ़ी अफीम ए दैया
नें हमने खा लई भांगोली, नें चढ़ी अफीम ए दैया
घर में बेंनें बदत नैयां, ऐसे मनहीन ए दैया
बहिनी पठे दे सिरी किसन खों, सोले भर नींद ए दैया।
गीता पुरान सुने नैयां, कानों के हीन ए दैया।

अरे समधी जी! आप उदास क्यों दिख रहे हो? ऐसा लगता है कि जैसे आपने भाँग पी ली हो या फिर आपको अफीम का नशा हो गया है। समधी ने न तो भांग खाई है न अफीम चढ़ी है, असल में इनकी बहिनें स्वतंत्र हो गई हैं इसी कारण वे उदास दिखते हैं। अरे समधी जी! आप अपनी बहिनों को ऋषियों के पास भेज दो, फिर सुखपूर्वक सोना। आपने कभी वेद, पुराण, गीता कुछ भी नहीं सुना, इसलिए आपकी श्रवण शक्ति जवाब दे गई है।

गारी

कचरिया तोरो ब्याव री, खरबूजा नेवते अइयो
ककरी भुंटा लगुन लिखाई, डांगरा बांच सुनइयो
कुमड़ा कलींदे के बाजे बजत हैं, लंबी तुरई शहनाई
कुदरू चीकट लेकें आई, सकला नाचत आवे
परमल कटहर न्यौते आये, करौंदा मामा लागे
मूरा दूला भटा बराती, चौरई की छब ल्यइयो
सलगम गोबी सजी बरातें, भटा संग में अइयो
अम्मां निब्बू तपत रसोई, इमली नेग करइयो
भेड़ा करेला जेवन बैठे, सेमे गारी गइयो
बेर मकोरा दायजे देवें, बिही भांवरे पारें
कचरिया तोरो ब्याव री।

उक्त गारी में सब्जियों का क्रमवार वर्णन है। कचरिया का विवाह होता है जिसमें खरबूज को निमंत्रित किया जाता है। ककड़ी और भुट्टे ने लग्न लिखाई तथा डंगरा ने पंडित की भूमिका निभाकर लग्न सुना दी। कुम्हड़ा और कलीदे मंगल वाद्य बजाते है। तुरई को शहनाई की भूमिका निभानी पड़ी। कुंदरू चीकट लेकर आई तथा सकला नृत्य करते हुए आया। परवल और कटहल को भी न्यौता दिया गया। करोंदा से तो मामा का रिश्ता है। मूला दूल्हा बना है चौलाई भी

आई है। सलगम–गोभी बारात में आये थे, साथ में भटा भी आया था। आम तथा नींबू ने रसोई तैयार की, इमली ने सारे नेग करवाये। भिंडी और करेला भोजन करते हैं तथा सेम गारी गाती है। बेर तथा मकोरा दहेज देते हैं। अमरूद भाँवरे पड़वा रही है।

गारी

रामायन पोथी पढ़ी नैयां, नैनों के हीन ए दैया
तुलसी माला जपत नइयां, हांतों के हीन ए दैया
हरी चर्चा कही नैयां जिथियों के हीन ए दैया
पूजा पाठ करें नइयां हिरदे के हीन ए दैया
तीरत–बरत करे नैयां, पांवों के हीन ए दैया
सादू संगत करी नैयां, आयु के हीन ए दैया॥

हमारे समधी ने कभी रामायण तथा पोथी पुराण नहीं पढ़े, क्योंकि वे नेत्रहीन हैं। तुलसी की माला भी नहीं जपी क्योंकि उनके हाथ ही नहीं है। प्रभु का प्रसंग कभी नहीं कहा–सुना, क्योंकि उनके जीभ ही नहीं है। अरे! हमारे समधी ने पूजा पाठ नहीं किये, क्योंकि ये बिना हृदय के हैं। हमारे पाहुनों ने कभी तीर्थ यात्रा नहीं की, क्योंकि इनकी उमर ही नहीं थी।

गारी

जिनखों ब्याईं गौरा पारवती माई, चलो दर्शन खों भाई
बे तो हैं झाड़ी बाले, गांजा भांग पीने वाले
जिहर सवर पी डारे, उनने कामदेव खों जारे
जिनके संगे हो गई गौरा की सगाई। चलो ....
उनके बाप ने मताई, उनके बेन नैयां भाई
उनके लोग ने लुगाई, बैठे जनम के चटाई
उनके होत हैं उपटने, राख धूनी की रमाई। चलो ....
गौरा चढ़त चढ़ाये, गहने सांपों के आये
जगत माता हाँतों सें लेत हैं उठाई। चलो ....
नाइन नेगों खों आई, उनने दई फुसकार
भागी लेंगा फटकार, मैने नेंग भलो पाओ
अपनी फजीयत कराई। चलो ....
जो कोई हँसे मुस्काये, दांत बाहर कड़आँय
जे कोई कूले मटकायं, वे तो टेढ़े हो जाँय
उनने छोड़ी ततैयां तुम भागो मोरे भाई। चलो ....
कंठा नागों के डारें, कुंडल बिच्छू सँवारें

उनने बिच्छू ततैयाँ की झुमकी लगाई।
चलो दर्शन खों भाई॥

अरी सखियों! जिन भोलेनाथ का विवाह हमारी पार्वती से हुआ है, चलो हम सब उनके दर्शन कर लें। वे पर्वतों पर निवास करते हैं, गाँजा तथा भाँग पीते हैं। सारे विषों का पान करते हैं। इन्होंने कामदेव को भस्म कर दिया था उनके साथ हमारी गौरा का विवाह हुआ है। उनके माता-पिता नहीं हैं, न ही बहिन भाई हैं अर्थात् वे अकेले ही हैं। उनका उपटन राख से होता है। विवाह में जब गौरा पार्वती को चढ़ावा आया तो उसमें सर्पों के जेवर थे। लेकिन पार्वती जी उन विषधरों को अपने हाथों से उठा लेती हैं। जब नाइन नेग लेने आई तो उसे नागों की फुसकार सुनकर भागना पड़ा। वह कहने लगी कि मुझे विवाह में बड़ा अच्छा नेग मिला।

यही नहीं, बारातियों में कोई मुस्काता है तो उसके बत्तीसों दांत दिखते हैं। बड़े आड़े-तिरछे बाराती हैं। दूल्हे ने ततैयां (बर्र) छोड़ दिये अब यहाँ से भाग लो वरना खैर नहीं। दूल्हे राजा नागों के हार गले में पहने हुए हैं। बिच्छुओं के कुण्डल कानों में शोभायमान हो रहे हैं। सो हे सखी! हम चलकर उनके दूर से ही दर्शन कर लें।

जेवनार-गारी

चंदन बिरछ की पटली बनाई, रामजी के चरन धुवाये मोरे लाल।
चरन धोये चरनामृत लीनो, सिंगासन बैठारे मोरे लाल।
सकुची-सकुची जनकपुर की नारी, कांहो रचे जेवनार मोरे लाल।
कड़ी कचौरी मैदा की पूड़ी, एई रचों जेवनार मोरे लाल।
आलू भटा और कुंदरू करेला, परमल की तरकारी मोरे लाल।
अम्माँ निब्बू को रायतो परोसो, कटहर करौंद न्यारे मोरे लाल।
कच्चे पके सिंगारे परसे, गुजिया पकवान मिठाई मोरे लाल।
भाजी में रामा राजी भये हैं, रुच-रुच करी जेवनार मोरे लाल।
खाय पियो फिर अचवन लागे, सखियां लगावें रुच पान मोरे लाल।
पान चबात दोरे में आये, जूता किनने लुकाये मोरे लाल।
छोटी सी सारी अधक प्यारी, उनई ने जूता लुकाये मोरे लाल।
छिंगरी की मुंदरी उतारी राम ने, ओई खों दई पैराय मोरे लाल।
जूता उतार हरि जनवासे आये, सजन लगी है बरात मोरे लाल॥

चंदन के वृक्ष की पटली पर दूल्हे श्रीराम के चरण पवित्र जल से पखारे गये फिर सबने वह चरणोदक पिया। इसके पश्चात् उन्हें सिंहासन पर बैठाया गया। अब जनकपुरी की स्त्रियों को बड़ा संकोच हो रहा है कि दूल्हे राजा को क्या बनायें? जेवनार बनाते समय बड़े जतन से बना रही हैं। कचौरी, मैदा की पूड़ी, आलू-बैंगन, कुंदरू, करेला, परवल की तरकारी बनाई गई।

आम, नींबू का अचार रायता-कटहल, करोंदा, सिंघाड़े, गुजिया तथा अनेकों मिष्ठान बनाये गये। श्रीराम तो भाजी में ही प्रसन्न हो गये उन्होंने बड़ी रुचि से भोजन किया। भोजन करने के उपरांत पान लगाये गये।

नकटोरा

मोरे बाबा जू, ये बाजू रैहो, कै ओ बाजू।
लम्मे ढकोरा, करई ककरी, कबै आहो रे छैला हमारी बखरी।
मोरे...........
आदी सी रैन घटा कारी, फिर आहै मोरी तुमाई बारी।
मोरे..........
टूटो ढकोरा गिरी ककरी, कुतके पै मारों तुमाई बखरी।
मोरे............
टूटी टपरिया फटो मिरदंग, सयरी के जीखों बढ़ो मिरदंग।
मोरे...........
चूना के पोतें महल चमके, गोरी खों देखन बलम तरसे।
मोरे..........
उरदों की दार चुरत नैयां, बिछरे दोई नैना मिलत नैयां।
मोरे..........
उरदो की दार मसाले की, पैली गौने की रात कसाले की।
मोरे बाबा जू, ये बाजू रैहो, कै ओ बाजू॥

अरे मेरे बाबा! तुम इस ओर रहोगे कि उस ओर ? एक लम्बा सा झाड़-झँखाड़ है, उस पर कड़वी ककड़ी लटकी है। अरे! छैल-छबीले ये तो बताओ कि हमारी बखरी में फिर कब आओगे ? जब आधी रात होगी और वह भी अँधेरी रात, उसी समय मैं आऊँगा। अब वह झाड़-झँखाड़ टूट गया, ककड़ी भी गिर गई, अब मेरे ठेंगे से मैं नहीं आऊँगा। एक टूटी झोपड़ी में फटा हुआ मृदंग टंगा है, मेरे समधी को मोटी-ताजी समधिन मिली है। चूना पोतने से महल चमक रहा है, उस महल की स्त्री को देखने हेतु उसका पति तरस रहा है। उड़द की दाल पक नहीं रही, इसी तरह से बिछड़े हुए नैन नहीं मिल पा रहे। उड़द की दाल मसाले की है पहली रात तो बड़े कष्ट की होती है।

बधाव

समदी के भाग में नैयां लुगाई, कै बोल मोरे भाई।
दौरत-दौरत गये सुनरा कें, सोने की जोरू बना मोरे भाई,
लाकें लुगाई सेजों पै धर दई, पर गये डांके लुट गई लुगाई।

कै बोल मोरे भाई....... ॥
दौरत-दौरत गये दर्जी कें, कपड़ा की जोरू बनाव मोरे भाई,
कपड़ा की जोरू अटारी पै धर दई, बेहर चली सो उड़ गई लुगाई।
कै बोल मोरे भाई...... ॥
दौरत-दौरत गये कुंभरा कें, माटी की जोरू बना मोरे भाई,
लैकें जोरू आंगन में धर दई, पानी गिरों सो गल गई लुगाई।
कै बोल मोरे भाई...... ।
दौरत-दौरत गये बड़ई कें, लकड़ी की जोरू बना मोरे भाई,
लकड़ी की जोरू चूले कें धर दई, आगी लगी सो जर गई लुगाई।
कै बोल मोरे भाई............... ॥

मेरे समधी की किस्मत में औरत नहीं है। क्या किया जा सकता है, औरत के लिए उन्होंने कितने पापड़ नहीं बेले? दौड़ते-दौड़ते सोनी के पास गये, उससे कहा कि सोने की औरत बना दो, सोने की औरत बनवाकर लाये उसे बिस्तर पर रख दिया, उनके घर में डाका पड़ गया और वह सोने की जोरू चोर ले गये। फिर दर्जी से कपड़े की औरत बनवाई, आंधी में वह भी उड़ गई। कुम्हार से मिट्टी की औरत बनवाई, पानी में वह गल गई। बढ़ई ने लकड़ी की औरत बनाई वह चूल्हे में जल गई। सो हे समधी जी! जब आपके भाग्य में स्त्री-सुख ही नहीं तो व्यर्थ क्यों पचड़े में पड़ते हो?

राछ फिराई

मना ल्याव जगा ल्याव जगा ल्याव सखी
बन्नो सोबे री अटरियों
मोरे बन्ना खों सहरा भी सोहे,
कलियों बीच अनार की कली
बेला फूल की कली, कचनार की कली
बन्ना सोबे री अटरियों.......
कानों बन्ना जू के कुण्डल सोहे,
मुरकन बीच अनार की कली
बेला फूल की कली, कचनार की कली
बन्ना सोबे री अटरियों.........
गले बन्ना जू के कण्ठा भी सोहे,
गुन्जों बीच अनार की कली,
बेला फूल की कली, कचनार की कली,
बन्ना सोबे री अटरियों।

अरी सखी! तुम मेरे दूल्हे को जगाकर, मनाकर ले आओ, वह अटारी पर सो रहे हैं। मेरे बन्ने राजा को सेहरा बड़ा सुहावना लगता है, उनके गले में कलियों की माला के बीच में अनार की कली, बेला की कली, कचनार की कली सुशोभित हो रही हैं। बन्ना के कानों में कुण्डल बड़े शोभायमान हो रहे हैं। उनके कानों में पड़ी मुरकी के बीच अनार, बेला और कचनार की कली बड़ी अच्छी लग रही हैं। दूल्हे के गले का कण्ठा बहुत अच्छा लग रहा है। उनके गले के बीच में फूलों की माला सुशोभित हो रही है।

विदा

डोला में बैठी बन्नी बिसूरे, का हमने कीनें कसूर मोरे लाल।
भैया भाभी खों दीनी चंदन अटरियां, हमखों दयीं परदेश मोरे लाल।
रोवत-रोवत डोला उठा लये, घर सें दये हैं निकार मोरे लाल।
गैला में मिल गये गांव के बरेदी, एक संदेशों लय जाव मोरे लाल।
जा कइयो तुम हमरी माई सें, करो जिन सोच विचार मोरे लाल।
हमरे खेलत की धरीं हैं पुतरियां, गंगा में देंहें सिराय मोरे लाल।
इतनो सोच बहनी मन में ने लाओ, काहे देंहें गंगा बहाय मोरे लाल।
चार दिना बहनी ससुरों में रइयो, पांचमें दिन लेहें बुलाय मोरे लाल।
अपनी पठाई बेहनी ओंर की बुलाई, जई दुनियां की है रीत मोरे लाल।
कच्ची ईंट बाबुल देहरी ने धरियो, बेटी ने दियो परदेश मोरे लाल॥

विदाई की बेला बड़ी कारुणिक होती है। जिस माँ-बाप ने कन्या को पाल-पोसकर बड़ा किया, आज उसके हाथ पीले करके पराये घर भेज दिया। वह बेटी जिसका अपना घर हमेशा-हमेशा के लिए छूट रहा हो, उस पर क्या बीतती होगी? विदाई के समय वह अपने माँ-बाप, भाई-बहिन, घर-परिवार, सखियाँ सबसे गले मिलकर रो रही हैं। वह सोचती है कि ये कैसा नियम है कि बेटी परायी अमानत होती है, इस घर में उसका नाता क्यों खत्म हो गया। मेरी क्या गलती है, जो मैं पराये घर के लिए पाली पोसी गई? मेरे भाई को पिता ने महल दे दिया और मुझे परायी कर दी? ये कैसी रीत है कि हर बेटी को घर छोड़ जाना ही होता है। वह यह सब सोचकर रोती है। रोते-रोते उसे डोली में बैठा दिया जाता है, कहार डोले को उठाकर चल देते हैं। इस घर से उसको निष्कासित कर दिया गया, वह लगातार रोये जा रही है। चलते-चलते उसे अपने गाँव के बरेदी गायें चराते हुए मिल जाते हैं, वह उनसे कहती है कि वीर आप मेरा एक सन्देशा मेरी माता को कह देना, उनसे कहना कि वे मेरी चिन्ता न करें। हाँ, घर में मेरे बचपन के खेलने के गुड्डे-गुड़ियाँ रखे हैं, वे उन्हें गंगा में प्रवाहित करवा दें। क्योंकि माता उन्हें देखेंगी तो मेरा ख्याल आ जायेगा और वे रोयेंगी।

बरेदी ने उस बहिन की बात सुनी तो वह बोला कि बहिन आप क्यों रोती हैं? अरे! आप

चार-पाँच दिन ससुराल में रहना, फिर आपको बुलवा लेंगे। देखो बहिन, यह तो संसार की रीति है कि अपनी बेटी को दूसरे के घर भेजते हैं और किसी दूसरे की बेटी को बहू बनाकर लाते हैं, यही दुनिया का रिवाज है।

बेटी कहती है कि- हे पिता! बिना पकी ईंट को देहली पर न रखवाना क्योंकि कच्ची ईंट तो थोड़े समय में ही टूट-फूट जायेगी। इसी तरह बेटी को परदेश नहीं भेजना क्योंकि माता-पिता तथा उस जाने वाली बेटी का विदाई के समय कलेजा फटता है।

विदा

तरकस के दोई तीर धनैयां नोनी बांस की।
दौड़े-दौड़े भैया रये गैल, बहिन मोरी कहां चली री
मोरे बाबुल ने बोले हैं बोल, दयी हैं निकार करी है परायी
सो हम अब जाइयो।
रे भैया पंचों ने खाये लौजी पान, उवेलन हम चली रे
रे मोरे बाबुल दे दयी हैं निकार, जैसे जल मछरी रे
रे मोरी मैया ने लई हैं लुकाय, जैसे घिया कूपरी रे॥

तरकस के तीर तथा धनुष बाँस के बने हैं। विदाई के पश्चात् लड़की का भाई गाँव की सरहद पर बहिन का डोला रोकता है, यह विवाह की एक प्रथा है। भाई अपनी बहिन से कहता है कि- हे बहिन! आप कहाँ जा रही हैं? बहिन बोली- भैया हमारे पिता महाराज ने कड़वे वचन कहे हैं, मुझे पराया कर दिया है। पाँच पंचों ने मिलकर मेरा विवाह तय किया, उस निर्णय का परिणाम मुझे भुगतना पड़ रहा है कि मैं परायी हो गई। मेरे पिता ने मुझे तो इस तरह निकाल दिया जैसे कि कोई जल से मछली को अलग कर देता है। मेरे पिता ने तो निकाला लेकिन मेरी माँ ने मुझे छिपा लिया था, जिस तरह से घी के बर्तन को बड़े जतन से छिपाकर रखा जाता है उसी तरह से माँ ने मुझे छिपाये रखा लेकिन उनकी एक न चली और मैं जा रही हूँ।

विदा

कच्ची ईंट बाबुल देरी ने धरियो,
बेटी ने दियो परदेश मोरे लाल।
कोना ने तुमखों जनम दये हैं, कौना दये परदेश मोरे लाल।
काहे खों तुमने जनम दये हैं, काहें खों परदेश मोरे लाल।
आंगन ऊवन खों जनम दये हैं, सुख खों दीनी परदेश मोरे लाल।
अंगना में बैठे बन्नी जी के बाबुल, सुनरा खों लाओ बुलाय मोरे लाल।
सुनरा आये जेवर गढ़ाये, बेटी खों दये पैराय मोरे लाल।

पैर ओढ़ बेटी मंडप में निकरीं, बेटी के वदन मलीन मोरे लाल।
धीरे-धीरे पूछें संग की सहेलियां, काहे बेटी बदन मलीन मोरे लाल।
हम गोरे हमरे भैया हैं गोरे, सांवरे मिले भरतार मोरे लाल।
सांवरे सांवरे जिन कहो बन्नी, सांवरे हैं गोकल के श्याम मोरे लाल।
मंडप से लोटी महलों में आयी, सखियां रही हैं सजाय मोरे लाल।
भीतर बन्नी खों सखियां सजा रयीं, बाहर ठांड़े कहार मोरे लाल।
पकर हतुलिया डुलिया में धर दई, बेटी खों दयी बैठाय मोरे लाल।
कोनां के रोंये गंगा जमना बहत हैं, कोना के रोंये सागर ताल मोरे लाल।
माता के रोंये गंगा जमना बहत हैं, बाबुल के रोंये सागर ताल मोरे लाल।
भैया के रोंये से छतियां फटत हैं, भाभी के जियरा मलीन मोरे लाल।
कौना ने दीनी सोने की इंटिया, कौना ने लहर पटोर मोरे लाल।
कौना ने दीने चढ़त के घुड़ला, कौना ने दये सिन्दूर मोरे लाल।
बाबुल ने दीनी सोने की इंटिया, मैया ने लहर पटोर मोरे लाल।
भैया ने दीने चढ़त के घुड़ला, भाभी ने सिन्दूर भर मांग मोरे लाल।
बाबुल की ईंट खरच हो जेहे, फट जेंहें लहर पटोर मोरे लाल।
भैया के घुड़ला सजन मोरे जोतें, भरहें जनम भर मांग मोरे लाल।

एक बेटी अपने पिता से कहती है कि- हे पिता महाराज! आप कभी द्वारे पर कच्ची ईंट न लगवाना और न ही बेटी का विवाह दूर देश करना। बेटी को किसने जन्मा था तथा परदेश किसने दिया? जब लड़की का विवाह करके परायी ही करना था तो फिर जन्मा ही क्यों था?

विवाह में कन्या पक्ष के घर जब बारात आती है, उस समय बारात के स्वागत में द्वारचार आदि होते हैं उसे ऊबनी कहा जाता है। पिता कहता है कि बेटी का जन्म हुआ है तो उसका विवाह तो होगा ही। विवाह में बारात आने पर ऊबनी होगी, उसी ऊबनी नामक पुण्य कर्म हेतु बेटी को जन्मा था। हिन्दू धर्म में विवाह के लिए यश का संबोधन दिया जाता है। बेटी के सुखी भविष्य के लिए उसके हाथ पीले करके विदा की जाती है। विवाह के पूर्व बेटी के पिता ने स्वर्णकार को बुलवाया, स्वर्ण आभूषण बनाये वे सब कन्या को पहना दिये गये। जब बेटी सजधज कर विवाह मंडप में जाती है तो अचानक वह उदास हो जाती है, उसकी सखियाँ धीरे से पूछती हैं कि सखी तुम उदास क्यों दिखती हो?

वह कहती है कि मैं यह सोचकर उदास हूँ कि मेरा तथा मेरे भाई-बहिनों का रंग गोरा है लेकिन मेरे पिता ने मुझे साँवले रंग का वर ढूँढ़ा है? सखियाँ बोलीं कि तुम ऐसा क्यों सोचती हो? साँवला होने में कोई बुराई नहीं है जब साक्षात् श्रीकृष्ण, श्रीराम साँवले थे तो फिर वर का साँवला रंग होना तो सौभाग्य ही मानो। मंडप तले भाँवर पड़ी, भाँवरों के पश्चात् दुल्हन की सखियाँ उसे विदाई हेतु तैयार कर रही हैं क्योंकि बाहर कहार डोली ले जाने के लिए तैयार बैठे हैं। अंत में वह घड़ी भी आ गई जब बेटी को विदा किया जाता है उसे बाहर ले जाकर डोले में बैठा दिया

गया। बेटी को विदा करते समय परिजनों की आँखों से गंगा-यमुना की तरह अश्रु प्रवाहित हो रहे हैं। घर में कौन इतना रो रहा है कि जैसे उसकी आँखों से नदी के पानी के समान आँसुओं की धार बहती है? किसके रोने से इतने आँसू निकल रहे हैं कि जिनसे समुद्र भर जाये? माता-पिता के रोने से आँसुओं की नदी है। भाई जब रोते हैं तो उन्हें देखकर कलेजा ही फटा जाता है लेकिन भाभी तो उदास हैं वे नहीं रोतीं? दहेज में किसने सोना दिया, किसने वस्त्र दिये? किसने हाथी घोड़े तथा किसने सिन्दूर दिया? पिता ने स्वर्ण आभूषण, माता ने वस्त्र, भाई ने घोड़े तथा भाभी ने सिन्दूर दिया। पिता का दिया स्वर्ण कभी खर्च भी हो जायेगा, माता के दिये वस्त्र फट जायेंगे, भैया का दिया हुआ घोड़ा उसके पति की सवारी के काम आयेगा लेकिन भाभी का दिया हुआ सिन्दूर तो वह पूरे जीवन अपनी माँग में सजायेगी, वही तो स्थायी है।

विदा

ससुरे जइयो जिन घबरइयो, कुल की रीत निभइयो
मोरी बेला कली।
सास ससुर की सेवा करियो, नित उठ पइयां परियो
मोरी बेला कली।
देवर जेठ खों परदा करियो, न्यारी कबऊँ ने हुइयो
मोरी बेला कली।
अपने पति की सेवा करियो, सच्चो धरम निभइयो
मोरी बेला कली।
बारी ननदिया ससुरे जे हे, नित उठ उनें बुलइयो
मोरी बेला कली॥

हे बेटी! तुम ससुराल जा रही हो। तुम अपने कुल की मर्यादा बनाये रखना। सुबह उठकर सास-ससुर के चरण छूना, उनकी सेवा सुश्रुषा करना। जेठ-देवर का परदा करना, कभी भी घर से अलग न होना। अपने पति की सेवा करना, पतिव्रत बनाये रखना, जब तुम्हारी छोटी ननद का विवाह हो जाये तो उसे समय-समय पर बुलाते रहना।

विदा

कहां चलीं बेटी मोरी कहां चलीं
मोरे बाबुल ने रचे हैं ब्याव, निभाउन हम चले
मोरी माता ने ऐसी छुपाई, जैसे जल माछरी
मोरे बाबुल ने ऐसे निकारीं, जैसे घी की माखरी।

अरी बेटी! डोले में बैठकर कहाँ जा रही हो? मेरे पिता ने मेरा विवाह किया है उसका

निर्वहन करने मैं ससुराल जा रही हूँ। मेरी माता ने तो मुझे बहुत जतन से रखा लेकिन मेरे पिता ने मुझे घी में पड़ी मक्खी की तरह निकाल दिया।

बारामासी गारी

हम गावैं बारामासी, तुम करो सजन मोरी हाँसी।
जब असढ़ा साहुन लागे, तो सैरों गावैं लुगाई।
जब सैरों गावैं लुगाई, तुम सुनले चित्त लगाई।
जरजा तो बरजा रे, राजा तोरे सतखंडा,
तोरे पानों पै परे रे तुषार।
तोरे अकेले अरे जियरा बिना,
सूनो लागै सकल संसार॥
जब भादों मईना लागे, तो ददरी गावैं लुगाई।
जब ददरी गावैं लुगाई, तुम सुनले चित्त लगाई।
हाँत में को छत्ता हमें दयें जा रे, तोरी टेरे लुगईया।
कै घरे भगआ, तोरी टेरे लुगईया॥
जब क्वांर महीना लागे, अनबोल ने गावैं लुगाई।
अनबोल ने गावैं लुगाई, तुम सुनले चित्त लगाई।
ये पैले चलाये रसिया जात हो, करिया ने काटी गैल।
कै दुख हुइयें तुहरी सास के, कै बालम मिलै नादान॥
जब कातक मईना लागे, तो कातक गावैं लुगाई।
जब कातक गावैं लुगाई, तुम सुनले चित्त लगाई।
लगत वृन्दावन नीको, माई मोय लगत वृन्दावन नीको।
घर-घर ठाकुर घर-घर पूजा, भोग लगे तुलसी को।
माई मोय लगत वृन्दावन नीको॥
जब अगहन मईना लागे, तो ब्याव के गावैं लुगाई।
जब ब्याव के गावैं लुगाई, तुम सुनले चित्त लगाई।
गारीं देत के नैयां मिसर जू, गारीं कोऊ नें दिइयो लाल।
इन गारों को करब नें मानों, इनसें पुरखा तरहें लाल।
तोरी बेटी छिनार, काकी भौजी छिनार।
तोरी नात छिनार, काकी मौसी छिनार।
जब पूस माव लग आये, भोला खों गावैं लुगाई।
जब भोले गावैं लुगाई, तुम सुनले चित्त लगाई।
हमारी तोरी अब ने बने रे, अब ने बने रे।
तोरे घर के करें तकरार रे, हमारी तोरी हो...... ।

जब फागुन मईना लागे, तो फागें गावैं लुगाई।
जब फागें गावैं लुगाई, तुम सुनले चित्त लगाई।
उतरे माव लगे फगुना, कब आहें ननद बैया तोरे बिरना।
तोरे बिरना री हमारे बलमा, कब आहें ननद बैया तोरे बिरना॥
जब चैत मईना लागे, तो भक्तें गावैं लुगाई।
जब भक्तें गावैं लुगाई, तुम सुनले चित्त लगाई।
घर सें निकरी सुरहन गऊ रे, चरन नदन बन जायँ माँ।
इक बन पौची, दो बन पौची, ब्रज वन पौची जायँ माँ।
जब बैसाख महीना लागे, तो दिलरी गावैं लुगाई।
जब दिलरी गावैं लुगाई, तुम सुनले चित्त लगाई।
आ जैहें लोरी तोरी ओसरी, करले सोरअ सिंगार।
जब जेठ मईना लागे, तो ख्याल गावैं लुगाई।
जब ख्याल गावैं लुगाई, तो सुनले चित्त लगाई।
करियो नें तकरार, मेढ़े सें मेंढ़ो लगो है।
फिरकें मिलियो यार, आव नें मजा पैलऊ पैल में।
हम गावैं बारामासी, तुम करो सजन मोरी हाँसी॥

सारे बाराती जेवनार हेतु मंडप के नीचे बैठे हैं, स्त्रियों द्वारा जेवनार की गारी गायी जा रही है। जेवनार के अलावा कई तरह की गारियाँ गायी जाती हैं। बारामासी गारी भी इसी समय गायी जाती हैं।

हम स्त्रियाँ सजन जी आपको बारामासी गाकर सुना रही हैं। तुम हमारी हँसी मानोगे। जब आषाढ़ मास लगा तो स्त्रियाँ सैरा के गीत गाती हैं, तो आप ध्यान से सैरा सुनिये– राजाजी तुम्हारा सताबंडा जल भर जाये तुम्हारे पानों में तुषार पड़े, अरे! अकेले तुम्हारे बिना यह पूरा संसार सूना–सूना लगता है।

भाद्र पक्ष में स्त्रियाँ ददरी गाती हैं, इसे ध्यान देकर सुनो– अरे जाने वाले! तू अपने हाथ में थमा हुआ छाता मुझे देता जा। तेरी स्त्री तुझे बुला रही है, परदेश जाने वाले घर आ जा।

क्वाँर मास में महिलायें अनबोलने गीत गाती हैं– पहली बार स्त्री के गौने में जाते समय काले नाग ने रास्ता काट दिया या तो छोटी सास बहू को दुख देगी या फिर उसे नादान पति मिलेगा। काले नाग का रास्ता काटना अपशकुन माना जाता है।

कार्तिक मास में स्त्रियाँ कार्तिक के गीत गातीं हैं– अरी माँ! मुझे वृन्दावन बहुत अच्छा लगता है, वहाँ पर तो हरेक घर में ठाकुर जी (शालिग्राम) की पूजा की जाती है और तुलसी मिश्रित भोग लगाया जाता है।

अगहन मास में विवाह शुरू हो जाते हैं तो स्त्रियाँ विवाह के गीत गाती हैं। आप ध्यान देकर विवाह की गारी सुनिये– मिसर जू हमारे गारी देने के नहीं लगते इसलिए उन्हें कोई गाली न देना। लेकिन अगर किसी ने भूल से गाली दे दी तो उसका बुरा न मानना, इन गालियों से आपके पुरखे तर जायेंगे।

पौष–माह में भोला के गीत (बंबुलिये) स्त्रियाँ गाती हैं। ध्यान से सुनिये– अब हमारा तुम्हारा निर्वाह नहीं हो सकता, क्योंकि तुम्हारे घर के ही हमसे वैमनस्य करते हैं।

फाल्गुन माह में स्त्रियाँ होली/फागें गाती हैं वे इस तरह से हैं, जरा सुनिये तो– अरी ननद बाई! माघ खत्म हुआ, फाल्गुन लग गया, ये तो बताओ कि तुम्हारे भाई कब आयेंगे? क्योंकि तुम्हारे भाई मेरे पति जो हैं।

चैत्र माह में भक्तें गायी जाती हैं– सुरहन गऊ घर से निकल कर नंदवन में चरने को जा रही हैं। एक वन से दूसरे वन फिर बृजवन में पहुँच गईं।

बैसाख माह में स्त्रियाँ दिनरी नामक गीत गाती हैं– आप ध्यान देकर सुनिये– एक घर में दो पत्नियाँ हैं, बुन्देलखण्ड में किसी की दो पत्नियाँ हों तो उन्हें लुहरी (छोटी) जेठी (बड़ी) कहा जाता है। जेठी–लुहरी से कहती है कि आज हमारे प्रियतम तुझे मिलने आयेंगे, सो तू सज–धज कर उनके आने की प्रतीक्षा करना।

ज्येष्ठ मास में ख्याल गाये जाने का मौसम आता है– हमसे बैर नहीं करना, क्योंकि हमारे खेत एक दूसरे के पास–पास ही हैं।

बुन्देली संस्कार गीत

अनिल श्रीवास्तव / सुरेश मालवीय

सोहर

अनमनिआ है ऐसो रूप
आज कछु अनमनिआ है।
चोली, चीर अरगनी धर दय
पलंग लए लटकाय
आज...........................
लै आरसी मुख देखन लागी
बदन रहे कुम्हलाय
आज...........................
आधी रात गश्ती वारो बोले
उदे नौरंगी पीर
आज...........................
भोर भए मुर्गा बोलन लागे
प्रगटे श्यामल भूप
आज...........................

स्रोत – शकुंतला श्रीवास्तव

गर्भवती स्त्री के नौ माह पूर्ण हो चुके हैं। अब प्रसूति काल बिल्कुल निकट है। उसका मन अनमना सा हो रहा है। उसने कपड़े खोलकर अरगनी पर टाँग दिये हैं और पलंग बिछा लिया है। वह अपना मुख आरसी में देखती है, जो मलिन पड़ गया है। गश्ती के चौकीदार के बोलने से पता चल रहा है कि आधी रात का समय है और उसे प्रसूति की पीर (दर्द) उठने प्रारम्भ हो गए हैं। सुबह जब मुर्गा बोला, उस समय बच्चे का जन्म हो गया।

सोहर

अंगना में हरी-हरी दूब
घिनोचन केवड़ा महाराज।
पैले पहर को सपनो सुनो जी
मोरी सासु जी महाराज
गंगा जमन दोऊ बहिनें
अँगन मोरे बह कड़ीं महाराज।
दूजे पहर को सपनो सुनो जी
मोरी सासु जी महाराज
चंदा सूरज दोऊ भईया
अँगन मोरे ऊग रये महाराज।
तीजे पहर को सपनो सुनो जी
मोरी सासु जी महाराज
राम लखन दोऊ भईया
अँगन मोरे खेल रये महाराज।
चौथे पहर को सपनो सुनो जी
मोरी सासु जी महाराज
भोर भये भुंसारे
ललन होय परे महाराज।

स्रोत - शकुंतला श्रीवास्तव

जब गर्भवती स्त्री को प्रसूति पूर्व के दर्द उठना प्रारम्भ हो जाते हैं, पर शिशु जन्म में कुछ देरी हो तो उसे बीच-बीच में थोड़ी सी नींद आती है, उसमें स्वप्न अधिक आते हैं। स्त्री वही सपने अपनी सास को बता रही है कि पहिले पहर उसने अपने आँगन में गंगा, जमुना नदियों को बहते देखा, दूसरे में चाँद सूरज आँगन में ऊगते दिखे, तीसरे पहर में उसे राम-लक्ष्मण (बालक रूप) खेलते दिखे, फिर चौथे पहर में ललन यानि पुत्र का जन्म हो गया।

सोहर

लाला भये हरदौल
चलो सखी देखन चलिए।
कौन घरिन लाला जनम लिए हैं
कौन घरिन अवतार
चलो सखी ....

रोहनी घरिन लाला जनम लए हैं
पुक्खन घरिन अवतार
चलो सखी ....
काहे के छुरा नरा छीनियो रे
काहे खपड़ अस्नान
चलो सखी ....
सोने के छुरा नरा छीनियो रे
रूपे खपड़ अस्नान
चलो सखी ....
काहे के सूप संजोइयो रे
काहे के अरछित डार
चलो सखी ....
सोने के सूप सँजोइए रे
मुतियों के अरछित डार
चलो सखी ....

स्रोत – शकुंतला श्रीवास्तव

जब शिशु का जन्म होता है तब सर्वप्रथम यह देखा जाता है कि किस समय, किस घड़ी में उसका जन्म हुआ है। तत्पश्चात् छुरे से गर्भ नाल काटा जाता है। बुन्देलखण्ड में परम्परा रही है कि मटके को आधा फोड़कर उसमें शिशु को स्नान कराया जाता है, जिसे 'खपड़ अस्नान' कहते हैं। उसके बाद एक सूप में चावल बिछा दिए जाते हैं (ताकि शिशु को गड़े नहीं) और उसमें शिशु को लिटाया जाता है। उक्त गीत में लाला हरदौल के जन्म की बात कही गई है और महिमा गायी गई है कि लाला हरदौल ने रोहणी व पुष्य नक्षत्र में जन्म लिया था। सोने के छुरा से उनका गर्भ नाल काटा गया। 'खपड़ स्नान' चाँदी के खपरे में कराया गया। सोने के सूप में मोतियों के अक्षत (चावल) बिछाकर उन्हें लिटाया गया। शिशु जन्म के अवसर पर गीत गाकर ऐसी कामना की जाती है कि शिशु हरदौल की तरह बने।

सोहर

दसरथ जी के चारई लाल
दिन-दिन प्यारे लगें।
किनकें भए हैं भरत-शत्रुघन
किनकें भए लछमन-राम
दिन ....
कैकई सुमित्रा कें भरत-शत्रुघन

कौशल्या कें लछमन-राम
दिन....................

स्रोत - शकुंतला श्रीवास्तव

दशरथ जी के चारों पुत्र राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ज्यों-ज्यों दिन बीत रहे हैं और भी प्रिय लगते जाते हैं। किसके यहाँ भरत-शत्रुघ्न पैदा हुए हैं और किसके यहाँ लक्ष्मण-राम? चूँकि राम के साथ सदा लक्ष्मण दिखते हैं और भरत व शत्रुघ्न की जोड़ी है अत: ऐसा लगता है कि वे एक माँ के हैं व दूसरी जोड़ी दूसरी माँ की। यही कहा गया है कि सुमित्रा और कैकेयी के पुत्र हैं भरत और शत्रुघ्न व कौशल्या के पुत्र हैं राम व लक्ष्मण।

सोहर

सुहागन बोल री
तेरे चेहरे से छाई रुशनाई।
इक दमरी को सोंठ गुड़ मँगा लओ
बड़ी चढ़ाई कढ़ाई
सुहागन......................
हरीरा-हरीरा जच्चा ने पी लओ
सैंया ने चाटी कढ़ाई
सुहागन......................
चाट, चूट कें दफ्तर चल गए
मूँछों पे लगी पियराई
सुहागन......................
मुंशी, दरोगा पूंछन लागे
मूँछों पे कैसी पियराई
सुहागन......................
हमरी धना कें लाल भए हैं
हमने चाटी कढ़ाई
सुहागन......................

स्रोत - किशोरीबाई

बच्चे के जन्म पर बच्चे के पिता के साथ स्त्रियाँ हँसी-ठिठोली भी करती हैं। उक्त गीत में उसी को दर्शाया गया है, साथ ही उस वक्त की स्थिति और शिशु के जन्म की खुशी को भी व्यक्त किया गया है। सुहागिन के चेहरे पर पुत्र जन्म की खुशी की चमक है। एक पैसे का सोंठ, गुड़ मँगाकर कढ़ाही में जच्चा के लिए हरीरा (दूध, सोंठ, गुड़ व मेवा डालकर धीमी आँच पर तैयार

पेय) बनाया है जो जच्चा ने पिया। पति ने कढ़ाही चाटी। मूँछों पर उसका पीला रंग लगा है। पूछने पर वह बताता है कि मेरे यहाँ पुत्र का जन्म हुआ है।

सोहर

तुम कहें सुनें न लागो री, अरे ऐ रानी जच्चा।
दे राखौ नौ लखा हार, नईं तो ले जेबी हम बच्चा।
तोरे बाबुल नहीं गड़ाओ, नहीं वीरन मोल मँगाओ।
महलन से देहों निकार, नहीं तो मारूँगी दो धक्का।
इतनी सुन वारी वईया, उठ रंग रोस में आईं।
वीरन से मुजरा करतीं, भईया सजा देओ मोरो इक्का।
इतनी सुन वीरन राजा, उठ रंगमहल में आए।
धन जे परदेसनी बहना, इनको दिया जवाब पक्का।
पीर सरीरें हमने खाईं, इनकी कहा थराई जी।
इनको जरा सरम नहीं आई बालम, मँगा रहीं मोरो बच्चा।
तुम कहें सुने न लागो री, अरे ऐ रानी जच्चा।

स्रोत – शकुंतला श्रीवास्तव

उपर्युक्त गीत में ननद व भावजों की आपसी नोक-झोंक को दर्शाया गया है। ननद कहती है, मुझे नौ लखा हार दो वरना मैं तेरा बच्चा ले जाऊँगी। तो जेठानी कहती है कि तुम्हारे पिता का गड़ा धन नहीं है, न ही तुम्हारे भाई ने खरीदा है और ननद को महल से धक्का देकर निकालने की बात करती है। ननद (इसे छतरपुर में 'बईया जू' कहकर बुलाते हैं) तैश में आकर ताँगा तैयार करने को कहती है। राजा वीरन यानी उसके भाई आकर बीच-बचाव करते हैं और कहते हैं कि- ये तो परदेशी मेहमान हैं, इन्हें ऐसा पक्का जवाब क्यों दिया? उसकी पत्नी यानी बच्चे की माँ कहती है कि- मैंने अपने शरीर पर कष्ट सहकर बच्चा जन्मा है, इसमें इनकी कौन सी थराई (मदद या कृपा) है, जो ये मेरा बच्चा लेने की बात कर रही हैं।

सोहर

उठी कमर में पीर
महाराज जी जल्दी से दाई बुलाओ।
सासु जी आहें चरुआ चढ़ाहैं
चरुआ चढ़ाई नेंग माँगें
महाराज जी ....
जिठानी आहें लडुआ बनाहैं

लड़ुआ बनाई नेंग माँगें
महाराज जी ....
छोटी आहें भोजन बनाहैं
भोजन बनाई नेंग माँगें
महाराज जी ....
ननदी आहें सतिया बनाहैं
सतिया बनाई नेंग माँगें
महाराज जी ....

स्रोत – अरुणा श्रीवास्तव

जिसने कुछ 'विशेष' प्राप्त किया हो वह उस प्राप्ति की खुशी के बोझ से झुक जाता है। और अपने लोगों के साथ उस खुशी को बाँटना चाहता है। निकटस्थ अपने ऐसे अवसर पर थोड़ा अभिमान प्रदर्शित कर खुशी प्रकट करते हैं। गर्भवती स्त्री को प्रसूति वेदना प्रारम्भ हो गयी है वह 'दाई' को बुलाने के लिए कह रही है। अब वह कुछ और काम नहीं कर सकती, सारे कार्य उसकी सास, जेठानी, देवरानी व ननद को करने हैं। वे कहती हैं– ऐसे खुशी के मौके पर वे मुफ्त में काम नहीं करेंगे। सास चरुआ चढ़ाई का, जेठानी लड्डू बनवाई का देवरानी भोजन बनाई का तथा ननद दरवाजे पर शुभ के प्रतीक स्वस्तिक बनाने का नेंग माँग रही हैं।

सोहर

मलिया के घर बाग लगे हैं
बेला कली महकाय ....
सासू जी आवें चरुवा चढ़ावैं
चरुआ लेई घर जांय ....
जिठनी आवें लड़ुआ बंधावैं
लड़अन को कुपरा भीतर धर दो
नई तो जिठनी ले जाँय ....
मलिया के घर चार कनूका
उनखों दे दो छूंछी घरे न जाँय
देवरानी आवे खिचड़ी बनावैं
बटुवा को पोंछन देवरानी खाँ दे दो
छूंछी घरे ने जाँय ....
ननदी आवें काजल लगावे
काजल लगाये घर जाँय

मायके से मोरे भैया बुला दे
बेई लिवा के जाँय ....

स्रोत – किशोरी बाई

जैसे माली बाग में फूल उगाता है वैसे ही दम्पत्ति संतति पुष्प ऊगाते हैं। संतति आगमन हुआ है। सभी खुशी में अपना-अपना नेंग माँग रहे हैं। इस खुशी में भी स्त्री दुनियादारी नहीं भूलती और कौन कितना विश्वसनीय या महत्त्व देने योग्य है, ध्यान रखती है। सास के लिए वह कहती है- चरुआ लेकर घर जाँय। जेठानी आकर लड्डू बनाएँ। वह कोपर अन्दर रख दो, नहीं तो कहीं जेठानी न ले जायें। मालिया गरीब है, वह खाली हाथ न जायें। ननदी आकर बच्चे को काजल लगाए और घर जाए उसका कुछ काम नहीं तथा अपने भाई को बुलाने के लिए कह रही है कि, वे आकर उसे पीहर ले जायें।

बधाव

गोकला हमें जाना री ननदी, गोकला हमें जाना।
कान्हा कन्हैया ने जनम लये हैं
कहना बजत बधाई री ननदी
गोकला ....
मथुरा कन्हैया जी ने जनम लिए हैं
गोकल बजत बधाए री ननदी
गोकला ....
कौने जाए कौन खिलाए
किन के लाल कहाए री ननदी
गोकला ....
देवकी जाए जसुदा खिलाए
नंद के लाल कहाए री ननदी
गोकला ....

स्रोत – शकुंतला श्रीवास्तव

बुन्देलखण्ड में हर नवजात शिशु बालक राम या बालकृष्ण का ही रूप माना जाता है। गीत में कोई स्त्री अपनी ननद से गोकुल (कृष्ण जन्म के अवसर पर) जाने की इच्छा प्रकट कर रही है। कहती है कि कृष्ण का जन्म हुआ है, बधाई बज रही है। कृष्ण ने मथुरा में जन्म लिया है, पर गोकुल में पहुँचने के कारण नंद के द्वार बधाई बज रही है, किसने जन्म दिया, किसने पाला? देवकी ने जन्म दिया और यशोदा ने पाला।

बधाव

जसुदा की अँगनईया लुटन लागी,
जसुदा की अँगनईया।
कौन लुटाये अन्न-धन सुनवा
कौन लुटाए रुपैया
लुटन लागी ....
जसुदा लुटाए अन्न-धन सुनवा
नंद लुटाए रुपैया
लुटन लागी ....
ब्रह्मा आए विष्नु आए
पृथ्वी रूप धर गैया
लुटन लागी ....

स्रोत – शकुंतला श्रीवास्तव

कृष्ण जन्म के अवसर पर यशोदाजी के घर, आँगन में अन्न, धन, सोना, रुपैया ऐसे दान किए जा रहे हैं जैसे लुटाए जा रहे हों। कृष्ण के दर्शन करने के लोभ से ब्रह्मा, विष्णु भी दान लेने आए हैं रूप बदलकर, साथ में पृथ्वी भी गाय के रूप में आयी हैं।

बधाव

बधाओ लयाईं ननदी
अरे श्यामलिया।
काहे में रक्खो सोंठ
काहे में रक्खो पीपरी
काहे में रक्खो ननदी
अरे ....
पौंरा में रक्खो सोंठ
अँगना में रक्खो पीपरी
कमरे में रक्खो ननदी
अरे ....
काहे के लाने सोंठ
काहे के लाने पीपरी
काहे के लाने ननदी
अरे ....
जच्चा के लाने सोंठ

बच्चा के लाने पीपरी
सैंयां के लाने ननदी
अरे.....................

स्रोत – पूनम खरे

शिशु जन्म के अवसर पर जच्चा यानी शिशु को जन्म देने वाली स्त्री (माता) की ननद जो बधाई सामग्री लाती है उसका विशेष महत्त्व होता है। पहिले ननद अन्य वस्त्राभूषण के साथ जच्चा व बच्चा के लिए उपयोगी सोंठ, पीपरी आदि मसाले लेकर भी आती थी। साथ ही भाभी और ननद का हँसी मजाक व नोंक-झोंक का भी रिश्ता होता है। उक्त गीत में ननदी की बधाई में सोंठ, पीपरी (पीपल) लाने तथा रखने व ननद को ठहराने की बात हँसी ठिठोली रूप में कही गई है। साथ ही शिशु के पिता को अपनी बहिन के आने की खुशी का जिक्र किया गया है।

बधाव

महलन बजत बधाई
सुनो तो सखी लगत सुहाई।
राजा दसरथ घर लाल भए हैं
आनंद उर न समाई
सुनो..............................
बाजत तबल, मृदंग, मजीरा
मंद मंद शहनाई
सुनो..............................
चलो सखी मिल देखन चलिए
विराजे चक्र रघुराई
सुनो..............................

स्रोत – पूनम खरे

राम के जन्म अवसर पर अवध में उत्सव का माहौल है। सभी खुशी से फूले नहीं समा रहे हैं। तबला, मृदंग, मंजीरा, शहनाई बज रहे हैं। सखी स्त्रियाँ चर्चा कर रही हैं कि उत्सव व भगवान विष्णु जो सुदर्शन चक्रधारी हैं, के अवतार श्रीराम को देखने चलें।

बधाव

कहाँ लयें जातीं बंदनवारे।
काहे को पत्र काहे की डोरी
काहे की सींक सँवार लिए जातीं
कहाँ................

आम को पत्र रेशम की डोरी
सोने की सींक सँवार लयें जातीं
कहाँ.................
कहत मालनी सुन आए हैं
कनक भवन में घूम रय हाथी
रानी कौशल्या के लाल भये हैं
दसरथ सुत राजा अज के नाती
कहाँ.................
नगर अजुद्धा में धूम मची है
रघुकुल दीप उजर गयी बाती
कहाँ.................

स्रोत – ऋचा श्रीवास्तव

मालिन बंदनवार लेकर जा रही है। स्त्रियाँ उससे पूछती हैं कि कैसे और कहाँ लेकर जा रही हो ? वह बताती है कि रानी कौशिल्या के पुत्र जन्म हुआ है। दशरथ के पुत्र, राजा अज के नाती के जन्म से कनक भवन में धूम मची है। रघुकुल दीपक से कुल प्रकाशवान हो गया है।

बधाव

लाल की बधाई में, जड़ाऊ बेंदी लेऊँगी।
साँझ से बेहाल भयी, आधी रात लाल भये
शोर ने मचाओ कोई, ननदी सुन लेगी
ननदी ने खबर पाई, नाचत कूदत आय गई
पूरन भयी मन की आस, अब तो बेंदी लेऊँगी
लालन कहाँ भये ननदी, बेटी तो भयी है
आँचल की ओट भाभी, लाल ने छिपाओ रे
बेंदी उतार भाभी, अँगना में फेंक दई
ले जा हरामजादी, कभी नईं बुलाऊँगी
बेंदी उठाय ननदी, अँगना में सजन लगी
जुग-जुग जीये भाभी लाल, बिन बुलाए आऊँगी
लाल की............................

स्रोत – ऋचा श्रीवास्तव

स्त्रियों का गहनों से प्रेम तो विख्यात है। आज का न सही पुराने समय का एक कड़वा सच यह भी है कि, ननद की दृष्टि भाभी के गहनों पर रहती थी और भाभी भी उसे ननद से छिपाकर

रखती थी। पुत्र जन्म की खुशी में ननद अक्सर भाभी के गहने ले लेती थीं इसलिए पुत्र जन्म होने पर भी पुत्री हुई है, कहकर भाभी अपना जेवर बचाने के चक्कर में रहती थी। उपर्युक्त गीत में उसी का वर्णन है। ननद पुत्र जन्म की खबर सुन जड़ाऊँ बेंदी प्राप्त करने आई है। जब वह नहीं मानी तो भाभी ने फेंक दी। ननद बेंदी लेकर कहती है– तेरा लाल जुग–जुग जिए।

बधाव

जो बंदनवारो कहाँ लँय जातीं, जो बंदनवारो।
नगर अजुद्धा में सुत भय सजनी
राजा महीपति के नाती
राजा जसरत के पुत्र भये हैं
रघुकुल जोत उजियार दई बाती
उजयार दई बाती, जो बंदनवारो कहाँ लँय जातीं।
रानी कौशल्या की कूँख जुड़ानी
सख सखियों की शीतल भई छाती
नगर अजुद्धा में दान भये हैं
लै–लै दान मगन भईं जातीं
मगन भयीं जातीं, जो बंदनवारो कहाँ लँय जातीं।

स्रोत – पूनम खरे

बुन्देलखण्ड में आम के पत्ते लाकर उनसे बंदनवारे बनाने और दरवाजे पर लगाने का कार्य खवासिन करती है। खवासिन (नाऊन) बंदनवारे लेकर जा रही है, किसी ने पूछा कि– यह बंदनवार कहाँ लेकर जा रही हो? वह कहती है– अरे! तुमने सुना नहीं, राजा दशरथ के पुत्र जन्म हुआ है। रानी कौशिल्या की कोख तृप्त हो गयी। रघुकुल प्रकाशित हो उठा है। पुत्र जन्म की खुशी में दान दिए गए हैं। सब सखियाँ आनन्द मना रही हैं। यह बंदनवार राजमहल लेकर जा रही हूँ।

झूला

झुला दो सखी श्याम परे पलना
काऊ गुजरिया की नजर लगी है
सो रोउत है ललना ....
राई नोन उतारें जसोदा
खुशी भये ललना ....
काहे को तोरो बनो है पालना
काहे के गसना ....

अगर चंदन को बनो है पालना
रेशम के गसना ....
जो मोरे ललन खों पलन झुलावे
सो देऊँ जड़ाऊ ककना ....
सबरे बिरज कीं सखीं जुट आईं
सो घाल दये पलना
झुला दो सखी श्याम परे पलना।

स्रोत – किशोरी बाई

हर बच्चा कन्हैया रूप है। हर माँ उसे कन्हैया मानकर ही पालती है। कृष्ण पालने में सो रहे हैं, पर रो रहे हैं। माँ यशोदा ने राई, नोन से उनकी नजर उतारी है। उन्हें लगता है किसी स्त्री ने उन्हें हरख के देखा है। नजर उतारने पर कन्हैया हँसने लगते हैं। कृष्ण का पालना अगर–चंदन का बना है जिसमें रेशम की डोरी के बँध लगे हैं। यशोदा कहती हैं कि जो मेरे कन्हैया को पलना झुलाएगा उसे मैं जड़ाऊ कंगन दूँगी। पता चलते ही सारे ब्रज की स्त्रियाँ पालना झुलाने के लिए इकट्ठी हो गईं हैं।

झूला गीत

भैया, सोजा वारे वीर
वीर की बलैंया लैहों जमना के तीर
छोटी मोटी दोनी दूद की, बिन आगी उफनाय
जोई दूद पीवे मोरो वीरा, मुगलन संग लड़बे जाय
भैया सोजा ....
बर सें बांदो पालनो, पीपर सें बांदी डोर
आऊत जाऊत झोंका दैहों, कबऊँ ने टूटे डोर
भैया सोजा ....
इक दमरी के चना मँगा लय, दो की मँगा लई हींग
वारे भैया दे सुँघाई, आ गई जल्दी नींद
भैया, सोजा वारे वीर
वीर की बलैंया लैहों जमना के तीर।

स्रोत – शकुंतला श्रीवास्तव

हर स्त्री अपने पुत्र को राजा व वीर मानकर ही पालती है। उसकी यही कामना होती है– वह सुयोग्य बने, ऐसा वीर बने कि मैं उसकी बलैंया लेते न थकूँ। ऐसी ही कामना मन में लिए माता अपने पुत्र को सुला रही है। छोटी सी दोनी जो थोड़े से दूध में जरा से गर्म होने पर उफन जाती है, उससे दूध पीकर उसका वीर बच्चा मुगलों से लड़ने जाएगा (गीत संभवत: उस समय

रचा गया है जब मुगल आक्रांता थे।) बरगद से पालना बाँधा, पीपल से डोरी, आते-जाते उसे सुला दिया जाएगा। एक पैसे के चना मँगाए, दो की हींग मँगाई। हींग सुंघाने से बच्चे को गर्मी आएगी व नजर उतर जाएगी और उसे जल्दी नींद आ जाएगी।

कुआँ पूजन

गर्रा पे डोरी डार गुइयां ....
गर्रा पे डोरी जब नोनी लगे
गोरी-गोरी बइयाँ होंय गुइयां ....
गोरी गोरी बइयाँ जब नोनी लगे
हिरी पीरी चुरियाँ होंय गुइयाँ ....
रेशम डोरी जबईं विराजे
सुन्ने घड़ेलना होंय गुइयाँ ....
सुन्ने घड़ेलना जबईं विराजें
रेशम सारी होय गुइयाँ ....

स्रोत - रानी देवी

बुन्देलखण्ड में बच्चे के जन्म से लगभग सवा-महीने बाद कुआँ पूजन होता है। बच्चे की माता अन्य स्त्रियों के साथ जाकर कुआँ की पूजा करती हैं और पानी भरकर लाती हैं। मान्यता के अनुसार वह कुएँ से आशीर्वाद माँगती है कि, जैसे तुम भरे पूरे हो, सबकी प्यास बुझाते हो, वैसे ही मेरे स्तन दूध से भरे रहें, ताकि मेरे पुत्र को दूध की कमी न हो। उस समय स्त्रियों में हँसी ठिठोली भी होती है। उपर्युक्त गीत में एक स्त्री कुएँ के गर्रा पर डोरी डालने के लिए कह रही है। दूसरी कहती है कि गर्रा पर डोरी तभी अच्छी लगती है जब उसे थामने वाली गोरी बाँहें हों और गोरे हाथ तभी अच्छे लगते हैं जब उनमें हरी-पीली चूड़ियाँ हों। रेशम की डोरी, सोने के घड़े के साथ ही अच्छी लगती है और सोने का घड़ा तभी अच्छा लगता है, जब उसको उठाने वाली के तन पर रेशमी साड़ी हो।

कुआँ पूजन

हम पैरें मूँगन की माला
हमाई कोऊ गगरी उतारो
जाय जो कहियो राजा ससुर सें
सुन्ने घड़ेला बनाएँ
हमाई कोऊ ....
जाय जो कहियो उन राजा जेठ सें
रेशम की लेजें मँगाएँ

हमाई कोऊ ....
जाय जो कहियो उन वारे देवर सें
सुन्नें की पाटें उराएँ
हमाई कोऊ गगरी उतारो।

स्रोत – राजकुमारी बाई

पुत्र जन्म के पश्चात् सवा मास बीतने पर कुल वधू कुआँ पूजने व पानी भरने आई है। पुत्र जन्म के बाद स्त्री का दर्जा खास हो जाता है। वह कह रही है– मैं मूँगा की माला पहिने हूँ (इससे उस विशेष दर्जे को ही इंगित किया जा रहा है।) कोई मेरी गगरी उतारो। मेरे ससुर राजा से जाकर कहो कि– अब मेरे लिए सोने का घड़ा बनवाएँ। राजा जेठजी से कहना पानी खींचने के लिए रेशम की डोरी मँगवाएँ तथा लाड़ले देवर से कहो कि कुएँ पर सोने की पाट डलवाएँ। मैं पानी भरकर आई हूँ कोई मेरी गागर उतारो।

लगुन

सो आज मोरी सिया जू की, लगुन लिखत है।
लगुन लिखत है, दिवा चौक पुरत है
आज मोरी ....
चौक पुरत है, कलस सजत है
सो सोने के कलसा पे दिया जरत है
आज मोरी ....
दिया जरत है, शुभ ब्याव सुधत है
सो आज मोरे अँगना में, रंग बरसत है
सो आज मोरी सिया जू की, लगुन लिखत है।

स्रोत – राजकुमारी बाई

बुन्देलखण्ड में कन्या पक्ष की ओर से लगुन जाती है। लगुन कन्या के घर पर लिखी जाती है तथा वर के घर बाँची जाती है। इसमें विवाह के सारे कार्यक्रम मुहूर्त्त अनुसार लिखे जाते हैं। आज जनकदुलारी सीता की लगुन लिखी जा रही है। गीत में उसी का वर्णन है। लगुन स्थल को पहिले लीपा–पोता गया, चारों ओर ढिग बाँधी गई। फिर चौक पूरा गया है। उस पर कलश स्थापित करके दीपक जलाया गया। इसके बाद पूजा प्रारम्भ हुई और पण्डित विवाह की तिथियाँ शोधने लगे।

कंकन

जो ने होवे धनुष को टोरबो
कठन कंकन गाँठ छोरबो

तुमने जनकपुरी पग धारे
शिव के धनुष टोरकें डारे
जो ने होवे मारीच खों मारबो
कठन कंकन ....
जितनी जनकपुर की नारीं
सारीं सरहज लगें तुमारी
अब सीक लो सिया सें कर जोरबो
कठन कंकन ....

स्रोत – रानी देवी

जनकपुरी की स्त्रियाँ रामजी से कहती हैं– यह कोई शिव धनुष को तोड़ने का काम नहीं है। कंकन की गाँठें बहुत मजबूत लगी होती हैं। इनको खोलना बहुत कठिन काम है। न ही यह कोई मारीच के मारने जैसा काम है जो आप आसानी से कर लोगे।

स्त्रियाँ ठिठोली करती हैं कि– हे रामजी! जितनी जनकपुरी की स्त्रियाँ हैं, वे तुम्हारी साली और सलहज लगती हैं, उनकी बात मान लो और अब आप जानकीजी के आगे हाथ जोड़ना सीख लो। क्योंकि कंकन की गाँठ खोलना बहुत कठिन है।

बनरी

हारी–हारी दूवा बेटी, घनी है चमेली
फूल रही फुलवार भलें जू।
बीने–बीने फुलवा भर लयीं छबुलिए
धर लई जा मायके की गैल भलें जू।
गैल में मिल गय रगपत दूला
सो दो फुल हमें दयें जाव भलें जू।
जे फुल हम अपने बाबुल खाँ दैंहें
सो जब हुइयें साके के ब्याव भलें जू।
हरी–हरी दूवा बेटी घनी है चमेली
फूल रही फुलवार भलें जू।

स्रोत – निशा श्रीवास्तव

कई गीतों का मूल रूप अलग–अलग स्थानों के अनुसार परिवर्तित हो जाता है। छतरपुर में यह गीत (जो कि मूल रूप में नहीं है) वहाँ की रुचि और सोच के हिसाब से अपने अनुकूल बनाकर इसी तरह गाया जाता है। बाग में हरी–हरी दूर्वा है, चमेली घनी खिली है, फूलों की

फुलवारी खिली हुई है। बन्नी ने बीनकर टोकनी में फूल भर लिये और वापिस घर लौट चली। रास्ते में रघुपति (बन्ना) मिल गए और दो फूल माँगने लगे। कहने लगे कि– ये फूल हम पिताजी को देंगे और कहेंगे कि– फूलवाली से पसन्द का ब्याह करेंगे। फुलवारी खूब फूल रही है।

बनरा

बन्ना छब लख मोरो जिया हुलसत है
हिया हुलसत है, उमंग बढ़त है
बन्ना छब....................
रगबर वसन लसत कुसमानी
सो मुंदरी पै मोरो हिया हुलसत है
बन्ना छब....................
जनक भवन सें जे आई लगुनियां
सो सुन–सुन सखी मोरो हिया हुलसत है
बन्ना छब....................
देखो सखी नृप जसरत के घर
कंचन कलस पे दिया जरत है
बन्ना छब....................

स्रोत – रानी देवी

एक स्त्री अपनी सखी से राम के बन्ना रूप की चर्चा कर रही है कि– सखी! बन्ने की छवि देख मेरा मन खुशी से फूला नहीं समाता और मन में बड़ी उमंग पैदा होती है। लगुन में जो वस्त्र आभूषण आए हैं। वे वस्त्र फूलों से मुलायम हैं और रघुवर की अँगूठी देख तो मेरा हृदय खुशी से उछलता है। देखो सखी! राजा दशरथ के यहाँ सोने के कलश के ऊपर दिया प्रकाशित हो रहा है।

बनरी

काहे खाँ बाबुल मोरे कुआँ खुदाये
सो काहे लगाए लख आम भलें जू
काहे खाँ बाबुल मोरे कन्या जन्मी
काहे बढ़ायो जिया सोस भलें जू
पनियाँ भरन खाँ बेटी कुआँ खुदाये
चौखन खाँ लख आम भलें जू
धरम करे खाँ लाड़ो कन्या जो जन्मी
कटें जनम के पाप भलें जू

छिपा बिन हूम दूब बिन अचवन,
बिन धिया न धरम होय भलें जू

स्रोत – निशा श्रीवास्तव

बेटी अपने पिता से पूछ रही है कि– पिताजी! तुमने किसलिए कुआँ खुदवाया है? और किसलिए तुमने आम के पेड़ लगाए हैं ? किसलिए तुम्हारे यहाँ मैं पुत्री जन्मी, जो तुम्हें ये दिन-रात की चिंता मिली?

पिता के लिए बेटी की चिंता सबसे अधिक होती है। बेटी ही पिता को सबसे अधिक प्यारी होती है। पिता कहता है कि बेटी! पानी भरने के लिए मैंने कुआँ खुदवाया है। चूसने के लिए मीठे आम लगाए हैं और धर्म करने के लिए तुम मेरी लाड़ली पुत्री जन्मी हो, जिसके कारण मेरे जनम-जनम के पाप नष्ट हो जाएँगे।

बनरा

बनरा तो सोबें अटारी, सबई सखीं देखन खाँ ठाँरी।
चंदन को टींका फूफा लँये ठाँड़े, खोरें तो काड़ो हजारी।
सबई सखीं ....
केसरिया बानो दरजी लँये ठाँड़ो, पिहनो तो राजा हजारी।
सबई सखीं ....
केसरिया साफा जीजा लँये ठाँड़े, बाँधो तो बनरा हजारी।
सबई सखीं देखन खाँ ठाँरी।

स्रोत – निशा श्रीवास्तव

बुन्देलखण्ड में बन्ने को शादी की वेश-भूषा में तैयार करने के लिए उसे मनाना पड़ता है। बन्ना (वर) तीन दिन का राजा माना जाता है। बन्ना अटारी पर जाके सो रहा है। घर-पड़ोस की स्त्रियाँ उसकी सजावट देखने को खड़ी हैं। बन्ना के फूफा चंदन का टीका लगाने खड़े हैं, कह रहे हैं कि– माथे पर चंदन की खोरें तो कढ़वा लो हजारी राजा। केसरिया रंग का बागा लेकर दर्जी भी खड़ा है। मिन्नतें कर रहा है कि– पहिन लो। केसरिया साफा लेकर बन्ने के जीजा खड़े हैं और मना रहे हैं कि हजारी राजा साफा बाँध लो। सभी स्त्रियाँ देखने खड़ी हैं।

बनरा

आज बन्ना की रंग भरी अँखियाँ
रंग भरी अँखियाँ चंदन भरी छतियाँ
आजुल कहें बन्ना बैठो अथैयां
आजी कहें घर रहो जी बना लग जैहें नजरिया

आज बन्ना ....
बाबुल कहें बन्ना बैठो अथैंयां
भाई कहें घर रहो जी बना लग जैहें नजरिया
आज बन्ना ....
काकुल कहें बन्ना रहो अथैंयां
काकी कहें घर बैठो जी बना लग जैहें नजरिया
भैया कहें बन्ना रहो अथैंयां
भाभी कहें घर बैठो जी बना लग जैहें नजरिया
आज बन्ना की रंग भरी अँखियाँ
रंग भरी अँखियाँ चंदन भरी छतियाँ

स्रोत – रमा देवी

आज बन्ने की आँखों में लाल डोरे हैं। उसकी छाती बिना इत्र के ही चंदन जैसी महक रही, क्योंकि उसका विवाह सन्निकट है। बन्ना के आजा कह रहे हैं कि बाहर जाकर बैठो। (अथैंयाँ से तात्पर्य वैसे बाहर ही होता है, पर पुराने समय में घर के दरवाजे के बाहर पुरुषों को बैठने के लिए एक चबूतरा भी बना होता था, उसी को अथैंयाँ कहा जाता था।) बन्ना की आजी कह रही है कि घर में बैठो, बाहर तुम्हें सब हरख के देखेंगे, तो नजर लग जाएगी। इसी तरह पिता, काका, भैया बन्ना को बाहर बैठने को कह रहे हैं और माता, काकी व भाभी अन्दर रहने को कह रही हैं।

बनरा

लयें धनुष बन्ना ठाँड़े री
कोई जोड़ी तो मिला दो
माथे मौर बांदो राजा बनरे
कलगिन बिच सिया जानकी
कोई ....
चंदन खोरें काढ़ो राजा बनरे
टिबकन बिच सिया जानकी
कोई ....
कानन कुण्डल पैरों राजा बनरे
लरियन बिच सिया जानकी
कोई ....
गले में गोपें पैरों राजा बनरे
माला बिच सिया जानकी

कोई ....
कोंचन चूरा पैरों राजा बनरे
कंकन बिच सिया जानकी
कोई ....
पाँवन तोड़ा पैरों राजा बनरे
भोजन बिच सिया जानकी
कोई जोड़ी तो मिला दो।

स्रोत – इंदिरा बाई

हाथ में धनुष लेकर बन्ना राम खड़े हैं। अभी विवाह हुआ नहीं, होने वाला है। स्त्रियाँ कहती हैं कि– अकेले खड़े हैं, इनकी जोड़ी तो मिला दो। पर कैसे ? स्त्रियाँ कहती हैं कि– माथे पर मौर बाँधो बन्ने, उसकी कलगी के बीच सीता बसी है, वे ही दिखेंगी। जो चंदन की खोरें काढ़ोगे, उसकी टिपकी में सीता हैं। कान में कुण्डल पहिन लो, उसकी लड़ियन बीच सीता हैं। हाथ के चूड़ा में कंकन के बीच और पाँव के तोड़ा के नीचे मोजों बीच सीता बसी हैं। राम बन्ना धनुष लेकर खड़े हैं, इनकी कोई जोड़ी मिला दो।

बनरा

मोरे राम लखन से बनरा कौने बिलमा लय रे।
बना के आजुल बिलमा लय रे
आजी कण्ठ लगा लय रे। मोरे ....
बना के बाबुल बिलमा लय रे
माई कण्ठ लगा लय रे। मोरे ....
बना के काकुल बिलमा लय रे
काकी कण्ठ लगा लय रे।
मोरे राम लखन से बनरा कौने बिलमा लय रे।

स्रोत – रमा देवी

बुन्देलखण्ड में हर दूल्हे को राम, लखन की उपमा प्रदान की जाती है। विवाह के अवसर पर आए स्त्री–पुरुष पूछ रहे हैं कि दूल्हा कहाँ हैं ? सभी उसे देखना चाहते हैं। मेरे राम लखन से दिखने वाले बन्ना को किसने रोक लिया है, बातों या काम में लगा लिया है ? बन्ना के आजुल ने बन्ना को रोक लिया है, उसकी आजी उसे कण्ठ से लगा रही हैं। बन्ना के पिता ने उसको रोक लिया है। उसकी माता उसे छाती से लगाकर दुलार रही हैं। बन्ना के काका ने उसे रोक लिया है, बन्ना की काकी उसे प्यार से कण्ठ लगा रही हैं। राम–लखन जैसे बन्ने को किसने रोक लिया है ?

बनरा

बैठे-बैठे कौशल्या की गोद हो
रामचंद्र दूला बने।
माथे हो मौरा बांदो राजा बनरे
जाकी कलिगन पे नाच रयी मोर
रामचंद्र ....
चंदन खोरें काढ़ो राजा बनरे
जाकी टिपकी पे नाच रयी मोर
रामचंद्र ....
कानों में कुण्डल पैरों राजा बनरे
जाकी करियन में नाच रयी मोर
रामचंद्र ....
गरे मे गोपें पैरो राजा बनरे
जाकी माला में नाच रयी मोर
रामचंद्र ....
कोंचों में चूरा पैरों राजा बनरे
जाके कंकन में नाच रयी मोर
रामचंद्र ....
पाँवों में तोड़ा पैरों राजा बनरे
मोजन में नाच रयी मोर
रामचंद्र दूला बने।

स्रोत – आशा देवी

बालक गोद में बैठते-बैठते कब बड़े हो जाते हैं और उनके दूल्हा बनने की बारी आ जाती है, कुछ पता ही नहीं चलता। कल तक माँ कौशल्या की गोद में बैठने वाले रामचंद्र दूल्हा बन रहे हैं। उन्हें माथे पर मौर बाँधा जा रहा है, जिसकी कलिगन बीच मोर नाच रही है। चंदन की खोरें काढ़ी गई हैं, उसकी टिपकी के बीच मोर नाच रहे हैं। कानों में कुण्डल, गले में गोप (तिदानों), हाथों में चूड़ा व पाँव में तोड़ा पहिनाया जा रहा है। कुण्डल की लड़ियों, गोप की माला, चूड़ा के कंकन और पाँव के मोजों के बीच मोर नाच रही है। रामजी दूल्हा बने हैं।

बन्ना

बन्ना के आँगन गेंदी फूल, कुसुम रंग फीके लागें रे
बन्ना के आजुल सजें बरात, आजी कंठ लगावें रे

बन्ना के बाबुल सजें बरात, माई कंठ लगावें रे
बन्ना के कक्का सजें बरात, काकी कंठ लगावें रे
बन्ना के फूफा सजें बरात, बुआ कंठ लगावें रे
जैसें सज लय लछमन राम, भरत खाँ आँगें कर लय रे

स्रोत – ईश्वरीबाई सेन

बन्ना के घर के आँगन में गेंदा के फूल खिले हैं। उनके सामने सभी फूलों के रंग फीके लगते हैं। बन्ना के अजा बारात के लिए सज रहे हैं, आजी बन्ने को गले से लगा रही हैं। बाबुल (पिता), काका, फूफा सभी बारात जाने के लिए सज रहे हैं एवं माई, काकी, बुआ सभी बन्ने को गले से लगा रही हैं। बन्ना सजकर अपने भाईयों के साथ खड़ा है, ऐसे लगता है जैसे– राम, लक्ष्मण और भरत खड़े हों।

बारात निकासी

बन्ना घोड़ी तेरी सजकर बाहर खड़ी
बन्ना के आजुल हैं हजारी उनने मोल लई,
बन्ना की आजी रानी सजें मुतियन की लड़ी
बन्ना तेरी..............................
बन्ना के बाबुल हैं हजारी उनने मोल लई
बन्ना की माई रानी सजें मुतियन की लड़ी
बन्ना तेरी..............................
बन्ना के काकुल हैं हजारी उनने मोल लई
बन्ना की काकी रानी सजें मुतियन की लड़ी
बन्ना घोड़ी तेरी सजकर बाहर खड़ी

स्रोत – इंदिरा बाई

बारात निकासी की बेला है। दूल्हे की घोड़ी सजकर बाहर खड़ी है। स्त्री–पुरुष बातें करते हैं कि बन्ने के आजुल हजारी राजा हैं। उन्होंने ही यह शानदार घोड़ी खरीदी है। बन्ना की आजी मोतियों का हार पहिनने वाली हैं। बन्ना के पिता, काका हजारी राजा हैं, उन्होंने घोड़ी मोल ली है। बन्ने की माता, काकी सभी मोतियों के हार से सजती हैं। बन्ना की घोड़ी सजकर बाहर खड़ी है।

द्वारचार

कहना के बड़े कोटिया जिनने कोट उठाए
राम–राम–राम जिनने कोट उठाए
कहना के भले मालिया जिनने बाग लगाए

कौना की बेटी कोकला जिनने फूल मँगाए
राम-राम-राम ....
मिथला के भले मालिया जिनने बाग लगाए
राजा जनक बेटी कोकला जिनने फूल मँगाए
राम-राम-राम ....
कहना के भले कोटिया जिनने कोट उठाए
कहना के बड़े तापसी चढ़ ब्याहुन आए
राम-राम-राम ....
मिथला के बड़े कोटिया जिनने कोट उठाए
नगर अजुद्धा के तापसी चढ़ ब्याहुन आए
राम-राम-राम ....
कोट नवें, पर्वत नवें सिर नव तन नवाये
राजा जनक को माथो जब नवे जब ब्याहुन आए
राम-राम-राम ....

स्रोत – सरस्वती देवी

द्वारचार टीका के समय लोग बातें करते हैं। कौन ऐसा धनी व्यक्ति है जिसने सिर्फ एक दिन के स्वागत के लिए इतना बड़ा किला बनवाया है, और वह कुशल माली कहाँ का है जिसने यह बाग लगाया है, और यह फूल बीनने जो आई है जिसकी बोली कोयल सी मीठी है, यह किसकी बेटी है? ये मिथिला के कुशल माली हैं जिन्होंने यह बाग लगाया है, और राजा जनक की बेटी सीता इस बाग में फूल चुनने आई है।

इतना धनी व्यक्ति कौन है जिसने ऐसा किला बनवाया और वह कौन तपस्वी है जिसे अपनी तपस्या के फलस्वरूप यह अवसर मिला? ऐसे श्रेष्ठ कुल में ब्याह के लिए आए हैं। मिथिला के राजा जनक ने ये किले बनवाए हैं और राजा दशरथ वे तपस्वी हैं जो अपने पुत्र का विवाह करने यहाँ आए हैं।

कोट यानी किला झुक सकता है। पर्वत भी झुक सकता है। पर बेटी के पिता का सिर नहीं झुकता। वह सिर तभी झुकता है जब उसकी बेटी को ब्याहने वाले वर का पिता दरवाजे पर आता है।

हरदौल गारी

हरदौल लला मोरी कही मान लियो रे
हरदौल लला ....
माथे भौर हरदौल जू खाँ सोहे

सो लड़ियन की लटक संभार लियो हो
हरदौल लला ....
कानन में कुण्डल हरदौल जू खाँ सोहे
सो मुतियन की लट संभार लियो हो
हरदौल लला ....
अंगन बागो हरदौल जू खाँ सोहे
सो फेंटा की लटक संभार लियो हो
हरदौल लला ....

स्रोत – किशोरी बाई

बुन्देलखण्ड में जब वर, दूल्हा की वेश-भूषा में तैयार होता है। उसके तैयार होने के पहिले लाला हरदौल को दूल्हा बनाया जाता है। उनकी पूजा की जाती है जिसमें वे कोरे वस्त्र उनको सर्वप्रथम पहिनाए (प्रतीक रूप में स्पर्श कराए) जाते हैं, फिर उनकी उतरन दूल्हा पहिनता है। ऐसा माना जाता है कि, जब तक दूल्हा उस वेश-भूषा में रहता है उसको लाला हरदौल का तेज प्राप्त हो जाता है और हरदौल उसकी रक्षा करते हैं तथा सभी विघ्न दूर करते हैं। गीत में उसी का वर्णन है। हरदौल लाला मेरा कहा मान लेना मेरी अरज सुन लेना। माथे पर मौर हरदौल को स्पर्श कराया जाता है। इस मौर की लड़ियन की लटक सँवार लेना, हमारी लाज रखना। इसी प्रकार कान के कुण्डल, शरीर का बागा उनको स्पर्श करा के विनती की जाती है कि अब इस उतरन को पहिनने वाले दूल्हे की लाज रखना और रक्षा करना। लाला हरदौल मेरी कही मान लेना।

गारी

जनक लली तुम फरियो फूलियो
सदा सुहागन रईओ मोरे लाल
जो कछु पूछें गाँव पुरा के
घर को ने भेद बतईयो मोरे लाल
सास ससुर खों सीस नवईओ
पत की सेवा करियो मोरे लाल

स्रोत – निशा श्रीवास्तव

सीता को जनकपुरी की बुजुर्ग स्त्रियाँ आशीष व सीख दे रही हैं कि जनक लली तुम खूब फलो-फूलो और सदा-सुहागिन रहो। वहाँ ससुराल में कोई पूछे तो अपने घर की किसी कमी का जिक्र कभी न करना। सास-ससुर का सम्मान करना व सदा अपने पति की सेवा करना।

गारी

कोरी मटकिया में दहिया जमाओ
इमरत दीन्हो है जाम सुनो जू
वो दहिया रानी माई बिलोरें
घियरा रहे उतराय सुनो जू
ओ घियरा के वे काज रचे हैं
धुँअना रहे मँडराय सुनो जू
हँस-हँस बोलीं बेटी अपने बबुल सें
हमरी बात सुन लेयो सुनो जू
इतने कपट काहे करे राजा बाबुल
इतने कपट नहिं होय सुनो जू
एक कूँख जन्मे एक गोद खेले
इक तन पिये दोई दूद सुनो जू
वीरन को दीन्ही बाबुल महल अटारी
हमको दिए परदेस सुनो जू
लाले-लाले डोला बाबुल ने सजा दय
पच रंग सजे हैं कहार सुनो जू
हाथ पकर बेटी डोला में धर दई
चली परदेसी के साथ सुनो जू
लाले-लाले डोला चले जात हैं
माई जायो कोई न दिखाय सुनो जू
गऊओं के चरैया भैया गऊएँ चरइयो
माई घर कहियो संदेस सुनो जू
हमरे खेलत कीं धरीं हैं पुतरियाँ
जमना में दइयो सिराय सुनो जू
ऐसे बोल काय बोली रानी बेटी
भोरइँ पठैहों राजा वीर सुनो जू

स्रोत - शकुंतला श्रीवास्तव

कोरी मटकी में दही जमाया, जिस अमृत का जाम डाला गया। दही मथकर रानी माता ने घी निकाला है। उसी घी से सारे कार्य किये जा रहे हैं। बेटी की शादी के पकवान बन रहे हैं। धुआँ मंडरा रहा है। बेटी अपने पिता से हँसकर पूछती है कि- मेरी बात सुनो, आपने मेरे साथ इतना कपट क्यों किया? ऐसा भी कपट नहीं करना था, एक ही कोख से मैं व मेरा भाई जन्मे, एक ही माँ का दूध पिया और भाई को आपने महल दिए और मुझे परदेश? लाल रंग की डोली

पिता ने सजा दी जिसमें पाँच रंग के कहार उठाने को सजे हैं। पिता ने हाथ पकड़कर बेटी को डोली में बिठा दिया है और बेटी परदेसी के साथ चल दी। बेटी कोई पहचान का दिखे इसके लिए झिरी से झाँक रही है। अपनी माँ का जाया कोई आसपास नहीं दिखता है। रास्ते में गायें चराने वाला चरवाहा दिखता है। उसी से कहती है कि– भैया! मेरी माता को संदेश दे देना। हमारे खेलने की गुड़ियाँ सब जमुना जी में विसर्जित कर देना। पिता कहता है– मेरी बेटी! ऐसे बोल क्यों बोल रही हो? सुबह ही तेरे भाई को तुझे लिवाने भेज दूँगा।

गारी

सिया लेकें चली कर में जयमाल खों
डारी रघुवंश लाल खों
हो रय खुसी जनकपुर वासी
दूला मिले राम सुख राशी
सो जोड़ी रची विधाता साँची
सिया लेकें ....
हाली फूली नहिं समावें
सखी सहेली मंगल गावें
हँस-हँस आपस में बतलावै
धन्न-धन्न जनक भूपाल खों
सिया लेकें ....

स्रोत – सुधा रावत

जनक लली सीता हाथों में जयमाला लेकर आईं हैं और वह उन्होंने रामजी के गले में डाल दी। सीता को राम जैसे वर मिले इस बात पर सारे जनकपुरवासी खुशी से फूले नहीं समा रहे हैं। विधाता ने सर्वगुण सम्पन्न सच्ची जोड़ी रची है। सीता की सखी सहेलियाँ फूली नहीं समाती हैं, मंगल गीत गा रही हैं व आपस में कहती हैं– राजा जनक धन्य हैं।

गारी (चढ़ाव)

समर-समर पग धरियो बेटी राजन की
तुमे जाने चढ़ाये के चौक बहुआ साजन की
माथे जो बेंदी पैरियो बेटी राजन की
तुमे जाने चढ़ाये के चौक बहुआ साजन की
कानन जो कुण्डल पैरियो बेटी राजन की
तुमे जाने चढ़ाये के चौक बहुआ साजन की
गरे में हरवा पैरियो बेटी राजन की

तुमे जाने चढ़ाये के चौक बहुआ साजन की
हांतन जो ककना पैरियो बेटी राजन की
तुमे जाने चढ़ाये के चौक बहुआ साजन की
कम्मर जो तगड़ी बांदियों बेटी राजन की
तुमे जाने चढ़ाये के चौक बहुआ साजन की
पाँवन जो तोड़ा पैरियो बेटी राजन की
तुमे जाने चढ़ाये के चौक बहुआ साजन की
ऊँगरिन जो बिछिया पैरियो बेटी राजन की
तुमे जाने चढ़ाये के चौक बहुआ साजन की
अंग में जोरो पैरियो बेटी राजन की
तुमे जाने चढ़ाये के चौक बहुआ साजन की
समर समर पग धारियो बेटी राजन की।

स्रोत – सुधा रावत

हे राजा की बेटी! तुम संभलकर पग धरना। हे श्वसुर की बहू! तुम्हें चढ़ाव के चौक के लिए जाना है। तुम अपने माथे की बेंदी पहिनना, कान में कुण्डल, गले में हार, हाथों में कँगन, कमर में तगड़ी, पैरों में तोड़ा (पायल), ऊँगलियों में बिछिया व शरीर पर लँहगा पहिनकर तुम सँभल-सँभलकर चलना। हे राजा की बेटी! तुम्हें चढ़ाव के चौक के लिए जाना है। हे श्वसुर की बहू! तुम्हें चढ़ाव के चौक के लिए जाना है।

गारी

साँची कहो मोरे लाला लखन जू
अबकें आवन कब होंय मोरे लाल
साँची कहो लखन सुकमार
अबकें आवन कबे तुमार
नैना तुमाय रतनारे लखन जू
अबकें आवन कब होंय मोरे लाल
तुम हो दसरत राज दुलारे
तुम हो कौसल्या के प्यारे
तुमने असुर अनेकन मारे लखन जू
अबकें आवन ....
तुमरे काहे सें तन गोरे
रामल श्यामल रंग में बोरे
फिर पाछें एकदम मुख मोड़े

बीड़ा हमाय दयें चखो लखन जू
अबके आवन ....

स्रोत – कम्मो रावत

कुँअर कलेऊ के विदा की तैयारी होने लगती है। विदा के ठीक पहिले जनकपुर की सारी स्त्रियाँ साली, सलहिजें लक्ष्मण से पूछ रही हैं। सही–सही बताओ, लाला लखन जी! अब फिर आप कब आओगे? हे रतनारे नयनों वाले लखन लाल! अब तुम जनकपुरी कब पधारोगे ?

हे वीर लक्ष्मणजी! तुम राजा दशरथ व कौशिल्या के अतिप्रिय हो, तुमने कई राक्षसों को मारा है। अब तुम कब आओगे ? तुम गोरे हो, राम काले हैं तुम ऐसे मुँह फेरकर चले जाते हो, यह पान का बीड़ा तो हमारे हाथ से खाते जाओ और यह बता दो कि अब फिर से जनकपुरी कब आओगे?

गारी

आईं जिनके घर फूहर नारियाँ
वे घर कैसें चलें।
वे तो परीं दुफर तक सोवें
उनसे काम दंद ने होवे
चूलो चकिया देखें रोवें
बासन भाड़े एक ने धोवें
फेरे न दोरे में बारियाँ। वे घर ....
दुफरे उठ कें चूलो बारो
चौका टाल करो न झारो
फिर बिन छानो चून निकारो
माँड़न हेत थार में डारो
जा में माछीं मिली दो चारियाँ। वे घर ....
जब उनने कीनी तरकारी
कर दई नोन बिना की खारी
जेमे खाँ जब परसी थारी
कढ़ गईं बायरे छोड़ उधारी
जिये खाने सो लगें मन झारियाँ। वे घर ....
बे ने सरम काऊ की खातीं
सास ससुर खाँ चिल्लातीं
बच्चन सें भी लड़तीं राँतीं

दिन भर दोरें बैठी रातीं
कहें राम किसन बलिहारियाँ। वे घर ....

स्रोत – ऋचा श्रीवास्तव

जिनके घर में फूहड़ स्त्रियाँ आ गयीं वे घर कैसे चलेंगे? वे दोपहर तक पड़ी सोती हैं। उनसे कोई काम नहीं होता। चूल्हा चक्की देख तो उन्हें रोना आता है। न ही बर्तन धोना आता है। दोपहर को उठकर बिना झाड़े ही चूल्हा जलाती हैं। बिना छना आटा माँड़ने लगती हैं जिसमें मक्खी पड़ी होती है। तरकारी खारी बनाती हैं। जिसको परोसती हैं उसे थाली देखकर घिन आने लगती है। न ही वे किसी की शर्म करती हैं। अपने सास-ससुर से चिल्लाकर बात करती हैं। बच्चों तक से उनकी बराबरी से लड़ती हैं और दिन भर घर के दरवाजे पर बैठी रहती हैं। ऐसी फूहड़ स्त्रियों की तो बलिहारी है।

गारी

राधे गोविंद भजो, राधे गोविंद
रसवारी के भौंरा रे।
माता ने जायो, दूध प्रेम से पिलायो
तुमें सूके में सुलाओ अपुन भोगे दुख दंद
रसवारी ....
बालापन आयो, खेल कूंद में गँवायो
गुन ग्यान नहीं भायो रहे ऐसे भन मंग
रसवारी ....
ब्याह करा लीनो मात पिता त्याग दीनो
प्रेम पत्नी सें कीनो रचे ऐसे छल छंद
रसवारी ....
आयो विरधापन मन लगे पछतावा
दास लगे समझावन कैसें बन है स्वतंत
रसवारी ....

स्रोत – ऋचा श्रीवास्तव

मानव के 'मन' को रस में लिप्त भँवरे की उपमा दी जाती है, जो सदा रस भोग के पीछे ही भागता रहता है।

हे रसिक भँवरे! राधे गोविन्द का नाम लो। माता ने जन्म दिया, बड़े प्यार से अपना दूध पिलाकर पाला। तुझे हर कष्ट से बचाया, खुद ने ही सब कष्ट भोगे। बचपन तूने खेलकूद में ही गँवा दिया। कुछ गुण और ज्ञान अर्जित नहीं किया, बस रस में ही तू मस्त रहा। यौवन में विवाह

किया तो माता-पिता को भी त्याग दिया। बस पत्नी सुख में ही तू लिप्त रहा। सारे छल कपट के काम ही तूने किए। अब जब वृद्धावस्था आयी है। रोग, परवशता ने तुझे घेर लिया है तो स्वतंत्र होने के लिए कैसा तड़प रहा है ? और अपने कर्मों पर पछता रहा है। तेरे लिए बस एक ही रास्ता है कि राधे-गोविन्द भजो। प्रभु का नाम लो।

गारी

बिन्नू सासरे में तनिक न डराइयो
एक सुनो सौ सुनाइयो
उठियो भर दुफरे सो सो कें
ससुरा जो घर आकें टोकें
तब तुम कइयो बेजा रोकें
दद्दा सूने में हाथ ने लगाइयो
एक सुनो ....
बिन्नू चूले नौं ने जइयो
फुलका फूले फूले खइयो
सासु में दो कूल्हे दइयो
ननदी बैरन में गुलचा लगाइयो
एक सुनो ....
कोई कहे तरकारी छोंको
वा पे कुतिया जैसी भौंको
धाक धका धक दिन भर धौंको
आगी जेठा की मूँछ में लगाइयो
एक सुनो ....
आग पानी को कुआँ दिखा कें
खड़िया मिट्टी को विष खा कें
चौखो दिन भर डाँट पिला कें
दिल दिल घोड़ी सो दूला नचाईयो
एक सुनो ....

स्रोत – निशा श्रीवास्तव

वैसे तो सभी अपनी बेटियों को सेवा करने की शिक्षा देकर ही ससुराल भेजते हैं, परन्तु कुछ लोगों की ऐसी भी शिक्षा होती है। गीत भले हँसी ठिठोली के उद्देश्य से रचा गया है, पर कुछ जगहों की यह सच्चाई भी है, ऐसी ही शिक्षा दी जाती है। घर की बुजुर्ग स्त्रियाँ समझा रही हैं कि- बेटी! ससुराल में बिल्कुल डरना मत। कोई तुमसे एक बात कहे तो बदले में उसे सौ बातें

सुनाना। सुनो बेटी! तुम तो दोपहर को सोकर के उठना और यदि तेरे ससुर आकर तुझे कुछ कहें या डाँटें तो तुम रोकर कहना कि- देखो पिताजी! सूने में मुझे हाथ मत लगाना। बेटी चूल्हे के तो पास भी न फटकना और दूसरे रोटी बनाएँ तो खूब फूली रोटी ही खाना तथा सास कुछ बोले तो उसको दो कूल्हे लगाना तथा अपनी शत्रु ननद को घूँसा लगाना। कोई अगर कहे कि जरा तरकारी छौंक दो तो उसके ऊपर कुतिया की तरह चिल्लाना, दिन भर अपनी ही बात कहना। जेठ की मूँछ में कुछ कहे तो आग छुआ देना। सभी को डर दिखाना कि कोई कुछ बोला तो मैं कुएँ में गिर पड़ूँगी या आग लगा लूँगी। ज्यादा हो तो खड़िया मिट्टी खाकर जहर खाने का अभिनय करना। पति को दिन भर डाँटना, उसे दिल-दिल घोड़ी की तरह नचा के रखना। बस बेटी! किसी से बिल्कुल न डरना और कोई एक कहे तो बदले में सौ बातें सुनाना।

ज्यौनार गारी

रुच-रुच लई जनक ज्यौनार हो
जेमे साजनवा ....
पैलें नृप ने चरन पखारे
लेकें मण्डप बिच बैठारे
दोना पातर आंगें डारे
जामे सोने सींक सँवारे
परसे विंजन विविध प्रकार हो
जेमे साजनवा ....
पैलें परसी साग सभा री
सेमे भाजी भुजी बटा री
कुम्हड़ा ककरी और कचनारी
केला आलू की तरकारी
कहो कहाँ तक नाभ उचार हो
जेमे साजनवा ....
परसे निबुआ आम अथाने
अदरक औरा दाख मखाने
सूरन सेव मुरब्बा जाने
चटनी चटकीली मन भाने
परसे चारऊ चार अचार हो
जेमे साजनवा ....
पापर पुड़ी पपरिया खाजी
खस्ता खुरमा गुपचुप ताजी

सेव और मठरी पापर साजे
जिनके रस मन कौन विराजे
जाके सुंदर स्वाद अपार हो
जेमे साजनवा ....
आँगें चल कें कड़ी मिठाई
पेड़ा बर्फी बालूसाई
पापर बुंदी जलेबी आई
इंदरस और इमरती भाई
परसीं फेनी कचौरी चार हो
जेमे साजनवा ....
मोदक मोतीचूर बनाए
गुजिया मालपुआ मन भाए
परसी बेसन मगद सुहाए
रसगुल्लों की आई बहार हो।
जेमे साजनवा ....
परसे मोहन भोग मलाई
रबड़ी खोवा खांड़ मिलाई
ज्यौंन बैठे चारों भाई
आगें सजे कंचन के थार हो।
जेमे साजनवा ....
क्या रुच विधि से भोजन पाए
अचवन कर फिर पान पवाए
चलकें जनवासे तक आए
आनंद द्विज दुर्गा ने पाए
गारीं गावें चतुर नर नार हो
जेमे साजनवा ....

स्रोत – शकुंतला श्रीवास्तव

बुन्देलखण्ड में बारातियों को दी जाने वाली तीसरी पंगत पक्के भोजन की होती है। राजा दशरथ को जनक राज ने पक्की पंगत के लिए बारातियों सहित बुलाया है। पहिले राजा दशरथ के चरण पखारे हैं। मंडप के बीच बिठा उनके आगे दोना व पातर रखे जिसमें सोने की सींक लगाई गई है। फिर छप्पन व्यंजन परोसे गए हैं। साग में सोम, भाजी, बटारी, कुम्हड़ा, ककड़ी, कचनारी, केला, आलू आदि नींबू, आम का अचार, साथ में अदरक, आँवले, किसमिस, मखाने, सूरन, सेव, मुरब्बा, चटनी भी परोसी। पापड़, पुड़ी, पपड़िया, खाजी, खस्ता, खुरमा,

मठरी जिनके बड़े सुन्दर स्वाद हैं। फिर मिठाई में पेड़ा, बर्फी, बालूसाही, बूंदी, जलेबी, इंदरस, इमरती, फेनी, गुजिया, मालपुआ, मलाई के व्यंजन परोसे हैं तथा चारों भाईयों राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न को बिठाया गया। सभी ने रुचि, विधि से भोजन किए हैं। बाद में पान चबाए। जनकपुर की स्त्रियाँ गारी गा रही हैं।

ज्यौनार

राजा दशरथ ब्याहुन आए
जनकपुरी सुख भारी मोरे लाल
महाराज अब चलवो होवे
भोजन की तैयारी मोरे लाल
सहित समाज चले जसरत जू
बाजत धुन शहनाई मोरे लाल
दरवाजें चारऊ भैया जेवन बैठे
गावें सरहज सारी मोरे लाल
माहुल पातर वर को दोना
सुन्ने सींक सवारी मोरे लाल
कुदरु करेला भेड़ा तुरैया
सदरस की तरकारी मोरे लाल
आम आंवरो कैंथा निमुआ
चटनी सरस सुहाई मोरे लाल

स्रोत : किशोरी बाई

राजा दशरथ बारात लेकर आए हैं। जनकपुरी में चारों ओर उल्लास का माहौल है। राजा जनक ने आकर निवेदन किया कि महाराज! भोजन तैयार है, आप सभी भोजन के लिए चलिए। राजा दशरथ सभी बारातियों, सम्बन्धियों के साथ भोजन के लिए जा रहे हैं। शहनाई की धुन बज रही है। चारों भाई ज्यौनार के लिए बैठे हैं। उनके मामा और वर के पातर तथा दोनों में सोने की सींक लगायी गयी है। कुंदरू, करेला, भेड़ा, तुरैया सभी रसों की तरकारी आम, आँवले, कैंथा, नींबू के अचार व चटनी परोसे गए हैं, बहुत सी मिठाइयाँ हैं। व्यंजनों के नाम कहाँ तक कोई याद रखे। राजा दशरथ ने पूरे समाज के साथ रुचि से पंगत खाई।

हरदौल भात

महाशोर भयो लाला हरदौल भात दयो महाशोर भयो
लाला की करनी कछू वरनी न जाय
मड़वा के नेचे सामान न समाय

दान दायजो सुहाय सब नयो भयो
सब नयो भयो लाला हरदौल भात दयो महाशोर भयो
भोजन के करबे खाँ, जब बैठी बरात
होन लगी परस, कछू कही नहीं जात
कड़ी बरा दार भात होवे आनंद-आनंद भयो
आनंद भयो लाला हरदौल भात दयो महाशोर भयो
छिपत रुप होकें घी परसे हरदौल,
देखत बराती बा परसन को डौल
दिल हौन लगी हौल भूल गए सभी चौल
दूला मचल गयो मचल गयो। लाला हरदौल ....
जब लौं परसइया के दरसन नई पाँय
तब लो हम भोजन के गिरास नें उठाएँ
लाला ने देखकें दूला को प्रण होंकें
प्रतक्ष रुप दरस दयो दरस दयो। लाला हरदौल ....
सुनियो हरदौल भैया मोरी चित लाय
कन्या के जग्ग में करियो सहाय
जैसी मोरी करी आय ऐसी जगत खों दिखाय
बात मान गए बात मान गए। लाला हरदौल ....
कुंजावती बैन खों सो देकै वरदान
लाला हरदौल चले अपने स्थान
छंद पूरन भयो छंद पूरन भयो।
लाला हरदौल भात दयो महाशोर भयो।

स्रोत - राजकुमारी बाई

लाला हरदौल ने अपनी बहिन कुंजावती के यहाँ भात (चीकट) दिया है। यही खबर चारों ओर फैल गयी। भात में लाए सामान को रखने की मण्डप में जगह नहीं बची है। इतना अधिक सामान लाए हैं। दान दहेज में सोना, चाँदी, जवाहर सभी हैं। और भी जो सामान है सभी सुन्दर व उत्तम है। भोजन करने जब बाराती बैठे तो कई प्रकार की अवर्णनीय चीज़ें परोसी गईं। कढ़ी, दाल, बरा, चावल, शक्कर देखकर बारातियों को बड़ा आनन्द हुआ। अपना रूप छिपाकर हरदौल ने बारातियों को घी परोसा। किसी व्यक्ति के दिखे बिना घी परोसा जाता देख बाराती घबरा गए। दूल्हे ने जिद ठान ली कि जब तक परोसने वाले के दर्शन नहीं होंगे तब तक हम एक कौर भी नहीं खाएँगे। तब हरदौल ने सभी को प्रत्यक्ष दर्शन दिए। उसके बाद सभी बारातियों ने भोजन ग्रहण किया। बहिन कुंजावती ने अपने भाई से वरदान माँगा कि- हे भैया हरदौल! अब से तुम सभी की कन्याओं के विवाह में ऐसी ही सहायता करना जैसी तुमने मेरी सहायता की। हरदौल ने बात मान ली और उनको वरदान देकर वापिस चले गए।

कुँवर कलेऊ

बिराजे चारऊ भैया वे करें कलेऊ
आईं सिया जी की मैया हँस पूछन लागीं
दो लाला तुम गोरे दो साँवरे कैसे,
एक बाप दो भइया हम साँवरे ऐसे
सारी, सरज हसौना हँस पूछन लागीं
आईं सिया जू की काकी लयें कंचन थारी
दै दो नेंग हमारे हम करें कलेऊ
सारी, सरज हसौना वे पूछन लागीं
दो लाला तुम गोरे दो साँवरे कैसे
एक बाप दो भैया हम साँवरे ऐसे
आईं सिया जू की भावी लयें कंचन थारी
दै दो नेंग हमारे हम करें कलेऊ
सारी, सरज हसौना हँस पूछन लागीं
दो लाला तुम गोरे दो साँवरे कैसे
एक बाप दो भइया हम साँवरे ऐसे

स्रोत – रानी देवी

कुँवर कलेऊ के लिए चारों भाई राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न बैठे हैं। राम और भरत का रंग काला है। लक्ष्मण और शत्रुघ्न गोरे हैं। साली, सलहिज सभी हँसमुख हैं। पूछ रही हैं कि दो लाल गोरे हैं दो काले क्यों हैं ? उनको चारों भाई में से कोई बताता है कि– हमारे पिता एक हैं पर माताएँ दो अलग-अलग हैं, इसलिए ऐसा है। जो भी भोजन कराने आता है। सियाजी माता, काकी, भाभी आदि चारों भाई उनसे नेंग माँगते हैं और वे सभी यही बात पूछती हैं कि– दो लाला गोरे हो दो साँवले ऐसा क्यों ? चारों में से कोई बताता है कि एक पिता और दो माताओं की संतान होने के कारण ऐसा है।

विदा

वारे से पली लली पराई होकें चली
अँसुओं के सींचें बेल बढ़ी ती
मन बड़ बृच्छा टुलंग चढ़ी ती
जियरा खाँ भौतई खली। वारे ....
पुतरा पुतरियन को ब्याव करत ती
विदा करत ती और हँसत ती
अब खुदई परदेस चली। वारे ....

कैसें सावन अब होवेगो
झूला काजें कौन लड़ेगो
एकऊ तो जिद ने टली। वारे ....
बाप मताई की लाज बचईयो
बड़ बृच्छा सो नाम चलइयो
जाकी तुम टूटी कली।
वारे से पाली लली पराई होंके चली।

स्रोत – निशा श्रीवास्तव

लाड़ से पाली बेटी पराई होकर ससुराल जा रही है। कैसे आँसुओं से पगे प्यार से सींचकर बेल बड़ी की थी, जो मन के बरगद पर ऊँचे छोर तक चढ़ी थी। मन को उसका परदेस जाना बहुत खल रहा है। गुड्डा–गुड़ियों का ब्याह रचाती थी। उनकी विदा करती थी और हँसती थी। अब वह खुद ही परदेस को जा रही है। अब सावन आएगा तो कैसा बीतेगा, कौन अब झूला झूलने के लिए लड़ेगा ? उसकी कभी एक जिद ऐसी नहीं जो पूरी न हुई हो। बेटी अपने माता–पिता की लाज रखना। बरगद के वृक्ष की तरह दूर तक नाम चलाना जिसकी तुम अलग हुई एक कली हो। लाड़ से पाली बेटी आज ससुराल को जा रही है।

दादरा

उतार डारो सेला मोरी कही मानो।
लड्डू भी लइयो पेड़ा भी लइयो
बर्फ मत लइयो मोरी कही मानो
हरदी भी लइयो नौन भी लइयो
मिरचा मत लइयो मोरी कही मानो
सासु भी लइयो ननदी भी लइयो
सौत मत लइयो मोरी कही मानो
लड्डू उठ जैंहें, पेड़ा उठ जैंहें
बर्फ घुल जैंहें मोरी कही मानो
हरदी उठ जैंहें, नौन उठ जैंहें
मिरचा भन्नाहैं मोरी कही मानो
सास मर जैंहें, ननदी चल दैंहें
सौत जान खैंहें मोरी कही मानो
उतार डारो सेला, मोरी कही मानो।

स्रोत – शकुंतला श्रीवास्तव

स्त्री अपने पति से कहती है कि– अब ये फेंटा मत कसे रहो, इसे उतार दो। घर गृहस्थी

पर ध्यान दो। लड्डू और पेड़ा दोनों चीजें लाना पर बर्फ मत लाना, क्योंकि लड्डू, पेड़ा काम में आ जाएँगे, बर्फ रखी-रखी घुल जाएगी। हल्दी, नमक लाना पर मिर्च मत लाना क्योंकि हल्दी, नमक काम में आ जाएँगे पर मिर्च काम में आई तो भन्नाएगी। पत्नी-पति से कहती है कि- मेरी बात मानना, तुम सास को लाना चाहो तो ले आना, ननद को लाना चाहते हो ले आना, पर सौत कभी मत लाना, क्योंकि सास तो बूढ़ी है, मर जाएगी। ननदी का विवाह हो जाएगा सो चली जाएगी, पर सौत हमेशा मेरी जान खाएगी। फेंटा उतार दो मेरी बात मानो।

दादरा

जा घर में मोरो नदारो नईयाँ बाई जू।
जा बखरी देख आई, वा बखरी देख आई
बीच की बखरी में, नरदई नईंयाँ बाई जू। जा ....
जा अटरिया देख आई वा अटरिया देख आई
बीच की अटरिया में खिड़की नईयाँ बाई जू।
जा घर में मोरो नदारो नईयाँ बाई जू।

स्रोत - शकुंतला श्रीवास्तव

नई बहू बड़े घर से आई है। ससुराल आकर वहाँ का घर देख रही है। ननद से कह रही है कि इस घर में मेरा गुजारा संभव नहीं है। मैं इस तरफ वाला बड़ा घर (बखरी) देख आई हूँ और दूसरी ओर का भी। बीच वाले घर में तो पानी निकलने की नाली ही नहीं है। बीच के घर की अटारी में कोई खिड़की तक नहीं है। इस घर में तो मेरा रहना संभव नहीं है ननद जी।

दादरा

मैं पइसा वारी बलम मोरो बनिया
सास बेंचें हरदी ननद बेंचें मिरचा
मैं पइसा वारी बलम बेंचें धनिया
सास मोरी लीपे ननद ढिगयाए
मैं ठाँड़ी देखूँ बलम ढोवें पनियाँ
सास मोरी कूटे ननद कुटवावे
मैं ठाँढ़ी रोऊँ बलम लै लो कइयाँ

स्रोत - निशा श्रीवास्तव

मैं पैसे वाली हूँ। धनी हूँ। मेरा पति बनिया है। मेरी सास हल्दी बेचती हैं और ननद मिर्च बेचती हैं, मेरे पति धनिया बेचते हैं। मेरी सास घर लीपती है और ननद चारों ओर की पुताई करती है। मेरे पति पानी भरते हैं, मैं खड़ी-खड़ी देखती हूँ। मेरी सास मुझे पीटती है, मेरी ननद

मुझे पिटवाती है। मैं खड़ी रोती हूँ कि मेरे पति मुझे बचा लें। प्रतीक रूप में बात कहकर सास-ननद से सम्बन्ध दर्शाए गए हैं।

दादरा

ऐ राजा जी मोरा दिल है हजारिया।
छतरपुर शहर की लंबी बजरिया
ऐ राजा जी मोखों लै दो चुनरिया। ऐ ....
चुनरी पहिर धन पनियाँ खों निकरीं
ऐ राजा जी मोखों लागी नजरिया। ऐ ....
पन्ना शहर के वैद बुला दो
ऐ राजा जी झरवा दो नजरिया। ऐ ....
पन्ना शहर के वैद हरामी
ऐ राजा जी मोरी माँगे ननदिया।
ऐ राजा जी मोरा दिल है हजारिया।

स्रोत - पूनम खरे

नयी वधू गाँव की है। छतरपुर उसका विवाह हुआ है। उसे छतरपुर की बाजार उसके पति ने दिखाई है। वह कहती है- मेरे राजा मेरा मन बड़ा दरिया दिल है। छतरपुर की बड़ी लम्बी बजटिया है। राजा मुझे तुमने जो चुनरी खरीद के दी थी, उसे पहिनकर जब मैं पानी भरने को निकली तो मुझे लोगों की नजर लग गई है। पन्ना शहर से वैद्य बुला दो जो मेरा इलाज कर दे। पन्ना शहर के वैद्य बड़े बदमाश हैं, वह इलाज के बदले मेरी ननद माँग रहा है और राजा जी मेरा बड़ा ही खुला दिल है।

दादरा

अच्छी लगी राजा बजरिया हमखों।
हमरे ससुर ने गहना गढ़ाए
जा झुलनीदार नथनियाँ हमखों। अच्छी ....
हमरे जेठ ने कपड़ा खरीदे
जा बुंदकीदार चुनरिया हमखों। अच्छी ....
हमरे देवर ने बंगला बनवाए
जा खिड़कीदार अटरिया हमखों। अच्छी ....
हमरी सास ने बिटियाँ जायीं
जा विष की गाँठ ननदिया हमखों। अच्छी ....
हमरी सास ने लरका जाये

जे जुल्फोंदार साँवरिया हमखों।
अच्छी लगी राजा बजरिया हमखों।

स्रोत – आशा देवी

नयी वधू को उसके पति ने छतरपुर का बाजार घुमाया है। उसे बाजार बड़ा पसंद आया है। बता रही है– यह झुलनीदार नथ मेरे ससुर ने बनवा के दी है। उन्होंने गहने बनवाए थे। हमारे जेठ ने कपड़े और बुंदकीदार चुनरी मुझे खरीदी है। मेरे देवर ने बंगला बनवाया है उसमें यह खिड़की वाली अटारी का हिस्सा मुझे दिया है। हमारी सास ने बेटियाँ पैदा की हैं। ये विष की गाँठ जैसी ननद मुझे दी हैं। मेरी सास ने लड़के पैदा किए हैं, उनमें से ये जुल्फों वाले पति मुझे मिले हैं। यहाँ की बाजार राजा मुझे बहुत अच्छी लगी।

दादरा

बदरिया बरसे श्याम नहीं आए
पहली बदरिया तला बिच बरसी
धुवनिया तरसे श्याम नहीं आए
दूजी बदरिया कुअल बिच बरसी
ढिमरिया तरसे श्याम नहीं आए
तिसरी बदरिया बगीचा में बरसी
मलनिया तरसे श्याम नहीं आए
चौथी बदरिया महल बिच बरसी
रनियाँ तरसें श्याम नहीं आए

स्रोत – निशा श्रीवास्तव

बरसात होने लगी है परन्तु कृष्ण नहीं आए। पहिली बदरी तालाब के बीच बरसी है, वहाँ कपड़े धो रही धोबिन तरस रही कि श्याम नहीं आए। दूसरी बदरी कुआँ के बीच हुई है, वहाँ पानी भरने वाली ढीमरी तरस रही है। तीसरी बदरी बगीचे में बरसी है, वहाँ मालिन तरस रही है। चौथी बदरी महलों पर बरसी है, सो रानियाँ तरस रही हैं कि श्याम नहीं आए।

दादरा

का छब बरनों में आज नागर नट की।
रसवारी के भौंरा रे।
गले में बैजंती माल चलत श्याम मधुर चाल
चाल की शोभा विशाल हिरदें खटकी
रसवारी के भौंरा रे।

बलदाऊ जी के भैया मोरो लूट खाओ दइरा
मोसें करे ऐल छैल मोरी मटकी पटकी
रसवारी के भौंरा रे।

स्रोत–निशा श्रीवास्तव

अरे रसिक भँवरे! आज श्रीकृष्ण की छवि और उनके सौन्दर्य का बखान मैं किस तरह करूँ? गले में बैजयंती माला पहिने हुए बड़ी मधुर चाल में चलते हैं, इसकी शोभा तो मेरे हृदय में खटक रही है। अरे रसिक भँवरे! उन बलरामजी के छोटे भाई कान्हा ने मेरा दही लूट के खा लिया। मुझसे ऐसी वैसी बातें कीं तथा मेरी मटकी पटक दी।

दादरा

ओ डलिया वारे पुदीना हरा दँय जा
जो डलिया वारे तोरी अम्माँ नईयाँ
सास मोरी लँय जा ओ डलिया वारे
पुदीना.........................
जो डलिया वारे तोरी बहिना नईयाँ
ननद मोरी लँय जा ओ डलिया वारे
पुदीना.........................
जो डलिया वारे तोरी नईयाँ घरवारी
सौत मोरी लँय जा ओ डलिया वारे
पुदीना.........................

स्रोत – निशा श्रीवास्तव

ऐ हरा पुदीना बेचने वाले! अपनी डलिया से मुझे पुदीना दिए जा। यदि तेरी माँ नहीं है तो मेरी सास को लिए जा। यदि तेरी बहिन न हो तो मेरी ननद को ले जा। और यदि तेरी पत्नी न हो तो मेरी इस सौत को ले जा। डलिया वाले हरा पुदीना हरा दे जा।

दादरा

तोरे संग सें तो सैंयाँ कुँआरी भली
मैं तो मायकें चली।
लडुआ ने लावे, पेड़ा ने लावे
रात दिखावे नटिया मूँगफली। तोरे ....
धुतिया ने लावे, चुटिया ने लावे
इस्नू की शिशिया लै आय नकली। तोरे ....

हिरका न आवे, हँसे न हँसावे
दिन भर घूमें नटिया सौत की गली। तोरे ....

स्त्रोत – निशा श्रीवास्तव

हे प्रीतम! तेरे साथ रहने से तो कुँआरी ही भली थी। न कभी लड्डू-पेड़ा लावे, बस रात को मूँगफली लेकर आ जाता है। कभी न तो साड़ी लाए और न कभी चुटिया लाये। स्नो की नकली शीशी लेकर आ जाता है। न पास आये न कभी हँसी के बोल बोले, बस दिन भर मेरी सौत की गली में घूमता है। तेरे साथ से बेहतर मैं कुँवारी ही भली थी।